# THE Globe

Globen • Le Globe
Der Globus • El Globo
O Globo • विश्व

VOTE! RÖSTA!
¡VOTA! WÄHLT!
வாக்களிப்பீர் رای دهید
ဆန္ဒမဲထည့်ခြင်း!
တၢ်ထၢနှာ်တၢ်ဖး!
ลงคะแนน! !:ووٹ
صوِّت! ووٹ!:
HÃY BÀU! मत

WORLD'S CHILDREN'S PRIZE MAGAZINE #62/63 2016/2017

WORLD'S CHILDREN'S PRIZE FOR THE RIGHTS OF THE CHILD

PRIX DES ENFANTS DU MONDE POUR LES DROITS DE L'ENFANT

PREMIO DE LOS NIÑOS DEL MUNDO POR LOS DERECHOS DEL NIÑO

PRÊMIO DAS CRIANÇAS DO MUNDO PELOS DIREITOS DA CRIANÇA

DER PREIS DER KINDER DER WELT FÜR DIE RECHTE DES KINDES!

बाल अधिकारों हेतु विश्व बाल पुरस्कार

# हैलो!

दि ग्लोब पत्रिका तुम्हारे लिए है और उन सभी युवा लोगों के लिए जो वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम में भाग लेते हैं। यहाँ पर तुम सारे विश्व के मित्रों से मिल सकते हो, अपने अधिकारों को जान सकते हो, और इस पर सुझाव ले सकते हो कि इस संसार को कैसे बेहतर बनाया जा सकता है!

# World's Child for the Rights of the

जो लड़की दि ग्लोब के ऊपरी कवर पर बनी है वो घाना में वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ में भाग ले रही हैं।

**मुख्य संपादक एवं उत्तरदायी प्रकाशक:** मैग्नस बर्गमार
**संस्करण 62–63 में योगदान कर्ता:** कार्मिला फ्लाइड, एन्ड्रियास लॉन, जोहन्ना हैलिन, एवेलिना फ्रेड्रिक्सन, किम नेयलर, जोहान बजर्के, सोफिया मास्सैटिक, जैन–ऐके विनक्विस्ट, पेट्टर बर्गमार, हैन्ना पर्स्सन, किमलांग मेंग **अनुवादक:** सिमैनटिक्स (अंग्रेजी, स्पैनिश), सिन्ज़िया ग्विनिएट (फ्रेन्च), ग्लैन्डा कोयब्रान्ड (पुर्तगाली), प्रीति शंकर (हिन्दी) **डिजाइन:** फिडेलिटी **कवर चित्र:** हैन्ना पर्स्सन
**मुद्रक:** पुनामुस्ता ऑय

फॉरम सिड के ज़रिये, दि ग्लोब पत्रिका, स्वीडन में, सिडा (स्वीडिश इंटरनेशनल डेवलपमेन्ट कोऑपरेशन एजेन्सी) द्वारा अर्ध–वित्तीय सहायता से प्रकाशित की जाती है। यह आवश्यक नहीं कि वह इस पत्रिका में व्यक्त किये गये विचारों के साथ सिडा की सहमति बनती हो। इसके लिखे का उत्तरदायित्व केवल लेखकों का ही है।

# ren's Prize
# Child

क्या है
वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़? .....4

बाल निर्णायक दल से मिलो .....6

केवल की कहानी? .....12

बच्चों के
अधिकार क्या हैं? .....14

विश्व के
बच्चे कैसे हैं? .....16

प्रजातन्त्र का मार्ग .....18

सारे संसार में विश्व मतदान .....21

नेपाल एवं अन्य देशों में आओ जहाँ पर बच्चे अपने अधिकारों के लिए मतदान दे रहे हैं!

इस वर्ष के बाल अधिकार हीरो
रोसी गोलमैन .....50
मैनुएल रॉड्रिग्स .....71
मौली मेल्चर .....92

अपनी आवाजें सुनवाओ! .....113

हम वर्ल्ड चिल्ड्रेन्स प्राइज़
के संरक्षक हैं .....114

वह अन्तिम प्रस्तुति .....115

एक बेहतर विश्व के लिए
वैश्विक लक्ष्य .....116



वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ फाउन्डेशन
Box 150, 647 24 Mariefred
Tel: +46 (0)159-12900
info@worldschildrensprize.org
www.worldschildrensprize.org
facebook.com/worldschildrensprizefoundation
twitter.com/worldschildrensprize



ISSN 1102-8343

# वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़

डब्लू.सी.पी. कार्यक्रम, विश्व का सबसे बड़ा वार्षिक शैक्षिक अभियान है जो समानता, प्रजातन्त्र एवं बाल अधिकारों का समर्थन करता है। प्रति वर्ष तीन अद्भुत बाल अधिकार हीरो का नामांकन वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ में किया जाता है, जो बाल अधिकारों का अकेला पुरस्कार है जिसे बच्चों द्वारा स्वयं दिया जाता है! तुम एवं लाखों अन्य बच्चे इन प्रत्याशियों के बारे में पढ़ते हो और उन बच्चों के बारे में जिनके लिए वे लड़ते हैं। डब्लू.सी.पी. कार्यक्रम तब समाप्त होता है जब विश्व मतदान में तुम बच्चे अपने बाल अधिकार हीरो को मतदान देते हो। गत वर्षों में, अब तक 7.1 मिलियन बच्चे मतदान दे चुके हैं।

सन् 2016 का
2016 वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम,
16 अप्रैल सन् 2016 से 16 अप्रैल सन् 2017 तक
चलता रहेगा।

## वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ का उद्घाटन होता है

तुम स्वयं निर्णय ले सकते हो कि तुम इस वर्ष के कार्यक्रम के बारे में कब पढ़ना शुरू कर रहे हो। अनेकों स्कूल इस कार्यक्रम की शुरूआत एक उद्घाटन समारोह के आयोजन द्वारा करते हैं।

## वह बड़ी घोषणा!

उसी दिन सारे विश्व में, बच्चे यह घोषित करते है कि उन तीन प्रत्याशियों में से 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ फॉर दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' प्राप्त करने हेतु, लाखों मतदाता बच्चों द्वारा किसका चयन किया गया है, तथा किन दो को 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स ऑनरेरी अवार्ड' मिलेगा। अपने सारे स्कूल को एकत्रित करके परिणामों की घोषणा करो, अथवा अपने क्षेत्र में मीडिया को एक 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्रेस कॉन्फ्रेन्स' में आमन्त्रित करो। तुम बाल अधिकारों में उन सुधारों के बारे में भी बात कर सकते हो जो तुम देखना चाहोगे। (पृष्ठ 113)

**सामाजिक मीडिया पर हमारा अनुसरण करो!**

youtube.com/worldschildrensprize
facebook.com/worldschildrensprize
twitter: @wcpfoundation
Instagram: @worldschildrensprize
www.worldschildrensprize.org

YouTube

# क्या है?

अभी तक विश्व भर के 3 करोड़ 80 लाख बच्चे वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम के ज़रिये बाल अधिकारों एवं प्रजातंत्र के बारे में जान चुके हैं। 113 देशो के 67,000 से अधिक स्कूल, जिनमें 3 करोड़ छात्र हैं, ग्लोबल फ्रेन्ड स्कूल के रूप में अपना पंजीकरण करा चुके हैं जो वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ का समर्थन करते हैं।

## तुम्हारे जिन्दगी में अधिकार और प्रजातंत्र

पता लगाओ कि बाल अधिकारों का पालन कैसे किया जाता है जहाँ तुम रहेते हो, तुम्हारे परिवार में, स्कूल में और तुम्हारे देश में। प्रजातंत्र के इतिहास को पढ़ो और इस पर चर्चा करो कि तुम्हारे देश में बच्चों की स्थिति और बेहतर कैसे हो सकती है। उदाहरण के लिए, क्या तुम अपनी आवाज़ें सुनवा सकते हो। अन्य छात्रों, अभिभावकों, अध्यापकों, राजनीतिज्ञों, एवं मीडिया से बात करो। तुम अपने स्कूल में एक डब्ल्यू.सी.पी. बाल अधिकार क्लब भी शुरू कर सकते हो।
(पृष्ठ 14–15, 18–20)

## विश्व में अधिकार और प्रजातंत्र

बाल अधिकार सभी बच्चों पर लागू होते हैं, हर जगह। उनके बारे में और जानकारी प्राप्त करने के लिये बाल निर्णायक दल, बाल अधिकार राजदूतों एवं जिन बच्चों के लिए वे लड़ते हैं, उनसे मिलो। यह पता लगाओ कि अब विश्व के बच्चों की ज़िन्दगी वास्तव में कैसी है।
(पृष्ठ 16–17, 38–39, 42-49)

## ग्लोबल वोट दिवस

अपने विश्व मतदान की तिथि निर्धारित करो, यह देखो कि तुम्हें पर्याप्त समय मिल जाये और एक प्रजातंत्रिक चुनाव के लिये उन सभी चीजों की तैयारी करो जिनकी तुम्हें जरूरत हो – मत गणना काउन्टरों को नियुक्त करने से लेकर मतदान पेटियों एवं मतदान कक्षों को बनाने तक। अपने विश्व मतदान दिवस का अनुभव करने के लिए मीडिया, अभिभावकों, राजनीतिज्ञों को आमन्त्रित करो। अपने स्कूल के मतदान के परिणामों को मतदान पेटी द्वारा worldschildrensprize.org पर दर्ज करो।
(पृष्ठ 21–49)

## बाल अधिकार हीरो से मिलो

बाल अधिकार हीरो के बारे में जानों तथा उन बच्चो के बारे में जानों जिनके लिए वे लड़ते हैं, उनके जीवन की कहानियों द्वारा।
(Pages 50–112)

## वह अन्तिम महोत्सव!

डब्ल्यू.सी.पी. पुरस्कार समारोह का नेतृत्व बाल न्यायमूर्ति दल द्वारा स्वीडिन के मेरीफ्रेड शहर में ग्रिपशॉम कॉसल में किया जाता है। सभी तीन बाल अधिकार हीरो को सम्मानित किया जाता है और उनको अपने बच्चों के प्रति किये गये कार्यों के लिए पुरस्कृत धनराशि दी जाती है। (कुल 1,00,000 यू.एस. डॉलर)। स्वीडिन की महारानी सिल्विया बाल निर्णायक दल के बच्चों को पुरस्कार देने में सहायता करती हैं। अनेकों स्कूल अपने स्वयं के समापन समारोह आयोजित करते हैं, जहाँ वो पुरस्कार समारोह की एक फिल्म दिखाते हैं एवं बाल अधिकारों को मनाते हैं।

**वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन प्राइज़ की आयु सीमा!**
डब्ल्यू.सी.पी. प्रोग्राम हर किसी के लिए खुला है जबसे वे दस वर्ष के होते हैं और उस वर्ष जब तक वे 18 वर्ष के हो जाते हैं (यू.एन कन्वेन्शन ऑन दी राइट्स ऑफ दी चाइल्ड के अनुसार तुम बच्चे हो जब तक तुम 18 वर्ष के नहीं हो जाते)। निम्न आयु सीमा के अनेक कारण हैं। विश्व मतदान में मतदान देने के लिए, यह आवश्यक है कि तुम पहले से उम्मीदवारों के कार्यो के बारे में सब कुछ जान लो। प्रत्याशी जिन बच्चों के लिए संघर्ष करते हैं, उन्होंने अक्सर अपने अधिकारों के भीषण उल्लंघनों का अनुभव किया होता है, और उनकी कहानियाँ छोटे बच्चों के लिए डरावनी हो सकती हैं। यहाँ तक कि बड़े बच्चों को भी इन भीषण अनुभवों को पढ़ने में कठिनाई हो सकती है। इसलिए यह जरूरी है कि हमारे पास कोई व्यस्क हो जिससे तुम बाद में बात कर सको।

बाल न्यायमूर्ति दल बाल अधिकार हीरो जेवियर स्टॉरिंग तथा फायमीन नाउन के साथ।

# बाल निर्णायक दल से मिलो!

'वर्ल्डस चिल्ड्रेन्स प्राइज़' बाल निर्णायक दल के सदस्य अपने स्वयं के जीवन के अनुभवों के आधार पर बाल अधिकारों में निपुण हैं। प्रत्येक बाल निर्णायक दल का सदस्य विश्व के उन सब बच्चों का प्रतिनिधित्व करता है जिनके एक जैसे अनुभव रहे हैं। वो अपने देश एवं महाद्वीप के बच्चों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। जहाँ तक सम्भव हो पाता है निर्णायक दल के सदस्य सभी महाद्व ीपों और सारे मुख्य धर्मों के बच्चो को सम्मिलत करता है।

- बाल निर्णायक दल के सदस्य अपने जीवन की कहानियों को आपस में बाँटते हैं और जिन अधिकारों के उल्लंघन होने का उनका अनुभव रहा है या जिनके विरुद्ध वे लड़ते हैं। इस प्रक. ार, वे विश्व भर में लाखों बच्चों को बाल अधि ाकारों के बारे में बताते हैं। वो बाल निर्णायक दल के सदस्य साल के अन्त तक बने रह सकते हैं जब तक वो 18 वर्ष के नहीं हो जाते।
- प्रति वर्ष, बाल निर्णायक दल 'वर्ल्डस चिल्ड्रेन्स प्राइज़ फॉर दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' के लिए उन सब बच्चों में से तीन अन्तिम प्रत्या. शियों का चयन करता है जिनको नामित किया गया है।
- बाल निर्णायक दल के सदस्य अपने देशों में और विश्व भर में 'वर्ल्डस चिल्ड्रेन्स प्राइज़' के राजदूत होते हैं।
- बाल निर्णायक दल 'वर्ल्डस चिल्ड्रेन्स प्राइज़' कार्यक्रम के वार्षिक महान समापन – 'पुरस्कार समारोह' का नेतृत्व करता है। उस सप्ताह बाल निर्णायक दल के सदस्य स्वीडन के स्कूलों में जाते हैं और अपनी जिन्दगियों एवं बाल अधि ाकारों के बारे में बताते हैं।

www.worldschildrensprize.org पर तुम बाल निर्णायक दल के अनेकों सदस्यों के बारे में और अधिक लम्बी कहानियाँ पढ़ सकते हो।

बाल न्यायमूर्ति दल के सदस्य नेट्टा, एम्मा, ब्रायन्ना तथा एमेल्डा डब्लू.सी.पी. सप्ताह के समय एक नाव में घूमने जाते हैं।

पायल

झान्न नारा

माइ

नेट्टा

PHOTOS: SOFIA MARCETIC

## ❤ पायल जंगिद, 14

**भारत**

**उन गरीब बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने अधिकारों के लिए लड़ते हैं, विशेषतः बाल मजदूरी एवं बाल विवाह के विरुद्ध।**

पायल राजस्थान के एक गरीब गाँव में रहती है, जो भारत का एक भाग है जहाँ अनेकों लोग गरीबी में रहते हैं और लड़कियों का अक्सर बाल विवाह कर दिया जाता है। लेकिन पायल अपने गाँव की बाल सांसद की नेता है, और वो परिवर्तन के लिए लड़ती है। गाँव के वयस्क नेताओं के साथ, वह एवं अन्य बच्चे गाँव को 'बच्चों के अनुकूल' बनाने का प्रयास कर रहे है।

''हम बच्चों से घर पर मिलते हैं और उनके माता–पिता को बताते हैं कि स्कूल जाना क्यों आवश्यक है। हम पिताओं से भी कहते हैं कि वे भी अपने बच्चों एवं पत्नियों को न पीटें। यदि वो प्रेमपूर्वक व्यवहार करेंगे तो सबके लिए जिन्दगी बेहतर हो जाएगी,'' पायल कहती है, जो अपने गाँव में एक अध्यापिका बनने का सपना देखती है।

## ❤ झॉन्न नारा, 15

**ब्राज़ील**

**उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है जो स्वदेशी समूहों के हैं और अपने अधिकारों के लिए लड़ते हैं, और उन बच्चों का भी जिनके अधिकारों का उल्लंघन दुराचार, भेदभाव एवं पर्यावरणीय दुर्दशा के कारण होता है।**

झॉन्न नारा ब्राजील में एमाज़ोनास में पैदा हुई थी। वह गुआरानी स्वदेशी लोगों की सबसे युवा नेताओं में से एक है। वो वर्षा वाले जंगल के बहुत अन्दर रहते थे, लेकिन अब उस जंगल को काट डाला गया है और उसकी जगह बड़े–बड़े पशु–चरागाह एवं उद्योग आ गये हैं जो वातावरण को जहरीले रसायनों एवं दूषित जल से प्रदूषित कर रहे हैं। झॉन्न नारा और उसके लोगों को उनके गाँवों से भगा दिया गया है। अब वो सड़क के किनारे भरे हुए कैम्पों में रह रहे हैं, जहाँ पर न तो वे मछली पकड़ सकते हैं और न ही शिकार कर सकते हैं। निर्धनता से निराशा वयस्कों को शराब पीने, नशा करने और लड़ने की ओर अग्रसर करती है। झॉन्न नारा स्वयं का एक हिंसक सौतेले पिता द्वारा दुराचार किया गया है।

जब वो 10 साल की थी, तब 40 नकाबपोश आदमी उसके गाँव में आये और उसके दादा को गोली मार दी, जो वहाँ के लोगों के नेताओं में से एक थे।

''यदि हम अन्याय का विरोध करते हैं, तो हमको धमकी दी जाती है, हमारे साथ दुराचार किया जाता है और मार डाला जाता है। वो हमको समाप्त कर देना चाहते हैं, लेकिन हम कभी हार नहीं मानेंगे,'' झॉन्न नारा कहती है।

## ❤ माइ सिगोविआ, 17

**फिलीपीन्स**

**उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है जिनका बाल सेक्स व्यापार द्वारा शोषण किया जाता है और वो बच्चे जो तस्करी एवं दुराचार से लड़ते हैं।**

जब माई नौ वर्ष की थी, तब उसको स्कूल छोड़ना पड़ा और उसने अपने परिवार का समर्थन करने के लिए काम करना शुरू कर दिया। उसे एक इंटरनेट कैफे में कैमरे के सामने जबरदस्ती नाचना पड़ा और निर्वस्त्र रहना पड़ा। उसके चित्रों को इंटरनेट द्वारा विश्व भर में भेज दिया गया। दो वर्ष लग गये तब जाकर कैफे के मालिक को पुलिस ने पकड़ा जिसने माई का शोषण किया था। वह अब जेल में है, जैसे कि अनेकों जिन्होंने उन तस्वीरों को देखा था। लेकिन माई अपने परिवार के साथ नहीं रह सकी। उसको आशंका थी कि वो निर्धनता के कारण फिर से भुगतेगी। अब वो अरक्षित लड़कियों के एक सुरक्षा गृह में रहती है। वो स्कूल जाती है और अन्य लड़कियों के अधिकारों के लिए लड़ती है जिन्होंने दुराचार सहा है।

''मुझे अपने परिवार की याद आती है और मेरी जिन्दगी यहाँ पर बेहतर है,'' वो कहती है।

## ❤ नेट्टा एलेक्ज़ेन्ड्री, 16

**इज़राईल**

**उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है जो संघर्ष के क्षेत्रों में रहते हैं और एक शान्ति का प्रस्ताव रखना चाहते हैं।**

''मुझे याद है कि युद्ध चल रहा था जब मैं छोटी थी। मेरे माता–पिता सचमुच चिंतित थे। अतः उन्होंने मुझे और मेरी बहन को हमारी बुआओं के साथ रहने के लिए भेज दिया। मैंने बहुत दिन तक अपने माता–पिता को नहीं देखा। यह भयभीत करने वाला था। मुझे पता नहीं था कि क्या हो रहा है, इसलिए मैं चिंतित और बहुत डरी हुई थी। मैं बहुत कुछ नहीं समझ पाती थी जो हो रहा था लेकिन मैं सोच रही थी। मैं मरना नहीं चाहती थी, मैं अपना घर छोड़कर नहीं जाना चाहती थी!''

नेट्टा का मानना है कि वार्ता करना – शान्ति बनाये रखने का सबसे बढ़िया तरीका है।

''एक–दूसरे से वार्ता करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके अलावा कोई और रास्ता नहीं है। और यह जरूरी है कि हम बच्चों को अपने अधिकारों का पता हो, जिससे कोई उनको हमसे छीन न सके।''

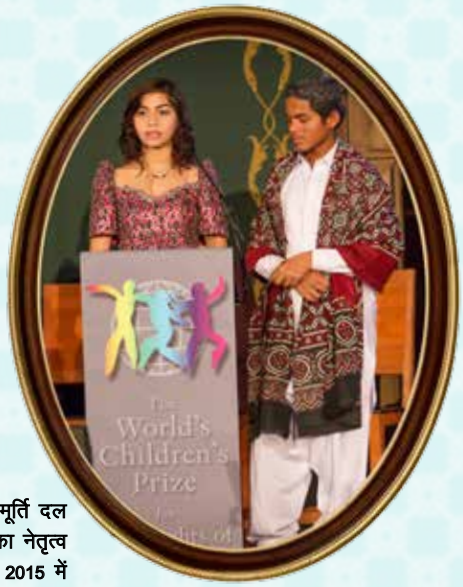




मेरीफ्रेड के ग्रिपशॉम कॉसल में बाल न्यायमूर्ति दल के सदस्य वार्षिक डब्लू.सी.पी. समारोह का नेतृत्व करते हैं। चित्र में माइ एवं केवल सन् 2015 में खड़े हैं।

एमेल्डा

मनचला

नूर

## ❤ एमेल्डा जमाम्बो, 17

**मोज़ाम्बीक**

**अनाथों एवं उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है जो गरीब बच्चों के अधिकारों के लिए लड़ते हैं।**

जब एमेल्डा 6 वर्ष की थी, तब चोरों ने उसके पिता को गोली मार दी, और उसके कुछ महीने बाद ही उसकी माँ मलेरिया से मर गई।

''सब कुछ बिखर गया। मुझे नहीं लगता था कि कुछ भी फिर से अच्छा हो सकेगा। मैं घबराई हुई थी कि मैं अकेली रह जाऊँगी और सड़क पर पहुँच जाऊँगी। पर इतनी सारी खराब बातें होने के बावजूद, मैं बड़ी भाग्यशाली रही।''

एमेल्डा की दादी और उसके चाचा के परिवार ने खुली बांहों से उसका स्वागत किया। उसे रहने के लिए एक जगह, भोजन, वस्त्र एवं स्कूल जाने का अवसर मिला।

''सबसे अधिक, मुझे एक परिवार मिला जो मुझे चाहता था।''

एमेल्डा अन्य बच्चों की सहायता करना चाहती थी, अतः उसने दोपहर का अपना स्वयं का स्कूल शुरू किया, उन बच्चों के लिए जिनको आमतौर से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिल पाता। उसने उनको पढ़ना, लिखना और गिनना सिखाया।

## ❤ मनचला, 17

**नेपाल**

**उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है जो तस्करी से पीड़ित रहे हैं और जिन बच्चों का यौन शोषण किया गया है।**

मनचला बिना किसी माँ के बड़ी हुई, लेकिन वो अपनी दादी के नजदीक थी, जो उसको बहुत चाहती थी।

''मेरी दादी मर गई जब मैं 13 साल की थी। उसके शीघ्र बाद ही मैंने स्कूल जाना बन्द कर दिया और काम करना शुरू कर दिया, पहले एक चाय के कारखाने में और फिर एक खदान में। मैं सदैव एक बेहतर जिन्दगी की सपना देखती रहती थी।''

एक दिन मनचला से दो आदमी मिले जिन्होंने उसको पड़ोसी देश भारत में एक अच्छे वेतन वाली नौकरी दिलाने का वादा किया। लेकिन इसके बजाय उन्होंने उसे एक परिवार को एक दासी की तरह बेच दिया। वो बहुत मेहनत करती थी लेकिन उसे कभी पैसे नहीं मिलते थे और उसे बन्द रखा जाता था।

सबसे बुरी बात तब हुई जब उन आदमियों में से एक जिसने मनचला को बेचा था, घर पर आकर उससे दुराचार करने लगा। यह अनेकों बार हुआ, काफी लम्बे समय तक। अन्त में, मनचला भागने में कामयाब हुई और उस आदमी को पुलिस ने पकड़ लिया। पर फिर मनचला को अपने मित्रों एवं सम्बन्धियों से मृत्यु की धमकियाँ मिलने लगीं और उसे शरण लेनी पड़ी। अब वो नेपाल के अरक्षित लड़कियों के लिए बने एक गृह में रहती है और फिर से स्कूल जाती है।

''मैं अन्य बच्चों को बताती हूँ कि उनके भी अधिकार हैं और उनको तस्करों द्वारा बेवकूफ बनने से सचेत करती हूँ।''

## ❤ नूर मूसा, 15

**फिलिस्तीन**

**उन संघर्ष वाले क्षेत्रों वाले बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है जो कब्जे में रहते हैं और शान्ति प्रस्तावों का समर्थन करते हैं।**

''मेरी सबसे पहली गोली चलने एवं भय की यादें बीच रात की हैं जब मैं 4 साल की थी। हम भू–तल में भाग कर गये थे। बाद में जब हमने वापस ऊपर आना चाहा तो मेरे दादा के कमरे में आग लगी थी और उसमें गोलियों के छेद एवं गंजगोले के निशान हर जगह थे।''

''इस साल से पहले, जब हम एक परीक्षा में बैठे हुए थे, तब एक अश्रु गैस का गोला अचानक हमारी कक्षा में फेंका गया। मुझे लगा कि मेरी आंखें जल रही हैं और मुझे सांस लेने में कठिनाई हो रही थी। मेरे मित्र और मैं घर की ओर भागे, लेकिन इजराईली सैनिकों ने हमें रोक लिया और हमें जबरदस्ती वापस भेज दिया। मैं दुखी थी और डरी हुई भी, मैं कमजोर और शक्तिहीन थी। हमने उनको बताया कि हम केवल निर्दोष बच्चे हैं। जब हम अन्त में अपने घर पहुँचे तब मैंने आंसू बहाना शुरू कर दिया। मेरी दादी ने कुरान से पढ़कर मुझे सांत्वना दी, और मुझे पीने के लिए आं. वले का तेल दिया। उसकी सलाह थी कि मैं अपनी शिक्षा जारी रखूँ, और मुझे स्कूल प्रिय है।''

''मुझे सैनिक नहीं अच्छे लगते हैं, लेकिन मैं चाहती हूँ कि हम लोग इजराईली लोगों के साथ पड़ोसियों एवं मित्रों की तरह रहें। हमें उनके धर्म का सम्मान करना चाहिए और उनको हमारे। हमें एक–दूसरे का भी सम्मान करना चाहिए!''



# दास बच्चों के लि

**शमून मसीह, 14, ने एक ईंट के भट्टे पर एक ऋण मजदूर की तरह काम करना शुरू किया जब वह चार वर्ष का था। वो डब्लू. सी.पी. बाल न्यायमूर्ति दल का एक नया सदस्य है, जो बाल मजदूरों, दास बच्चों एवं उन बच्चों का प्रनिनिधित्व करता है जो मौजूद नहीं हैं क्योंकि उनके जन्मों को पंजीकृत नहीं कराया गया।**

शमून के परिवार वाले तब से ईंट के भट्टे के मालिक के ऋण दास बने हुए थे जब से उसके पिता एक बच्चा थे क्योंकि उनको 60,000 रुपये (600 यू.एस. डॉलर) का एक ऋण अदा करना था।

जब शमून पांच वर्ष का हुआ, तो उसके पिता ने ईंट के भट्टे के कार्यकर्ताओं के बेहतर काम करने की परिस्थिति के लिए संघर्ष किया तथा बच्चों के लिए एक संध्या का स्कूल शुरू करने में सहायता की। भट्टे के मालिक एवं पर्यवेक्षकों को यह पसन्द नहीं आया। जब शमून के पिता ने एक टी.वी. के चालक के एक प्रोग्राम बनाने में सहायता की जिसमें यह दर्शाया गया था कि ईंट के भट्टे के परिवारों की जिन्दगियाँ कितनी कठिन होती हैं, तो उस क्षेत्र के ईंट के भट्टे के मालिकों ने उसे धमकाना शुरू कर दिया। उसे भली–भाँति पता था कि वह लोग इतने निर्दयी हो सकते हैं, अतः अंधेरे की आड़ में वह और उसका ज्येष्ठ लड़का भाग गये।

# एम्मा एक परिवर्तनकर्ता है

**डब्लू.सी.पी. बाल निर्णायक दल की एम्मा मूगस, 17, उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है जो सभी बच्चों, विशेषतः स्वदेशी समूहों के बच्चों के समान अधिकारों के लिए लड़ती है।**

जब एम्मा बारह वर्ष की थी, तब उसे यह जानकर दुख हुआ कि उसके देश कनाडा की स्वदेशी जनसंख्या के बच्चों को वही शिक्षा के अधिकार नहीं प्राप्त थे जो अन्य बच्चों को। स्थानीय विद्यार्थी जो शहर के बाहरी क्षेत्रों में रहते हैं, उनको हमारी सरकार के कोष से प्रदेशों एवं शहरी क्षेत्रों में रहने वाले अन्य मूल्य के बच्चों की अपेक्षा कम धन दिया जाता है। 12 वर्ष की आयु में वह समझ गई थी कि मेरे देश में हर बच्चे के

# लए एक दास लड़के का स्कूल

चिकनी मिट्टी को तैयार करना भारी काम है...

...और फिर सारा दिन ईंटे बनाने में बिताना।

शमून, ईंट के भट्टे पर, बच्चों एवं युवा लोगों के लिए एक संध्या का स्कूल चलाता है।

**हम दास हैं**

उसकी अगली ही सुबह ईंट के भट्टे मालिक ने शमून और उसकी माँ को बुलवाया।

''मेरी माँ ने कहा कि वो मालिक मेरे पिता को मार डालेगा यदि हमने उसे बताया कि वो कहाँ है। मालिक ने माँ का अपमान किया और उस दिन मुझे एक छड़ी से कई बार पीटा। तब मुझे इस बात का आभास हुआ कि हमारा सारा परिवार उसके दास थे।''

शमून को मजबूर होकर अपनी माँ की ईंट के भट्टे पर सहायता करनी पड़ती थी, हर रोज सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक। उसने संध्या के स्कूल में जाना जारी रखा, लेकिन वो बिल्कुल थक जाता था।

दो वर्ष बाद, एक ईंट के भट्टे के कार्यकर्ताओं के समूह ने उसके मालिक से यह वचन लिया कि वो शमून के पिता को नहीं मारेंगे यदि वो वापस लौट कर आते हैं। अब परिवार पर्याप्त मात्रा में हर रोज ईंटे बना सकता था जिससे उसका मालिक संतुष्ट हो बिना शमून के दिन भर काम करे। वो सुबह पांच बजे काम करना शुरू करता था, आठ बजे स्कूल जाता था, और स्कूल के बाद काम करता रहता था, एक बजे से लेकर सूर्यास्त तक।

**उसका स्वयं का संध्या का स्कूल**

**शमून अब कक्षा 9 में है।**

''मैं देख सकता हूँ कि साधारण स्कूल के विद्यार्थी गरीब बच्चों के बारे में नहीं सोचते। मैं सदैव उनके बारे में सोचता हूँ, और चिन्ता करता हूँ कि उनको कैसे शिक्षा मिलेगी। संध्या के समय, मैं ईंट के भट्टे पर उन बच्चों एवं युवा लोगों के लिए एक संध्या का स्कूल चलाता हूँ, जो एक साधारण स्कूल में नहीं जा पाते। शिक्षा उनको निडर बनाती है और फिर वो अपने परिवारों की मदद कर सकते हैं। सभी बच्चों को स्कूल जा पाना चाहिए। हमारी स्वतंत्रता के लिए शिक्षा ही एकमात्र रास्ता है।''

शमून का परिवार अब ऋण दास नहीं रह गये हैं, लेकिन वो अब भी एक ईंट के भट्टे पर काम करते हैं। शमून उनकी मदद करता है जब भी वो कर पाता है।

---

बराबर शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार का उल्लंघन हो रहा है।

''सन् 2012 में मैंने अपनी बहन जूलिया के साथ मिलकर 'बुक्स विध नो बाउंड्स' नामक संस्था शुरू की, जिससे शहर से दूर बाहरी क्षेत्रों में रहने वाले स्वदेशी मूल के बच्चों को शिक्षा के संसाधन उपलब्ध कराये जा सकें। हमारा अभियान कुछ सौ पुस्तकों से ही शुरू हुआ था, और आज हमें एक सौ हजार से भी अधिक पुस्तकें, स्कूल की आपूर्ति, भोजन, वस्त्र तथा कम्प्यूटर एवं टैबलेटें उपलब्ध करा चुके हैं।''

एम्मा डब्लू.सी.पी. समारोह 2015 में।

एम्मा, वापेकेका देश के बच्चों की, विश्व मतदान में सहायता करती है।

''मेरा अभियान समानता, निष्पक्षता तथा अपने देश के भाइयों–बहनों की जिन्दगियों को सुधारने के लिए जिससे उनको समान अधिकार एवं अवसर प्राप्त हो सकें इससे वे स्कूल में और अपनी जिन्दगी में सफल हों। शिक्षा हमारा मूल एवं सम्पूर्ण अधिकार है और वो प्रत्येक बच्चे की क्षमता के विकास के लिए अति महत्वपूर्ण है। हमने अपने मित्रों के अधिकारों के लिए वार्षिक पैदल चलने के अभियानों एवं अपनी सरकार से पत्राचार के अभियानों द्वारा संघर्ष किया है।''

एम्मा, दाहिनी ओर, और उसकी बहन एक जुलूस में जो कनाडा के सभी बच्चों के समान अधिकारों के लिए है।

**महंगा पानी**

''दक्षिण ऑन्टेरियो के एक अलग जंगली क्षेत्र में जहाँ केवल उड़कर जाया जा सकता है, मुझे यह जानकर झटका लगा कि उनको स्वच्छ जल नहीं उपलब्ध था और उनके समुदाय में जल खरीदने का खर्चा 180 प्रतिशत उससे अधिक था जो मैं अपने स्थानीय सब्जी की दुकान पर दूंगी।''

''कनाडा में स्वदेशी मूल के बच्चों का भेदभाव एवं पक्षपात का एक लम्बा इतिहास रहा है और विश्व में आत्महत्याओं की सबसे उच्चतम दर है।''

''मेरे देश के इतिहास में एक काला अध्याय है, और मुझे भय है कि आज कनाडा में स्वदेशी मूल के बच्चों की परिस्थितियाँ इस विरासत को ईधन देंगी।''

''एक वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ के बाल न्यायमूर्ति दल की सदस्य तथा बाल अधिकारों की सक्रिय कार्यकर्ता होते हुए मेरा अभियान निष्पक्षता, समानता एवं बच्चों की जिन्दगियों को सुधारने के बारे में है।''

# जबरदस्ती एक बाल सैनिक बना दिया गया

**ड्यू मर्सी, 15, डब्लू.सी.पी. बाल न्यायमूर्ति दल का एक नया सदस्य है जो बाल सैनिकों एवं सशस्त्र संघर्ष वाली परिस्थितियों का प्रतिनिधित्व करता है।**

''हम अपने रास्ते स्कूल से घर जा रहे थे जब सशस्त्र लोगों ने हमें घेर लिया, और चिल्लाकर बोले:

'बैठ जाओ! भागने की कोशिश मत करना नहीं तो हम तुम्हें मार देंगे!'

''लड़कियों को अलग दिशा में ले जाया गया। हम लड़कों को पैदल जंगल में ले जाया गया। हम अपहरणकर्ताओं से भीख मांगते रहे कि वे हमें वापस अपने परिवारों के पास जाने दें। लेकिन उन्होंने हमारे स्कूल की पुस्तकों को फाड़ दिया और उनमें आग लगा दी। मैं अपने परिवार के बारे में सोचता रहा, और मृत्यु के बारे में। उनके नेताओं में से एक ने कहा:

''प्यारे बच्चों, तुम सैनिक बनोगे, अपनी स्वयं की रक्षा करने के लिए, अपने परिवारों के लिए और हमारे देश के लिए! जो भी हमारे साथ चलने के लिए मना करेगा वो हमारा शत्रु होगा!''

''जब भी मुझे बच्चों को पकड़ने के लिए भेजा जाता था तब मैं चुपके से उनके भागने में उनकी मदद करता था। मैंने 37 बच्चों को मरने से बचाया।''

''हमें शायद ही कुछ खाने को मिलता था। हम लोग एक अकेली छोटी चिड़िया को आपस में बांट लेते थे, और पत्ते एवं जंगली फल खाते थे। हर रोज वो हमें कुछ पीने के लिए देते थे इसे यह समझा जाता था कि वह शत्रु की गोली से हमारी रक्षा करता है।''

''एक रात जब हम लड़ रहे थे तब मैंने भागने की कोशिश की। इसके बजाय मुझे सरकारी सैनिकों ने पकड़ लिया। जब वे मुझे गोली मारने वाले थे तब मैं चिल्लाया कि मैं केवल एक स्कूल का बच्चा था जिसका अपहरण कर लिया गया था।''

''बी.वी.ई.एस. मुझे वो सब भयानक घटनाओं को भुलाने में सहायता करती है जिनसे मैं गुजर चुका हूँ, और मुझे सशक्त करती है जिससे मैं अपनी जिन्दगी को फिर से अपनी तरह से जी सकूँ।''

# बेघर बच्चा दूसरों की सहायता करता है

**टैरी एक लेखक बनने का सपना देखता है। ''मुझे अपने स्वयं की कहानियाँ लिखना अच्छा लगता है। उनको बिल्कुल सही करने में बहुत समय लग जाता है, लेकिन उससे फर्क नहीं पड़ता क्योंकि मुझमें बहुत धैर्य है। यदि मैं एक लेखक बन गया, तो सबसे पहले मैं अपने परिवार की मदद करूँगा फिर बेघर लोगों की।''**

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: IAN CHAN

**टैरी मेफील्ड, 13, संयुक्त राज्य अमरीका से डब्लू.सी.पी. बाल न्यायमूर्ति दल का एक सदस्य है। वो उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करता है जो बेघर हैं और उन बच्चों का जो बेघर बच्चों की सहायता करते हैं।**

टैरी, संयुक्त राज्य अमरीका के 2.5 मिलियन बेघर बच्चों में से एक है। वे आश्रयों में रहते हैं, कारों में, जर्जर होटलों में, या फिर सड़कों पर। बच्चों के परिवार वहाँ पर विभिन्न कारणोवश पहुँच गये हैं, लेकिन वे सब अपने स्वयं का एक घर होने का सपना देखते हैं।

''मैं तब से बेघर हूँ जब मैं 9 साल का था,'' टैरी बताता है। ''कुछ वर्षों तक हम बहुत स्थानांतरित होते रहे, लेकिन अब हम 'यूनियन रेस्क्यू मिशन' में रहते हैं। यह जगह हजारों बेघर लोगों का घर है जिनका और कहीं ठिकाना नहीं है।''

टैरी, उसकी माँ और पांच भाई एवं बहनें एक कमरे में रहते हैं और दूसरों के साथ एक शौचालय एवं शावर का इस्तेमाल करते हैं।

''सबसे खराब बात यह होती है कि मुझे सुबह पांच बजे उठना पड़ता है, जब भोजन के कक्ष में नाश्ता मिलता है।''

टैरी का परिवार लॉस एंजिलस शहर के बेघर लोगों वाले क्षेत्र में रहता है।

यहाँ पर हजारों लोग सड़क पर रहते हैं। सुबह पैदल स्कूल जाते समय उसे अपना रास्ता बनाने के लिए, टेन्टों, सामान बेचने वाली गाड़ियों और सोते हुए लोगों के बीच से होकर गुजरना पड़ता है। लेकिन टैरी नहीं डरता।

''जो लोग सड़कों पर रहते हैं वो हम बच्चों के प्रति नर्म एवं सहायक होते हैं।''

### अन्य बच्चों की सहायता करना

शायद ही कोई स्कूल में यह जानता है कि टैरी कहाँ रहता है। उसने केवल अपने सबसे प्रिय मित्र को बताया है, क्योंकि अनेकों लोग बेघर लोगों के प्रति पक्षपात करते हैं।

''बेघर होने को लेकर सबसे बुरी बात जो होती है वो स्थानांतरित होते रहना और बार–बार स्कूल बदलते रहना। मैं अपने भविष्य के बारे में बहुत चिंतित रहता हूँ, और यह सोचता हूँ कि मैं कैसे अपने परिवार को जीवित रखने में सहायता करूँगा। कभी–कभी प्रोत्साहित रहना कठिन हो जाता है। लेकिन मेरी माँ हम सबका समर्थन करती है। उसने हमारी बड़े होकर शक्तिशाली होने में सहायता की, यद्यपि हमारी परिस्थितियाँ कठिन रही हैं। खुशकिस्मती से मुझे स्कूल जाना पसन्द है। मुझे गणित अच्छी लगती है!''

टैरी को अपने स्कूल का गृहकार्य करने में 'स्कूल ऑन व्हील्स' से सहायता मिलती है, जो बाल अधिकार हीरो एग्नेस स्टीवेन्स का एक अभियान है, जिसे वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स ऑनरेरी अवार्ड सन् 2008 में मिला था।

''उनके अतिरिक्त अध्यापन के बिना मैंने स्कूल में इतना अच्छा नहीं किया होता,'' टैरी कहता है। ''अब मैं अपने से छोटे बच्चों को उनके स्कूल का गृहकार्य करने में उनकी मदद करता हूँ!''

**टैरी अपने भाईयों–बहनों के साथ। ''हम तीन जोड़ी जुड़वा हैं! लेकिन मेरा जुड़वा भाई और मैं एक–दूसरे के बिल्कुल विपरीत हैं और हम बहुत भिन्न कार्यों में लगे हैं।''**

# मिलद युद्ध से भाग गया

**मिलद 12 वर्ष का था जब उसे वो तस्कर मिला जो उसे यूरोप ले जाता। दो वर्ष बीत चुके थे जब से उसका परिवार अपना घर छोड़कर भाग गया था। मिलद डब्लू.सी. पी. बाल न्यायमूर्ति दल का एक नया सदस्य है, जिसमें वो उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करता है जिनको अपने घरों को छोड़कर भागना पड़ गया है।**

सीरिया के एलेप्पो शहर में, युद्ध से, उसका परिवार अपना घर छोड़कर कोबाने भाग गया, और सीमा पार करके टर्की पहुँच गया।

''वहाँ पर गुजारा करना कठिन था। हजारों नए शरणार्थी रोज आ रहे थे, और वहाँ पर बहुत सारे बच्चे सड़क पर भीख मांग रहे थे। मैं एक कपड़े के कारखाने में काम करता था क्योंकि वहाँ पर कोई स्कूल जाने के लिए नहीं था।''

जब मिलद दो वर्षों तक स्कूल नहीं गया, तब उसकी माँ ने कहाः ''तुम्हारा सारा भविष्य खतरे में है। हमें यूरोप चले जाना चाहिए।'' उसका बड़ा भाई पहले गया और कुछ महीने बाद मिलद की बारी थी। अनेकों निराशाजनक शरणार्थी मेडीटरेनियन सागर को पार कर रहे थे और हजारों मर रहे थे जब उनकी बहुत भीड़ वाली नावें डूब जाती थीं। उनमें से अनेकों बच्चे थे। अतः उसके परिवार ने एक तस्कर को पैसे देने के लिए जमा किये जो मिलद को स्वीडन ले जाता।

### और अधिक धन मांगा

''मैं घबराया हुआ था,'' मिलद स्मरण करता है।

''संदेहजनक सीमा सुरक्षाकर्मी ने हमें पासपोर्ट नियंत्रण पर रोक लिया और हमारी उड़ान छूट गई। तस्कर को मुझे दूसरी उड़ान दिलाने में 48 घंटे लग गये। मैं अपनी माँ से फोन पर बात करना चाहता था यदि वो सोचती कि मेरा अपहरण कर लिया गया है या मुझे मार दिया गया है। लेकिन तस्कर को डर था कि वो अपना पैसा वापस मांगेगी।''

उड़ान स्वीडन में नहीं उतरी। इसके बजाय वो पड़ोसी देश नार्वे में उतरी।

''हमें पासपोर्ट नियंत्रण पर रोका गया और सुरक्षाकर्मी एक द्विभाषिया लेकर आये। उसने अरबी भाषा में कहा, 'मुझे पैसे दो, वरना मैं कह दूंगा कि तुम्हारे पासपोर्ट जाली हैं और फिर तुम जेल पहुँच जाओगे।' मैं भयभीत हो गया, लेकिन तस्कर ने उनको पैसे देने का वचन दिया।''

अन्त में, मिलद अपनी माँ से फोन पर बात कर सका।

''मैं रोया जब मैंने अपने भाई की आवाज सुनी। उसको स्वीडन से कार चलाकर आने में छः घंटे लगे। जब वो पहुँचा तब एक बहस हुई। तस्कर ने मुझे जाने से रोक दिया जब तक कि हम उसे और धन नहीं देते। मुझे लगा कि मैं अपनी माँ को दोबारा नहीं देख पाऊँगा। लेकिन अन्त में उसने हमें जाने दिया।''

### अन्य लोगों के बारे में सोचना

अब मिलद एक स्वीडन के स्कूल में जा सकता है और एक फुटबॉल की टीम में खेलता है। वो यहाँ खुश है, लेकिन उसे अपने घर की याद आती है और अपने सबसे प्रिय मित्र की जो अब भी एलेप्पो में है।

''शहर एक बमबारी के कारण जगह–जगह फट गया है और वहाँ पर कोई भोजन, पानी अथवा बिजली नहीं है। मेरे मित्र का परिवार भागने की कोशिश कर रहा है लेकिन यह कठिन है। कोबाने शहर, जहाँ हम पहले भागे थे, आई.एस. (इस्लामिक स्टेट) द्वारा नष्ट हो गया है, और जिस सीमा को लांघकर हम टर्की में घुसे थे वो अब बन्द कर दी गई है।''

यूरोप में अनेकों लोग इस बात से चिंतित हैं कि वहाँ पर शरण लेना बहुत महंगा पड़ेगा, और कुछ लोग सारी सीमाओं को बन्द करके उन्हें रोकना चाहते हैं।

''मैं इतना खुशकिस्मत हूँ कि मैं यहाँ पर आ सका, क्योंकि हम सीरिया में मर गये होते,'' मिलद कहता है। ''अब मैं अपने मित्र के लिए चिंतित हूँ। हमें अन्य लोगों के बारे में सोचना पड़ता है, न कि सिर्फ स्वयं के बारे में।''

## सीरिया में युद्ध

**सीरिया में सार्वजनिक युद्ध सन् 2011 में शुरू हुआ था। सन् 2016 में इसका वर्णन करते समय तक, आधा मिलियन लोग मर चुके हैं और लगभग आधे सीरिया के 22 मिलियन निवासियों को मजबूरी में भागना पड़ गया है। लगभग 6.5 मिलियन लोग सीरिया के अन्दर स्थानांतरित हुए हैं, और 4.5 मिलियन से अधिक लोग विदेश भाग चुके हैं, अधिकतर पड़ोसी देशों में।**

© YASMIN AL TELLAWY/DEMOTIX/CORBIS

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: EDA WIRSTRÖM & YASMIN AL TELLAWY/DEMOTIX/CORBIS

# KEWAL

## दास बच्चे की कहानी

मैं पाकिस्तान के थार रेगिस्तान में एक छोटे गाँव में बड़ा हुआ। जब मैं दस साल का था तब एक बहुत बुरी घटना हुई।

मेरे पिता मुझे एक कालीन बनाने वाले कारखाने के मालिक के पास ले गये जिसने उन्हें ऋण दिया था।

मुझे यहाँ काम करना था जब तक ऋण अदा नहीं हो जाता।

लेकिन मुझे कभी कोई पैसा नहीं मिला और ऋण भी कम नहीं हुआ।

अगर मैं सो जाता या कोई गलती करता, तो मैं पिटता था।

A COMIC STRIP BY GOOD MOTION

तीन वर्ष बाद, मैं भाग गया।

अन्त में मैंने अपना गाँव देखा।

मेरे पिता ने कालीन वाले आदमी को विश्वास दिलाया कि वो मुझे दिन में स्कूल जाने दें और मैं शाम को उसका काम करूँ।

हमने दि वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ के बारे में पढ़ा। मैंने जाना कि हमारे अधिकारों का उल्लंघन किया जा रहा था।

पर जैसे ही स्थिति बेहतर होने लगी...

...वर्षा तेजी से होने लगी।

रेगिस्तान में बाढ़ आ गई।

मेरा गाँव और स्कूल दोनों नष्ट हो गये।

लेकिन हमने अपना स्कूल दोबारा बनाया।

मैं विश्व मतदान में भाग ले सका और मैं डब्लू.सी.पी. बाल न्यायमूर्ति दल का एक सदस्य बन गया।

अब मैं 18 वर्ष का हो गया हूँ और मैंने बाल न्यायमूर्ति दल को छोड़ दिया है। एक दिन मैं डॉक्टर बनूँगा।

# बाल अधिकारों का जश्न मनायें

Fira barnets rättigheter

Célèbre les droits de l'enfant

Celebre os Direitos da Criança

'यू.एन. कन्वेन्शन ऑन दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' तुम्हें एवं 18 वर्ष से कम आयु के सभी बच्चों पर लागू होता है। *संयुक्त राज्य अमरीका को छोड़कर विश्व के सभी देशों ने इस कन्वेन्शन को हस्ताक्षरित स्वीकृति दी है (पालन करने का वचन दिया है)। इसका मतलब यह है कि वो बाल अधिकारों को संज्ञान में लेने के लिए बाध्य हैं और उन बातों को सुनने के लिए भी जो बच्चे कहते हैं।

### कन्वेन्शन के मुख्य बिन्दु:

- सभी बच्चे बराबर हैं और उनके समान अधिकार हैं।
- हर बच्चे को अधिकार है कि उसके या उसकी मूल आवश्यकताओं को पूरा किया जाये।
- हर बच्चे को अधिकार है कि वे स्वयं को दुराचार तथा शोषण से सुरक्षित रखें।
- हर बच्चे को अधिकार है कि वह अपने विचारों को व्यक्त करे और उनका सम्मान किया जाये।

### कन्वेन्शन क्या है?

कन्वेन्शन एक अन्तर्राष्ट्रीय समझौता है, विभिन्न देशों के बीच एक अनुबंध। 'दि कन्वेन्शन ऑन दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' यू.एन. के मानवाधिकारों पर छह कन्वेन्शनों में से एक है।

## शिकायत करने का अधिकार!

जिन बच्चों के अधिकारों का उल्लंघन किया गया है वो 'यू.एन. कन्वेन्शन ऑन दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' पर अपनी शिकायतें सीधे दर्ज कर सकते हैं, यदि उनको स्वयं के देश से सहायता एवं पुनर्वास नहीं मिला है। op3 को धन्यवाद कि यह सम्भव हो सका है, जो 'यू.एन. कन्वेन्शन ऑन दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' के अन्य नवाचारों की अपेक्षा, एक नया नवाचार है। जिन देशों ने इस नवाचार को हस्ताक्षरित कर दिया है (मान्यता दे दी है) वहाँ के बच्चों को अपने अधिकारों से सम्बन्धित अपनी आवाजों को सुनवाने का बेहतर अवसर मिलता है। कुछ देशों ने अभी तक इस नवाचार को स्वीकार नहीं किया है।

* संयुक्त राज्य अमेरिका ने इस कन्वेन्शन को हस्ताक्षरित किया है लेकिन यह कानून बाध्य नहीं है।

**'यू.एन. कन्वेन्शन ऑन दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' अधिकारों की एक लम्बी श्रंखला को एक साथ बांधता है जो विश्व के सारे बच्चों पर बाध्य होती है। हमने यहाँ पर उनमें से कुछ का संक्षिप्तिकरण किया है।**

**अनुच्छेद-1**
ये अधिकार उन सभी बच्चों पर लागू होते हैं जो कि 18 वर्ष की आयु से कम हों।

**अनुच्छेद-2**
सभी बच्चे समान हैं। सभी बच्चों के समान अधिकार हैं व किसी के प्रति कोई भेदभाव नहीं होना चाहिये। किसी भी बालक के प्रति उसकी वेशभूषा, रंग, जाति, धर्म या विचारों की वजह से दुर्व्यवहार नहीं किया जाना चाहिये।

**अनुच्छेद-3**
जो लोग बच्चों को प्रभावित करने वाले विषय पर कोई भी निर्णय लेते हैं, उन्हें पहले यह देखना होगा कि बच्चों के लिए क्या श्रेष्ठ है।

**अनुच्छेद-6**
आपको अपने जीवन पर व अपने आपको विकसित करने का पूर्ण अधिकार है।

**अनुच्छेद-7**
आपको अपने नाम व अपनी राष्ट्रीयता का अधिकार है।

**अनुच्छेद-9**
आपको अपने माता–पिता के साथ रहने का अधिकार है जब तक यह आपके लिये हानिकारक न हो। यदि सम्भव हो, तब आपको, अपने माता–पिता द्वारा पालन–पोषण पाने का अधिकार प्राप्त है।

**अनुच्छेद-12-15**
आपको यह अधिकार है कि आप जो सोचते है वह कह सकें। अपकी राय ली जानी चाहिए और आपसे संबन्धित मामलों में आपके विचारों का आदर किया जाना चाहिये। घर पर, स्कूल में, अधिकारियों द्वारा व न्यायालयों में।

**अनुच्छेद-18**
आपके पालन–पोषण व विकास के लिये आपके माता पिता संयुक्त रूप से ज़िम्मेदार हैं। उनको आपका हित सर्वोपरि रखना चाहिये।

**अनुच्छेद-19**
आपको यह अधिकार प्राप्त है कि आप अपने आपको हर प्रकार की हिंसा, अनदेखी, दुराचार से व सुरक्षित रखें। आपके अभिभावकों व संरक्षकों द्वारा आपका शोषण नहीं होना चाहिए।

**अनुच्छेद-20-21**
यदि आपने अपने परिवार को खो दिया है अथवा अनाथ हों, तो आप देखभाल के लिये अधिकृत हैं।

**अनुच्छेद-22**
यदि आपको अपना देश छोड़ने के लिये विवश किया गया है, तो आप अपने नये देश में समान अधिकार पा सकते हैं जैसे कि नये देश के दूसरे बच्चों को प्राप्त है। यदि आप अकेले हैं, तो आप विशेष संरक्षण और सहायता के लिये अधिकृत है। यदि सम्भव हो तो आपको अपने परिवार से मिला देना चाहिये।

**अनुच्छेद-23**
सभी बच्चों को एक अच्छी जिन्दगी का अधिकार प्राप्त है। यदि आप विकलांग हैं, तो आप अतिरिक्त सहायता एवं सहयोग पाने के लिये अधिकृत हैं।

**अनुच्छेद-24**
जब आप अस्वस्थ हों तो आपको हर प्रकार की सहायता व देखभाल पाने का अधिकार है।

**अनुच्छेद-28-29**
आपको स्कूल जाने का व महत्वपूर्ण चीजें सीखने का अधिकार प्राप्त है, जैसे दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना और दूसरी की संस्कृतियों को सम्मान देना।

**अनुच्छेद-30**
प्रत्येक बच्चे के विचारों और भावनाओं की कद्र की जानी चाहिये। यदि आप अल्पसंख्यक की श्रेणी में आते हैं, तो आपको अपनी भाषा, अपनी संस्कृति और अपने धर्म का पूर्ण अधिकार है।

**अनुच्छेद-31**
आपको एक स्वस्थ पर्यावरण में खेलने, विश्राम करने और जीने का अधिकार प्राप्त है।

**अनुच्छेद-32**
आपको ऐसे खतरनाक कार्य के लिये विवश नहीं किया जा सकता जिससे आपकी पढ़ाई छूटती या समाप्त होती हो और जो आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो।

**अनुच्छेद-34**
कोई भी आपको दुराचार अथवा वेश्यावृत्ति के लिए बाध्य नहीं कर सकता। यदि ऐसा दुर्व्यवहार आपके साथ हुआ हो तो आप संरक्षण एवं सहायता पाने के अधिकारी है।

**अनुच्छेद-35**
आपका अपहरण करने या बेचने की किसी को भी आज्ञा नहीं है।

**अनुच्छेद-37**
आपको कोई क्रूर व हानिकारक ढंग से सज़ा नहीं दे सकता है।

**अनुच्छेद-38**
आपको एक सैनिक बनना व किसी सशस्त्र संघर्ष में भाग लेना बाधा नहीं है।

**अनुच्छेद-42**
सभी वयस्कों और बच्चों को बाल सम्मेलन के इन बाल अधिकारों की जानकारी होनी चाहिये। आपको अपने अधिकारों के बारे में जानने का अधिकार है।

**बाल अधिकारों के बारे में और अधिक जानकारी के लिए, सभी बच्चों के शिकायत करने के अधिकार के बारे में तथा नए वैश्विक लक्ष्यों के बारे में जानने के लिए www.worldschildrensprize.org पर पढ़ो।**

## नए वैश्विक लक्ष्य

सितम्बर, 2015 में विश्व नेताओं ने 17 नए वैश्विक लक्ष्यों पर काम करने के लिए सहमति दी। वे सारे क्षेत्रों को सम्मिलित करते हैं, स्वास्थ्य एवं भुखमरी से लेकर शिक्षा एवं पर्यावरण तक। इन लक्ष्यों को 15 वर्षों के भीतर प्राप्त करना है, जिससे तीन विशाल समस्याओं का हल निकाला जा सके: अत्यधिक निर्धनता का सफाया, अन्याय एवं असमानता की समाप्ति, तथा जलवायु परिवर्तन से निपटना। सभी देशों में। सभी लोगों के लिए। तुम लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करने हेतु शामिल हो सकते हो!

**बाल अधिकारों को मनाओ!**
**20 नवम्बर विश्व के सभी बच्चों के लिए खुशियाँ मनाने का दिन है। सन् 1989 में इसी दिन यू.एन. (संयुक्त राज्य) ने 'कन्वेन्शन ऑन दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' को अपनाया था।**

# कैसे हैं विश्व के बच्चे?

**सभी देशों जिन्होंने 'यू.एन कन्वेन्शन ऑन दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' का पालन करना स्वीकार किया है, ने बाल अधिकारों का सम्मान करने का वचन दिया है। फिर भी इन अधिकारों का उल्लंघन होना सभी देशों में साधारण बात है। यहाँ पर कुछ उदाहरण हैं – वहाँ के बच्चे कैसे हैं जहाँ तुम रहते हो?**

## नाम व राष्ट्रीयता

जिस दिन तुम पैदा होते हो उसी दिन से तुम्हें यह अधिकार मिल जाता है कि तुम्हें एक नाम दिया जाए और तुम्हारा अपने देश के एक नागरिक के रूप में पंजीकरण किया जाए।
प्रति वर्ष, 138 मिलियन बच्चे पैदा होते हैं, उनमें से 48 मिलिएन बच्चों का कभी पंजीकरण नहीं होता। उनकी मौजूदगी को प्रमाणित करने वाले कोई दस्तावेज नहीं हैं!

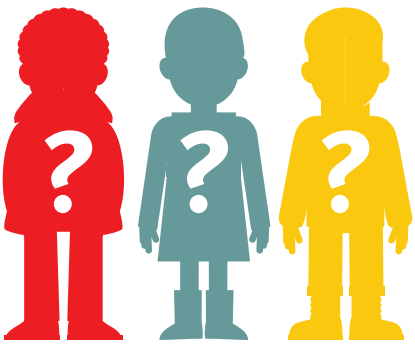

## जीवित रहो और विकसित हो

हर देश जिसने बाल अधिकारों का सम्मान करने का वचन दिया है उसे वो सब कुछ करना होगा जो वो कर सकता है जिससे वहाँ के बच्चे जीवित रह सकें और उनका विकास हो।
पाँच वर्ष की आयु के बच्चों में, 4 बच्चों में से 1 कुपोषण से पीड़ित होता है, और यह उनके विकास को उनकी सारी बची जिन्दगी भर प्रभावित करता है। 20 में से 1 बच्चा (सबसे गरीब देशों में 11 मे से 1 बच्चा) पाँच वर्ष की आयु तक पहुँचने से पहले ही मर जाता हैं, अधिकतर उन कारणोंवश जिन को रोका जा सकता था, जैसे निमोनिया, डायरिया एवं मलेरिया।

200
000 000

## विकलांग बच्चे

यदि तुम्हारे अन्दर कोई विकलांगता है, तब भी तुमको वही अधिकार प्राप्त हैं जो किसी अन्य को। तुमको सहारा लेने का अधिकार है जिससे तुम समाज में एक सक्रिय भूमिका अदा कर सको। विश्व में विकलांग बच्चे सबसे बेसहारा लोगों में से हैं। अनेको देशों में उनको स्कूल नहीं जाने दिया जाता। अनेकों को अन्य बच्चों की अपेक्षा घटिया समझा जाता है, और उनको छिपा कर रखा जाता है।
विश्व में लगभग 200 मिलिएन विकलांग बच्चे हैं।

## स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य सेवा

तुम्हें अच्छा स्वास्थ्य, एवं सहायता मिलने का अधिकार है, यदि तुम बीमार हो। भोजन, शुद्ध जल एवं अच्छी स्वच्छता की कमी अनेकों बच्चों के स्वास्थ्य को प्रभावित करती है।
प्रति दिन, पाँच वर्ष से कम आयु के 16,000 बच्चे मर जाते हैं। गरीब बच्चे बहुत कम डाक्टर के पास जाते हैं, विशेषतः यदि वे लड़कियाँ होती हैं। प्रति वर्ष, 2 मिलियन बच्चे सामान्य बच्चों की बीमारियों के कारण मरते हैं जो टीकाकरण द्वारा रोकी जा सकती थीं, क्योंकि 6 में से 1 बच्चे का टीकाकरण कभी नहीं होता। मलेरिया के कारण, हर रोज, पाँच वर्ष से कम आयु के 1,500 बच्चे (लगभग 5,00,000 बच्चे प्रति वर्ष) मरते हैं। केवल 10 में से 3 बच्चों को ही मलेरिया की चिकित्सा प्राप्त हो पाती है, और विश्व के सबसे गरीब मलेरिया से पीड़ित देशों में सिर्फ 10 में से 4 बच्चे ही मच्छरदानी में सो पाते हैं।

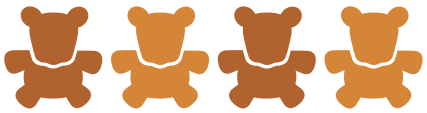

## हानिकारक बाल मजदूरी

तुमको आर्थिक शोषण एवं उस कार्य से से सुरक्षित रहने का अधिकार है जो तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है अथवा जो तुमको स्कूल जाने से रोकता है। 12 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए सभी कार्य वर्जित हैं।
लगभग 264 मिलियन बच्चे काम करते हैं, और उनमें से अधिकतर बच्चे वो काम करते हैं जो उनकी सुरक्षा, स्वास्थ्य, स्वाभिमान एवं शिक्षा के लिए सीधा हानिकारक होता है। लगभग 5.5 मिलियन बच्चों को जबरदस्ती सबसे घटिया प्रकार की बाल मजदूरी करनी पड़ती है, ऋण मजदूरों की तरह, बाल सैनिकों की तरह अथवा बाल यौन शोषण व्यापार के शिकार। प्रति वर्ष, आधुनिक समय में 1.2 मिलियन बच्चों की दास व्यापार में 'तस्करी' होती है।

# 100 MILLION

## सड़क पर रहने वाले बच्चे

तुमको एक सुरक्षित वातावरण में रहने का अधिकार है। सभी बच्चों को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और एक अच्छे स्तर की जिन्दगी बिताने का अधिकार है।

लगभग 100 मिलियन बच्चे सड़को पर रहते हैं। अनेकों के लिए, सड़क ही उनका घर है। अन्य बच्चे, सड़कों पर ही काम करते हैं और वहीं दिन गुजारते हैं, पर रात को अपने परिवारों के साथ रहने के लिये आते हैं।

## अल्पसंख्यक बच्चे

जो बच्चे अल्पसंख्यक समूहों के हैं अथवा स्वदेशी लोग, उनको अपनी भाषा, संस्कृति एवं धर्म का अधिकार है। उदाहरण के लिए, स्वदेशी लोगों में स्थानीय अमरीकी, आदिवासी आस्ट्रेलियन एव उत्तरी यूरोप के सामी लोग शामिल हैं।

स्वदेशी तथा अल्पसंख्यक बच्चों के अधिकारों का अक्सर उल्लंघन किया जाता है। उनकी भाषाओं का सम्मान नहीं किया जाता और उनको धमकाया जाता है अथवा उनसे मतभेद किया जाता है। अनेकों बच्चों को चिकित्सा सेवा उपलब्ध नहीं है।

## एक घर, वस्त्र, भोजन एवं सुरक्षा

तुमको एक घर, भोजन, वस्त्र, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा एवं सुरक्षा उपलब्ध होने का अधिकार है।

900 मिलियन से अधिक लोग, या 7 लोग में से 1 अत्यधिक गरीबी में रहते हैं। इनमें से लगभग आधे लोग बच्चे हैं।

## अपराध और दण्ड

बच्चों को केवल एक आखिरी विकल्प समझते हुए ही जेल में बन्दी बनाना चाहिए और कम से कम समय तक के लिए। किसी भी बच्चे को उत्पीड़न एवं अन्य निर्मम व्यवहार नहीं सहने देना चाहिए। जिन बच्चों ने अपराध किये हों उनकी देखभाल और सहायता करनी चाहिए। बच्चों को आजीवन कारावास अथवा मृत्यु दण्ड नहीं मिलना चाहिए।

विश्व में कम से कम 1 मिलियन बच्चे जेलों में बन्दी हैं। बन्दी बच्चों के साथ अक्सर बुरा व्यवहार किया जाता है।

## हिंसा

तुम्हें सब तरह की हिंसा, लापरवाही, दुर्व्यवहार एवं दुराचार से सुरक्षा मिलने का अधिकार है। 3 बच्चों में से 1 को किसी न किसी रूप में दुर्व्यवहार भोगना पड़ता है। विश्व में, प्रति वर्ष, 5 में से 4 बच्चों, 2 से 14 वर्ष के बीच आयु वालों को, अपने घर पर भौतिक दण्ड एवं हिंसा को भोगना पड़ता है। अनेकों देश स्कूलों में दैहिक दण्ड की अनुमति देते हैं। केवल 48 देशों ने बच्चो के लिये सभी प्रकार के दैहिक दण्डों पर रोक लगा दी है।

## युद्ध एवं शरणार्थी

तुमको युद्ध के समय अथवा यदि तुम शरणार्थी हो, सुरक्षा एवं देखरेख मिलने का अधिकार है। संघर्ष से प्रभावित बच्चों एवं शरणार्थी बच्चों के वही अधिकार हैं जो अन्य बच्चों के।

विश्व में, लगभग 30 मिलियन बच्चे शरणार्थी हैं –यह विश्व के सारे शरणाथियों के आधे से अधिक है। पिछले 10 वर्षों में कम से कम 2 मिलियन बच्चे युद्ध में मारे जा चुके हैं। 6 मिलियन बच्चे गम्भीर रूप से घायल हो चूके हैं। 10 मिलियन बच्चों को गम्भीर मानसिक हानि पहुँची हैं। 1 मिलियन बच्चों ने अपने माता–पिता को खो दिया है या उनसे अलग हो गये हैं। लगभग 2,50,000 बच्चों को सैनिकों, वाहकों अथवा खानों की सफाई करने के लिए इस्तेमाल किया जा चुका है (1000 से अधिक बच्चे हर साल खानों के कारण मर जाते हैं या घायल हो जाते हैं।)

## स्कूल और शिक्षा

तुमको स्कूल जाने का अधिकार है। हर कोई के लिए प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूलों में जाना निःशुल्क होना चाहिए।

विश्व में 10 में 9 से अधिक बच्चे स्कूल जाते हैं, लेकिन अभी भी 58 मिलियन बच्चे हैं जिन्हें किसी भी प्रकार की शिक्षा नहीं मिलती है। इनमें से आधी से अधिक लड़कियाँ हैं।

## तुम्हारी आवाज़ सुनी जानी चाहिए!

**तुमको इसका अधिकार है कि तुम कोई मुद्द पर जो तुमको प्रभावित करता हो, वो कहो जो तुम सोचते हो। वयस्कों को अपना निर्णय लेने से पहले बच्चों की राय ले लेनी चाहिए, जो उनके सबसे अच्छे हित में हों।**

**क्या तुम्हारे देश में और विश्व में आज इसी प्रकार की स्थिति है? तुम्हें और विश्व के सारे बच्चों को ही सबसे बेहतर पता है!**

# प्रजातंत्र की ओर जाने वाला मार्ग

## प्रजातंत्र क्या है?

क्या तुम और तुम्हारे मित्रों के कुछ मुद्दों पर समान राय है लेकिन अन्य मुद्दों पर बिल्कुल भिन्न विचार हैं? शायद तुम एक दूसरे की सुन सकते हो और उस मुद्दे पर वार्ता कर सकते हो जब तक तुमको एक ऐसा समाधान नहीं मिल जाता जिसे हर कोई स्वीकार करे। इस अवस्था में तुमने एक समझौता कर लिया है और एक आम सहम. ति पर पहुँच गये हो। कभी तुम सहमत होगे और कभी असमहत। तब बहुमत – सबसे बड़ा समूह – निर्णय लेगा। इसे प्रजातंत्र कहते हैं।

प्रजातंत्र में, सब लोगों का समान मूल्य होना चाहिए और समान अधिकार। हर कोई अपनी राय व्यक्त कर सके एवं निर्णयों को प्रभावित कर सके। एक प्रजातंत्र का विपरीत एक तानाशाही है। तब केवल एक या कुछ ही लोग सब बातों का निर्णय लेते हैं और किसी को विरोध करने की अनुमति नहीं होती। एक प्रजातंत्र में हर किसी को अपनी आवाजें सुनवाने का अधिकार होना चाहिए। लोगों को समझौता करना पड़ता है, और मतदान द्वारा मुद्दों पर निर्णय लेना होता है। एक सीधा प्रजातंत्र होता है और एक प्रतिनिधित्व प्रजातंत्र होता है। सीधे प्रजातंत्र में तुम किसी विशेष मुद्दे पर अपना मतदान देते हो, उदाहरण के लिए, विश्व मतदान, जिसमें बच्चे निर्णय लेते हैं कि किसको वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ दिया जाए। एक अन्य उदाहरण है जब कोई देश एक रेफरेन्डम (जनमत संग्रह) आयोजित करता है। अधिकतर लोकतांत्रिक देशों में प्रतिनिधित्व प्रजातंत्र का शासन होता है। इसमें नाग. रिक उन लोगों का चयन करते हैं जिन्हें वो अपना प्रतिनिधि बनाना चाहते हैं – राजनी. तिज्ञों – जो देश पर उस प्रकार से शासन करें जैसा लोग चाहते हैं।

**प्रति वर्ष वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम एक प्रजातंत्रिक विश्व मतदान से समाप्त होता है जिसके हकदार एवं आयोजक तुम ही हो! आओ तुम्हें समय की एक ऐसी यात्रा पर ले चलते हैं जिसमें समय के आधार पर प्रजातंत्र के विकास का उल्लेख है।**

## युगों से होते हुए

### संयुक्त निर्णय

युगान्तरों से लोग मिलकर निर्णय लेने के लिए एकत्रित होते आये हैं। निर्णयों को समूहों, जातियों अथवा गाँवों में लिया जाता है, शायद शिकार करने या कृषि पर। कुछ समूहों के संस्कार होते हैं जिनकी सहायता से इस बात पर वार्ता की जाती है कि समूह के लिए सबसे अच्छा क्या होगा और फिर आपस मिले–जुले फैसले किये जाते हैं। कभी–कभी एक वस्तु, जैसे एक पर को सबके बीच दिया जाता है, और जो भी उसको पकड़े होता है उसे बोलने दिया जाता है। क्यों न इसको अपनी कक्षा में करके देखो?

### प्रजातंत्र शब्द की उत्पत्ति

सन् 508 बी.सी.ई. में प्रजातंत्र शब्द का जन्म होता है, ग्रीक शब्दों डेमोस (लोग) और क्रैटीम (अधिकार या शासन)। ग्रीक के नागरिकों को एक सीढ़ी चढ़नी होती थी और महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपनी राय देनी होती थी। यदि वो किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पाते थे, तो लोग अपने हाथों को उठाकर उस मुद्दे पर अपना मतदान देते थे। लेकिन इस समय केवल पुरुषों को ही मतदान देने का अधि काार है। महिलाओं, दासों एवं विदेशियों को नागरिक नहीं समझा जाता है और उन्हें मतदान नहीं देने दिया जाता।

### 1700 ई० में निरंकुश शासक

1700 ई० में यूरोप के अधिकतर देशों में, उदाहरण के लिए, तानाशाही करने वाले राजाओं एवं महाराजाओं का शासन था, जो लोगों की इच्छाओं की परवाह नहीं करते थे। लेकिन कुछ विचारक प्राचीन विचारों में रुचि लेने लगते हैं कि सभी लोग स्वतंत्र और बराबर पैदा हुए हैं, जिनके समान अधिकार हैं। क्यों समाज के कुछ समूहों को अन्य समूहों की अपेक्षा अधिक शक्ति और दौलत मिले? अन्य लोग शासकों के दबाव की निन्दा करते हैं और उनका मानना है कि यदि लोगों में और ज्ञान होगा तो वो समाज में हो रहे अन्याय को समझेंगे और उसका विरोध करेंगे।

## अमीरों की आवाज़

सन् 1789 वो वर्ष भी है जब फ्रांसीसी आन्दोलन शुरू होता है। उसके पीछे के विचार और मांगें यूरोप भर में फैलते हैं और समाज को प्रभावित करते हैं। फिर भी, केवल पुरुषों को नागरिक समझा जाता है। इसके अतिरिक्त, केवल जिन पुरुषों को मतदान देने और राजनीतिज्ञ बनने की अनुमति होती है वो अमीर लोग होते हैं जिनके पास स्वयं की जमीन और इमारतें हैं।

1789

## कोई महिला अथवा दास नहीं

सन् 1789 में संयुक्त राज्य अमरीका का पहला संविधान लिखा जाता है। यह प्रजातंत्र के इतिहास में एक महत्वपूर्ण कदम है। वो कहता है कि लोगों को समाज में लिये गये निर्णयों पर अपनी राय देने का अधिकार मिलना चाहिए, और यह कि लोगों को वो सब कुछ लिखने और सोचने का अधिकार होना चाहिए जो वे चाहते हैं। लेकिन यह संविधान महिलाओं एवं दासों पर लागू नहीं होता है।

## प्रथम गोपनीय मतदान

सन् 1856 में सबसे पहला गोपनीय मतदान तसमानिया, ऑस्ट्रलिया में आयोजित किया गया, जिसमें मत पत्रों का प्रयोग किया गया जिन पर प्रज्याशियों के नाम छपे हुए थे।

1856

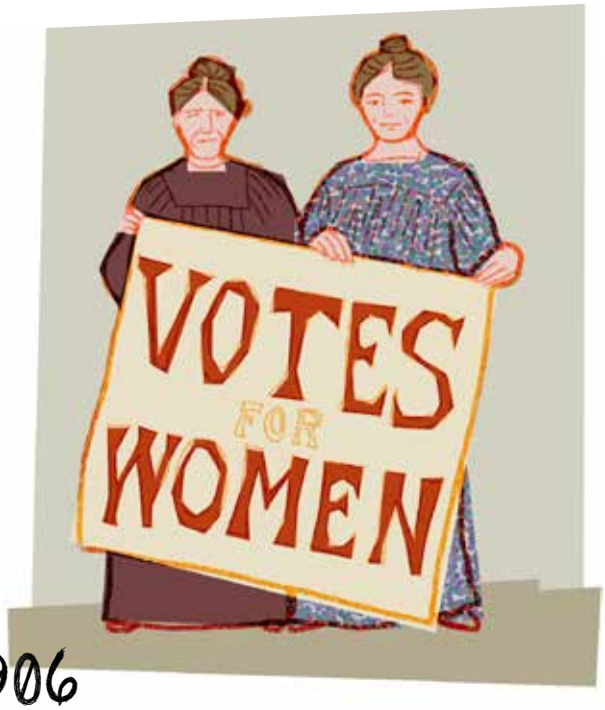


1906
1921
1945

## महिलाएँ मतदान देने का अधिकार मांगती हैं

1800 ई0 के अन्त में, अधिक और अधिक महिलायें राजनीतिज्ञ चुनाव में अपना मतदान देने का अधिकार मांगने लगती हैं। सन् 1906 में, फिनलैण्ड यूरोप का सबसे पहला देश है जो महिलाओं को मतदान देने की अनुमति देता हे। इसके बाद सन् 1921 में, स्वीडन और यू.के. भी ऐसा ही करते हैं। यूरोप के अधिकतर देशों, अफ्रीका एवं एशिया में महलाओं को 1945 के द्वितीय महायुद्ध के बाद ही मतदान नहीं देने दिया गया और कहीं कहीं पर उसके बाद भी मतदान नहीं देने दिया गया।

1947

## विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र

सन् 1947 में भारत ब्रिटिश साम्राज्य से स्वयं को मुक्त कराता है और विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र बन जाता है। आजादी की लड़ाई का नेतृत्व महात्मा गांधी करते हैं, जो बिना हिंसा किये उत्पीड़न को रोकने में विश्वास करते हैं – अहिंसा।

## अफ्रीका में पहला प्रजातंत्र

सन् 1957 में दक्षिण अफ्रीका में घाना अपने उपनिवेशकीय शासक ग्रेट ब्रिटेन से आज़ाद हो जाता है। क्वामें नकरुमा देश का पहला नेता बनता है। यूरोप के अधिकतर देशों, अफ्रीका, एशिया एवं लैटिन अमरीका का उपनिवेश सैंकड़ों वर्ष पहले शुरू हुआ था। यूरोप की महान शक्तियों ने अपने सैनिकों एवं खोजकर्ताओं को भेजा, जिससे वो भूमि पर कब्जा करें, प्राकृतिक संस्साधनों को चुरायें, और लोगों को दासों में परिवर्तित करें।

1957

TEXT: CARMILLA FLOYD & MAGNUS BERGMAR ILLUSTRATIONS: JAN-ÅKE WINQVIST

1955

## अमरीका में समान अधिकार

सन् 1955 में, रोज़ा पार्क्स नामक एक महिला, जो कि काली है, एक सफेद आदमी को अपनी बस की सीट देने से इन्कार कर देती है। रोज़ा पर जुरमाना लग जाता है क्योंकि दक्षिण अमरीका में काले लोगों को वही अधिकार नहीं मिलते हैं जो सफेद लोगों को मिलते हैं। उनको वही स्कूलों में नहीं जाने दिया जाता है जहाँ सफेद बच्चे जाते हैं, और कभी कभी उनको मतदान नहीं देने दिया जाता। सार्वजनिक अधिकारों के निपुण मार्टिन लूथर किंग उस बस कम्पनी का बहिष्कार शुरू करता है। यह सारे संयुक्त राज्य अमरीका में, जातिवाद के विरुद्व एवं स्वतंत्रता तथा समान अधिकारों के लिए एक बड़े विरोधी आन्दोलन की शुरूआत कर देता है।

2010

## 'दि अरब स्प्रिंग'

सन् 2010 में, टूनीशिया में, एक गरीब सब्ज़ी वाले के ठेले को पुलिस ने ज़ब्त कर लिया। वो स्वयं को आग लगा देता है, और जब यह समाचार फैलता है, तो हज़ारों लोग सड़कों पर विरोध में नारे लगाने के लिये बाहर निकल आ जाते हैं। वो तानाशाही करने वाले देश के शासक बेन अली का तख्तापलट करने में कामयाब होते हैं। लोग प्रोत्साहित होते हैं और ईजिप्ट एवं लिबिया की तानाशाही सरकारें भी सामूहिक विरोधों द्वारा गिरा दी जाती हैं। मिडिल ईस्ट में प्रजातंत्र के लिये हो रहे इस आन्दोलन को 'दि अरब स्प्रिंग' कहा जाता है।

## तानाशाही अभी भी है

आज, विश्व के कुछ देशों पर अभी भी तानाशाही करने वालों का राज है, पर अब भी अनेकों प्रजातांत्रिक देशों में मानवाधिकारों का उल्लंघन किया जाता है। बाल अधिकारों का उल्लंघन सभी देशों में किया जाता है। तानाशाही वाले देशों में लागों को मतदान देने और अपने विचारों को व्यक्त करने का अधिकार नहीं मिलता – अपने राय देने की इजाज़त। शासक हर बात पर निर्णय लेते हैं, और अकसर धन एवं जायदाद को स्वयं तथा अपने परिवारों के लिये ज़ब्त कर लेते हैं।

1994

## दक्षिण अफ्रीका में हर किसी को मतदान देने का अधिकार

सन् 1994 में, नेलसन मण्डेला दक्षिण अफ्रीका का प्रथम प्रजातंत्रिक चुनाव द्वारा राष्ट्रपति बन जाता है। वो जेल में 27 वर्षों तक रहा है क्योंकि उसने देश की जातिवाद रंगभेद प्रणाली के विरुद्व संघर्ष किया है। मण्डेला के चुनाव में यह पहली बार हुआ है कि सभी दक्षिण अफ्रीकी नागरिक बराबर के स्तर पर किसी चुनाव में भाग ले सके हैं।

## बर्मा में प्रजातंत्र की ओर

सन् 2010 में औंग सैन सूई कई को बर्मा की तानाशाही से मुक्त कराया जाता है जब वो 23 वर्षों बन्दी रही है जिसमें से 15 वर्ष उसने ग्रह बन्दी में गुज़ारे हैं क्योंकि उसने बर्मा में प्रजातंत्र लाने के लिये बहादुरी से संघर्ष किया है। सन् 2011 में वो वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ फाउण्डेशन की एक समर्थक बन जाती है।

2010

2016/2017

## बच्चों का प्रजातंत्रिक विश्व मतदान

सन् 2016/2017 में वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम सोलहवीं बार आयेजित किया जाएगा। अब तक, इस कार्यक्रम के ज़रिये, 38,4 मिलियन से अधिक बच्चों ने अपने अधिकारों एवं प्रजातंत्र के बारे में जानकारी प्राप्त कर ली है – इस ज्ञान को सीखना हर नई पीड़ी के लिए आवश्यक है। यह तुमको और तुम्हारे मित्रों को अपनी ज़िन्दगी बिताने में सहायक होगा और तुम्हारा देश एक बेहतर स्थान बनेगा जहाँ प्रजातंत्र सशक्त होगा और मानवाधिकारों का सम्मान किया जाएगा।

जब तुमने बाल अधिकारों के गारे में एवं पुरस्कृत प्रत्याशियों के कार्य के बारे में सब कुछ जान लिया हो, तब तुम अपने प्रजातंत्रिक विश्व मतदान की तैयारी करना शुरू कर सकते हो। तुम्हारा मत ही तुम्हारा निर्णय है। कोई नहीं, न तुम्हारे मित्रों और न तुम्हारे अधापकों को तुम्हें बताना चाहिए कि तुम अपना मतदान किसे देना है। जिस व्यक्ति को सबसे अधिक मतदान मिलेंगे – लोगों का सबसे बड़ा समूह – उसी को सन् 2016/2017 का 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज फॉर दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' मिलेगा!

# विश्व मतदान का समय

**विश्व मतदान के माध्यम से, तुम यह निर्णय लेते हो कि किसको 'वर्ल्डस चिल्ड्रेन्स प्राइज़ फॉर दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड्' मिलेगा।**

तुमको विश्व मतदान में अपना मतदान देने का अधिकार है जब तक तुम 18 वर्ष के नहीं होते।

जैसे ही तुम इस वर्ष के वर्ल्डस चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम शुरू करते हो, तब यह महत्वपूर्ण है कि तुम अपने विश्व मतदान दिवस की तिथि निर्धारित कर लो, जिससे तुमको पर्याप्त समय मिल सके, कई सप्ताह या महीने, जिससे तुम नामित प्रत्याशियों के बारे में जान सको और बाल अधिकारों के बारे में चर्चा कर सको जहाँ तुम रहते हो और सारे विश्व में।

तुम्हारे निर्णय को कोई और न प्रभावित कर सके – न तुम्हारे मित्र, न ही तुम्हारे अध्यापक, न तुम्हारे माता–पिता। किसी को यह नहीं पता लगना चाहिए कि तुमने किसको अपना मतदान दिया है, जब तक तुम स्वयं उनको न बताओ।

हर किसी का नाम जिसे मतदान देने का अधिकार है, उसका नाम निर्वाचन रजिस्टर में होना चाहिए, और उनके नामों को इस सूची में से चिन्हित कर काट देना चाहिए जब वो व्यक्ति अपना मत पत्र प्राप्त करता है, या फिर जब वह मतदान पेटी में अपना मतदान देता है।

### अपने दिवस पर लोगों को आमंत्रित करो

तुम स्थानीय मीडिया, राजनीतिज्ञों एवं अभिभावकों को अपने विश्व मतदान दिवस का अनुभव करने के लिए आमंत्रित करा सकते हो!

## काल्पनिक मतदान पेटियाँ

ज़िम्बाबवे में मटका

ब्राज़ील में बुने हुए पत्ते

घाना में पात्र+कागज़

भारत में डिब्बा

## महत्वपूर्ण मतदान कक्ष

**अपने स्वयं के मतदान कक्ष बनाओ, अथवा कुछ कक्ष वयस्क चुनावों से मांग लो।**

## मुख्य लोगों को नियुक्त करो

- अध्यक्षता करने वाले अधिकारी निर्वा. चन रजिस्टर में नामों को चिन्हित कर देते हैं और साथ ही मत पत्र दे देते हैं।
- निर्वाचन पर्यवेक्षक यह निश्चित करते हैं कि मतदान, स्याही का निशान एवं मत गणना सही की जाए।
- मतदान काउन्टर्स मतों की गणना करते हैं।

## पेन्ट जो बेईमानी रोकता है

**यह निश्चित करने के लिए कि कोई दोबारा अपना न दे सके, तुम उन सब पर एक निशान बनाते जाओ जिन्होंने मतदान दिया है, उदाहरण के लिए, उनके अंगूठों पर स्याही लगा कर, उनके नाखून पर पेन्ट लगा कर अथवा उनके हाथ या चेहरे पर एक एक रेखा खींच कर। ऐसी स्याही का प्रयोग करो जो आसानी से नहीं धुल पाये!**

**कक्ष में एक समय पर एक ही व्यक्ति प्रवेश करे, जिससे उसे कोई देख न सके कि वो अपना मतदान किसे दे रहा है।**

**इन सभी तीन प्रत्याशियों के लिए अपने परिणामों को भेजना मत भूलो!**

पृष्ठों 21–49 पर तुम बहुत सारे विभिन्न देशों के विश्व मतदान दिवसों को देख सकते हो।

# भूकम्प फुलमाया के विश्व मतदान को नहीं रोक सका

"आज मैंने अपने विश्व मतदान में मतदान दिया और यह मुझे महत्वपूर्ण लगा। इसके प्रत्याशी हम बच्चों के लिए लड़ते हैं। उनको मतदान देकर, मैं व्यक्त कर रही हूँ कि वो जो कार्य करते हैं वो महत्वपूर्ण हैं, और यह कि मैं उनके कार्य का समर्थन करती हूँ," फुलमाया कहती है।

**"मैं बहुत डर गई जब भूकम्प आना शुरू हुआ – मुझे लगा कि मैं मरने वाली हूँ। हमारा घर और मेरा स्कूल पूरी तरह नष्ट हो गये। एक वर्ष पहले, बाल अधिकार राजदूत हमारे स्कूल आये थे। उन्होंने हमें ज्ञान एवं प्रोत्साहन दिया, और हमको लड़कियों के अधिकारों के बारे में बताया एवं कैसे लड़कियाँ बेवकूफ बन जाती हैं और उन्हें बेच दिया जाता है। भूकम्प के बाद मैं चिंतित थी कि हम फिर से वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ में भाग नहीं ले पाएंगे," फुलमाया, 12 नेपाल के गाँव गैरीबिसायुना में कहती है।**

अगर कोई विषय है जिसको फुलमाया जानती है कि यहाँ उसे और सभी दूसरे बच्चों को गाँव में जानकारी की आवश्यकता है, तो वो हैं लड़कियों के अधिकार।

''यहाँ पर लड़कियों को जबरदस्ती लड़कों की अपेक्षा कहीं अधिक काम करना पड़ता है। मैं स्कूल से पहले एवं स्कूल के बाद कई घन्टे काम करती हूँ। मैं प्रातः जल्दी उठ जाती हूँ और पशुओं को चारा देने के बाद स्टोव जलाती हूँ फिर नाश्ता तैयार करती हूँ। स्कूल के बाद मैं पानी भर कर लाती हूँ, कपड़े धोती हूँ, भोजन बनाती हूँ और बर्तन मांझती हूँ। यदि सोने से पहले मेरे पास समय बचता है तो मैं अपने स्कूल का गृहकार्य करती हूँ। मुझे लड़कों की तरह खेलने के लिये कभी समय नहीं मिलता,'' फुलमाया बताती है।

फुलमाया का घर भूकम्प के दूसरे दिन ऐसा लगता था – केवल एक बड़े मलबे का ढेर। फुलमाया अब भी पत्थरों को हटाने में सहायता कर रही है।

''लेकिन फिर भी, मैं भाग्यवान हूँ। अनेकों लड़कियाँ बिल्कुल भी स्कूल नहीं जा पातीं, जबकि उनके भाई जाते हैं। उनके माता–पिता अपनी बेटियों का खर्चा नहीं उठाना चाहते, क्योंकि उनकी योजना होती है कि लड़कियों की जल्दी शादी कर दी जाए और वो अपने पति के परिवार में चली जाएँ। कुछ लड़कियों का विवाह तो तभी कर दिया जाता है जब वे स्वयं बच्चियाँ होती हैं।''

फुलमाया को हमेशा से लगता था कि लड़कों और लड़कियों के साथ अलग–अलग बर्ताव करना गलत है। लेकिन उसको यह नहीं पता था कि यह उसके अधिकारों का एक उल्लंघन है। तब तक नहीं जब तक बाल अधिकार राजदूत वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ को स्कूल में नहीं लाये।

**बाल अधिकार राजदूत**

''उन्होंने हमें बताया कि लड़के एवं लड़कियाँ समान हैं, और यह कि लड़कियों के वही अधिकार हैं जो लड़कों के। और यह कि हमें भी एक अच्छी शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है और हमारे साथ अच्छा व्यवहार किया जाना चाहिए और हमारी इच्छा के विरुद्ध हमारा विवाह नहीं करना चाहिए। यह जानकर मुझे सचमुच खुशी मिली!''

जो बाल अधिकार राजदूत फुलमाया के गाँव में आये थे वो एक घर में रहते हैं जिसका संचालन माइटी नेपाल करती है, एक संस्था जो बाल यौन व्यापार के विरुद्ध संघर्ष करती है।

फुलमाया और उसके स्कूल की मित्रों को पता चला कि लगभग बारह हजार लड़कियाँ नेपाल से प्रति वर्ष इसी तरह गायब हो जाती हैं, अधिकतर भारत को। वो बड़ी संख्या में उपने घरों में वापस लौटकर कभी नहीं आईं।

''यह बहुत खराब है, इसे रोकना पड़ेगा! जब मैं राजदूतों से मिली उसी समय मुझे लग गया कि मैं भी एक बाल अधिकार राजदूत बनना चाहती हूँ, यात्रा करके स्कूलों में जाना और लड़कियों के अधिकारों एवं नेपाल में बाल दासता के व्यापार के विरुद्ध संघर्ष करना।''

**भूकम्प आया**

फिर एक घटना घटी जिसने फुलमाया के राजदूत बनने के सपने पर विराम लगा दिया!

''शनिवार का दिन था। मैं अपनी माँ और एक मित्र के साथ बैठी दोपहर का भोजन कर रही थी तभी अचानक सब कुछ हिलना शुरू हो गया। गिलास और प्लेटें फर्श पर गिरे। अलमारियाँ और ताख गिर गये, टी.वी. 'गिरा'... सब कुछ चकनाचूर हो गया। मैं डर गई और मैंने सोचा कि हम सब मर जाएंगे। मेरी माँ ज़ोर से कह रही थी कि हम लोग बाहर निकल जाएं, बिल्कुल बाहर! और हम लोग जैसे ही बाहर निकले तभी पूरा घर ढा गया और एक मलबे के ढेर में बदल गया। सारे पड़ोसी अपने घर के बाहर भागते हुए निकले क्योंकि वो भी ढा गया।

''यह बिल्कुल वास्तविक नहीं लग रहा था। हर कोई रो रहा था और चीख रहा था। हमने एक दूसरे को गले लगाया और उसे सम्भालने की कोशिश की। मेरा परिवार भाग्यवान रहा, क्योंकि सब लोग बाहर निकल पाये, लेकिन मेरे मित्र के दादाजी बाहर नहीं निकल पाये और उससे पहले ही उनका घर उनके ऊपर गिर पड़ा। वो मर गये। नेपाल में अनेकों लोग भूकम्प से मर गये।''

फुलमाया और उसके पड़ोसियों को भूकम्प के बाद पहली बार सड़क पर सोना पड़ा।

''हम सब पन्द्रह लोग थे, जमीन पर दुबके हुए पड़े थे। हमें अपने कम्बलों को आपस में बांटना पड़ा। हर कोई दुखी था और रो रहा था। कुछ लोगों ने कहा कि यहाँ पर शेर आयेंगे और हमको असुरक्षित पड़ा पायेंगे। मैं इतनी डरी हुई थी।''

**फुलमाया अपने स्कूल जा रही है जबकि उसकी माँ घर के सामने को साफ करती है जहाँ पर टीन की छत परिवार का नया घर बनी रहेगी।**

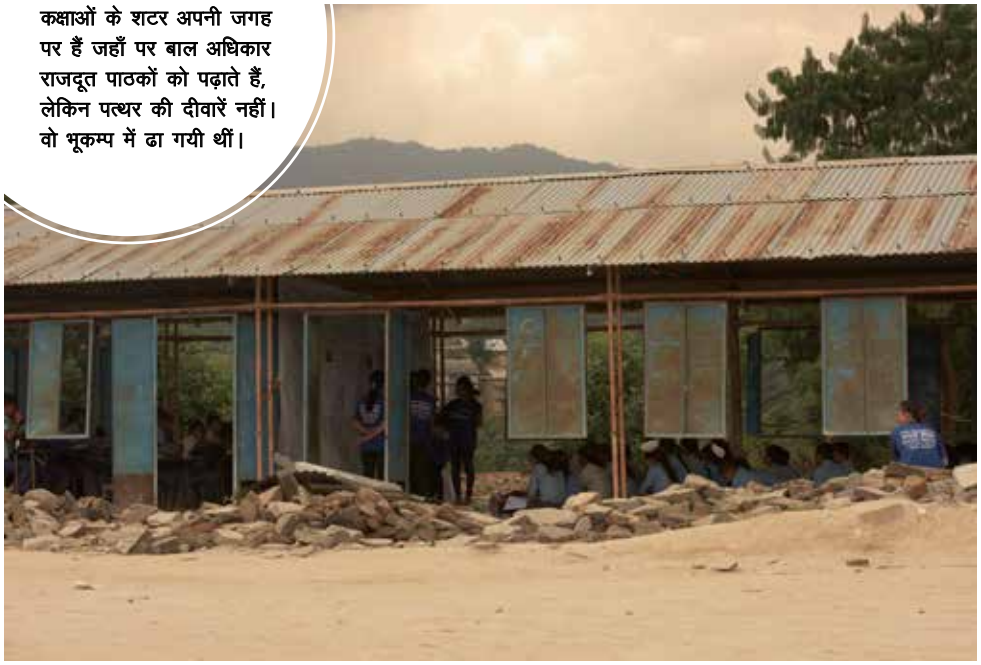

कक्षाओं के शटर अपनी जगह पर हैं जहाँ पर बाल अधिकार राजदूत पाठकों को पढ़ाते हैं, लेकिन पत्थर की दीवारें नहीं। वो भूकम्प में ढा गयी थीं।

## डब्लू.सी.पी. पुरस्कार विजेता माइटी

**सन् 2002 में, माइटी नेपाल को, नेपाली लड़कियों, जिनको दासियों की तरह अधिकतर भारत में बेच दिया जाता है, की तस्करी के विरुद्ध संघर्ष करने के लिये 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़' दिया गया। माइटी गरीब लड़कियों को जानकारी एवं शिक्षा देकर उन्हें बेवकूफ बनाकर कोठों पर बेचने वालो से रोकती है। माइटी उन लड़कियों का समर्थन और देखभाल करती है जो दासियाँ रही हैं, और उनके पास सीमा सुरक्षाकर्मी हैं जो तस्करों को रोकते हैं जब वो नेपाल के बाहर लड़कियों को भेजने का प्रयास करते हैं।**

### स्कूल नष्ट हो गया

फुलमाया का स्कूल भी नष्ट हो गया। दीवारें गिर गईं थीं और मेजें, पुस्तकें, कम्प्यूटर एवं सारे अन्य संसाधन मलबे में दब गये थे।

''मैं डर गई कि मुझे कभी फिर से स्कूल जाने को नहीं मिलेगा।''

प्रारम्भ में, गाँव के लोगों को पर्याप्त भोजन के लिये संघर्ष करना पड़ा, क्योंकि सबके भोजन के गोदाम मलबे में दब गए थे और खेतों में मिट्टी की कीचड़ थी।

''हम भूखे थे, और हमें सब कुछ साफ करना था। हमने टीन एवं प्लास्टिक से एक छोटी झोंपड़ी बनाई, और हम अभी भी उसी में रहते हैं। वो ठीक है, लेकिन मुझे असली में वो अच्छी नहीं लगती। उसमें घुटन होती है और हमको फर्श पर सोना पड़ता है। इस समय बरसात का मौसम है और उसकी छत चूती है, अतः सब कुछ भीग जाता है। मैं अपने नये घर के तैयार होने के लिये नहीं रुक सकती।''

### वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़

जब फुलमाया का परिवार और अन्य सभी लोग अपने खण्डर वाले घरों की सफाई कर रहे थे, तब वे यह भी कोशिश कर रहे थे कि गाँव का स्कूल फिर से चालू हो जाए। एक महीने के कठिन कार्य के बाद, अन्त में विद्यार्थी फिर से स्कूल जा सके।

''मुझे अपने सारे मित्रों को देखना और फिर से पढ़ाई शुरू करना बहुत अच्छा लगा। भूकम्प से पहले हमारा स्कूल सचमुच सुन्दर था, लेकिन अब वो बिल्कुल वैसा नहीं है। उसकी बाहरी दीवारें खत्म हो गई हैं, और उसमें रखी पुस्तकें एवं बहुत सारी अन्य वस्तुएँ भी। लेकिन फिर भी हमें वापस आना बहुत अच्छा लगता है।''

फुलमाया बहुत खुशी हुई जब उसको पता चला कि वो और स्कूल के सारे बच्चों का 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़' में भाग लेना जारी रहेगा।

''भूकम्प के पश्चात् मुझे डर था कि मैं फिर कभी बाल अधिकार राजदूतों को नहीं देख पाऊँगी। हम इस बात से भी डरे हुए थे कि हम फिर कभी 'दि ग्लोब'

फुलमाया अपने झोंपड़े के फर्श पर बैठकर 'दि ग्लोब' को पढ़ती है जो उसके परिवार का अस्थायी आवास है।

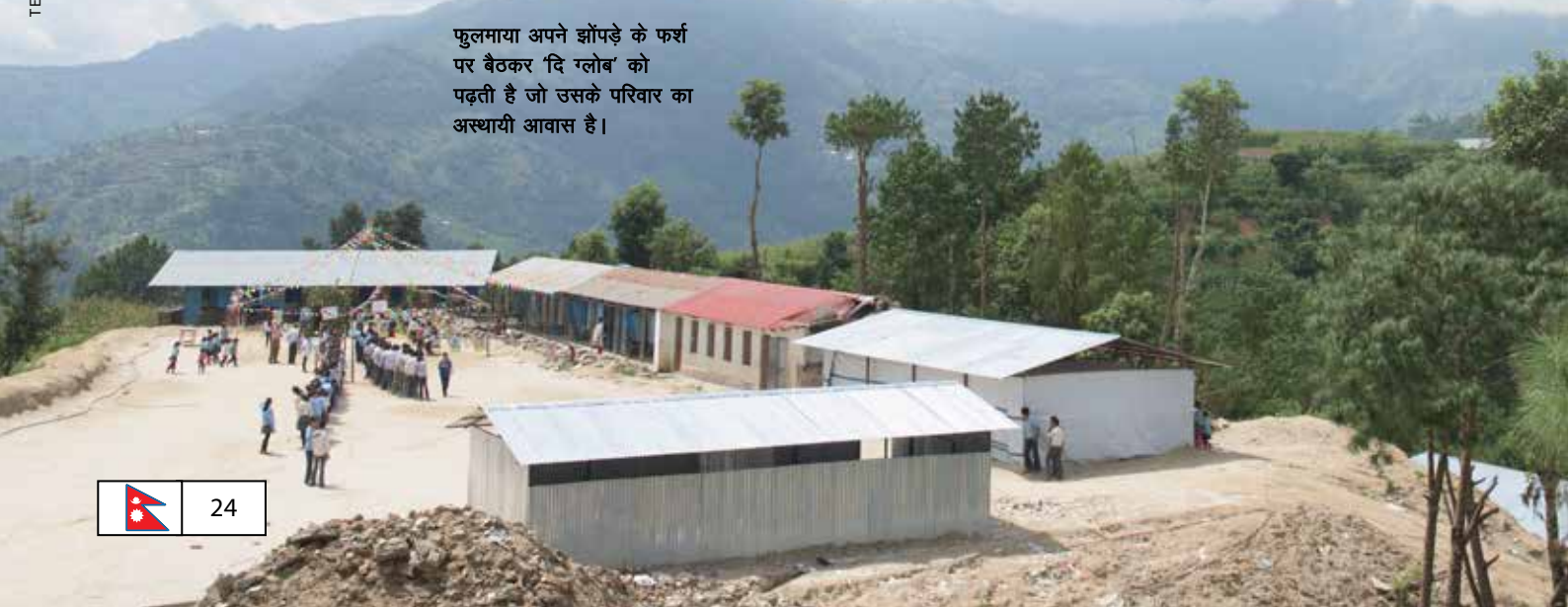

TEXT: ANDREAS LÖNN PHOTOS: JOHAN BJERKE

**हर कोई सचमुच विश्व मतदान होने की प्रतीक्षा कर रहा था, और आज वो दिन आखिर आ गया! विद्यार्थी इसको गम्भीरता से लेते हैं एवं व्यवस्थित रूप से कतार में खड़े होते हैं।**

को नहीं पढ़ पायेंगे और न ही डब्लू.सी.पी. में भाग ले पायेंगे और अपने अधिकारों के बारे में जान पायेंगे। लेकिन राजदूत लड़कियाँ वापस आयीं, और हम इसमें फिर से शामिल हो गए हैं! यह समय मेरे लिये विशेष रूप से महत्वपूर्ण था क्योंकि मुझे राजदूतों की सहायता करने को मिला जिससे वो बाल अधिकारों पर बोल सकें और मेरी कक्षा को विश्व मतदान के लिये तैयार कर सकें। मैंने उनको लड़कियों के अधिकारों के बारे में बताया और किस प्रकार उनका अपहरण कर लिया जाता है और बेच दिया जाता है। मैं घबराई हुई थी, लेकिन उससे अधिक मुझे गर्व हो रहा था और खुशी भी। और आज हमने वास्तव में अभी–अभी मतदान दिया है। भूकम्प हमारे विश्व मतदान को नहीं रोक सका!'' 🌐

## लड़कियों के लिये संघर्ष करना

फुलमाया को बाल अधिकार राजदूतों की सहायता करने का अवसर मिला जिससे वो उसकी कक्षा को लड़कियों के अधिकारों एवं तस्करी के बारे में बता सकें – कैसे लड़कियों का अपहरण किया जाता है और उनकों दासियों की तरह बेच दिया जाता है। ''जब से भूकम्प आया है, लड़कियों को बाल सेक्स व्यापार से अधिक भय हो गया है, क्योंकि उनके परिवार अब और गरीब हो गए हैं। अनेकों बच्चों ने अपने माता–पिता को खो दिया है और इसलिए तस्करों के लिये उनके बच्चों का शोषण करना और सरल हो गया है। इसलिए यह महत्वपूर्ण लग रहा था कि इस विषय पर अभी बात की जाए,'' फुलमाया बताती है।

## लगभग 9,000 मर गये

25 अप्रैल एवं 12 मई सन् 2015 को जो दो तीव्र झटके आये, और बाद में जो 380 अन्य झटके आये, उससे नेपाल, जो पहले से ही एक गरीब देश था, में भयंकर तबाही मचाई:

- 8,959 लोग मर गये, जिनमें से 2,525 बच्चे थे।
- 1,642 बच्चों ने अपने माता–पिता में से एक या दोनों को खो दिया।
- 32,000 कक्षाएँ नष्ट हो गईं।
- 985,000 बच्चे स्कूल में पढ़ाई करने वापस नहीं जा सके।
- 900,000 घर क्षतिग्रस्त अथवा नष्ट हो गए।
- 765 अस्पताल अथवा स्वास्थ्य केन्द्र क्षतिग्रस्त अथवा नष्ट हो गए।
- 10,000 बच्चे भूकम्प के कारण तीव्रता से कुपोषण के शिकार हो गए।
- 513 लड़कियों और औरतों को भारत की सरहद पर तस्करी से बचाया जा चुका है जब से भूकम्प आया है।

## कभी अंजान लोगों के साथ नहीं जाना!

''मैं खुश हुई जब बाल अधिकार राजदूत हमारे गाँव आये और हमें महत्वपूर्ण बातें बताईं और वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ के बारे में बताया। लेकिन इसने मुझे दुखी भी किया। जब मुझे पता चला कि मेरी आयु की नेपाली लड़कियों को बेच दिया जाता है और वे यौन शोषण व्यापार में दासों की तरह काम करती हैं तो मुझे बहुत बुरा लगा। मुझे तकलीफ होती है। यदि तुम यौन शोषण व्यापार में पहुँच जाते हो तो तुम्हारे सारे अधिकारों का उल्लंघन होता है। तुम्हें कोई शिक्षा नहीं मिलती और तुम्हारा कोई भविष्य नहीं होता। राजदूतों ने हमें बताया है कि हम कभी अंजान व्यक्तियों से बात न करें और किसी के साथ न जाएँ जिसे हम न जानते हों। उन्होंने हमें इस बात पर सचेत किया कि हम किसी अंजान व्यक्ति के दिये हुए भोजन को न खायें, क्योंकि हो सकता है कि उसमें कोई नशीला पदार्थ मिला हो। एक बार तुम्हें नशा चढ़ गया तो तुम्हारा अपहरण करके एक दास की तरह बेचे जाने का भय बना रहेगा। यह एक बड़ी सलाह है जो हम सबको सहायक है। मैं लड़कियों के अधिकारों के लिए एक बाल अधिकार राजदूत बनना चाहती हूँ और गाँवों में भ्रमण करते हुए सबको बताना चाहती हूँ कि हम सब बराबर हैं। जिससे लड़कियों के विरुद्ध पक्षपात का अन्त हो।
बड़े होकर मैं एक नर्स बनना चाहूँगी।''

*गंगा, 13, श्री तपेश्वर हायर सेकेन्ड्री स्कूल*

# बेटों और बेटियों के साथ समान बर्ताव करो

"आज हमने अपने स्कूल में अपना विश्व मतदान आयोजित किया। मैं एक पुलिस अधिकारी बनी और मैंने कतार की व्यवस्था बनाये रखी। हमने एक विश्व मतदान आयोजित किया क्योंकि हम अपने स्कूल में 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़' के लिये काम करते हैं। डब्लू.सी.पी. में भाग लेकर मैंने यह जाना है कि बच्चों के अधिकार होते हैं, उदाहरण के लिये, बच्चों को कठिन मजदूरी नहीं करनी चाहिए, इसके बजाय उन्हें स्कूल जाना चाहिए। मैंने यह भी सीखा है कि वयस्कों को बच्चों को पीटना नहीं चाहिए। लेकिन नेपाल में बच्चों के विरुद्ध अपराध करना साधारण बात है। यहाँ पर विशेषतः लड़कियों के लिये परिस्थितियाँ कठोर हैं। अनेकों लड़कियाँ गाँव में स्कूल नहीं जा पातीं क्योंकि उनको इसके बजाय जबरदस्ती घर एवं खेतों पर काम करना पड़ता है। लेकिन उनके भाई स्कूल जाते हैं। जब लड़कियाँ 13 या 14 वर्ष की हो जाती हैं, तब उनमें से अनेकों को बड़ी उम्र के पुरुषों से विवाह करना पड़ता है। यह सब गलत है। सचमुच बेटों एवं बेटियों के साथ बराबर का व्यवहार किया जाना चाहिए! एक ही माँ ने दोनों को जन्म दिया, और उनमें एक ही खून है। फिर अन्तर क्यों? कुछ भी नहीं! चाहे तुम लड़का हो या लड़की तुम्हारा मूल्य बराबर है। बाल अधिकार राजदूत एक महत्वपूर्ण कार्य करते हैं, स्कूलों में यात्रा करते हुए, लोगों को उनके अधिकारों के बारे में बताते हुए। तब हम अपने परिवारों एवं पड़ोसियों के घरों में जाते हैं और उनको वो बताते हैं जो हमने सीखा है। हम उनको 'दि ग्लोब' पत्रिका दिखाते हैं। जब हर कोई जागरूक हो जाएगा, तब मुझे लगता है कि धीरे–धीरे नेपाल में सब बच्चों के साथ बेहतर व्यवहार किया जाएगा।

भविष्य मे, मैं एक आँख का डॉक्टर बनना चाहता हूँ।"

*जीवन, 14, श्री तपेश्वर हायर सेकेन्ड्री स्कूल*

# राजदूत प्रोत्साहित करते हैं

"मुझे सचमुच बहुत अच्छा लगता है जब बाल अधिकार राजदूत यहाँ आते हैं और हमको लड़कियों के अधिकारों के बारे में बताते हैं। मुझे यह सुनने में अच्छा लगता है कि हमारा सम्मान किया जाना चाहिए। यहाँ पर, लड़कियों के साथ लड़कों की अपेक्षा अक्सर बुरा व्यवहार किया जाता है। अनेकों बहनें अपने भाईयों की अपेक्षा बद्तर स्कूलों में जाती हैं, यदि वो स्कूल जा भी पाती हैं तो। यह मुझे क्रोधित और दुखी करता है। यदि अभिभावक केवल अपने लड़कों के बारे में ही सोचेंगे, तो मुझे नहीं लगता कि उनके कोई भी बच्चे होने चाहिए! शायद जो लड़के राजदूतों को सुनते हैं वो भविष्य में महान पिता बनेंगे, जो अपनी बेटियों के साथ भी उतना ही अच्छा व्यवहार करेंगे जितना अपने बेटों के साथ। मैं आशा करती हूँ! राजदूत सबको यह बताते हैं कि हम लड़कियाँ अवसर मिलने पर महत्वपूर्ण कार्य कर सकती हैं। वो निडरता से दोनों बच्चों एवं वयस्कों के सम्मुख अपने अधिकारों के बारे में बोलते हैं। उनकी बातों से प्रोत्साहन मिलता है! मैं भी उनमें से एक बनना चाहती हूँ! आज मैं एक अध्यक्षता अधिकारी हूँ और मैंने एक मार्कर पेन द्वारा प्रत्येक व्यक्ति के नाखून पर एक चिन्ह बनाया है जिसने मतदान दिया, जिससे कोई दोबारा मतदान न दे सके। यह महत्वपूर्ण है। आखिर यह हमारे अधिकारों से सम्बन्धित है, अतः यह ज़रूरी है कि कोई बेईमानी न कर सके!

जब मैं बड़ी हो जाऊँगी तब मैं एक सामाजिक कार्यकर्ता बनना चाहती हूँ और बाल अधिकारों के लिये लड़ूँगी।"

*पुसाना, 14, श्री तपेश्वर हायर सेकेन्ड्री स्कूल*

# लड़के बने बाल अधिकार राजदूत

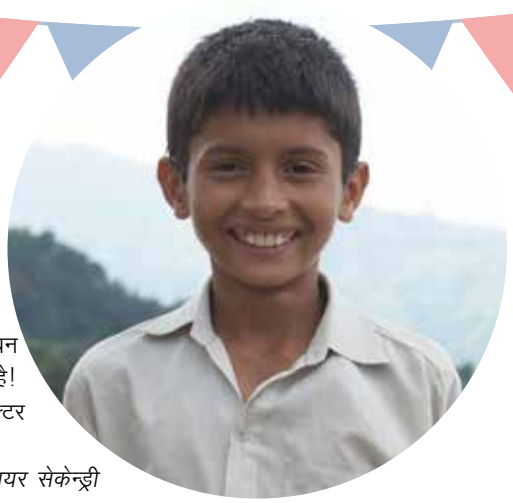

''आज हमारे स्कूल में विश्व मतदान हुआ था। वो एक बड़ी दावत की तरह था। हमने अपने अधिकारों को मनाया और हम सब एक साथ थे। विश्व मतदान से पूर्व डब्लू.सी.पी. राजदूत हमारे स्कूल आये और उन्होंने हमको बाल अधिकारों, तस्करी एवं 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़' के बारे में बताया। उन्होंने हमको यह भी बताया कि लड़कियाँ और लड़के बराबर होते हैं और उनके समान अधिकार होते हैं। मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ! इसीलिए यह सही है कि हम लड़कों को भी बाल अधिकार राजदूत बनने को मिलता है और हम महत्वपूर्ण बातों के लिये संघर्ष करते हैं। यदि मैं एक राजदूत होता तो मैं लोगों से कहता कि लड़कियों और लड़कों के समान अधिकार हैं और उनके साथ बराबर का व्यवहार किया जाना चाहिए। नेपाल में लड़कियों के लिये लड़कों की अपेक्षा कहीं अधिक काम करना साधारण बात है। यह गलत है! मेरे परिवार में, मेरी बहनें और मैं काम को बराबर का बाँट लेते हैं। यदि हममें से कोई एक भोजन पका रहा होता है, तो मैं सब्जियाँ काट देता हूँ। यदि मेरी बहनें कपड़े धो रही होती हैं तो मैं पानी भर कर ला देता हूँ। काम को आपस में बाँटना सबसे सही बात है। इस तरह हर किसी को थोड़ा समय खेलने और अपने स्कूल का गृहकार्य ठीक से करने के लिये मिल जाता है। एक बाल अधिकार राजदूत बन कर मैं सब लड़कों से कहता हूँ कि वो अपनी माताओं और बहनों की घर पर सहायता करें। मैं तस्करी के विरुद्ध भी लड़ता हूँ जो यहाँ काफी साधारण है। गरीब लोगों को बेवकूफ बनाकर उनके बच्चों को खरीद लिया जाता है, दोनों लड़कियाँ और लड़के। तस्कर कहते हैं कि लड़कों को या तो शिक्षा मिलेगी या फिर एक अच्छे वेतन वाली नौकरी, जिससे वे अपने परिवारों को घर पर पैसा भेज सकें। इसके बजाय बच्चे दास बनकर रह जाते हैं, अक्सर विदेश में। दोनों लड़कों और लड़कियों को अक्सर मजबूर होकर घरेलु नौकरों की तरह काम करना पड़ता है, अथवा भारी सामान उठाना पड़ता है जैसे जलाने की लकड़ी, या फिर खेतों में कठिन परिश्रम करना पड़ता है। कुछ लड़कियाँ भारत में कोठों पर दास बन जाती हैं। यह बहुत बुरा है!

बड़ा होकर मैं एक डॉक्टर बनना चाहूँगा।''

*सुजन, 12, श्री तपेश्वर हायर सेकेन्ड्री स्कूल*

**बाल अधिकारों के लिए मतदान देने जाते हुए।**

**विश्व मतदान को मनाते हुए**
**विश्व मतदान दिवस की समाप्ति को मनाते हुए सबको जूस एवं मिठाईयाँ मिलती हैं। भूकम्प का प्रभाव अब बहुत दूर लगता है।**

TEXT: ANDREAS LÖNN PHOTOS: JOHAN BJERKE

कसोवा, घाना के अनेकों विभिन्न स्कूलों से बच्चे मिलकर अपना विश्व मतदान देने के लिए एबीनेज़र प्रेस बाईटेरियन कॉम्प्लेक्स में एकत्रित हुए।

# दि ग्लोब ने मुझे एक बाल अधिकारों का निपुण बनाया

"मैं अपने स्कूल के वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ का एक सक्रिय सदस्य हूँ और दि ग्लोब पत्रिका के अनुभव ने मेरी और मेरे मित्रों की ज़िन्दगियों में बहुत परिवर्तन लाया है। जब मैंने दि ग्लोब को पढा तब मुझे लगा कि वो हम बच्चों को अनेकों अधिकारों को बताती है जिनका हमको पता नहीं होता। वो हमको उन आधारों के बारे में भी बताती है जिनका प्रयोग करके हम नारे लगा सकते हैं और अपने अधिकारों की मांग कर सकते हैं।

यद्यपि अब हमारे अधिकारों पर स्कूल में चर्चा होती है, दि ग्लोब ने सशक्त ही नहीं किया है, बल्कि उसने मुझे एक सक्रिय कार्यकर्ता भी बना दिया जो प्रत्येक अवसर पर अपने एवं सहपाठियों के अधिकारों के लिए खड़ा होता है।"

**लड़कों में परिवर्तन**

"हमारे अभिभावकों एवं अध्यापकों ने बाल अधिकारों पर अनेकों झूठे दावे किये हैं। उनमें से कुछ का अभी भी यह मानना है कि जब बड़े लोग किसी बच्चे के सम्बन्ध में कोई गलती करते हैं तब उस बच्चे से क्षमा मांगना गलत होता है। मैं दि ग्लोब का आभारी हूँ कि उसने आज के बच्चों के इन झूठे दावों को सबके सामने दर्शाया। उदाहरण के लिए, दि ग्लोब को धन्यवाद, यह विचार कि पब्लिक के सामने केवल पुरुषों को बोलना चाहिए, जो समाज में शाक्तिशाली ओहदे पर हैं, या फिर पारिवारिक निर्णय लेने का अधिकार उन्हीं को है, अब पुरानी बात हो गई है। दि ग्लोब ने बच्चों के स्कूल की सफाई के प्रति अपने रवैये को भी बदल डाला है, और अब वो स्कूल के पीछे के बरामदे एवं कक्षाओं में पोछा लगाने में सहायता करते हैं।

अब मुझे पता है कि मेरे अभिभावक तक मुझसे जल्दी शादी करने के लिए जबरदस्ती नहीं कर सकते। दि ग्लोब कहती है कि मुझे एक अधिकार है कि मैं किसी से भी स्वयं की रक्षा करूं जो मेरे अधिकारों का उल्लंघन करता हो, मुझे गाली देता हो, या मेरे विरुद्ध मतभेद करता हो। मैं सभी बच्चों को अपने देश में दि ग्लोब को पढ़ने के लिए कहना चाहूंगी, जिससे हम मिल कर अपने अधिकारों के लिए लड़ सकें।

*बरलिन्डा, 15, बाल अधिकार राजदूत, बुडूबुरम जूनियर हाईस्कूल*

**एरिका गर्ल्स क्लब एक बाल अधिकार प्रशिक्षण सभा आयोजित कर रहे हैं।**

## दि ग्लोब ने मुझे सहायता करना सिखाया

"मैं सोचा करता था कि लड़कियों को सारा गृहकार्य करना चाहिए जब मुझे इस बात का आभास हुआ कि दोनों लड़कों लड़कियों को सारा काम आपस में बांट लेना चाहिए। यहाँ घाना में, अनेकों माता–पिता अपनी पुत्रियों को स्कूल नहीं भेजते। जो कारण वो बताते हैं वो यह है कि एक बार लड़कियों की शादी हो जाती है उसके बाद वो केवल गृहकार्य ही करती हैं। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि खाना पकाना सिर्फ लड़कियों का काम है – लड़कों को भी घर में मदद करनी चाहिए। जब से मैंने दि ग्लोब को पढ़ना शुरू किया है तब से मुझे लगा है कि मुझे अपने घर के काम में मदद करनी चाहिए। इसलिए मैंने अपनी मां और बहनों की कपड़े धोने, पोछा लगाने और पानी भर कर लाने में सहायता करना शुरू दी है। लड़कों को यह बात समझनी चाहिए और उन्हें अपनी बहनों की गृहकार्य में मदद करनी चाहिए।"

*ऐबेनेज़र, 15, बुडूबुरम बेसिक सी स्कूल*

PHOTOS: HANNA PERSSON

## प्रजातन्त्र के लिए बाल अधिकार राजदूत

"दि ग्लोब ने बच्चों को उनके अधिकारों के बारे में बताकर उनके चेहरों पर मुस्कानें ला दी हैं। दि ग्लोब के जरिए मैंने अपने अधिकारों के बारे में सीखा है और अब मैं अधिक शक्तिशाली, बहादुर और तेज़ हो गया हूँ। एक बाल अधिकार राजदूत होते हुए मेरा प्रजातंत्र में गहन विश्वास है, क्योंकि जिस प्रकार एक वृक्ष एक जंगल नहीं बना सकता, उसी प्रकार एक आवाज एक राष्ट्र नहीं बना सकती। मैं हर एक की राय सुनना और जानना चाहता हूँ। इसीका गर्ल्स क्लब की नेता होते हुए, मैंने पत्रिका में दिये गये प्रसन्नचित विचारों का प्रयोग करके बाल अधिकारों के बारे में अन्य लोगों को बता चुका हूँ। मेरे सदस्य और मैंने 50 से अधिक बच्चों को उनके अधिकारों के बारे में बताया है। इरीका गर्ल्स क्लब का नीति–वाक्य है: 'एकजुट हो कर युवा लोगों को सशक्त करो।'"

*इरीका, 14, बाल अधिकार राजदूत, लिटिल रॉक स्कूल*

यूगान्डा

**यूगान्डा के मिनाका प्राथमिक विद्यालय में पाठक बड़ी जिज्ञासा से दि ग्लोब को पढ़ रहे हैं।**

तन्ज़ानिया

PHOTO: ANNA LÖFVING

# बाल अधिकार हीरो के स्कूल में विश्व मतदान

हंसते हुए, ओइनी दि ग्लोब के पन्नों को अपने पैर से पलटता है। वो एक पहियेदार कुर्सी को इस्तेमाल करता है और अपने हाथों का प्रयोग नहीं कर सकता। वो स्कूल में जाता है जिसे ऐना मॉलेल ने उस धनराशि से बनाया था जो उसे तब मिली थी जब वो सन् 2012 के विश्व मतदान की बाल अधिकार हीरो बनाई गई थी। बिना विकलांगता एवं विकलांगताओं वाले बच्चे ऐना के स्कूल में जाते हैं। ''वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ हमारे स्कूल में महत्वपूर्ण है और विश्व मतदान साल का सबसे अच्छा दिन होता है,'' ओइनी कहता है। ''हम अभी तक अंग्रेजी नहीं पढ़ पाते, इसलिए कोई जना इस पत्रिका का स्वाहिली में अनुवाद कर देता है।''

बेनिन

सी.एस.एल. होराइज़न स्कूल में मतदाताओं की कतार

दि ग्लोब द्वारा बाल अधिकारों का पाठ

## संघर्ष करने में डब्ल्यू.सी.पी. हमारी सहायता करता है

''मुझे विश्वास है कि डब्ल्यू.सी.पी. कार्यक्रम के माध्यम से माता–पिता एवं अन्य वयस्क यह सीखेंगे कि हमारे भी अधिकार हैं जिनका सम्मान किया जाना चाहिए। सभी बच्चों का बराबर मूल्य है और बराबर के अधिकार हैं, किन्तु लड़कों लड़कियों की अपेक्षा अधिक समझा जाता है। लड़कियों को सारे परिवार का गृह कार्य करना होता है। डब्ल्यू.सी.पी. कार्यक्रम को धन्यवाद कि हम लड़कियों एवं लड़कों के समान अधिकारों के लिए संघर्ष कर सकते हैं।''

*ऐनाबेल्ले, 15, सी.एस.एल. होराइज़न*

## अधिकार एवं प्रजातंत्र को समझने में मेरी सहायता करता है

''लड़कियां वो सबकुछ कर सकती हैं जो लड़के कर सकते हैं। कुछ माता–पिता सोचते हैं कि हम पढ़ाई की अपेक्षा गृह कार्य करने के लिए बेहतर हैं। यह ठीक नहीं है। सन् 2015 डब्ल्यू.सी.पी. कार्यक्रम में भाग लेकर, मैंने बाल अधिकारों एवं प्रजातंत्र के मुद्दों की बेहतर जानकारी प्राप्त की। विश्व मतदान के द्वारा हमने अपनी आवाजें सुनवाई हैं, और अब हम प्रजातांत्रिक क्रिया के विभिन्न चरणों को समझते हैं।''

*सीनाथ, 15, सी ई जी 1 डी.एक्प्रो मिस्सरलेट*

## एक अधिक मानवीय संसार के लिए डब्लू.सी.पी. प्रोग्राम

''यह शैक्षिक कार्यक्रम मुझे अपने अधिकारों को समझने में सहायता करता है। बेनिन में बाल अधिकारों का सम्मान नहीं किया जाता है, और यह हम बच्चों का उत्तरदायित्व बनता है कि हम वयस्कों को पढ़ायें कि वे अधिकारों का बेहतर सम्मान करें। डब्ल्यू.सी.पी. कार्यक्रम द्वारा हम बच्चे यह संकल्प करते हैं हम सारे देशों में अपने मित्रों एवं स्कूलों के साथ एक अधिक मानवीय संसार के लिए मिलकर संघर्ष करेंगे।''

*नॉम्बीलाथाउ, 15, डब्ल्यू.सी.पी. बाल अधिकार क्लब, सी ई जी बायो–गुएर्रा डी पोर्टो–नोवो*

## अध्यापकों को समझने में सहायक

''वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ बच्चों के लिए एक अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। मेरे देश में बाल अधिकारों का सम्मान नहीं किया जाता है। यहाँ स्कूलों में दैहिक दण्ड सामान्य बात है, और यह डब्ल्यू.सी.पी. कार्यक्रम अध्यापकों को समझाता है कि पाठकों को समझाने के लिए दैहिक दण्ड सबसे अच्छा समाधान नहीं है। अपने स्कूल के डब्ल्यू.सी.पी. बाल अधिकार क्लब का नेता होने के नाते, मैं अपने सहपाठियों के लिए संघर्ष करता हूँ जिससे उन्हें अपने अधिकारों का पता चले और वयस्क इस बात को समझे कि यह जरूरी है कि वे दोनों लड़कियों एवं लड़कों की स्वतंत्रता का बराबर सम्मान करें, क्योंकि दोनों के समान अधिकार हैं।''

*कैलिक्स्टा, 16, सी.एस. लेस एल्यूस*

## दैहिक दण्ड के विरुद्ध संघर्ष में डब्ल्यू.सी.पी. क्लबों का समर्थन

''मैंने डब्ल्यू.सी.पी. क्लबों के निर्माण से लाभ उठाया है, और मुझे इस बात का आभाष हुआ है कि वे लड़कियों के यौन शोषण एवं दैहिक दण्ड के विरुद्ध लड़ाई को बढ़ावा देते हैं। मेरे देश में कुछ अध्यापक और यहां तक कि कुछ माता–पिता अभी भी इन विधियों का प्रयोग करते हैं। डब्ल्यू.सी.पी. कार्यक्रम के जरिये मैंने अपने अधिकारों का बेहतर ज्ञान प्राप्त किया है क्योंकि हम इन विषयों को अपनी कक्षा में पढ़ते हैं और उन पर चर्चा करते हैं।''

*मारियल, 15, कॉम्प्लेक्स स्कॉलॉयर स्टीलक*

## दि ग्लोब मुझे मेरे अधिकारों को समझने में सहायक है

''मेरे देश में लड़कियों के अधिकारों का ठीक से सम्मान नहीं किया जाता लेकिन डब्ल्यू.सी.पी. मुझे मेरे अधिकारों की बेहतर जानकारी देता है। दि ग्लोब पुत्र सचमुच अच्छी है, और हम उसका प्रयोग भू–गोल एवं इतिहास जैसे विषयों में करते हैं जिससे हम यू.एन. कन्वेन्शन ऑन दी राइट्स ऑफ दी चाइल्ड्स का अध्ययन कर सकें। हमारे अध्यापक पत्रिका में से हमको प्रश्नावलियां देते हैं जिससे मुझे यह देखने में मदद मिलती है कि अन्य बच्चों की रोज की जिन्दगी कैसी है।''

*मरविल्ले, 16, सी.एस. स्टीलक*

एनाबेल्ली

कैलिक्स्टा

सेईनाथ

मैरियल

नैमबिल्लाथाउ

मॅरवेल्ली

सियर्रा लियोने

## हमारे अध्यापकों को हमें पीटना बन्द करना चाहिए

''हमारे अध्यापकों को हर रोज बाल अधिकारों के बारे में पढ़ना चाहिए, क्योंकि वो प्रतिदिन इनका उल्लंघन करते हैं। हम चाहते हैं कि हमारे अध्यापक हमें स्कूल में पीटना बन्द करें।''

*बेस्सी, 14, आई.एम.ए.टी. स्कूल*

## हर बच्चे को अपने अधिकारों को जानना चाहिए

''हर बच्चे को चाहिए कि वो अपने अधिकारों एवं जिम्मेदारियों को जानें। इसीलिए हम दि ग्लोब को अपने स्कूल की क्बल बैठकों में प्रयोग करते हैं जिससे अन्य बच्चे अपने अधिकारों को समझ सकें।''

*सामान्था, 14, आई.एम.ए.टी. स्कूल*

स्वीडन

## हम वयस्कों को शिक्षित करते हैं

''हमने अपने विश्व मतदान दिवस पर सभी माता–पिता को आमंत्रित किया था। हमने अपनी कक्षा में एक प्रदर्शनी लगाई तथा बाल अधिकार हीरो एवं बाल अधिकारों पर प्रस्तुतियां दीं,'' सागा, 12, स्नैट्रिंज स्कूल, हडिंजे का कहता है। ''वयस्कों ने बहुत कुछ सीखा,'' फेलिक्स, 12 कहता है। फ्रेड्रिक, एरिक, लिन्नेई, एलिड्डा, ज्वैल, फेलिक्स, एड्रियल एवं सागा सभी ने विश्व मतदान दिवस को आयोजित करने में सहायता की। उन्होंने मतदान रजिस्टर में नामों को चिन्हित करने से लेकर मतदानों की गणना करने तक सभी काम किये।''

# ग्वीनिया–बिस्सायु में निश्पक्ष एवं शान्तिपूर्ण चुनाव

**"ग्वीनिया–बिस्सायु के इन्गोर शहर में अराफम माने कम्यूनिटी स्कूल पर हो रहे हमारे विश्व मतदान में आपका स्वागत है! सबसे पहले, हम यह देखेंगे कि हमारे शुरू करने से पहले मतदान पेटी बिल्कुल खाली हो," विल्सा, 11, विश्व मतदान अध्यक्ष कहती है।**

विल्सा उस पुराने दफ्ती के डिब्बे को पलट देती है जिसे एक मतदान पेटी में बदला गया है और फिर उसे हिलाती है। वो यह निश्चित करना चाहती है कि किसी ने बेइमानी तो नहीं की है, और यह कि मतदान प्रजातंत्रिक एवं निष्पक्ष तरीके से हो रहा है। यह विल्सा के स्कूल में बच्चों के लिये महत्वपूर्ण है। वो एक ऐसे देश में रहते हैं जिसमें लम्बे समय तक तानाशाही रही है। अनेकों तख्तापलट हुए हैं, और चुनावों के समय हिंसा एवं अशान्ति रही है। बच्चों ने निर्णय लिया है कि वो अपने चुनाव को अलग तरह से आयोजित करेंगे। अब चुनाव शुरू किया जा सकता है...

## हमको मतदान दो!

**ऐसाटो, 9, बॉटचे, 12, एवं ट्चामो, 13, जो विश्व मतदान के प्रत्याशियों के प्रतिनिधि हैं।**

**गोपनीयता बनाये रखने के लिए मतदान कक्ष।**

**कतार स्कूल के कोने से आगे तक खिंची है**
मतदान की कतार इतनी लम्बी है कि वो स्कूल के कोने से मुड़ती हुई चली जा रही है।

कक्षा में दि ग्लोब पत्रिका

## बहुत सारे स्कूल भाग लेते हैं!

**ग्वीनिया–बिस्साउ में बहुत सारे स्कूल हैं जो वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम में भाग लेते हैं। यहाँ ई.बी.यू. इन्गोरे–1 स्कूल में इक्विनटेनिया, 13, बाल अधिकारों के लिए मतदान दे रही है।**

# हर रोज़ 'दि ग्लोब' को पढ़ना!

''मैं प्रतिदिन 'दि ग्लोब' को पढ़ता हूँ जब मैं स्कूल से घर वापस आता हूँ, और उसके बाद ही मैं अपने मित्रों के साथ फुटबॉल खेलने के लिये जाता हूँ। मुझे सचमुच यह पत्रिका प्रिय है, और इसमें मैं वो बातें पढ़ता हूँ जो मुझे पहले पता नहीं थीं। उदाहरण के लिये, यह कि लड़कियों और लड़कों के समान अधिकार होते हैं। यहाँ की परिस्थिति ऐसी नहीं है। जब स्कूल समाप्त होता है, तब लड़कियों को कठोरता से पोछा लगाना पड़ता है, बर्तन मांझने पड़ते हैं और भोजन तैयार करना पड़ना पड़ता है, जबकि लड़के फुटबॉल एवं अन्य खेलों को खेलने के लिये स्वतंत्र रहते हैं। यह ठीक नहीं है। हमको अपना काम बाँट कर करना चाहिए। यदि बहन पोछा लगा रही है, तो उसका भाई कपड़े धोता हो सकता है। तब दोनों को समय का अवकाश मिलेगा, जिसमें वो आराम कर सकते हैं और खेल सकते हैं। मेरे सिर्फ भाई ही हैं। अतः हम लोगों को घर पर पोछा लगाना पड़ता है, बर्तन मांझने



पड़ते हैं और कपड़े धोने पड़ते हैं। हम अपनी माँ की सहायता करते हैं। उसे सब कुछ नहीं करना चाहिये। हम सब उसकी मदद करते हैं, और यह हमको अच्छा लगता है।
यहाँ पर अनेकों माता–पिता ऐसे हैं जो केवल अपने लड़कों को ही स्कूल की पढ़ाई पूरी करने देते हैं। लड़कियों की जबरदस्ती शादी कर दी जाती है और उन्हें स्कूल छोड़ना पड़ता है। यदि सारे लड़के और पिता 'दि ग्लोब' को पढ़ें, तो मुझे लगता है कि यहाँ पर लड़कियों की जिन्दगी बेहतर हो जाएगी। सबको अधिक ज्ञान मिलेगा। बड़ा होकर मैं एक कम्प्यूटर इंजीनियर बनना चाहता हूँ।''
*साइको, 13, अराफम माने कम्यूनिटी स्कूल*

### सुरक्षा गार्ड

**"मैं मतदान कतार में व्यवस्था बनाये रखता हूँ और यह देखता हूँ कि हर व्यक्ति सही निर्वाचन अधिकारी के पास जाए" डॉमिंगगैस, 14, कहती है, जो सुरक्षा के लिए सुलेमान, 12, के साथ उत्तरदायी हैं।**

## यह हम लड़कियों के लिए महत्वपूर्ण है!

"आज एक महत्वपूर्ण दिन है, केवल हम लोगों के लिये ही नहीं यहाँ पर, बल्कि विश्व भर के उन सभी बच्चों के लिए जो 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़' में भाग ले रहे हैं। मतदान देने से पूर्व, हम 'दि ग्लोब' को पढ़कर तैयारी करते हैं और उससे बहुत सारी महत्वपूर्ण बातें सीखते हैं। उदाहरण के लिए, सब बच्चों को स्कूल जाने का अधिकार है। और हमने यह जाना कि लड़कियों और लड़कों के समान अधिकार हैं। लेकिन यहाँ पर लड़कियाँ लड़कों की अपेक्षा अधिक काम करती हैं और हमारे लिए लड़कों की अपेक्षा स्कूल जाना भी अधिक कठिन होता है। इसलिए मुझे लगता है कि यहाँ ग्वीनिया–बिस्सायु में डब्लू.सी.पी. हम लड़कियों के लिए महत्वपूर्ण है!" *सालेमाटो, 12, विश्व मतदान पर्यवेक्षक, अराफम माने कम्यूनिटी स्कूल*

### हम निर्वाचन पर्यवेक्षक हैं

**"हमारा सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह देखना है कि सब कुछ ठीक से हो और मतदान निष्पक्ष हो। अभी तक सब कुछ अच्छा चल रहा है!" टिचैरनो, 16, कहता है, जो सालेमैटो, 12, के साथ एक निर्वाचन पर्यवेक्षक है।**

# अध्यक्ष अधिकारी की मेज़

## लड़कियाँ काजू बीनती हैं

"विश्व मतदान से पहले, हमने अपने अध्यापकों को तैयार किया। हमने जाना कि हर किसी को स्कूल जाने का अधिकार है, लेकिन हर कोई नहीं जाता है। और यह कि कुछ बच्चों को घर पर कोई भोजन नहीं मिलता जब तक वो कठिन परिश्रम से काम न करें। यहाँ पर भी, खासतौर से लड़कियों के लिए परिस्थितियाँ ऐसी ही हो सकती हैं। यहाँ ग्वीनिया–बिस्सायु में वर्ष के इस समय हम काजू बटोरते हैं। अभिभावक अक्सर अपनी लड़कियों को फसल काटने में सहायता हेतु स्कूल से हटा कर अपने साथ ले जाते हैं, जब कि वो अपने लड़कों को स्कूल जाने देते है। यह ठीक नहीं है!

लड़कियों और लड़कों के समान अधिकार हैं। लड़कियों को भी स्कूल जाने दिया जाना चाहिये। मुझे लगता है कि दोनों लड़कियों एवं लड़कों को सुबह स्कूल जाना चाहिये। स्कूल के बाद दोनों बेटे एवं बेटियाँ अपने अभिभावकों की फसल काटने में सहायता कर सकते हैं।

हमें 'दि ग्लोब' से पता चलता है कि लड़कियों और लड़कों के समान अधिकार हैं। यह मुझे प्रसन्न करता है! मुझे लगता है कि यह आवश्यक है कि हम 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़' में भाग लें क्योंकि फिर हम घर पर अन्य लोगों को बता सकते हैं कि हमने उसमें क्या सीखा। हम अपने अभिभावकों को समझा सकते हैं कि उन्हें हमारे साथ वैसा ही बर्ताव करना चाहिए जैसे डब्लू.सी.पी. के प्रत्याशी बच्चों के साथ करते हैं। प्रत्याशी लड़कों एवं लड़कियों के बीच मतभेद नहीं करते। वे लड़कियों के साथ बद्तर व्यवहार नहीं करते। यदि हम अन्य लोगों को बतायेंगे कि हमने क्या सीखा, तो भविष्य में हम लड़कियों के लिए ज़िन्दगी बेहतर हो जाएगी।

मैं बड़ा होकर एक डॉक्टर बनना चाहूँगा और बीमार एवं घायल लोगों की सहायता करना चाहूँगा।"

*एस्पीरिया, 12, अराफम माने कम्यूनिटी स्कूल*



TEXT: ANDREAS LÖNN PHOTOS: KIM NAYLOR

### क्या मतदान रजिस्टर में मतदानकर्ता का नाम है?

**"मैं उनके नामों को मतदान रजिस्टर में चिन्हित कर देती हूँ जिनके नामों को निर्वाचन अध्यक्ष बुलाता है जब उन्होंने अपनी मतदान पर्ची दिखा दी होती है। जिस किसी का नाम मतदान रजिस्टर में नहीं मिलता है उसको मतदान नहीं देने दिया जाता। भाग्य से अभी तक हर किसी का नाम सूची में है और वो अपना मतदान दे पाया है," सचिव सीडो 10, कहती है।**

**विश्व मतदान अध्यक्ष विल्सा, ममादी का मतपत्र पढ़ती है तथा सचिव सीडो मतदान रजिस्टर में उसके नाम को जाँचती है।**

# हम वयस्कों को सिखा सकते हैं!

''मेरा काम है कि मैं यह निश्चित करूँ कि कोई भी एक बार से अधिक मतदान न दे सके। अतः जैसे ही कोई व्यक्ति अपना मतदान देता है, वैसे ही मैं उसकी मतदान पर्ची पर एक क्रॉस लगा देता हूँ, और देखता हूँ कि हर व्यक्ति अपने दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली को स्याही में डुबोये। यह आवश्यक है कि लोग एक ही बार मतदान दे सकें, अन्यथा हमें एक निष्पक्ष एवं सही परिणाम नहीं मिलेगा। एक व्यक्ति, एक मतदान! ऐसा यहाँ ग्वीनिया–बिस्सायु में हर बार नहीं हो पाता जब राष्ट्रपति के चुनाव में वयस्क अपना मतदान देते हैं। हम बच्चे वयस्कों को बता सकते हैं कि यह कैसे किया जाना चाहिए। मैंने 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़' (डब्लू.सी.पी.) में भाग लेकर यह सीखा है कि एक प्रजातंत्रिक चुनाव कैसे होता है। यह दूसरा वर्ष है जब मैंने उसमें भाग लिया है। सन् 2014 की डब्लू.सी.पी. की विजेता, पाकिस्तान की मलाला थी, जिसका पोस्टर मेरे पीछे लगा है, मेरी प्रेरणास्त्रोत है। वो हम लड़कियों के पक्ष में बोलती है और बाल अधिकारों के लिये कार्य करती है। मैं भी उसकी तरह बनना चाहती हूँ!'' *सडजो, 14, अध्यक्ष अधिकारी*

# बच्चे दास बन जाते हैं

ग्वीनिया–बिस्सायु ने 'यू.एन. कन्वेन्शन ऑन दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' को हस्तांरित किया है और साथ ही अन्य महत्वपूर्ण नियमों को जो बाल मजदूरी को गैरकानूनी बताते हैं और अन्य विधियों से बच्चों की रक्षा करते हैं। लेकिन यहाँ पर बच्चों की जिन्दगी बहुत कठिन है। बच्चों के साथ दुराचार किया जाता है, अनेकों को जबरदस्ती काम करना पड़ता है और वो स्कूल नहीं जा पाते। छोटी लड़कियों का यौन शोषण किया जाता है और उनका जबरदस्ती बाल विवाह कर दिया जाता है। अनेकों तस्करी का शिकार भी हो जाती हैं और पड़ोसी देश सेनेगल में तालिबी दास बन जाती हैं। इसका मतलब यह हुआ कि बच्चों को जबरदस्ती सड़क पर जा कर उस इमाम के लिए भीख मांगनी पड़ती है जो उस कुरान के स्कूल को चलाता है जिसमें वे जाती हैं। यदि बच्चे पैसा अथवा चावल लेकर वापस नहीं लौटते जिसकी आशा उनसे की जाती है, तो उनको पीटा जाता है। कभी–कभी इतनी बुरी तरह कि वो मर जाते हैं। मेरे मित्रों में से एक को सेनेगल में एक तालिबी दास बनाकर भेजा था जब वो दस साल का था। वो भागने में कामयाब हुआ और घर वापस लौट आया। उसने अनेकों भयभीत करने वाली घटनाएँ बतायीं जो उसके साथ घटीं। अनेकों बच्चे जो सेनेगल के शहरों की सड़कों पर भीख माँगते हैं वो ग्वीनिया–बिस्सायु के हैं।

मुझे लगता है कि यह सचमुच महत्वपूर्ण है कि हम अपने अधिकारों के बारे में जानें और बात करें। यदि हम अपने अधिकारों को जानते हैं, तो उनका उल्लंघन इतनी आसानी से नहीं किया जा सकता। इसीलिए 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़' यहाँ पर इतना महत्वपूर्ण है। अनेकों लोग, दोनों वयस्क एवं बच्चों को बिल्कुल भी पता नहीं है कि बच्चों के भी अधिकार होते हैं। जब हम 'दि ग्लोब' को पढ़ते हैं तब हमें विश्व भर में बच्चों की जिन्दिगियों के बारे में पता चलता है, और बाल अधिकारों के बारे में भी।

जब मैं बड़ा होऊँगा तब मैं एक डॉक्टर बनना चाहूँगा और बच्चों की निःशुल्क चिकित्सा करूँगा। मैं एक स्कूल भी बनाना चाहूँगा जिसमें बच्चे निःशुल्क में पढ़ सकें। यह मेरा सपना है।''

*एडसन, 16, अराफम माने कम्यूनिटी स्कूल*

**मैंने मतदान दिया!**
**ममाडी, 10, उस मतदान पर्ची को दिखाती है जो हर किसी के पास होनी चाहिए यदि उसे मतदान में भाग लेना है। मतदान पर्ची पर हरा क्रॉस यह दर्शाता है कि उसने अपना मतदान दे दिया है।**

**कोई बेईमानी नहीं**
**सड्जो ममादी की उंगली को टीन के डिब्बे में रखे स्पंज में दबाती है, जिसे उसने स्याही में डुबोया था। अब वो दोबारा मतदान नहीं दे सकता!**

सोना माने बाल अधिकारों के लिए अपना मतदान देते हुए।

## लड़कियों की जल्दी शादी कर दी जाती है

'दि ग्लोब' पत्रिका को पढ़ना एवं विश्व मतदान में भाग लेना एक महान बात है। मैंने यह जाना कि सभी बच्चों का एक घर होने, पर्याप्त भोजन मिलने, वस्त्र एवं जूते मिलने एवं स्कूल जाने का अधिकार होता है। यहाँ पर सब बच्चों के लिए यह परिस्थिति नहीं है। हम लड़कियों के लिये जिन्दगी सबसे कठिन है। यहाँ पर जो लड़कियाँ अभी बच्चियाँ ही हैं उनको जबरदस्ती स्कूल छोड़ना पड़ सकता है और एक बड़ी उम्र के आदमी से विवाह करना पड़ सकता है। यदि कोई लड़की मना करती है, तो उसके पिता एवं अन्य सम्बन्धी उसको पीटते हैं। चौदह वर्ष तक की कम आयु की लड़कियों की शादी कर दी जाती है। मैं अनेकों को जानती हूँ। वे बच्चों को पैदा करने के लिए बहुत छोटी होती हैं। इसमें यह भय रहता है कि दोनों लड़कियाँ और उनके बच्चे मर सकते हैं। और लड़कियों को स्कूल छोड़ना पड़ता है। मैंने 'दि ग्लोब' में पढ़ा कि यह

गलत बात है। वयस्कों को बच्चों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए। यह अच्छी बात है कि हम सीख रहे हैं कि बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये क्योंकि तब हम अपने माता–पिता को यह बता सकते हैं। शायद सभी बुरी बातें एक दिन बन्द हो जाएंगी जब सबको पता चलेगा कि यह बातें मना हैं। मैं एक एक अध्यापिका बनना चाहती हूँ या फिर एक अच्छी नौकरी करना चाहती हूँ जहाँ मैं कुछ पैसे कमा सकूँ। फिर मैं एक घर खरीदूंगी और अपनी माँ की देखभाल करूंगी, जिसने यह देखा कि मैं स्कूल जा सकूँ।''

*इनाका, 10, विश्व मतदान सचिव, अराफम माने कम्यूनिटी स्कूल*

## अन्य बच्चों के लिए 'दि ग्लोब' को पढ़ना!

''मैंने 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़' में भाग लेकर यह जाना है कि विश्व भर के बच्चों की जिन्दगियाँ कैसी होती हैं। अनेकों परिवारों के लिये दूसरे बच्चों की देखभाल करना साधारण बात है, जैसे वो भतीजे एवं भतीजियाँ जिन्होंने अपने माता–पिता को खो दिया है और उनको सहारा एवं सहायता चाहिए। फिर भी, कुछ वयस्क ऐसे हैं जो केवल अपने स्वयं के बच्चों की ही देखभाल अच्छे से करते हैं। अक्सर, जिन बच्चों ने अपने माता–पिता को खो दिया है उनको स्कूल नहीं जाने दिया जाता और इसके बजाय उन्हें काम करना पड़ता है। इसी तरह मेरे अनेकों मित्रों के साथ बर्ताव किया जाता है। ऐसा नहीं होना चाहिए। हमें बच्चों की देखभाल करनी चाहिए। मैंने यह बात 'दि ग्लोब' पत्रिका द्वारा जानी। इसलिए यह आवश्यक है कि हम 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़' में भाग लें।

हममें से जो स्कूल जाते हैं वे 'दि ग्लोब' पत्रिका को अपने घर ले जा सकते हैं और उन मित्रों के लिए उसे पढ़ सकते हैं जो स्कूल नहीं जा पाते। हम उनके संरक्षकों को भी समझा सकते हैं कि सभी बच्चों को स्कूल जाने का अधिकार है। मुझे विश्वास है कि धीरे–धीरे परन्तु निश्चय रूप से सब कुछ बदलेगा और बच्चों की जिन्दिगियाँ यहाँ पर बेहतर हो जायेंगी। जब मैं बड़ा होऊँगा तब मैं एक अध्यापक बनना चाहता हूँ और मैं 'दि ग्लोब' को अपने पाठों में प्रयोग करूँगा।''

*सेल्डो, 10, विश्व मतदान सचिव, अराफम माने कम्यूनिटी स्कूल*

### यहाँ सब खाली है!

**विल्सा ने सारे मतदान पेटी में से खाली कर दिये। उनको गिनने से पहले वो सबको दिखाती है कि मतदान पेटी बिल्कुल खाली हो गई है।**

### चुनाव का परिणाम

**मतदानों को गिना जा चुका है और परिणाम की जाँच की जा चुकी है जिसके बाद ही बिल्सा चुनाव की रिपोर्ट बनाती है। फिर परिणामों को मलाला के एक पोस्टर पर दर्शा दिया जाता है, जिसे हर कोई देख सके कि इन्गोर में विश्व मतदान कैसा रहा।**

# वायवा मतदान, वायवा! मतदान के लिये हुर्रे!

TEXT: ANDREAS LÖNN PHOTOS: KIM NAYLOR

''ग्वीनिया–बिस्सायु में विशेष मंत्रों का ज़ोर से उच्चारण करना साधारण बात है, जैसा कि मैंने किया था जब मैंने मतदान के परिणाम को प्रस्तुत किया था। यही हम करते हैं जब हम किसी उत्सव को मनाते हैं। एक व्यक्ति पहले मंत्र का ज़ोर से उच्चारण करता है, फिर सब लोग जवाब में उसका उच्चारण करते हैं। मैंने चिल्लाकर बोला 'वायवा वोट, वायवा!' और सबने उत्तर दिया 'वायवा!' मैंने सोचा कि आज हमारे विश्व मतदान में सब कुछ इतना अच्छा रहा कि हमें उसका जश्न मनाना चाहिए!''

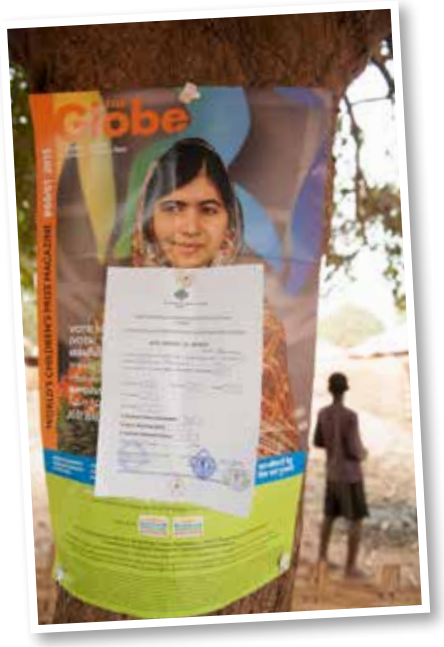

एक बार मतदान समाप्त हो जाता है, फिर विश्व मतदान दिवस एवं बाल अधिकारों को स्कूल के बरामदे में नाचने गाने के साथ मनाया जाता है। यह अमीनाटा, 10, (हरी पोशाक में) अपनी दोस्तों के साथ नाच रही है।

सीडो एवं उसके स्कूल के मित्रों को अपना विश्व मतदान मनाते हुए www.worldschildrensprize.org पर देखो।

## दक्षिण अफ्रीका

### हम पाठकों ने डब्ल्यू.सी.पी. कार्यक्रम का आयोजन किया

''हमारी पूरी एल.आर.सी. टीम ने डब्लू.सी.पी. वर्कशॉप में भाग लिया। दि ग्लोब पत्रिका की कहानियों द्वारा हम सब बहुत प्रभावित हुए इस लिए हमने निश्चय किया कि हमारे स्कूल में डब्लू.सी.पी. प्रोग्राम को कार्यान्वित किया जाए। हमने अपने अवकाश के समयों को इस बात की योजना बनाने में लगाया हम इसको कैसे करें। और अपनी प्रधानाचार्य को अपनी योजना प्रस्तुत की उन्होंने एवं अध्यापकों ने हमें हरी झण्डी दिखा दी। हमने दि ग्लोब को कक्षाओं में बाँटा जिससे पाठक इस कार्यक्रम को पढ़ें। हमारे प्रधानाचार्य ने हर सोमवार को स्कूल की सभा में समय दिया जहाँ पर हमने, एल.आर.सी. ने डब्लू.सी.पी. प्रत्याशियों की कहानियों को सुनने वालों को बताया।''

*तौफीक, 17, अध्यक्ष, लर्नर्स रिप्रेज़ेन्टेटिव काउन्सिल (एल.आर.सी.), रियाध हाई, केप टाउन*

### हम बच्चों को शान्ति का चयन करना चाहिए

''मैंने जाना कि डब्लू.सी.पी. बच्चों की सहायता करने के लिए सघर्ष करती है, जिससे वे स्वयं के विचारों को स्वतंत्रता से व्यक्त कर सकें एवं अपने विकल्पों को स्वयं चुन सकें। मुझे लगता है कि हमें पुरानी पीढ़ी की प्रतीक्षा करना बन्द करना चाहिए। जिससे इस संसार को एक सुरक्षित स्थान बनाया जा सके। हम बच्चों को शान्ति का चयन करना चाहिए। हमें उन लोगों को रोकना चाहिए जो लड़कियों को चोट पहुँचाते हैं और स्कूल में जो अन्य बच्चों को दबाते हैं।''

*बुसिसवा, 15, क्रिस हानी स्कूल, खायेलिट्शा*

## फिलीपीन्स

**कैमारीन्स सुर में ओकाम्पों में, विश्व मतदान दिवस बाल अधिकारों की एक परेड से शुरू होता है, जिसमें मतदान पेटी परेड के मुख पर होती है।**

## पाकिस्तान

**पाकिस्तान के थार रेगिस्तान में दो बार गाँव के बच्चे डब्ल्यू.सी.पी. कार्यक्रम में अनेकों वर्षों से भाग ले रहे हैं। सन् 2015 में, बाढ़ से पूरा गाँव नष्ट हो गया था।**

## नाइजीरिया

**ओयो में ऑलीवेट बेप्टिस्ट अकादमी स्कूल का बरामदा मतदान कतार से भरा हुआ है।**

# दि ग्लोब की मदद से लड़कियों के लिए संघर्ष करना

''मुझे दि ग्लोब पत्रिका प्रिय है क्योंकि वो हम बच्चों के अधिकारों के बारे में बताती है और किस प्रकार हम उनके सम्मान की मांग कर सकते हैं। एक डब्लू.सी.पी. बाल अधिकार राजदूत तथा नाइजीरिया के डब्लू.सी.पी. क्लबों के नये चयन किये गये अध्यक्ष होने के नाते, मैं अपने पद का इस्तेमाल करके परिवारों, स्कूलों एवं समाज में लड़कियों के बीच मतभेद के विरुद्ध संघर्ष करूँगी। मैं दि ग्लोब पत्रिका की सहायता से लड़कियों की शिक्षा के लिए भी संघर्ष करूँगी।''

*सारा, 15, बाल अधिकार राजदूत, नाइजीरिया में डब्ल्यू.सी.पी. क्लबों की अध्यक्ष*

# डब्लू.सी.पी. बाढ़ के क्षेत्र में

''प्रति वर्ष जब हम डब्लू.सी.पी. कार्यक्रम में भाग लेते हैं, तब हमें बाल अधिकारों के बारे में अधिक जानकारी मिलती है और उन लोगों के बारे में जो इन अधिकारों के लिए संघर्ष करते हैं। लेकिन हमारे सारे अधिकारों का सम्मान नहीं किया जाता। हमें ठीक प्रकार से शिक्षा नहीं मिल पाती – कोई स्कूल की इमारत नहीं और न ही पाठ्य पुस्तकें।

जब वर्षा शुरू हुई तब हम उसमें खेले थे, लेकिन वो रुकी नहीं। मैं घबरा गई। अचानक हमारा घर ढा गया लेकिन हम सभी बाहर निकलने में कामयाब हुये, हर कोई चीख रहा था। हमारा सारा भोजन और अनाज पानी से नष्ट हो गया, और हमारी दोनों बकरियां मर गई। हमें पता नहीं था कि हम सारे साल क्या खायेंगे।''

*दुर्गा, 12*

# विश्व का सबसे बड़ा स्कूल मतदान देता है

## भारत

### बच्चों की बातें नहीं सुनी जातीं

''भारत में अधिकतर बच्चों को यह नहीं पता कि उनके अधिकार क्या हैं। सामान्यतः भारत में बाल अधिकारों की स्थिति बहुत खराब है, लेकिन वो हर बच्चे के लिए भिन्न है। निर्धन लेकिन होशियार बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ने का अधिकार नहीं मिल पाता क्योंकि यहां के समाज में बेईमानी है। बच्चों को छोटा समझा जाता है और उनकी सलाह नहीं सुनी जाती। मुझे वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज में भाग लेने में बड़ी खुशी हुई।

*श्रेयान्श, 12, सिटी मॉन्टेसरी स्कूल, लखनऊ*

**सिटी मॉन्टेसरी स्कूल, लखनऊ में पाठक अपना विश्व मतदान देते हैं, जो 52,000 छात्र–छात्राओं वाला विश्व का सबसे बड़ा स्कूल है।**

## कैमारून

**टीको, कैमारून में डब्ल्यू. सी.पी. क्लब की फुटबॉल प्रतियोगिता।**



### डब्लू.सी.पी. क्लब में हम एक–दूसरे की सहायता करते हैं

''यहाँ हम समुदायों में रहते हैं, दोनो सुख एवं दुख में। समुदाय अपने सदस्यों की आवश्यकताओ के अनुसार स्वयं को व्यवस्थित कर लेता है। लेकिन डब्लू.सी.पी. क्लबों में कोई भी समुदाय जैसी सोच नहीं रहती। हम एकजुट रहते हैं और आपसी सहायता करते हैं।''

*एबूडे, 15, के.ओ.ई.एल. बाइलिंगुअल इन्स्टीट्यूट, टीको*

# डब्लू.सी.पी. कार्यक्रम ज़िन्दाबाद!

''डब्लू.सी.पी. क्लब को धन्यवाद, क्योंकि पहले मेरी कोई आवाज नहीं थी मैं किसी लड़के से कोई बात पर आजादी से चर्चा नहीं कर सकता था। आज लड़के और लड़कियां बराबर के स्तर से एक–दूसरे से बात करते हैं और यहां तक कि कक्षाओं में एक साथ बैठते हैं।''

डब्लू.सी.पी. एक ऐसा कार्यक्रम है जो बच्चों को विशेष प्रकार से सुनता है। और निश्चित करता है कि वे इसमें भाग लें। डब्लू.सी.पी. को इस प्रकार बनाया गया है कि हम उन महान पुरुषों एवं महिलाओं के कार्यों की सराहना करें जो निडर होकर बाल अधिकारों के लिए संघर्ष करते हैं। इसका निर्माण इसलिए भी किया गया था कि वो अन्य लोगों को प्रोत्साहित करें कि वे उन बातों के लिए खड़े हों जिनमें वो विश्वास करते हैं।

इस कार्यक्रम के जरिये मेरे जैसे बच्चे यहाँ कैमारून में वो सब कर सकते हैं। जिसमें उनको विश्वास है, जैसे पब्लिक में स्वयं को व्यक्त करना मैं विश्व मतदान की व्यवस्था बना लेता हूँ अपने मित्रों को शामिल करके, खास तौर से उनको जिनके पास दिन मे स्कूल जाने के संसाधन नहीं है। मैं उनको प्रोत्साहित करता हूँ कि वो संध्या के स्कूलों में अपने छोटे कार्यों को करने के लिए जायें। इस तरह अब अनेकों कमजोर बच्चे डब्लू.सी.पी. कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं।

इस कार्यक्रम द्वारा बच्चे दि ग्लोब पत्रिका को पढ़ते हैं। वे बाल अधिकारों को पढ़ते हैं, जो पहले एक निषेध विषय समझा जाता था। आज डब्लू.सी.पी. ने हमारी आँखें खोल दी हैं। डब्लू.सी.पी. अमर रहे!

*एनंगा, 16, के.ओ.ई.एल. बाइलिंगुअल इन्स्टीट्यूट, टीको*

## बर्मा / म्यानमार

# गाय मतदान पेटी को खा गई

जब बर्मा के कैरिन क्षेत्र में क्वी टा मार स्कूल के विश्व मतदान का समय आया, तब अनकों स्कूल मिलकर मतदान देने आये। कुछ बच्चे मतदान देने हेतु समय पर उपस्थित होने के लिए एक दिन पहले ही चल कर आ रहे थे। बच्चों ने एक दिन पहले ही तैयारी कर ली थी और एक बड़े पत्तों से बनी मतदान पेटी तैयार की। रात को गायों ने उनके पत्ते खा लिए थे, अतः बच्चों को जल्दी से कुछ नये पत्ते लाने पड़ गये।

''वो पहली बार था जब मैने दि ग्लोब को अपनी भाषा, कैरिन, में पढ़ा, और पहली बार विश्व मतदान में भाग लिया। मैने पत्रिका से जाना कि बाल अधिकार क्या होते हैं,'' *सौ एह, 18, कहती है।*

## टोगो

**पहली बार, टोगो में बच्चे, डब्ल्यू.सी.पी. कार्यक्रम एवं विश्व मतदान में भाग ले रहे हैं।**

# ''हम वो फूल हैं जो सदैव खिले रहते हैं!''

**''मुझे बहुत गर्व है कि मेरे मित्रों ने मसाका में 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़' बाल अधिकार क्लब के नेता के रूप में मेरा चयन किया है। हम लड़कियों के अधिकारों के लिये बहुत काम करते हैं और यह पहला वर्श है जब हम लड़के भी इसमें शामिल हुए हैं। यह महत्वपूर्ण है,'' एन्ड्रिक्वी, मोज़ाम्बीक में कहता है।**

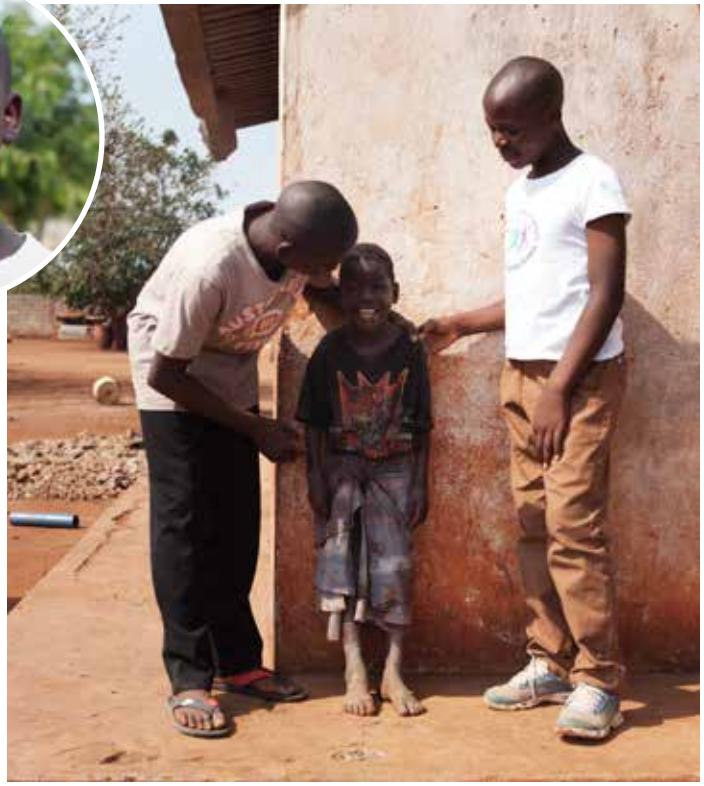

**फ्रैन्ज़ एवं एन्ड्रिक्वी, रोमन से मिलते हैं, जो अपने दादा के घर के बाहर खेल रहा है। रोमन बोल नहीं सकता, किन्तु वो विकलांग बच्चों के स्कूल में जाकर बहुत कुछ सीख सकता है।**

''हमारा लक्ष्य यह देखना है कि हर कोई बाल अधिकारों का सम्मान करे। इसलिए हम विद्यार्थियों, अध्यापकों, अभिभावकों... हाँ, सारे गाँव से बात करते हैं। हम बच्चे वो फूल हैं जो कभी नहीं मुरझायेंगे – हम सदैव खिले रहेंगे!

आज हम अपना विश्व मतदान आयोजित कर रहे हैं। सारा स्कूल इसमें भाग ले रहा है! हमने अपने पड़ोसी स्कूल को भी हमसे जुड़ने के लिये आमन्त्रित किया है। वह एक छोटा स्कूल है, अतः उनके लिये अपना मतदान देना और हमारे साथ इसका जश्न मनाना अच्छा है। पहले हमने 'दि ग्लोब' को पढ़ा और प्रत्याशियों के बारे में जानकारी प्राप्त की, और अब हम अपना मतदान देने के लिए तैयार हैं। हर मतदान महत्वपूर्ण है!''

सब बच्चों के समर्थन में खड़े होना

हम बाल अधिकार राजदूतों को एक विशेष कार्य करना है, और वो यह है कि हम उन बच्चों पर विशेष नजर बनाये रखें जो स्कूल नहीं जाते। गाँव के अन्दर, मेरे मित्र फ्रैन्ज़ और मैंने एक लड़के को देखा जो बोल नहीं सकता और न ही अपने हाथों का सही प्रकार से प्रयोग कर सकता है। हम उसके घर गये तो हमें पता चला कि वो अपने दादा के साथ रहता है। उसकी माँ मर चुकी है और उसके पिता शहर में रहते हैं, लेकिन वो काम नहीं करते और उसकी देखभाल नहीं कर सकते।

लड़के को रोमन कहते हैं। वो आठ वर्ष का हो गया है, लेकिन स्कूल नहीं जाता। जब हम उसके घर पहुँचे तब उसके दादा ने प्यार से हमारा अभिनन्दन किया और कहाः ''हम यह देखना चाहते हैं कि हम आपकी सहायता कैसे कर सकते हैं।'' कुछ समय बाद, रोमन के दादा ने वहाँ की स्थिति को समझाना शुरू किया।

रोमन कभी अस्पताल या स्कूल नहीं गया है। रोमन के दादा को यह नहीं पता था कि यहाँ मोज़ाम्बीक में विकलांग बच्चों के लिये स्कूल हैं, अतः हमने उन्हें यह बताया। लेकिन उन्हें अब भी यह नहीं पता कि वो उन लोगों से कैसे सम्पर्क करें।

रोमन के दादा खुश हुए, और यद्यपि रोमन बोल नहीं सकता फिर भी हम देख रहे थे कि वो भी हमारी वार्ता से प्रसन्न था। हमने उनको वचन दिया है कि हम अपने स्कूल में वयस्कों एवं जिला शिक्षा अधिकारियों से बात करेंगे।

वे हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं और हमसे सहायता लेने के इच्छुक हैं, यही रोमन के दादा ने बताया। वे चाहते हैं

**फ्रैन्ज़, 15, विश्व मतदान के समय मतदान पेटी की रक्षा करता है**
**''हमने 'दि ग्लोब' द्वारा लड़कियों के अधिकारों को जाना। उनके वही अधिकार होते हैं जो हम लड़कों के होते हैं, और सभी वयस्कों को यह बात समझनी चाहिए!'' फ्रैन्ज़, 15 कहता है।**

**जब एस्कोला सिकन्ड्रिया जे मस्साका अपना विश्व मतदान आयोजित करता है तब मतदान देने की कतार स्कूल के चारों ओर खिंच जाती है।**

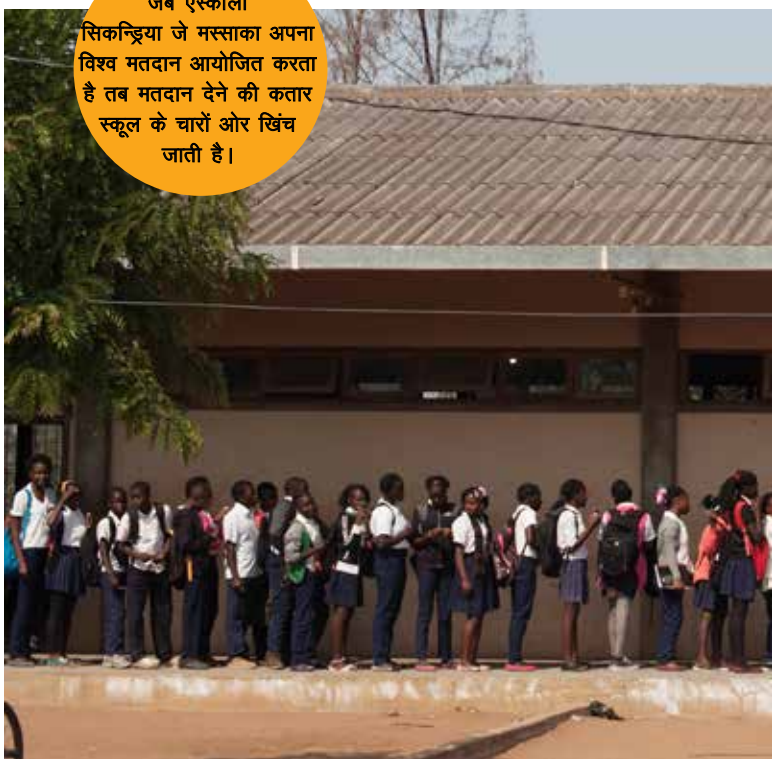

TEXT: JOHANNA HALLIN PHOTOS: SOFIA RUNARSDOTTER

कि रोमन स्कूल जा सके और खुश रहे। हम भी यही चाहते हैं!

बाल अधिकार राजदूत होते हुए हमने यह सीखा है कि हम अपने स्वयं एवं सभी के बाल अधिकारों हेतु खड़े हों। यह देख कर कि हम किसी एक बच्चे के जीवन में परिवर्तन ला सकते हैं जिसको सहायता चाहिए, मुझे शक्ति एवं प्रसन्नता दिलाता है।''
*एन्ड्रिक्वी, 14, डब्ल्यू.सी.पी. बाल अधिकार राजदूत, एस्कोला सिकेन्डेरिया डे मस्साका, मोज़ाम्बीक*

**''बाल अधिकार राजदूतों की तरह हमने बाल अधिकारों के बारे में जाना है, अब हम दूसरों को पढ़ा सकते हैं। हमें मालूम है कि कभी–कभी वयस्क हमारी बात अधिक सुनते हैं, क्योंकि हम लड़के हैं, अतः यह आवश्यक है कि हम उनको लड़कियों के अधिकारों के बारे में बतायें। हमें वयस्कों को बताना होगा कि वे लड़कियों को सुनें,'' विलियम, 13 कहता है।**

मस्साका में विश्व मतदान के समय मतदान पेटी पर मलाला का चित्र होता है। **''हमारे लिए मलाला एक महान प्रेरणास्त्रोत है। यह आश्चर्यजनक है कि एक बच्चा इतना सब कुछ कर सकता है,'' बाल अधिकार राजदूत मार्ता, 14 कहती है।**

**हर किसी बच्चे जिसे मतदान देना होता है उसे अपनी तर्जनी उंगली को स्याही में डिबोना होता है। इस तरह कोई भी अपना मतदान दोबारा नहीं दे सकता। एना, 13, ने अपनी निर्वाचन पर्यवेक्षक की नौकरी से अवकाश ले रखा है जिससे वो अपना मतदान दे सके।**

## हमारे माता–पिता को समझना चाहिए!

''ऐसे माता–पिता होते हैं जो बड़ी उम्र के पुरुषों से अपनी पुत्रियों का विवाह जबरदस्ती कर देते हैं क्योंकि उनके परिवार को वस्तुएँ एवं धन चाहिए होता है। वयस्कों का मानना है कि नया पति परिवार की देखभाल रखेगा। मुझे यह डराता है। मुझे भय है कि मैं भी इसका शिकार न हो जाऊँ। हम बाल अधिकार राजदूतों को इसके विरुद्ध संघर्ष करना चाहिए। हमने अपने अधिकारों के बारे में जाना है और यह कि हम क्या कर सकते हैं जिससे यह निश्चित हो सके कि उनका सम्मान किया जाए। हमें सारे अभिभावकों से बात करनी चाहिए जिससे वे यह समझ सकें कि बाल विवाह हमारे अधिकारों का एक उल्लंघन है।
*डिनेर्सिया, 14*

## 'दि ग्लोब' ने जोआन से एक संस्था शुरू करवाई

''मुझे डब्लू.सी.पी. एवं दि ग्लोब के बारे में तब पता चला जब मैं 13 वर्ष का था। मुझे उनसे जो प्रेरणा मिली उससे मैने 'ईडेन वर्ल्ड फाउण्डेशन' नामक एक संस्था शुरू की, और मैं बाल अधिकारों के लिये लड़ने लगा। मै बच्चों के नेतृत्व में बैठकों एवं पत्रकार सम्मेलनों का आयोजन करता हूँ, और मै यह निश्चित करता हूँ कि बच्चे डब्लू.सी.पी. कार्यक्रम में भाग लें एवं 'दि ग्लोब' को पढ़ें।
*जोआन, 18, बुकावू*

## 'दि ग्लोब' को बार–बार पढ़ा

''मैं दि ग्लोब पत्रिका में लड़कियों के बारे में इन महान कहानियों को बार–बार पढ़ती हूँ। पत्रिका से मुझे पता चला कि सभी बच्चों के समान अधिकार होते हैं और दि ग्लोब उनकी रक्षा करने में सहायक है।
मेरी फ्रान्स, 18, जो जोआन का ईडेन समूह। वो विरूव मतदान में स्याही के पैड की देखरेख कर रही थी।

## 'दि ग्लोब' ने मुझे स्कूल में ही रोके रखा

''जब मेरे पिता मरे तब मेरा मन किया कि मैं स्कूल छोड़ दूँ, लेकिन दि ग्लोब को पढ़ने के बाद मुझे लगा कि शिक्षा महत्वपूर्ण है।''
जोआन, 10, नॉट्रे डेम डे ला पैक्स स्कूल एवं जोआन का ईडेन समूह। इस चित्र में वो एक नाटक में भाग ले रही है जिसमें यह दिखाया गया है कि लड़कियों के लिए स्कूल जाना कितना महत्वपूर्ण है।

## बाल अधिकारों को डब्लू.सी.पी. द्वारा खोजा

''मैं अपने देश में कम आयु की लड़कियों के विरुद्व मतभेद एवं हिंसा को दर्ज कराना चाहती हूँ, केवल शान्ति के समय ही नहीं बल्कि युद्व के समय में भी। मुझे वर्ल्डस चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम प्रिय है, इसने मुझे बाल अधिकारों को बताया, विशेषतः यह तथ्य कि लड़कियों एवं लडकों के समान अधिकार होते हैं। दि ग्लोब ने मुझे शिक्षित किया है! इस लिए मैं सचमुच अपने देश में एक बाल अधिकार राजदूत बनना चाहता हूँ।''
*सिनोजर्वा 15, लाइसी कज़ारोहो, बुकावू*

## मैं एक मानव अधिकारों का मंत्री बनना चाहता हूँ

''एक बाल अधिकार राजदूत होने के नाते, मैं मानव अधिकारों का मंत्री बनना चाहूँगा, जिससे मैं बाल अधिकारों की रक्षा कर सकूँ।''
*सिज़ा, 16, कॉम्प्लेक्सी स्कोलयर ग्रेसिया, बूकावू*

## मैं समानता की मांग करती हूँ

''घर पर, मुझे सारा काम करना पड़ता है। मेरी परवाह एक लड़के की तुलना में कम की जाती है, और मुझे स्कूल वाला गृहकार्य करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता। स्कूल में अद्यापक गप्पेबाज़ी एवं अन्याय को बढ़ावा देते हैं, और वो अक्सर लड़कियों का यौन शोषण करते हैं। मैं लडकियों एवं लडकों के बीच समानता चाहती हूँ और चाहूँगी कि संसार भर में लडकियों के अधिकारों का सम्मान किया जाए। मुझे वर्ल्डस चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम प्रिय है क्योंकि इसी ने मुझे मेरे अधिकारों के वारे में बताया।''
*अक्सान्ति, 15, कॉम्प्लेक्सी स्कोलयर अमानी/सीबिया, बूकावू*

## वो नहीं सुनते

''मेरे परिवार में लड़कियाँ स्वयं को आज़ादी से व्यक्त नहीं कर सकतीं। हम अपनी राय नहीं दे सकते। मैंने दि ग्लोब पत्रिका द्वारा जाना कि मेरे भी कुछ अधिकार हैं।''
*बराका, 13, कॉम्प्लेक्सी स्कोलयर ग्रेसिया, बुकावू*

## 'दि ग्लोब' मुझे प्रोत्साहित करती है

''मैं इस बात को कहना चाहती हूँ कि लड़कियाँ के अधिकारों को गम्भीरता से नहीं लिया जाता। कुछ माता–पिता अपनी लड़कियाँ को स्कूल नहीं भेजते, उनको घर पर रहना पड़ता है और घरेलू काम करने पड़ते हैं अन्यथा खेतो में जा कर काम करना पड़ता है। मुझे दि ग्लोब पत्रिका ने बताया कि मेरे भी कुछ अधिकार हैं और मैं अपना उत्तरदायित्व समझती हूँ कि मैं लड़कियाँ के अधिकारों के लिए लड़ूँ। दि ग्लोब ने मुझे प्रोत्साहित एवं सशक्त किया है। मुझे आशा है कि डब्लू.सी.पी. पनपता रहेगा और बाल अधिकारों के विरुद्व संघर्ष को बढ़ायेगा।''
*क्वागिशा, 18, लाइसी कज़ारोहो, बुकावू*

## बच्चों को मत पीटो

''मैं बाल अधिकारों के लिए लड़ती हूँ, सबसे अधिक शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार। लोगों को बच्चों को नहीं पीटना चाहिए, उन्हें उनको सुनना चाहिए और उनसे बात करना चाहिए। मैं घर पर काम करती हूँ जैसे बर्तन माँझना और पानी भरना। लड़के टहलने जाते हैं और लड़कियाँ से अधिक खेलते हैं। यह सही नहीं है।''
*बाएबी, 18, लाइसी कज़ारोहो, बुकावू*

## डब्लू.सी.पी. को धन्यवाद!

'मै ग्यारह वर्ष की थी जब मैने दि ग्लोब को पहली बार पढ़ा था। मैं इस संसार को बदलने का सपना देखती हूँ और मैं डब्लू.सी.पी. को मेरी आँखें, मेरे कान और मेरे विचारों को खोलने के लिए धन्यवाद चाहूँगी। मैं अन्य लड़कियों के साथ खड़ी हो कर बाल विवाह के विरुद्व लड़ती हूँ। लड़कियों को चाहिए कि वो स्कूल जाएँ और मेरा सिद्वान्त है: 'शिक्षा पहले, शादी बाद में!''
*एस्थर, 16*

**निसा, 12, एवं उसके सहपाठियों ने 'दि ग्लोब' को पढ़ कर अपने अधिकारों एव प्रत्याशियों के बारे में जाना है।**

## अपने अधिकारों के लिए मतदान देना

''मै खुश हूँ कि मैने बपने अधिकारों के बारे में और अधिक जाना है। हम बच्चों ने अपने विश्व मतदान को स्वयं आयोजित किया है, और अब हम समझते हैं कि कैसे हम अपने समाज में स्वयं को व्यवस्थित रखें। मैंने यह भी सीखा है कि मतदान देना क्यों आवश्यक है। यदि हमको मतदान देने दिया जाएगा, तो हम किसी एसे जने को चुनना होगा जो हमारे अधिकारों की रक्षा कर सके, और यह हर किसी के लिए महत्वपूर्ण है, विशेषतः बच्चों के लिए। यदि लोगों को चुनावों में भाग लेने नहीं दिया जाएगा, तो हमारे समाज का ह्रास हो जाएगा और लोग कुछ नहीं कर पायेंगे। *सिव, 14, सोटिप लोअर सैकेन्ड्री स्कूल, स्कुन*

**नेल्ले, लि रोज़ियर स्कूल में मदान में मतदान दे रही है।**

## ज्ञान से उत्तमता मिलती है

''मतदान देना ज़रूरी है। हमें अपना अधिकार मांगना चाहिए नहीं तो अन्य लोग हमारे लिए निर्णय ले लेंगे। सभी बच्चों को अपने अधिकारों के बारे में पता होना चाहिए। खासतौर से, गरीब लोग। निर्धन लोग अक्सर अपनी लड़कियों को शहरों मे काम करने के लिए भेजते हैं, और उनके कोठों में बेचे जाने का भय बना रहता है। मैंने अपने अधिकारों के बारे में जाना है अतः मैं स्वयं की रक्षा कर सकती हूँ लेकिन मेरे गाँव की उक लड़की बेच दी गई। एक धनवान दिखने वाला आदमी आया और उसने उसका हाथ शादी के लिए माँगा। फिर बाद में पता चला कि वो लड़कियों को बेंच देता था।''

*चैन 14, सोटिप लोअर सैकेन्ड्री स्कूल, स्कुन*

## मेंरे लिए एक बलिदान दिया

''मेरा परिवार चाहता है कि मैं स्कूल जाऊँ। मेरे दोनो भाईयों ने स्कूल जाना इस लिये बन्द कर दिया क्योंकि हमारे पास स्कूल जाने के यातायात का खर्चा नहीं था। वे काम करते हैं और मेरा खर्चा देते हैं जिससे मैं स्कूल जा सकूँ। मैं दुखी हूँ क्योंकि दोनों ने मेरे लिए अपना बलिदान दिया है और जीवन में स्वयं पढ़ने का अवसर खो दिया है। मैने उनको वचन दिया है कि मैं अपनी पढ़ाई में अच्छा करूँगी। मेरा सपना है कि मैं एक अध्यापक बनूँ और अन्य लोगों के साथ अपना ज्ञान बाटूँ।''

*कुन्थिया, 14, सोटिप लोअर सैकेन्ड्री स्कूल, स्कुन*

## एक बेहतर समाज के लिए मतदान दो

'मतदान देना आवश्यक है। मैने जान लिया है कि प्रजातंत्र क्या है, और उसकी बहुत ज़रूरत है। वो इस तरह काम करती है कि हम किसी व्यक्ति को चुनते हैं जिसमें हमको विश्वास होता है, और यह हमारे समाज को और बेहतर बनाता है।''

*किमसैन 12, सोटिप लोअर सैकेन्ड्री स्कूल, स्कुन*

## बच्चों के विरुद्व कोई हिंसा नहीं!

''मैंने बच्चों के लिए अभियान चलाना सीखा। मैं घर में होने वाली हिंसा के बारे में बहुत सोचती हूँ। मेरे परिवार में नहीं, पर मुझे अन्य परिवारों का पता है जहाँ यह होती है। हमको ऐसे अभियान चलाने चाहिए जिनमें वयस्को को बताया जाए कि वे हमको नहीं पीटें।''

*विट, 13, सोटिप लोअर सैकेन्ड्री स्कूल, स्कुन*

मतदान पेटियाँ

## डब्लू.सी.पी. ने मुझे साहस दिया

''डब्लू.सी.पी. कार्यक्रम को धन्यवाद कि मैने अपने अधिकारों का जाना है, मैं इसमें सन् 2012 से भाग ले रही हूँ। जब मैंने बाल अधिकार राजदूतों के बारे मे पढ़ा, तो उसने मुझे अपने स्कूल में एक बाल अधिकार क्लब शुरू करने का साहस दिया। हम अन्य बच्चों को भी सूचित करते हैं जिनको अपने अधिकारों का पता नहीं है। जब मैंने अपना डब्लू.सी.पी. बाल अधिकार राजदूत का प्रमाण पत्र प्राप्त किया, तब उसने मुझे और सशक्त कर दिया जिससे मैं लड़कियों के अधिकारों के बारे में बोलती रहूँ, लेकिन मैं सड़क के बच्चों तथा अन्य बच्चों जिनकी कठिन जिन्दगियाँ रही हों, की भी सहायता करना चाहती हूँ। मैं ब्रैज़्ज़ाबिल्ले से काफी दूरी पर स्थित स्कूलों में सलाह देने जा चुकी हूँ जो बाल अधिकार क्लब शुरू कर रहे हैं। सबसे बुरी बात जो मेरे साथ हुई वो यह थी जब मेरे एक चचेरे भाई ने मेरी नहाते हुए फिल्म बनाई। जब मुझे पता चला, तब मैंने अपने पिता से कहा कि यदि मेरा चचेरा भाई घर छोड़ कर नहीं जायेगा, तो मैं चली जाऊँगी। फिर मैं उसकी रिपोर्ट दर्ज कराने पुलिस के पास गई, और उसे एक सप्ताह के लिए जेल में डाल दिया गया।''

*नेल्ले, 15, लि रोज़ियर स्कूल, ब्रैज़्ज़ाबिल्ले*

TEXT: EVELINA FREDRIKSSON PHOTOS: KIMLONG MENG

# सभी बच्चों के अधिकारों के

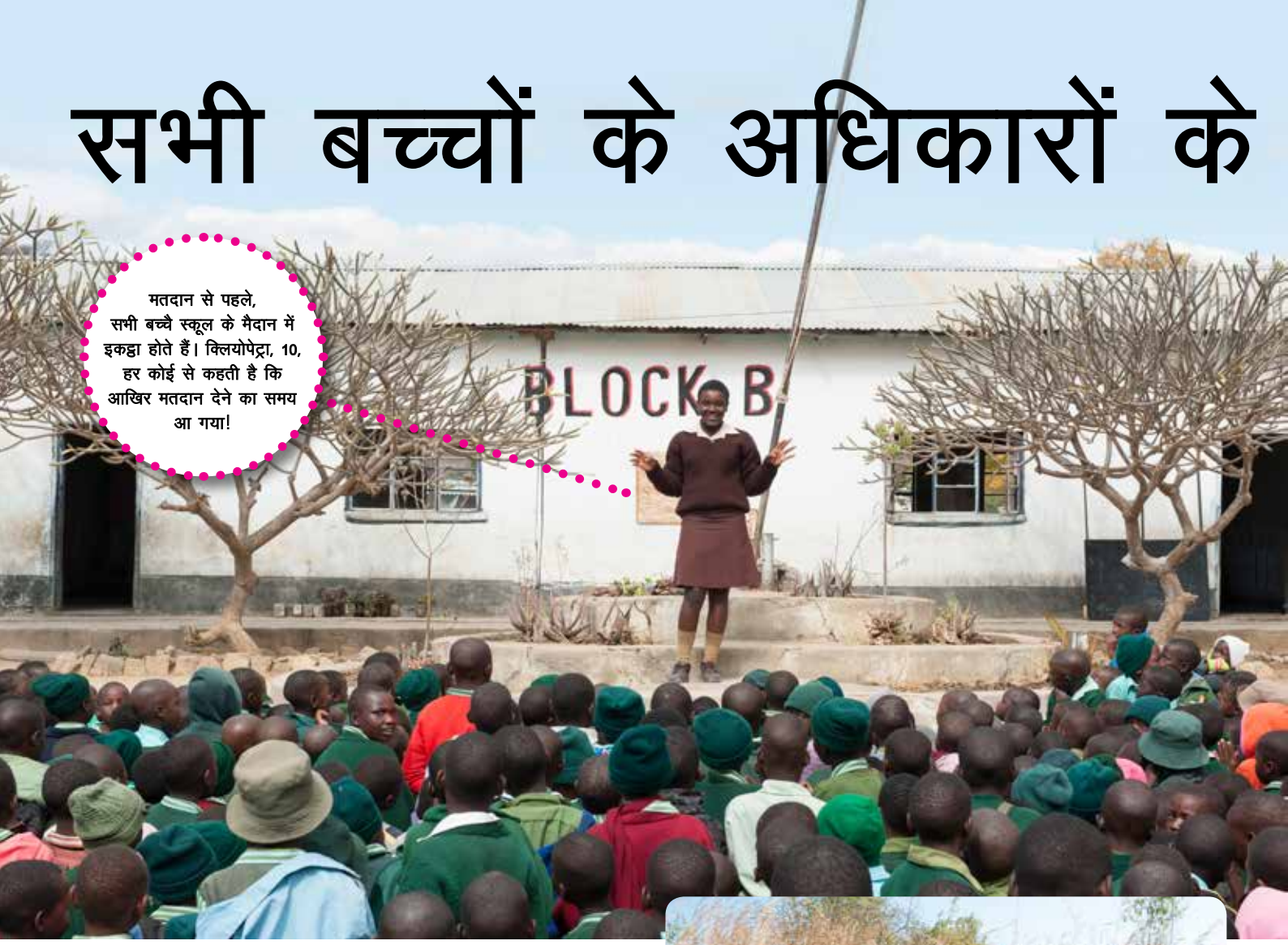


मतदान से पहले, सभी बच्चै स्कूल के मैदान में इकट्ठा होते हैं। क्लियोपेट्रा, 10, हर कोई से कहती है कि आखिर मतदान देने का समय आ गया!

**जिम्बाब्वे में, मुरेहवा में, बच्चे अपने बाल अधिकार हीरो के लिए मतदान दे रहे हैं। एनबीमैटर, 16, एक डब्लू.सी.पी. बाल अधिकार राजदूत है और वो इस जिले के सभी बाल अधिकार राजदूतों के लिए जिद्यम्मेदार है। कई लोग उसके पास अपनी समस्याएं लेकर आते हैं।**

''मैंने बहुत सारी लड़कियाँ देखीं जो अनेकों प्रकार से पीड़ित थीं। उनमें से अनेकों अपने गुप्तांगों को स्वच्छ रखने वाले तौलिये के बजाय गाय के सूखे गोबर का प्रयोग करती थीं। यह हानिकारक है, क्योंकि जीवाणु शरीर को संक्रमित कर सकते हैं। इस क्षेत्र में कई लोगों को जल्दी शादी कर देने और दुराचार का भी सामना करना पड़ता है। यही कारण है कि मैं एक बाल अधिकार राजदूत बनना चाहती थी और हर किसी की मदद करने के लिए तैयार रहती थी,'' एनबीमैटर बताती हैं।

### गूंगों के लिए आवाज़

''मेरा काम है कि मैं गूंगों के लिए आवाज़ बनूं। मैं इसके बारे में जरूर बोलती हूँ कि जल्दी शादी करना कितना हानिकारक है, और दुराचार के बारे में, जिससे वयस्कों एवं बच्चों को पता चले कि यह हो रहा है और गलत है।''

### स्कूल के सभी बच्चे एनबीमैटर को पहचानते हैं

''अब लोग खुश हैं कि यहाँ पर बाल अधिकारों के राजदूत हैं। वयस्कों एवं बच्चों दोनों को बराबर मालूम है कि वो मेरे पास आ सकते हैं और मुझसे अपनी समस्याओं के बारे में बात कर सकते हैं। हम बैठकें आयोजित करते हैं जब हमें बच्चों की समस्याओं से सम्बन्धित जानकारी इकट्ठा हो जाती है। यदि ऐसी समस्याएँ होती हैं जिनको हम स्वयं हल नहीं कर सकते, तो हम शिक्षकों को उन्हें बता देते हैं। लेकिन यदि समस्या अध्यापकों को लेकर ही होती है, तो हम एक वयस्क के पास जाते हैं जो स्कूल का कर्मचारी एवं क्षेत्र समन्वयक होता है।

''कभी कभी मैं शक्तिहीन महसूस करती हूँ। एक बार एक 14 वर्ष की लड़की ने मुझे बताया कि उसकी शादी की जा रही है। वो एक अनाथ थी और जो लोग उसकी देखभाल करते थे, उन्होंने उसकी शादी एक

**विश्व मतदान के दिन से पहले बच्चे तैयारी कर रहे हैं। लंबी घास एक बहुत ही महत्वपूर्ण उद्देश्य के लिए काटी जाती है।**

एनबीमैटर दूसरी लड़कियों का समर्थन करती है जो एक कठिन समय से गुज़र रही हैं। एनबीमैटर और क्रिएट हर रोज़ मिलते हैं। एनबीमैटर क्रिएट का समर्थन करती है और उसको सुनती है जब वह

TEXT: EVELINA FREDRIKSSON PHOTOS: KIM NAYLOR

# लिए वोट

500 बच्चों का यहां मतदान होगा – मतदान के लिए कतार लंबी है। दो छात्र पुलिस अधिकारी बने हुए यह देख रहे हैं कि कोई भी कतार को नहीं लांघे। प्रत्येक नाम को मतदान रजिस्टर पर काटा जाता है

बच्चे घास का प्रयोग कर एक मतदान बूथ का निर्माण करने करते है, जिससे कोई यह नहीं देख सके कि कौन किसे मतदान दे रहा है।

हर कोई है जिसे विश्व मतदान दिवस में काम करने को मिला है उसे अपने नाम का बिल्ला मिला है।

आदमी से करने का निर्णय लिया जिसकी आयु उससे काफी अधिक थी। हमने वयस्कों से कहा, लेकिन हम कुछ नहीं कर सके। अगले दिन वो जा चुकी थी। फिर भी, मुझे खुशी है कि उसने हमसे अपनी बात कहने के लिए हम पर काफी भरोसा किया।''

**सुनना और समर्थन देना**

''एक दिन एक लड़का आया और हमें बताया कि उसकी बहन, क्रियेट के साथ एक आदमी ने दुराचार किया जो एच.आई.वी. पॉजिटिव था। मैं उसकी बहन से बात करने गई, और तब से हम दोस्त हैं।''

''यह तब हुआ जब एक अन्य लड़की और मैं सूर्यास्त के समय लकड़ी बटोरने गये हुए थे,'' क्रियेट ने मुझे बताया। ''एक आदमी एक झाड़ी से बाहर निकला और मुझे एक चाकू दिखा कर धमकी दी। मेरी दोस्त भाग गई, लेकिन इससे पहले कि मुझे सोचने का अवसर मिलता, उसने मुझे घास पर नीचे गिरा दिया। उसने कहा कि अगर मैं चिल्लाई तो वो मुझे काट देगा, अतः मैं सिर्फ चुपचाप रोती रही। जब मैं घर गई तब मैंने अपनी माँ को बताया। वो बहुत क्रोधित हुई, और हम एक क्लिनिक को भागे। मुझे एच.आई.वी. के जीवाणु नहीं लगे थे, लेकिन मुझसे किये गये दुराचार का स्पष्ट प्रमाण था, अतः उस आदमी को गिरफ्तार कर लिया गया और उस पर कानूनी कार्रवाई की गई।''

''मैं एनबीमैटर को अपना यह अनुभव बताती हूँ, और इससे मुझे सॉंत्वना मिलती है। उसने मुझे बाल अधिकारों के बारे में बताया है और यह कि किसी को भी, कोई भी तरह से, मुझे हानि पहुंचाने का अधिकार नहीं है।''

मतदान कक्ष में हर कोई अपने मतपत्र पर एक क्रॉस डाल देता है। इस तरह कोई नहीं देख पाता कि कौन किसको वोट दे रहा है। छात्रों ने मतदान से पहले बाल अधिकारों एवं ग्लोब के पाठों पर चर्चा कर ली होती है। यह नियमों के विरुद्ध है कि किसी को एक विशेष तरह से वोट करने के लिए राज़ी करने की कोशिश करें।

मुरेहवा में बच्चे बाल अधिकारों एवं विश्व मतदान का जश्न पारंपरिक नृत्य के साथ मनाते हैं। वो कई सप्ताह से अभ्यास कर रहे हैं और बड़े दिन का इंतजार कर रहे हैं। अब वो समय आ गया है!
"मैं सभी पुरस्कार के उम्मीदवारों को प्यार करती हूँ। आज एक खुशी का दिन है, रोपापडज़ो, 10, जो नृत्य मंडली में है, कहती है।
"मुझे गर्व है कि आज मैं नर्तकियों में से एक थी। मुझे बड़ा विशेष लगा क्योंकि यह पहली बार है जब हमने अपने स्कूल में एक वैश्विक वोट आयोजित किया," मुनाशा, 10 कहती है।

एनबीमैटर ने मतदान किया और उसकी उंगली, स्याही में डूबोई गई जिससे वह दोबारा मतदान नहीं दे सके।

मतदान पेटी एक परंपरागत मिट्टी का बर्तन है जिसे बच्चों ने रंगीन कागज़ से सजाया है।

# यदि कोई तुम्हें मारे, तो किसी को बता दो!

"मेरे पिछले स्कूल में, मेरे अधिकारों का उल्लंघन किया गया था। मेरे अध्यापक मेरे हाथों पर एक छड़ी से मारते थे। पहले मैंने किसी से कहने की हिम्मत नहीं की। मुझे शर्म लगती थी। एक दिन प्रधानाचार्य आए और मुझे घर जाने के लिए कहा, क्योंकि मैंने स्कूल का शुल्क नहीं दिया था। मुझे और भी शर्म आई, और मैं रोता हुआ घर भाग आया। एक बार मेरी माँ ने शुल्क के लिए ध्यान का प्रबंध कर लिया, तो मैंने उससे स्कूल बदलने के लिए कहा। अब मैंने दि ग्लोब पढ ली है और यह जान चुका हूँ कि बच्चों को अधिकार है कि वे स्वयं को न पिटने दें। मैंने यह बात अपने छोटे भाई को भी बताई। मैं उससे कहता हूँ यदि कोई तुम्हें मारे तो तुम किसी अन्य जने को जरूर बताओ।"
*जुलकॉमबोरेरो, 13, ज़ॉम्ब्वे प्राथमिक विद्यालय, मुरेहवा*

हर किसी ने दि ग्लोब पत्रिका को पढ़ा है, जिससे वो पूरी तरह से प्रत्याशियों के काम को समझते हैं, और उन्होंने बाल अधिकारों के बारे में आपस में बात की है। अल्फ्रेड, 12, बाल अधिकारों से सम्बन्धित तख्तियों के उत्पादन का आयोजन कर रहा है।

वोट ध्यान से गिने जाते हैं। उन्हें बाहर हवा में गिनना थोड़ा जोखिम भरा होता है, लेकिन सबको देखना होता है कि यह सही से किया जा रहा है।

# दि ग्लोब मुझे प्रेरित करती है

''हमारे घर में कभी पर्याप्त भोजन नहीं होता। मेरी दादी, जिसके साथ मेरी बहन और मैं रहते हैं, के पास पर्याप्त धन नहीं होता, अतः हम अधिकतर भूखे होते हैं। मेरे दोनों माता–पिता एड्स से मर गये जब मैं छोटी थी। मैं हर रोज़ उनके बारे में सोचती हूँ और यह कि मेरी ज़िन्दगी कितनी अलग रही होती यदि वो जीवित होते। मेरे पास ठीक तरह के जूते मोज़े नहीं हैं जिनको मैं अपनी यूनीफार्म के साथ पहन सकूं, और मुझे शर्म लगती है जब मैं स्कूल में होती हूँ। मैं शायद ही कभी अपने साथ स्कूल के लिए नाश्ता रख कर ले जा पाती हूँ। अतः मेरी दोस्तें अधिकतर अपना भोजन मेरे साथ बांट लेती हैं। उनसे भोजन मांगने में मेरा दिल टूट जाता है, अतः मैं चाहती हूँ कि मुझे उनसे न कहना पड़े। कुछ लोग मुझे और मेरी बहन को नीची नज़र से देखते हैं और हम पर हंसते हैं। मैंने उनकी परवाह नहीं करती और स्कूल में अपना सबसे अच्छा करने का प्रयास करती हूँ। मैंने दि ग्लोब को पढ़ा है और अपने दोस्तों से बाल अधिकारों के बारे में बात की है, इसलिए मुझे मालूम है कि शिक्षा एक अधिकार है। इसी लिए मैं स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के लिए जो भी कर सकती हूँ, कर रह हूँ, और इन दिनों मुझे अच्छे अंक मिल रहे हैं। यही मुझे एक बेहतर भविष्य बनाने में सहायक होगा।''

*लिसा, 12, ज़ॉम्ब्वे प्राथमिक विद्यालय, मुरेहवा*

# मुझे आत्मविश्वास देती है

''मैंने दि ग्लोब को पढ़ा और बाल अधिकार राजदूतों से यह जाना कि बच्चों को भोजन और शिक्षा मिलने का अधिकार है। मेरे माता–पिता दक्षिण अफ्रीका में काम करते हैं अतः मैं अपनी दादी और बड़े भाई के साथ रहती हूँ। मैं चाहती हूँ कि मैं सदैव स्कूल जाती रहूं, लेकिन कभी–कभी हम वहां का शुल्क नहीं दे पाते, फिर मुझे घर पर रहना पड़ता है। हमारे पास पर्याप्त भोजन नहीं है। मैंने दि ग्लोब में अन्य बच्चों के बारे में पढ़ा था जिन्हें पर्याप्त भोजन नहीं मिल पाता, और मुझे यह सोचकर दुख होता है कि बाल अधिकारों का सम्मान नहीं किया जाता। लेकिन यह सांत्वना देता है कि यद्यपि मेरी परिस्थिति खराब है, फिर भी मुझे भोजन और शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। यह मुझ में आत्मविश्वास जगाता है। मेरा भाई लगभग मुझे रोज़ पीटता है। हर बार मैं सोचता हूँ कि यह आखिरी बार होगी, लेकिन ऐसा नहीं होता। मुझे दर्द होता है और मुझे यह अनुचित लगता है। मेरी दादी उसे मुझसे अलग होने के लिए कहती है, लेकिन वो उसको भी पीटने की धमकी देता है, अतः वो इस बारे में कुछ नहीं कर पाती। मुझे मालूम है कि बच्चों को हिंसा से सुरक्षा मिलने का अधिकार है।''

*रिचेल, 12, ज़ॉम्ब्वे प्राथमिक विद्यालय, मुरेहवा*

# मेरे अधिकार ही हैं जो मेरे पास हैं

**जिम्बाब्वे में 13 वर्षीय तकुज़्वा को अपना स्कूल, ज़ॉम्ब्वे प्राथमिक विद्यालय, प्रिय है, लेकिन जल्द ही उसे फिर से स्कूल जाना बन्द करना पड़ेगा।**
**''मेरे पास कुछ नहीं है, लेकिन दि ग्लोब को धन्यवाद कि मुझे पता है कि मेरे अधिकार हैं,'' वो कहती है।**

''मेरी माँ बहुत दयालु थी। वो एक गृहणी की तरह काम करती थी और मेरे स्कूल का शुल्क देती थी। लेकिन जब वो मर गई तब हम अपने दादा–दादी के साथ रहने चले गये। मेरी दादी भी इतनी कमजोर थी कि वो मेरी छोटी बहन ब्लेसिंग को गोद में नहीं उठा पाती थी, जो अभी बच्ची ही थी, अतः मुझे उसे अपनी पीठ पर ले जाना पड़ता था। पर ब्लेसिंग जल्दी बड़ी हो गई और मुझे फिर से स्कूल जाने को मिल गया।''

''मेरी दादी हमारी देखभाल करने के लिए पूरी कोशिश करती है, लेकिन वो बहुत बीमार है। ब्लेसिंग केवल तीन साल की है, अतः मुझे दादी की मदद करने के लिए फिर से स्कूल जाना बंद करना होगा।''

''हम शायद ही स्कूल का शुल्क दे पाते हैं और स्कूल में मेरे मित्र अपना नाश्ता मुझसे बांट लेते हैं। फिर भी, स्कूल ही वो जगह है जहाँ मैं सबसे अधिक खुश होती हूँ। मुझे एक साल स्कूल न जाने के बाद वापस लौटने का आभास अभी भी याद है, और मैं कितनी प्रसन्न थी।''

### डब्लू.सी.पी. के मज़े लिये

''मैं अधिकतर बाहर बैठकर पढ़ती हूँ जब तक सूरज नीचे नहीं चला जाता। मैं अपने स्कूल की पुस्तकें एवं दि ग्लोब को अवश्य पढती हूँ। मेरे पास कुछ नहीं है, लेकिन दि ग्लोब को धन्यवाद कि मुझे पता है कि मेरे भी अधिकार हैं। सभी बच्चों को भोजन, वस्त्र एवं शिक्षा की जरूरत होती है, और मेरी ज़िन्दगी कुछ आसान दिखती है जब मुझे पता रहता है कि मुझे इन चीजों को प्राप्त करने का अधिकार है!''

''मुझे सचमुच वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स कार्यक्रम में मज़ा आया। विश्व मतदान दिवस में मेरा काम था कि मैं विभिन्न कक्षाओं में जाऊँ और पाठकों को बताऊँ कि उनकी मतदान देने की बारी कब है। हर कोई इतना खुश लग रहा था जब मैं उनके पास आई।''

**तकुज़्वा दि ग्लोब को पढ़ते हुए।**
**''मुझे नहीं लगता कि मैं अपने स्कूल की पढ़ाई पूरी कर पाऊँगी। लेकिन दि ग्लोब को धन्यवाद कि मैं अपने अधिकारों को जानती हूँ।''**

**तकुज़्वा और कई अन्य बच्चे स्कूल के बाद पानी भर कर लाते हैं।**

## दि ग्लोब हमें सिखाती है

''मैं दि ग्लोब को बहुत समय से पढ़ रही हूँ और मैं सदैव बाल अधिकारों के बारे में नई बातें जानती रहती हूँ। एक बाल अधिकार राजदूत की तरह मैं इस पत्रिका को पढ़ती हूँ और अन्य बच्चों को बताती हूँ जो मैंने पढ़ा होता है। मैंने लोगों के सामने बात करना एवं उनको बाल अधिकारों के बारे में जागरूक करना सीख लिया है।''

*रीता, 16, बाल अधिकार राजदूत, सेके*

## बाल अधिकारों पर रेडियो साक्षात्कार

''मेरे बाल अधिकारों वाले कार्य पर मेरा रेडियो साक्षात्कार लिया गया है। मेरा मानना है कि बाल अधिकारों की जानकारी को फैलाने से बड़ा फर्क पड़ता है। मैं कई जगह गई क्योंकि मेरे पिता की मृत्यु हो गई और मेरी माँ मेरी देखभाल नहीं कर सकती थीं। अतः मैं उन बच्चों के बारे में बहुत सोचती हूँ जो अनाथ हैं।''

*टेटेण्डा, 18, हरारे*

## मेरा दिल टूट गया

''एक बड़ी समस्या यह है कि लड़कियों की कम आयु में शादी कर दी जाती है और उन्हें वो शिक्षा नहीं मिल पाती जिसकी वो उत्तरदायी हैं। मुझे स्कूल के बजाय घर पर रहना पड़ा क्योंकि मेरे माता–पिता स्कूल का शुल्क नहीं दे सकते थे। मेरा दिल टूट गया। लेकिन अब मैं फिर से स्कूल में वापस आ गई हूँ। मैं बाल अधिकारों के बारे में और अधिक जानना चाहती हूँ, और मेरा सपना है कि मैं डब्लू.सी.पी. न्यायमूर्ति दल की एक सदस्य बनूँ।''

*चेनाई, 12, झांसी प्राथमिक विद्यालय, सेके*

TEXT: EVELINA FREDRIKSSON PHOTOS: KIM NAYLOR

# बाल अधिकार, वयस्कों की ज़िम्मेदारियाँ हैं

**"पुरुष, जो महिलाओं और बच्चों को पीटा करते हैं, को चाहिए कि वो वापस होमो सेपियन्स, मनुष्यों में विकसित हों। सभी बच्चों को अधिकार है कि वो घर अथवा स्कूल में पीटे नहीं जाएं," ताजूरानुशे बच्चों से कहता है जो उसे सुन रहे हैं।**

**ताजूरानूशे, 15, जो ज़िम्बाब्वे में, सेके में बाल अधिकार राजदूत है, ने अनेकों बच्चों को प्रशिक्षण दिया है। वो सदैव इस पर बात करता है कि वयस्कों को इस बात की जिम्मेदारी लेनी चाहिए कि बाल अधिकारों का सम्मान किया जाए। उसे स्वयं मालूम है कि कैसा लगता है जब वयस्क इस जिम्मेदारी को नहीं लेते।**

"मेरे माता–पिता अलग हो गये जब मैं दो साल का था और मैं अपने पिता के साथ रहने के लिए चला गया। वे मुझे घर पर अकेला छोड़कर चले जाते थे जब वो बाहर शराब पीने जाते थे, और वो मुझे पीटते थे यदि मैं उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता था। लेकिन जब मैं पांच साल का था, तब मेरी माँ ने दोबारा शादी कर ली और यह निर्णय लिया कि मैं इसके बजाय अपनी बुआ के साथ रहूँ। वो मुझे कोई भोजन नहीं देती थी और मुझे स्कूल भी नहीं जाने देती थी।"

"जब मैं छः साल का हुआ तब मुझे लगा कि अब बहुत हो चुका। मैं घर छोड़कर चला गया और कई दिनों तक बिना कुछ खाये सड़कों पर घूमता रहा। अन्त में मेरी माँ ने मुझे ढूंढ लिया। उस रात वो मुझे घर ले आई, लेकिन फिर उसने निर्णय लिया कि वो मुझे मेरी एक दूसरी बुआ के साथ रहने के लिए भेज दे। वो बुआ भी मुझे स्कूल नहीं जाने देती थी।"

"मैं फिर से भाग गया, लेकिन इस बार मैं बस चलता चला गया। 20 किलोमीटर बाद मैं अपनी दादी के घर पहुंचा। तब से वो मेरी मां की तरह रही है। वो मुझे भोजन देती है, मेरे स्कूल की यूनीफार्म खरीदती है और मेरे स्कूल का शुल्क देती है।"

### दैहिक दण्ड पर प्रतिबन्ध

"मेरी दादी मुझे वो सब कुछ देती है जिसका एक बच्चे को अधिकार होता है। पर मुझे पता है कि कैसा लगता है इन सब चीजों के न मिलने से, अतः कक्षा 5 में मैंने निर्णय लिया कि मैं अन्य बच्चों के अधिकारों के लिए लडूंगा। मुझे लगता है कि यदि हम मिलकर काम करें तो हम हर बच्चे के उज्जवल भविष्य हेतु उसके बाल अधिकारों के लिए लड़ सकते हैं। इसीलिए मैं एक वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ बाल अधिकार राजदूत बनना चाहता था।"

**ताजूरानुशे जानता है कि कैसे लगता है जब अपने अधिकारों का सम्मान नहीं किया जाता। जब वह छोटा था तब उसे बिना भोजन दिये घर में अकेला छोड़ दिया गया था, और उसे स्कूल जाने की अनुमति नहीं दी गई।**

"जब मैं अन्य बच्चों को प्रशिक्षण देता हूँ तब मैं दैहिक दण्ड के बारे में बहुत बोलता हूँ। मैं उन पुरुषों के बारे में भी बोलता हूँ जो महिलाओं एवं बच्चों को पीटते हैं। मैं कहता हूँ कि पुरुषों को चाहिए कि वे वापस मानवों में विकसित हों, न कि पशुओं जैसे, जो महिलाओं एवं बच्चों के अधिकारों का सम्मान नहीं करते।"

"एक डब्लू.सी.पी. राजदूत होते हुए मैंने बाल सेक्स व्यापार के बारे में बहुत पढ़ा है। अनेकों वयस्क बच्चों को धोखा देते हैं। मैं बच्चों से कहता हूँ कि वो अंजान लोगों पर विश्वास न करें और मैं लड़कों को बताता हूँ कि हर किसी को स्कूल जाने का अधिकार है जिससे उनका अच्छे से अच्छा भविष्य हो सके।"

## मेरे स्कूल की दोस्त को बेच दिया गया

"मेरी एक स्कूल की मित्र को बाल सेक्स व्यापार में जबरदस्ती डाल दिया गया। जब उसके माता–पिता की मृत्यु हो गई तो कोई उसको एक क्लब में ले गया और बेच दिया। स्कूल और पुलिस को पता चल गया। उन्होंने उसकी सहायता की और उसके स्कूल का शुल्क दिया। लेकिन जिन लोगों ने उसके साथ ऐसा किया था उन्हें दंड नहीं दिया गया। लड़कियों के अधिकारों के लिये बने बाल अधिकार क्लबों की सदस्यता लेना अनिवार्य होना चाहिए।"

*गामूचीराय, 13, बाल अधिकार राजदूत, हरारे*

## तौलिये की जगह गाय का गोबर

"हम अपने समूह में एक दूसरे की मदद करते है, और हम अन्य लड़कियों से भी बात करते हैं। हमें पता चला है कि अनेकों लड़कियां अपने गुप्तांगों को स्वच्छ रखने के लिए तौलिये नहीं खरीद पाती थीं। वो पुराने कपड़े या यहां तक कि गाय का सूखा गोबर का उपयोग करती हैं। जब हमें यह पता चला तो हमने इन लड़कियों की मदद करने के लिए स्कूल में एक संग्रह शुरू किया।"

*लौरा, 15, बाल अधिकार राजदूत, हरारे*

## अन्य लड़कियों की मदद

"हमने एक अन्य स्कूल में उन लड़कियों के लिए एक संग्रह शुरू किया जो अपने गुप्तांगों को स्वच्छ रखने के लिए तौलिये नहीं खरीद पातीं थीं। उन्हें एक ऐसी वस्तु देना जिसकी उनको सचमुच जरूरत थी, एक महान अनुभव था। हम बच्चों के प्रति वयस्कों के दृष्टिकोण को बदलने का प्रयास करते हैं। उन्हें अक्सर लगता है कि लड़कियों को स्कूल जाने के बजाय उनकी जल्दी शादी कर देनी चाहिए, लेकिन यह गलत है! हर किसी को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है!"

*कुडज़ाई, 16, हरारे*

# ''मुझे अपने अधिकारों का पता है!''

**साशा, 13, एक डब्लू.सी.पी. बाल अधिकार राजदूत है। वो दुराचार एवं उपेक्षा का शिकार रह चुकी है, लेकिन उसने दृढ़ निश्चय किया है कि वो स्वयं एवं अन्य लड़कियों की स्थिति को बदल देगी।**
**''हम अक्सर दोपहर के भोजन के समय बात करते हैं और इस पर चर्चा करते है कि हमने दि ग्लोब में क्या पढ़ा था, और हमारे अध्यापक हम को बाल अधिकारों के बारे में क्या बताते है। यहाँ पर बहुत सारे बच्चों के साथ दुराचार होता है।''**

साशा के माता–पिता पांच साल पहले अलग हो गए और उन्होंने निर्णय लिया कि साशा को बुआ के साथ रहने के लिए भेज देना चाहिए।

''वो मुझसे सारा गृहकार्य जबरदस्ती कराती थी और वो अक्सर मुझे पीटा करती थी। हर सुबह मैं बर्तन धोने के लिए सबसे पहले उठ जाती थी। वो मुझे स्कूल ले जाने के लिए कोई भोजन भी नहीं देती थी, और अधिकतर वो मेरे स्कूल के शुल्क का भुगतान करने से इनकार कर देती थी, अतः मैं स्कूल भी नहीं जा सकती थी।

''मुझे नहीं पता था कि मुझे स्कूल जाने का एक अधिकार है, लेकिन मैं फिर भी वहाँ गई और मैंने अध्यापकों से मुझे पढ़ाने के लिए कहा जबकि मुझे इन पाठों में शामिल होने की अनुमति नहीं थी।''

''मैंने अपने पिता को एक संदेश भेजा और उन्होंने मुझे अपनी नई पत्नी के साथ रहने के लिए आने दिया। लेकिन वो मेरी बुआ से भी बदतर थी। वो मुझे पीटा करती थी और मुझे कोई भोजन नहीं देती थी। सबसे बुरी बात यह रही कि जो धन मेरे पिता ने स्कूल के शुल्क के लिए अलग रखा था, वो उसने ले लिया और अन्य कार्यों में खर्च कर दिया।''

### चाचा द्वारा मदद

''जब मेरे पिता को पता चला कि यह सब हो रहा है तो उन्होंने मुझे मेरी माँ के साथ रहने के लिए भेज दिया। मैंने सोचा कि वो मुझे प्यार करेगी, लेकिन जब मैं वहाँ गई तो उसने कहा कि मेरा काम बागवानी करना था, और मुझे स्कूल जाने की एक दिन की भी उम्मीद नहीं करनी चाहिए।''

''सौभाग्य से मेरे चाचा को इसका पता चल गया, और उन्होंने मेरी माँ से जबरदस्ती की कि मुझे स्कूल जाने दिया जाए। उसने मुझे पीटना बंद कर दिया, लेकिन अब भी मुझे हर रोज़ फल एवं सब्जियां बेचनी पड़ती हैं।''

''मेरे दादा का कहना है कि स्कूल में मेरा यह आखिरी साल है। उन्होंने मेरी शादी के लिए एक जगह बात की है, और उस आदमी को मेरे परिवार के लिए भुगतान करना होगा। मुझे वास्तव में डर लग रहा है, लेकिन मैं जानती हूँ कि मुझे शिक्षा का अधिकार है। अतः मैं अपनी जगह पर अड़ी हूँ। मेरे चाचा मेरी तरफ हैं, और यदि मेरे दादा मेरा विवाह करने की जल्दी करेंगे तो मैं भाग जाऊँगी और अपने चाचा के साथ रहने लगूँगी।''

**साशा स्कूल के बाद और सप्ताहांत पर अलग उपज हर दिन बेचती है। ''यह तब तक ठीक है जब तक मुझे रात में या स्कूल के समय ऐसा करने की जरूरत नहीं पड़ती है,'' वो कहती है।**

**रुटेण्डो, न्याशा, साशा, इयुवेल्ली और शेडज़ा हर दिन बाल अधिकार क्लब में मिलते हैं। स्कूल में और बाल अधिकार क्लब में उसकी दोस्ती, साशा के जीवन की सबसे अच्छी बातें हैं। जब सारे घर की परिस्थिति कठिन है, तब वह अपने दोस्तों के साथ हंस सकती है और अपने अधिकारों को जान कर सशक्त महसूस कर सकती है।**

**बाल अधिकार क्लब में लड़कियों ने एक नृत्य 'मेरे निजी अंगों को मत छुओ' को लिखा है। यह इसके बारे में है कि कैसे अन्य लोगों को उन्हें छूने की अनुमति नहीं है।**

# ''यह मेरा शरीर है!''

**जिम्बाब्वे में, 13 वर्षीय पेडामायो ने कुछ अन्य लड़कियों के साथ, एक बाल अधिकार क्लब शुरू किया है। उसने एपवर्थ में, जहां वो रहती हैं, लड़कियों के अधिकारों के बारे में जागरूकता उत्पन्न की है।**
**''मैंने वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स राइट बाल अधिकार राजदूत की तरह प्रशिक्षण लिया और मुझे एक समारोह में प्रमाण पत्र दिया गया।''**

लड़कियाँ आपस में अपने शरीर से सम्बन्धित अधिकारों के बारे में बहुत सारी बातें करती हैं, और उन्होंने एक नृत्य बनाया है जिसके साथ एक गीत लिखा है, इस पर कि क्यों किसी को उनके शरीर को छूने की अनुमति नहीं है।

''हम लोगों को सिखाते हैं कि किसी के शरीर को, विशेष रूप से गुप्तांगों को, छूना गलत बात है। अतः अब लड़कियों को पता है कि यदि कोई ऐसा करता है तो यह एक अवैध हमला है। हमें वयस्कों को भी इस जानकारी के बारे में यह सुनिश्चित कराना है कि बच्चों को सुरक्षा का अधिकार है।''

### हिंसक पिता

लड़कियाँ दूसरों को बताती हैं कि बच्चों को किसी भी वयस्क की हिंसा को नहीं झेलना चाहिए। पेडामायो की अपने घर पर हुई हिंसा की कुछ यादें है, और वो अक्सर अपनी स्वयं से मिलती–जुलती कहानियों वाली लड़कियों से मिलती है।

''मेरे पिता ने हर दिन हम सब के सामने मेरी मां को पीटा। वो मर गई होती – जैसे मानो उनको इस बात की परवाह नहीं थी। कभी कभी वो मुझे भी पीटते थे। लेकिन एक दिन, जब मेरे पिता ने हमेशा की तरह मेरी माँ को कई बार पीटा, अचानक कुछ अनचाहा हुआ। हमारी माँ ने हमें बचने के लिए कहा। हमने बस कुछ वस्तुओं को लिया और भाग गए। हम अपनी दादी के घर पर सुरक्षित हैं। पिताजी यहां नहीं आ सकते, क्योंकि अंत में वो जेल चले गए।''

**पेडामायो, बाल अधिकारों के बारे में बच्चों से बातचीत करने जाती है, और उन्हें दि ग्लोब पत्रिका दिखाती है। ''यह महत्वपूर्ण है कि हम लड़कियों के अधिकारों के बारे में लड़कों से बात करें जिससे वो समझे कि उनका एक उत्तरदायित्व है कि वे उनका सम्मान करे'' वो बताती है।**

# दि ग्लोब मेरी मदद करती है

**''क्या तुम यहाँ नहीं रह सकते?'' एवलिन अपने छोटे भाई से कहती हैं। ''कृपया, कृपया?'' लेकिन उसके दादा उसको सुन लेते हैं, और उसके छोटे भाई पर चिल्लाते हैं कि वो जाए और गायों को चराये। तो एलविन फिर से अपने दादा के साथ अकेली हो जाती है।**

पहली बार जब एलविन के दादा उसके साथ दुराचार करते हैं तब वो केवल चार साल की है। कोई यह होते हुए नहीं देखता, और एलविन के दादा उसे मार डालने की धमकी देते हैं यदि उसने किसी को भी इसके बारे में बताया। एक दिन, जब एलविन और उसकी बड़ी बहन दुकान को जा रहे होते हैं, तब उसकी बहन अचानक उससे कहने लगती है कि यही बात उसके साथ भी हुई थी जिसके बाद वो घर से चली गई थी। तो अंत में, एलविन उससे कह सकती है कि उसके साथ क्या हो रहा है। बहनों को पता है कि बिना सबूत के, कोई भी उनका विश्वास नहीं करेगा, लेकिन दुकान से घर पहुचने तक वो एक योजना बना लेती हैं।

### सत्य बाहर आता है

अगली संध्या, एलविन अपनी नोटबुक और कलम बाहर निकाल लेती है। आम–तौर पर जब वो अपने स्कूल का गृहकार्य करती है तब वो कमरे के बीच में बैठती है, जिससे हर कोई देख सके कि वो क्या लिख रही है। लेकिन इस बार उसने अपनी किताब छुपा रखी होती है।

''तो ठीक है, मैं तुम्हारे प्रेमी को पत्र लिख दूंगी,'' एलविन ज़ोर से अपनी बहन से कहती है। वो देखती है कि उसके दादा उसे घूर कर देख रहे हैं, और कुछ सेकंड के लिए वह वापस उन्हें घूरती है।

उसके दादा को लगता है कि वो किसी को उनके बारे में बताने की योजना बना रहे हैं, इसलिए वो लड़कियों पर क्रोधित हो उठते हैं। अगले ही पल उनका बड़ा भाई उन दोनों के बीच आ जाता है। ''आपको क्या लगता है कि आप क्या कर रहे हैं?'' वह पूछता है।

''लड़कियों पर हाथ उठा रहे हैं सिर्फ इसलिए कि वो एक पत्र लिख रही हैं!''

तब बहनों उसे बताती हैं। उनके दादा सब कुछ से इनकार करते हैं, लेकिन उनका भाई समझ जाता है कि यदि यह सच नहीं होता तो वह इस तरह से लड़कियों पर नहीं बिगड़े होते। तीनों भाई–बहन अपने पिता के पास जाते हैं और उसे बताते हैं।

### दादाजी चीखते हैं:

''यदि तुमको लगता है कि जो वो कह रहे हैं उसका एक शब्द भी सच है, तो तुम मुझे मारो!''

एलविन देखती है कि उसके पिता की मुट्ठी उसके दादा के चेहरे पर लगती है। ''अंत में, यह खत्म हो गया है,'' वह अपने मन में सोचती है। लेकिन उसके एक चाचा उसके दादा का पक्ष लेते हैं, और फिर उसके पिता पुलिस के पास नहीं जाते। इसके बजाय, एलविन की नानी पुलिस के पास जाती है, और एलविन के दादा को जेल में 10 साल की सज़ा सुनाई जाती है।

### दि ग्लोब पढ़ना शुरू कर दिया

''अब मैं सुरक्षित हूँ, अपनी माँ और दादी के साथ रह रही हूँ। जिस समय मेरे दादा के बारे में पुलिस को सूचना दी गई थी, मैं अपने अधिकारों से संबन्धित 'वर्ल्डस चिल्ड्रेन्स प्राइज़' के एक प्रशिक्षण प्रोग्राम में भाग लेने चली गई थी और मैंने 'दि ग्लोब' को पढ़ना शुरू कर दिया। जब मैं उसे पढ़ती हूँ तो मैं देखती हूँ कि मुझे स्वयं की रक्षा करने का अधिकार है, तो मैं बेहतर महसूस करती हूँ। अपने अधिकारों को जानना मुझे आगे की ज़िन्दगी में चलते रहने के लिए प्रेरित करता है,'' एलविन, 14 कहती है। ⊕

**एवलिन के दादा चार साल की उम्र से उसके साथ दुराचार कर रहे है जब तक वह बारह साल की हो गई। अब उसको सहारा मिल गया है, और 'दि ग्लोब' को पढ़ कर उसे अपने अधिकार मालूम हो गए हैं। वो उसे जीवन में आगे बढ़ने में सहायता कर रही है।**

TEXT: EVELINA FREDRIKSSON PHOTOS: KIM NAYLOR

बाल अधिकार हीरो प्रत्याशी – पृष्ठ 50–70

# Rosi Gollmann

## रोसी को क्यों नामित किया गया है?

**रोसी गोलमैन को सन् 2016 के वर्ल्डस चिल्ड्रेन्स प्राइज़ के लिये नामित किया गया है क्योंकि वो 50 वर्षों से भारत और बांग्लादेश में अत्यधिक गरीब एवं बेसहारा बच्चों के लिये संघर्ष कर रही है।**

रोसी द्वितीय विश्व युद्ध के समय नाज़ी जर्मनी में पली, और उसने लोकतंत्र का आतंक, भेदभाव और निलंबन का अनुभव किया, जो युद्ध लाता है। 18 वर्ष की आयु में ही उसने यह निर्णय लिया कि वो गरीब एवं पीड़ित लोगों के लिए अपना जीवन समर्पित करेगी जिससे वे स्वयं अपनी मदद कर सकें । रोसी ने अंधेरी–हिल्फे नामक संगठन की स्थापना की, जो 50 वर्षों से, स्थानीय सहयोगियों के साथ, 3,000 परियोजनाओं पर काम कर रही है, जिसके द्वारा एक करोड़ लोगों को बेहतर भविष्य का लाभ मिल चुका है। रोसी की मदद से 50,000 बाल श्रमिकों को मुक्त किया जा चुका है और वो स्कूल जाने में सक्षम हो चुके हैं। दसों हज़ारों विकलांग बच्चों को भी सहारा और प्रशिक्षण दिया गया है। रोसी और अंधेरी–हिल्फे, एच.आई.वी. एवं एड्स के साथ जी रहे परिवारों को सहारा देते हैं और एक पुरानी परंपरा के विरुद्ध लड़ते हैं, जिसके अनुसार कुछ मंदिरों में लड़कियों को सेक्स गुलाम होने के लिए मजबूर किया जाता है। रोसी और प्रतिबद्ध स्थानीय कर्मचारियों को धन्यवाद कि उनके प्रयासों से बांग्लादेश में दस लाख से अधिक लोगों को अपनी दृष्टि वापस मिल चुकी है। एक अभियान, 'कोई महिला अवांछित नहीं' के ज़रिये, 12,000 भारतीय लड़कियों को बचाया जा चुका है जो जन्म के समय मार दी गई होतीं। साथ ही, लड़कियों के अधिकारों को मजबूत किया जा चुका है और बाल विवाह रोक दिया गया है।

**कई वर्षों तक अंधे रहने के बाद, हंसा (बाएं) और सालुद्दीन फिर से देख सकते हैं। वे उन दस लाख लोगों में से एक हैं, जिनका ऑपरेशन किया गया है और जिनकी दृष्टि वापस आ गई है, इसके लिए रोसी को बांग्लादेश के अंधों हेतु लंबे समय तक संघर्ष करने के लिए धन्यवाद।**

**संध्या का समय हो रहा है, जब रोसी, 17, अस्पताल में अपने पिता से मिलने आती है, जो निमोनिया से ग्रस्त हैं। अनेकों अन्य रोगी गंभीर रूप से जल गये हैं। युद्ध चार वर्षों से चल रहा है, और अब लगभग हर रात बम गिरते हैं।**

अचानक सायरन बजते हैं, और रोसी, अपने सिर के ऊपर, बम गिराने वाले हवाई जहाज़ों की गड़गड़ाहट सुनती है। एक भयानक विस्फोट इमारत को हिला देता है, और सभी खिड़कियाँ चकनाचूर हो जाती हैं। नर्सें चिल्ला रहे रोगियों की मदद के लिए उनको बिस्तर से बाहर निकाल कर नीचे तहखाने में ले जाने के लिए आती हैं। रोसी और उसके पिता ही रह गए हैं। जैसे ही वो मदद के लिए चीखती है, तभी एक गगनभेदी धमाका होता है जिससे छत में दरारें पड़ जाती हैं और वो ढह जाती है। पर रोसी अपने पिता को पलंग से उठाने में सफल होती है और उसे सीढ़ियों से नीचे खींच कर ले जाती है। खिड़की में से, वो आसमान से बम की वर्षा होते हुए देखती है। सारी अग्नियाँ और विस्फोट, आकाश को दिन के उजाले की तरह प्रकाशित कर देते हैं।

सब लोग तहखाने में शरण ले लेते हैं, लेकिन जल्द ही अस्पताल में आग फैल जाती है, फिर वो बगीचे में बाहर पलायन के लिये भागते हैं।

एक बार बाहर आने के बाद, जो लोग खड़े हो सकते हैं, एक मानव श्रृंखला बना लेते हैं जिससे वो आग को बुझा सकें। कई घंटों तक, रोसी आगे–पीछे पानी की बाल्टियों को लेकर दौड़ती है, और सुबह तक आग बुझ जाती है। वो और उसके पिता बच गये हैं, लेकिन अधिकांश अस्पताल नष्ट हो गया है। बाद में, रोसी शहर में चलते हुए एक छोटे स्वास्थ्य केंद्र की ओर जाती है जहाँ वो काम करती है। अब भी अग्नियाँ सड़कों पर जल रही हैं। नष्ट हुए घरों से धुआँ निकल रहा है, और सड़कों पर जले हुये शव अटे पड़े है जिनकी ओर घ्यान देने का समय किसी को नहीं मिल पाया है।

### रोसी पलायन करती है

इस के कुछ ही देर बाद, रोसी का कार्यस्थल भी एक बम से नष्ट हो जाता है। वो और उसके पिता हजारों अन्य लोगों के साथ शहर से पलायन करने का निर्णय लेते है। यह एक खतरनाक यात्रा है, क्योंकि बम गिराने वाले हवाई जहाज, ट्रेन की पटरियों और सड़कों को भी निशाना बना रहे हैं। एक रात, रोसी के पिता कहते हैं कि वो अब बिल्कुल नहीं चल सकते। अतः रोसी एक ठेला चुराकर लाती है जिस पर वो अपने पिता और बैगों को ले जा सके। वो 20 किमी दूर अगले रेलवे स्टेशन पर पहुंचने में कामयाब होते हैं, और अन्त में रोसी की मां के पास पहुंच जाते हैं, जो पहले से ही शहर को छोड़ कर उन सुरक्षित ग्रामीण इलाकों को भाग चुकी है।

कुछ सप्ताह बाद, मई, सन् 1945 में युद्ध समाप्त हो जाता है। रोसी खुश है

**रोसी और उसके दो भाई, द्वितीय विश्व युद्ध (1939–1945) के दौरान जर्मनी में पले बढ़े। दोनों को सैनिक बनना पड़ा और उनमें से ज्येष्ठ वाले की 21 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई। 42 से 60 मिलियन के बीच लोग मारे गये। अधिकतर नागरिक – साधारण लोग – न कि सैनिकों की मौत हुई।**

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: ANDHERI-HILFE

कि हिटलर और नाजी चले गए, लेकिन वह लाखों निर्दोष लोगों की मृत्यु के लिये शोकग्रस्त हो जाती है ।

प्रजातंत्र समाप्त कर दिया गया

रोसी केवल छह साल की थी जब एडोल्फ हिटलर और उसकी नाजी पार्टी 1933 में जर्मनी में सत्ता में आयी थी। उन्होंने सारे लोकतंत्रिक अधिकारों को समाप्त कर दिया और सभी लोगों के विरुद्ध कार्रवाई की, उनको बन्दी बनाया और मार डाला जो उनके सपनों के समाज में सही नहीं बैठे। नाजियों को लगता था कि वो एक विशेष जाति के लोग हैं, 'एक आर्य जाति', जो अन्य सभी जातियों से श्रेष्ठ है। सभी समूहों को एक प्रकार का खतरा समझा गया जिसे समाप्त कर देना आवश्यक था। उदाहरण के लिए, सारी जातियों के समूहों का सफाया करने में, साठ लाख यहूदीं और सैकड़ों हजारों रोमन नाज़ी मारे गये। लेकिन नाजी जर्मनी हर किसी के लिए खतरा था जो उनकी बात बिल्कुल सही से नहीं मानता था। रोसी के माता–पिता का मानना था कि हिटलर के जातिवाद वाले विचार उनकी मानवता और गरिमा वाली ईसाई मान्यताओं के विरुद्ध थे। वो छिप कर अन्य देशों के रेडियो प्रसारणों को सुनते थे, जिससे सच्चाई का पता चल चल सके कि क्या हो रहा है। लेकिन उनके पड़ोसी, जो ईसाई थे, नाजियों के लिए प्रतिबद्ध थे। उन लड़कों में से एक रोसी के भाई के साथ खेलता था।

''सावधान रहो, कि तुम क्या बोलो जब वो यहाँ हो'', रोसी के माता–पिता ने कहा। यदि वो लड़का अपने माता–पिता को बताता है कि रोसी का परिवार हिटलर को नहीं चाहता, तो हम सब एक जेल शिविर में पहुंच जाएंगे। नाजियों ने सभी राजनीतिक दलों पर प्रतिबंध लगा दिया और उन पुस्तकों को जला दिया जो उनको पसन्द नहीं आयीं। उन्होंने सभी युवा संगठनों पर प्रतिबंध लगा दिया और इसके बजाय हिटलरजुगन्ड (हिटलर युवा) नामक संगठन शुरू कर दिया। जब रोसी और उसकी मित्रों ने नियमों को तोड़ा और वो अपने स्थानीय चर्च में मिले, तब हिटलर युवा के कुछ लड़के बाहर एकत्रित हुए, नारेबाजी की और जब रोसी और उसकी दोस्तें बाहर निकले तब उन पर हमला किया। रोसी क्रोधित थी और वो नाजियों के विरुद्ध बोलना चाहती थी, लेकिन एक युवा पादरी ने उसे बोलने से रोक दिया। उसमें बहुत खतरा था।''

**एक कठिन विकल्प**

जब युद्ध 1945 में समाप्त हो गया, तब रोसी और उसके माता–पिता वापस बॉन आ गये जहाँ 90 प्रतिशत भवन क्षतिग्रस्त अथवा नष्ट हो चुके थे। रोसी का घर अभी भी वहीं था, लेकिन तीन बेघर परिवार उनके पुराने मकान में पहले से रह रहे थे और उनको उनके साथ रहना पड़ा।

रोसी ने एक शिक्षक बनने के लिए अध्ययन किया। अपने खाली समय में वो बॉन के एक झुग्गी क्षेत्र में काम करती थी जहाँ वो गरीब बच्चों, युवा लोगों एवं बुजुर्गों की सहायता करती थी। सब कुछ दुर्लभ था – आवास, भोजन, स्वच्छ पानी, वस्त्र एवं स्कूल की आपूर्ति। लेकिन कठिन परिश्रम के बाद, जीवन धीरे–धीरे सामान्य हो गया। एक दिन रोसी ने अपने माता–पिता से कहा कि उसने एक कठिन निर्णय लिया है।

**''मैं कभी शादी नहीं करूँगी।''**

उस समय, 70 वर्षों से भी ज़्यादा पहले, यह कोई नहीं सोच सकता था कि एक

© Bettmann/CORBIS

**द्वितीय विश्व युद्ध बच्चों के लिए एक कठिन समय था। यहाँ कुछ स्कूली बच्चे एक हवाई हमले का सायरन सुनने के बाद अपनी मेज़ों के नीचे छिपे हुए हैं।**

© Bettmann/CORBIS

औरत के पास नौकरी और परिवार दोनों हों। विवाहित महिलाओं से अपने घरों एवं परिवारों की देखभाल करने में सारे समय व्यस्त रहने की उम्मीद की जाती थी। पर रोसी जरूरतमंद लोगों की मदद करने के लिए स्वतंत्र रहना चाहती थी।

**भारत से बुलावा**

कुछ वर्षों तक एक शिक्षक के रूप में रहने के बाद, रोसी को एक खुशहाल एवं संन्तोषजनक जीवन बिताने का अवसर मिला जब उसने बहुत लोगों की मदद की। फिर भी, वो कभी–कभी सोचा करती थी कि क्या यही उसके जीवन का उद्देश्य था। इस प्रश्न का उत्तर एक अप्रत्याशित स्रोत से आया। एक सुबह, एक छात्र ने उसे भारत में, अंधेरी में, एक अनाथालय के बारे में, एक अखबार का लेख दिखाया।

''बच्चों को हर दिन खाने के लिए केवल एक मुट्ठी भर चावल ही मिल पाता है। हमें कुछ करना चाहिए'', लड़की ने कहा। रोसी को लगा कि भारत बहुत दूर है, लेकिन अंत में उसने अनाथालय को पत्र लिखा और पूछा कि उनकी क्या जरूरत है। फिर उसके छात्रों ने अनाथालय में हर बच्चे के लिए एक – कुल 400 आवश्यक बुनियादी युक्त पार्सल दान किये। उसके बाद, अन्य लोगों ने भी दान करना शुरू कर दिया, और जल्द ही उसके माता–पिता के अपार्टमेन्ट में, रोसी का छोटा सा सोने वाला कमरा, फर्श से छत तक, उपहारों से भर गयाः बर्तन, 65 मीटर लम्बा कपड़ा, एक फ्रिज, दवाएं एवं वस्त्र। रोसी ने स्वयं भारत जाकर इस दान को सौंपने का निर्णय लिया। एक यात्रा जो उसकी जिंदगी को बदल देने वाली थी।

**एक अलग तरह की गरीबी**

भारत में गरीबी से रोसी ने स्वयं को पहले से ही परिचित महसूस किया। युद्ध के दौरान, उसने सड़कों पर रहने वाले कई लोगों को भूखा और मरते देखा था। लेकिन वहाँ एक बड़ा अंतर था। जर्मनी में, युद्ध के दौरान की पीड़ा अस्थायी थी। लेकिन यहाँ गरीबी पूरी तरह से सामान्य रूप में देखी जाती थी, जबकि अनेकों अन्य भारतीय विलासिता में रहते थे। शायद ही कोई इस अन्याय के बारे में बात करता था।

अनाथालय में, रोसी का खुली बाहों से स्वागत किया गया। बच्चों ने उसके गले में इतनी सारी फूल मालाएं लटका दीं कि वह शायद ही सांस ले सकती थी! अब रोसी ने उन बच्चों को जाना जिनको उसने पहले केवल चित्रों में ही देखा था। स्वीटी, जो चार साल की थी, को सड़क पर पाया गया था और उसकी आँखें जली हुई थीं। दो लड़कियों का उनके गांव से अपहरण कर लिया गया था और उनको एक वेश्यालय में बेच दिया गया था। अन्य लड़कियों के साथ यौन दुराचार किया गया और वो गर्भवती हो गई, परिणामस्वरूप उनके परिवारों ने उनको घर से बाहर निकाल दिया था। जो नन अनाथालय चलाती थीं, उन्होंने बताया कि वहाँ पर अधिकतर बच्चे अनाथ नहीं थे, लेकिन उनके परिवार उनकी देखभाल करने में असमर्थ थे क्योंकि वे बहुत गरीब थे।

रोसी उस रात सो नहीं सकी। वह अक्सर दुख और क्रोध के कारण रोया करती थी, क्योंकि यह बहुत अनुचित था कि माता–पिता को गरीबी की वजह से अपने बच्चों को छोड़ देना पड़ा था। ''बच्चों को और कुछ से अधिक प्यार की जरूरत है,'' उसने स्वयं में सोचा। ''क्या हम सही काम कर रहे हैं? बच्चे भूखे होते हैं, तो हम उन्हें भोजन देते हैं। बच्चे बीमार होते हैं, तो हम उन्हें दवा देते हैं। लेकिन क्या हमें इन समस्याओं से निपटने के लिए उनकी जड़ों तक नहीं पहुँचना चाहिए?''

जब रोसी घर लौट आई, तब उसने जल्द ही वापस आने का वादा किया। अब वह जानती थी कि उसके जीवन का कार्य, जिस कारण उसने अपने स्वयं के बच्चों के होने के विचार को छोड़ दिया था, वह भारत में था।

**महिलाएं संसार बदल देती हैं**

अनाथालय, बच्चों के लिए अंधेरी में, एक आश्रय एवं एक छोटा सा फार्म शुरू करना चाहता था जिससे उनके लिए भोजन, दूध और एक आय प्रदान करी जा सके। रोसी ने पूँजी जमा की जिससे यह सम्भव हो सके, और जल्दी ही सब्जी लगाने के लिए भूमि का एक अंश उपलब्ध हो गया और शुरूआत में कुछ मुर्गियाँ और बकरियाँ भी पाल ली गयीं। रोसी ने स्वयं की एक संस्था शुरू की और उसे 'अंधेरी–हिल्फे' (अंधेरी के लिए सहायता) नाम दिया।

उसने अनेकों बार भारत की यात्रा की जिसमें उसने गांवों और झुग्गी बस्तियों में लोगों को प्रोत्साहित करके उनसे सम्बन्धित विचारों एवं कार्यक्रमों का विकास किया। स्थानीय नेताओं ने अपने स्वयं के संगठनों का गठन किया और साथ में उन्होंने महिलाओं के लिए रोजगार प्रशिक्षण के प्रस्ताव द्वारा गरीबी को जड़ से मिटाना शुरू कर दिया, उदाहरण के लिए, महलिाओं के लिए व्यवसाय सम्बन्धी प्रशिक्षण। एक बार माताओं की आय बन जाती, फिर वह अपने बच्चों को घर ले जा सकती थीं। कुछ वर्षों बाद, 40,000 बच्चे, अनाथालयों में बड़े होने के बजाय, अपने परिवारों के साथ पुनः जुड़ चुके थे।

''यह इस बात का प्रमाण है कि

**थारानी, 11, एच.आई.वी. के साथ पैदा हुई थी, लेकिन रोसी, अंधेरी–हिल्फे और उनके भारतीय साझेदारों से समर्थन के लिए धन्यवाद, वह अच्छे स्वास्थ्य में है। प्रति वर्ष, एच.आई.वी. और एड्स के साथ जी रहे सैकड़ों गरीब परिवारों को अच्छी तरह से रहने एवं अपने अधिकारों के लिए लड़ने हेतु समर्थन प्राप्त होता है।**

महिलाएँ दुनिया को बदल सकती हैं,'' रोसी कहती है। ''मैने जाना कि दान देना समस्या का हल नहीं था। एक इंसान को 'विकसित' नहीं किया जा सकता – वो स्वयं ही अपने आप को विकसित कर सकता है,'' रोसी कहती है।

रोसी को जल्द ही शिक्षण छोड़ देना पड़ा जिससे वो अपना सारा समय अंधेरी–हिल्फे के लिए काम करने में दे सके। उसने किसी भी वेतन को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया, और वो अपनी थोड़ी सी शिक्षक की पेंशन से गुज़ारा करने में संतुष्ट थी। आज, अंधेरी–हिल्फे एक प्रसिद्ध संगठन के रूप में विकसित हो गया है, तथा भारत और बांग्लादेश में साथी संगठनों के साथ हाथ मिलाकर लगभग 150 विकास परियोजनाओं का समर्थन कर रहा है।

### निर्धनता का उन्मूलन

रोसी को कभी खेद नहीं हुआ कि उसने कभी शादी नहीं की। अंधेरी–हिल्फे और उससे जुड़े लोग ही उसका परिवार हैं। उसने एक बेटी, मैरियन, को भी गोद ले लिया है, जो अंधेरी के बाल गृह के बच्चों में से, उसकी सहायक के रूप में, उसके साथ जर्मनी गई थी। वह अब रोसी के साथ रहती है और उसके साथ काम करती है।

''हम गरीबी में रहने वाले लोगों के अधिकारों के लिए लडना़ कभी नहीं रोक सकते,'' रोसी कहती है। ''विश्व की आबादी का एक–दसवां भाग, उसके संसाधनों में से 85 प्रतिशत का मालिक है। जबकि वैश्विक जनसंख्या का आधा भाग, केवल 1 प्रतिशत का ही मालिक है। हम इस पैमाने पर अन्याय नहीं स्वीकार कर सकते।''

रोसी जल्द ही 90 वर्ष की हो जाएगी, लेकिन वह कभी काम करना बंद नहीं करेगी।

''मुझे अपने रास्ते में इतने सारे लोगों के साथ–साथ चलने का सौभाग्य मिला है जो अब एक खुश और अधिक सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि मैं भी खुश हूँ!'' ⊕

## रोसी और अंधेरी–हिल्फे कैसे काम करते हैं

**रोसी और उसके संगठन अंधेरी–हिल्फे के भारत और बांग्लादेश में, स्थानीय संगठनों के साथ, लगभग 150 परियोजनाओं में काम चल रहा है। वे अकेले भारत में, एक वर्ष में, 700,000 से अधिक लोगों तक पहुँचते हैं। हर साल वे लोगों को समर्थन देते हैं जिसमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं:**

- **20,000 गांवों में, बच्चों की शिक्षा के साथ, जीवित रहने के लिए तथा बाल संसदों को शुरू करने के लिए।**
- **1,40,000 गरीब एवं वंचित वर्ग के बच्चे एवं वयस्क जिनमें विकलांग एवं स्वदेशी लोगों के समूह विशेष रूप से शामिल हैं।**
- **लड़कियों जिनका जन्म के समय मार डाले जाने का जोखिम रहता है।**
- **बाल श्रमिकों एवं बच्चे दासों जिनको मुक्त कर दिया जाता है और स्कूल जाने के लिए अवसर दिया जाता है।**
- **बांग्लादेश में दसों हजारों नेत्रहीन लोग। दस लाख से अधिक नेत्र के आपरेशनों ने लोगों को उनकी दृष्टि वापस लौटा दी है और निवारक कार्य ने अंधा हो जाने से और अधिक बच्चों को रोका है।**

# लड़कियाँ जो गायब हो

**जैसे ही कोडियाम्मल के लिए जन्म देने का समय नज़दीक आता है, उसकी चिंता बढ़ जाती है। उसने देवताओं को पैसे और भोजन चढ़ाने की पारंपरिक प्रथा का पालन किया है जिससे उसका दूसरा बच्चा बेटा पैदा हो।**

कोडियाम्मल 16 साल की थी जब उसने शादी कर ली और अपने पहले बच्चे, एक बेटी को जन्म दिया। वह एक निराशा थी, फिर भी गांव की परंपरा के अनुसार, पहली पैदा बच्ची को जीने की अनुमति है। पर दूसरी बेटी को मर जाना चाहिए, क्योंकि यह माना जाता है कि उसके बाद अगला बच्चा स्वचालित रूप से बेटा पैदा होगा।

''एक बेटी को पालना, अपने पड़ोसी के बगीचे में पानी देने की तरह है'' गांव के बूढ़े लोगों का कहना है। जब एक गाँव की लड़की की शादी होती है, तब वह अपने पति और उसके परिवार के साथ चली जाती है। उसके माता–पिता को शादी के लिए भुगतान करना पड़ता है, और उसके पति के परिवार को उपहार देने पड़ते हैं जैसे पैसा, सोना, पशुधन, घरेलू सामान और बढ़िया वस्त्र। इसे दहेज कहते है और यद्यपि यह अवैध है, पर यह अब भी एक आम प्रथा है। इसलिए, कई बेटियाँ एक अभिशाप के रूप में देखी जाती हैं, जबकि बेटे परिवार के लिए पैसे लाते हैं।

एक संध्या, कोडियाम्मल अंत में, अपने मिट्टी एवं फूस से बने घर के फर्श पर, एक बच्ची को जन्म देती है। गांव की बुजुर्ग महिलाएँ उसकी मदद करने के लिए हैं, लेकिन कोडियाम्मल को अपने बच्चे को देखने को नहीं मिलता है। कोई कहता है: 'लड़की है' और बच्चे के साथ रात में बाहर गायब हो जाता है। बड़ी उम्र की महिलाओं को यह पता है कि यह महत्वपूर्ण है कि माँ को अपने बच्चे को पकड़ने का अवसर नहीं मिलना चाहिए, कुछ मिनटों के लिए भी नहीं, क्योंकि तब वह शायद उसको नहीं छोड़े।

### एक बच्चे की हत्या

कोडियाम्मल की बेटी उसके घर के बगल के आँगन में दफ़न है। उसका पति वहाँ एक चमेली की झाड़ी लगा देता है। कोई नहीं पूछता है कि क्या हुआ। गाँव में और पड़ोसी गाँवों में अधिकांश लोगों को पता है कि एक बच्चे को मारने के 14 तरीके हैं। जैसे किसी तरह की खाने या पीने की चीज़ नहीं देना, या उसे बाहर रात में ठंड में छोड़ देना। सबसे आम तरीकों में से एक है कि एक विशेष जहरीले पेड़ के तने से निकाले गये दूधिया तरल की कुछ बूँदें निचोड़ कर बच्चे को देना। इससे आधे घंटे के अन्दर बच्चा मर जाता है। जब भी कोडियाम्मल उस चमेली की झाड़ी के पास से निकलती है तब उसे सीने में दर्द महसूस होता है और उसे अपने आँसू निकलने से रोकना पड़ता है। वह उस गरीबी से नफ़रत करती है जिसने उसे मजबूर किया कि वह अपने बच्चे को मरने दे। एक औरत होते हुए, उसमें कोई शक्ति नहीं है और न ही वो विरोध कर सकती है। लेकिन इस गाँव में यह सामान्य बात है, वह स्वयं से कहती है, और वह शिकायत नहीं कर सकती। कई महिलाएँ दुख से भरी हुई हैं क्योंकि यहाँ लगभग हर परिवार ने कम से कम एक बच्ची अपने फर्श के नीचे या अपने बगीचे में दफ़न कर रखी है।

### अवांछित लड़कियाँ

कुछ महीने बाद, कोडियाम्मल एक और बच्चे को जन्म देने वाली है। यह एक बेटा होना चाहिए क्योंकि परिवार अपनी दूसरी बेटी का बलिदान कर चुका है। लेकिन वह बहुत सी महिलाओं को जानती है जो अपनी बेटियों को मरवा चुकी हैं और उसके बाद भी फिर से एक लड़की को जन्म दिया है।

एक सुबह, एक पड़ोसी महिला मिलने के लिए आती है। वह गाँव के नए महिला समूह 'इक्कम' की एक सदस्य है, जिसका मतलब होता है एकता।

''अब लंबे समय तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी?'' वह कहती है, कोडियाम्मल के पेट की ओर देखते हुए।

# गयीं

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: KIM NAYLOR

अन्नान्धी को रहने की अनुमति मिल गई। उसके नाम का मतलब खुशी होता है।

कोडियाम्मल देवताओं को प्रसाद देने के लिए गांव के मंदिर गई थी जिससे उसके बेटा पैदा हो।

**इतिहास में भ्रूण हत्या**

**इतिहास के दौरान, लगभग सभी देशों एवं संस्कृतियों में, गरीबी अथवा परंपरा के कारण, अनचाहे बच्चों को जन्म के समय मार दिया गया अथवा मरने के लिए छोड़ दिया गया। उदाहरण के लिए, यूरोप में, 20वीं सदी में, कई अवांछित बच्चों को ऐसे बाल–गृहों में छोड़ दिया गया जिनका संचालन करने वालों को लोग "एन्जिल मेकर्स" कहते थे क्योंकि उनकी देखरेख में बहुत सारे बच्चों का निधन हो गया। कुछ अपने आप ही मर गये, अन्य उपेक्षा के कारण मारे गए।**

"क्या आपको याद है कि हम किस बात पर सहमत हुए थे?"

जब से महिलाओं के समूह को पता चला है कि कोडियाम्मल गर्भवती है, तब से वे हर सप्ताह उससे मिलने आती रही हैं। वे उन सभी परिवारों से मिलती हैं जिनकी पहले से ही एक बेटी है और एक अन्य बच्चा पैदा होने वाला होता है।

"यदि तुम्हारी एक और बेटी हुई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे," महिला कोडियाम्मल को याद दिलाती है। "हम तुम्हें दो बकरियां, और पेड लगाने के लिए देंगें। तुम और तुम्हारे पति को प्रशिक्षण एवं रोजगार के साथ मदद मिलेगी यदि तुम लोग अपने बच्चे को जीवित रहने दोगे, भले ही वह एक लड़की हो।"

कोडियाम्मल 'इक्कम' के वादों पर विश्वास करना चाहती है। वह महिलाओं के समूह में शामिल हो गई है, और उसने अपने अधिकारों के बारे में जानना शुरू कर दिया है। लेकिन उसका पति अनिश्चित है। उसकी माँ उसे हर दिन खीजती है कि उसका परिवार एक और लड़की बर्दाश्त नहीं कर सकता। यहाँ तक कि कोडियाम्मल की अपनी माँ भी इससे सहमत है।

"बस वही करना जो हम हमेशा से करते आये हैं," वे दोनों कहती हैं।

## जॉय पैदा होता है

जब अंत में कोडियाम्मल के लिए जन्म देने का समय आता है, तब 'इक्कम' की महिलाएँ उसके साथ रहती है और निगरानी रखती हैं। वे उसके पिता या गाँव की किसी बड़ी उम्र की महिला को निकट नहीं आने देतीं हैं। यह बिलकुल उचित है क्योंकि अंत में, कोडियाम्मल की गोद में, एक छोटा सा, रोता हुआ बच्चा रख दिया गया है जो लड़की है।

बच्ची का नाम अन्नान्धी रख दिया जाता है, जिसका मतलब होता है खुशी।

# अन्नान्धी को जीवित रहने दिया गया

**अन्नान्धी को याद नहीं कि वो कितनी बड़ी थी जब एक दिन उसकी माँ ने उससे कहाः ''हम तुम्हें मारने की योजना बना रहे थे, लेकिन फिर हमने तुमको जीवित रहने दिया।'' लगभग उसी समय अन्नान्धी को पता चला कि उसकी एक बहन थी, जिसको उसके घर के दाहिने, बगल में, चमेली की झाड़ी के नीचे दफना दिया गया था।**

''वो मैं भी हो सकती थी,'' अन्नान्धी सोचती है। कभी कभी वह वहाँ बैठती है और अपनी बहन से बात करती है वहाँ आसपास कोई नहीं होता। वह अपने माता–पिता को दुखी या दोषी नहीं महसूस कराना चाहती।

''गुस्सा मत होना'', अन्नान्धी फुसफुसाते हुए कहती है। ''पिताजी मुझे भी मारना चाहते थे। उनको इससे बेहतर कुछ नहीं पता था।''

अन्नान्धी का जन्म गाँव में एक दावत के साथ मनाया गया। महिलाओं के समूह ने उसको दो नारियल के पेड़ और दो बकरियाँ दीं। परिवार बकरियों का दूध बेच देता है और इससे मिले धन से बड़ा अंतर पड़ गया है, विशेषतः जबसे अन्नान्धी के पिता की पीठ में चोट लगी, तब से उनके लिए काम करना कठिन हो गया।

### अन्नान्धी 'मां' बन जाती है

कुछ महीने पहले बकरियों के बच्चे पैदा हुए थे। एक माँ बकरी बूढ़ी थी और उसकी बच्चे को जन्म देने में मृत्यु हो गई, अतः अन्नान्धी बच्चों की 'नई मां' बन गई। उसने उन्हें दूध दिया, और बहुत सारा प्यार। अब बच्चों को उसे किसी और की जरूरत नहीं है सिवाय एक को छोड़कर। अन्नान्धी उसको 'श्री' कहकर बुलाती है, जिसका अर्थ होता है 'पवित्र'। पर श्री अस्वस्थ दिखती है, और जिस तरह से उसे बड़ा होना चाहिए उस तरह वह बड़ी नहीं हो रही है। जहाँ भी अन्नान्धी जाती है वह उसके पीछे चलती है, यहाँ तक कि स्कूल भी।

उसकी माँ और पिता श्री को वैसे प्यार नहीं करते जैसे अन्नान्धी करती है, लेकिन वे उसे जीवित रखना चाहते हैं। नर बच्चों से भिन्न, श्री उनके परिवार को भविष्य में दूध दे सकती है और नए बच्चे भी पैदा कर सकती है।

''यह तार्किक नहीं है,'' अन्नान्धी सोचती है। ''वयस्क केवल बेटे चाहते हैं, और वे अपनी बेटियों को मार डालते हैं। लेकिन पशुओं के साथ उलटा है। मादा पशु, गायों की तरह, मूल्यवान होते हैं। सांडों को मार कर खा लिया जाता है। क्यों नहीं लोगों को दिखता है कि एक लड़की मूल्यवान होती है? वह अपने परिवार की देखभाल उतनी ही अच्छी तरह से कर सकती है जितना कि एक लड़का, शायद और बेहतर, मुझे इस रवैये से नफ़रत है। मैं अपने जीवन में बहुत दूर तक जाऊँगी, यह दिखाने के लिए कि सभी लड़कियाँ मूल्यवान होती हैं और उन्हें जीने का अधिकार है।''

### सोने में कठिनाई

परिवार के घर की दीवारों में बड़े बड़े छेद हैं और वो छत की मरम्मत नहीं करवा सकते। जब वर्षा– ऋतु की बारिश होती है, तब घर चूता है। सब कुछ गीला हो जाता है और मिट्टी की दीवारें टूटना शुरू हो जाती हैं। एक बार जब अन्नान्धी नौ साल की थी, तब एक दीवार का हिस्सा उसके सिर पर आ गिरा, जब वह सो रही थी। तब से वह घर के ढह जाने से डरा करती है।

अन्नान्धी अक्सर जागी रहती है, यह सोचते हुए कि कैसे उसका परिवार अपना गुजारा करेगा जब तक वह और उसकी बड़ी बहन अपनी शिक्षा समाप्त करके कोई काम करना शुरू नहीं करतीं। एक रात, अपने माता–पिता के बीच पैसों को लेकर एक बहस सुनने के बाद, वह एक पलक नहीं सो पायी। उसके आँसू अंधेरे में गिरते हैं, लेकिन जब उसकी माँ वहाँ आती है तब वो सोने का

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: KIM NAYLOR

**अन्नान्धी अपने पिता, माँ, बड़ी बहन और दादी के साथ।**

दिखावा करती है। अगली सुबह वह चमेली की झाड़ी के पास बैठती है और फुसफुसाती है:

"यदि उन्होंने तुम्हें जीवित रहने दिया होता और इसके बजाय मुझे मार डाला होता, तो तुम मेरी तरह पीड़ित होती। कम से कम अब तुम सुरक्षित हो।" तब वह स्कूल चली जाती है, और उसकी बच्ची बकरी, श्री, उसके पीछे–पीछे पटपटाते हुए चली जाती है।

### पुरुष समस्या हैं

गाँव में कोई स्कूल नहीं है। अन्नान्धी और उसकी दोस्तें, कुछ किलोमीटर की दूरी पर, एक पड़ोसी गाँव के स्कूल में पैदल जाती हैं। रास्ते में वे पुरुषों के एक समूह को देखती हैं जो उनसे चिल्ला कर कहते हैं:

"आओ और हमारे साथ नृत्य करो!"

यह पुरुषों के लिए आम बात है कि वे स्कूल को जाती लड़कियों से बात करने की कोशिश करें। कभी कभी वे उनका पीछा करते हैं और उनके कपड़े खींचते हैं। अन्नान्धी की माँ ने उसे कह रखा है कि वह चीखे और अगर कोई हमला करे तो उससे लड़े। पहले यह अकल्पनीय हुआ करता था। इससे पहले, एक लड़की कभी किसी आदमी को मना नहीं कर पाती थी। यदि एक लड़की पर हमला होता था, तो हमेशा यह उसी की गलती मानी जाती थी। यह उन कारणों में से एक था कि लड़कियाँ स्कूल नहीं जा पाती थी – उनके माता पिता उन्हें भेजने से डरते थे।

अन्नान्धी का स्कूल में अच्छा दिन गुज़रा है, और घर जाते समय वह खुश है। वह अपने पिता को बताती है कि शिक्षक ने उसकी प्रशंसा की।

"तुम बहुत प्रतिभाशाली हो!" वह कहते हैं। "मैं कल्पना तक नहीं कर सकता कि तुम हमारे साथ यहाँ नहीं होती।"

### मुझे मत पीटो!

हर शाम अन्नान्धी स्थानीय रात के स्कूल को जाती है, जो ग्रामीणों द्वारा चलाया जाता है। महिलाओं के समूह से महिलाएँ बच्चों को उनके

**अन्नान्धी उन 12,000 लड़कियों में से एक है जिनकी जिन्दगियाँ दक्षिणी भारत के 210 गाँवों में अब तक बचा ली गयी हैं, रोसी एवं उसके भागीदारों को संघर्ष करने के लिए धन्यवाद।**

स्कूल से मिले गृहकार्य करने में मदद करती हैं और खेलों, नाटकों, गायन एवं नृत्य का आयोजन करती हैं। दोनों लड़के एवं लड़कियाँ अपने अधिकारों के बारे में जानते हैं और यह कि बेटे और बेटियाँ बराबर हैं। इससे पहले, अन्नान्धी के गांव में, लगभग सभी पुरुष अपनी पत्नियों को पीटा करते थे – यहाँ तक कि कभी कभी उनकी मौत भी हो जाती थी। इसके लिए कभी किसी को दंडित नहीं किया जाता था। लड़के अपने पिता के बाद उनके अधिकार ले लिया करते थे और अपनी बहनों तथा अन्य लड़कियों से बुरी व्यवहार करते थे।

अन्नान्धी के पिता भी पीते थे और उसकी माँ को पीटा करते थे, लेकिन उसने महिलाओं के समूह की मदद से उससे यह बंद करने के लिए कहा। उसने उसे छोड़ देने की धमकी दी अगर उसने शराब पीना और उसकी माँ को गाली देना बंद नहीं किया। और यह तरीका कामयाब रहा!

### शादी इंतज़ार कर सकती है

अन्नान्धी की तब तक शादी करने की योजना नहीं है जब तक वह कम से कम 25 साल की न हो जाए। पहले वह अपनी शिक्षा समाप्त करना चाहती है और एक अच्छी नौकरी चाहती है।

**संध्या के स्कूल में, लड़कियाँ एवं लड़के जीवन कौशल सीखते हैं तथा अपने अधिकारों एवं समानता के बारे में जानते हैं। उन्हें अपने स्कूल का गृहकार्य करने में भी मदद मिलती है, और वे खेलते हैं, नृत्य एवं नाटक करते हैं।**

"वे मेरी पहले से शादी करने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन मैं उनसे लड़ूँगी," वह कहती है। "मेरा पति दयालु तरह का होना चाहिए, और गृहकार्यों में हाथ बंटाने वाला। और उसके परिवार को कोई दहेज नहीं मिलने वाला। मेरी शिक्षा ही मेरा दहेज है! मैं खुद अपने पैसे कमाऊँगी।"

इन दिनों, अन्नान्धी के गाँव में, बच्ची लड़कियों की हत्या की परंपरा को लगभग पूरी तरह समाप्त कर दिया गया है। जिस क्षेत्र में वह रहती है, वहाँ सैकड़ों गाँवों में हजारों लड़कियों के जीवन बचा लिए गये हैं, जब से उनके माता–पिता को लड़कियों के बराबर मूल्य के महत्व के बारे में पता चला है, और सदियों पुरानी परंपराओं को बदलने के लिए वे एकत्रित हुए हैं।

"अब वे जानते हैं कि लड़कियाँ एक उपहार हैं, न कि एक सजा," अन्नान्धी कहती है।

### श्री कभी जागी नहीं

एक सुबह, जब अन्नान्धी बाहर बगीचे में कदम रखती है, तब बच्ची बकरी श्री लंघन करते हुए उसके पास नहीं आती। वह रात में मर गई, और एक पेड़ के नीचे ठंडी और बेजान पड़ी है। अन्नान्धी रोना बंद नहीं कर सकती, हालांकि वह जानती थी कि श्री बीमार थी। उसके आँसू दो दिन तक बहते रहते हैं, और वह लंबे समय तक बहुत दुखी रहती है। ऐसा लगता है जैसे

## Annandhi, 13

lcl: vPNh ckr% दोस्तों के साथ खेलना। स्कूल जाना।

lcl: cjh ckr% जब बच्ची लड़कियों को मार डाला जाता है।

n[kh gkrh g% जब मेरे माता पिता झगड़ा करते हैं।

pkgrh g% पशु, विशेष रूप से मेरी बकरियाँ।

cuuk pkgrh g% एक वकील, और न्याय के लिए लड़ना ।

उसने एक और बहन, या एक सबसे अच्छी दोस्त खो दी है। वह चमेली की झाड़ी के पास नीचे बैठती है, जहाँ से तीव्र मीठी गंध आ रही है।

"मुझे तुमसे मिलने को कभी नहीं मिला", वह जमीन के नीचे अपनी बहन से कहती है। "यदि तुमको जीवित रहने की अनुमति मिली होती, तो हम एक साथ खेल सकते थे और एक दूसरे का समर्थन कर सकते थे। भविष्य में, अगर किसी को एक बेटी नहीं चाहिए, तो मैं उसकी देखभाल करूँगी जैसे मानो वो मेरा अपना बच्चा हो।" ⊕

# अन्नान्धी की वस्त्रों की अलमारी

स्कूल यूनीफार्म

जश्न मनाने के लिए तैयार

"पीला मुझे खुश करता है!"

खेलना एवं गृहकार्य

## एक नाटक बच्ची लड़कियों की हत्या बंद करा देता है

अन्नान्धी और उसकी दोस्तें बाल विवाह एवं बच्ची लड़कियों की हत्या पर रोक लगाना चाहती हैं। उन्होंने एक नाटक का अभ्यास किया है जिसको वे अलग–अलग गाँवों में प्रस्तुत करती हैं, एक परिवार के बारे में जो अपनी बेटी को मारने की योजना बना रहे हैं, जैसे ही वह पैदा होती है। परिवार में सबसे पहले पैदा होने वाली बच्ची रोती है और कहती है:

"अगर तुमने मुझे मार डाला होता, तो मैं यहाँ नहीं होती।"

"हम एक और लड़की का भार सहन नहीं कर सकते," उसके पिता कहते हैं। "उसके लिए मदद उपलब्ध है। उसे रहने दें।"

बाद में पिता अपनी बेटी से कहता है:

"तुमको धन्यवाद, मैं जानता हूँ कि उसके लिए मदद और समर्थन उपलब्ध है। मैं वादा करता हूँ कि हम बच्चे का ख्याल रखेंगे।"

नाटक के बाद, लड़कियाँ वाहवाही के लिए दर्शकों को धन्यवाद देती हैं!

## लड़कियों के लिए संघर्ष करना

25 साल से भी अधिक पहले, रोसी गोलमैन और उसके मज़बूत भारतीय साझेदारों ने 'कोई महिला अवांछित नहीं है' नामक एक अभियान शुरू किया था। उस समय, शायद ही कोई – न राजनेता, न ही मीडिया, न ही पुलिस – इस तथ्य के बारे में खुलकर बात करता था कि भारत के कई भागों में हर तीन लड़कों के लिए केवल एक ही लड़की थी। लड़कियों को जन्म के समय ही मार दिया जाता था या फिर वो कुपोषण अथवा उपेक्षा के कारण मर जाती थीं। कई महिलाएँ गर्भपात भी करा लिया करती थीं, यदि उन्हें पता चल जाता था कि जिस बच्चे को वे अपने गर्भ में रखे हुए थीं वह एक लड़की थी। जब यह प्रकाश में आया कि कुछ अस्पतालों में 100 नर भ्रूण एवं 7,000 मादा भ्रूण का गर्भपात किया जा चुका है, तब राजनेताओं ने डॉक्टरों पर यह प्रतिबंध लगा दिया कि वे परिवारों को जन्म से पहले उनके बच्चे का लिंग न बताएँ। रोसी और भारतीय साझेदार संगठनों ने लड़कियों एवं माताओं को शिक्षित करने और सशक्त बनाने पर ज़ोर दिया। 210 गांवों में महान परिणाम हासिल किये गए हैं:

- 12,000 से अधिक लड़कियों के जीवन को बचा लिया गया है।
- लड़कियों में से 98 प्रतिशत अब स्कूल जाती हैं।
- 5,420 लड़कियों को प्रशिक्षित किया गया और उनके पास नौक. रियाँ हैं।
- 7,500 महिलाओं ने छोटे व्यवसाय शुरू कर दिये है जिसके लिए गाँव में महिलाओं के स्व–सहायता समूहों को ऋण देने पर धन्यवा. द। कई माताएँ, वस्त्र एवं शौच के तौलिए जैसी वस्तुएँ बेच कर अपने परिवारों का समर्थन कर रही है। पहले पुरुष क्रोधित हुए कि उनकी तुलना में महिलाएँ अधिक पैसे कमा रही थी, लेकिन जब उन्होंने देखा कि हर किसी के जीवन में सुधार हुआ है, तब वे खुश हैं।

# लड़कियों के लिए जश्न मनाओ!

महिलाएँ एवं लड़कियाँ गांव में एक जुलूस बनाकर सड़कों पर नवजात शिशु लड़की के घर को जाती हैं, गाते एवं संगीत बजाते हुए।

अन्नान्धी की बुआ के एक बच्ची पैदा हुई है और सारा गाँव उसके लिए एक स्वागत समारोह आयोजित कर रहा है। यह ग्रामीणों और रोसी के भागीदारों का विचार था कि नवजात लड़कियों के लिए दावतें आयोजित की जाएँ, हर किसी को दिखाने के लिए कि यह जश्न मनाने की बात है।

सोनिया, 12, उन दो नारियल पौधों में से एक को ले जा रही है जो हर नवजात लड़की को मिलते हैं। तीन साल बाद उनमें फल निकलेगा जिसे परिवार बेच सकते हैं। अतिरिक्त आय लड़कियों की स्कूली शिक्षा तथा बाद में उनके विवाह के लिए भुगतान करने में काम आती है।

बच्ची लड़की को उपहार दिये जाते हैं – एक नया वस्त्र, भोजन तथा गहने। और चेहरे पर काले टीके जो बुरी आत्माओं से सुरक्षा दिलाने के लिए होते हैं!

हर परिवार को दो बकरियाँ दी जाती हैं, जिनसे दूध और बच्चों प्राप्त होते हैं।

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: KIM NAYLOR

## सूर्या एक रोल मॉडल बनना चाहती है

सूर्या, 14, का एक सर्वप्रिय गीत है, जिसे एक माँ अपने अजन्मे बच्चे के लिए गाती है।

''पिता बेटी को मारना चाहता है, लेकिन माँ गाती है, 'मेरे सुंदर बच्चे, तुम्हारी आँखें एक तूफानी चिराग की तरह चमक रही हैं। मैं तुम्हारे जीवन के लिए लड़ूँगी।' मेरी माँ ने निश्चित किया कि मुझे जीवित रहने दिया जाए।''

सूर्या एक शिक्षक बनना चाहती है और उन लड़कियों की मदद करना चाहती है जो स्कूल छोड़ कर उसमें वापस आना चाहती हैं।

''मेरी माँ केवल 14 साल की थी जब उसकी शादी हुई, और उसे कभी स्कूल जाने को नहीं मिला। मैं अपने प्रधानाचार्य को आर्दश मानती हूँ। वह हर किसी से समान रूप से व्यवहार करती है। मैं भी एक रोल मॉडल बनना चाहती हूँ और दिखाना चाहती हूँ कि लड़कियाँ मूल्यवान होती हैं। बच्चों के बीच भेदभाव करना मुझे गुस्सा दिलाता है। आखिर, हम इस देश का भविष्य हैं!''

## पवित्रा एक पुलिस अधिकारी बनना चाहती है

''मैं एक पुलिस अधिकारी बनना चाहती हूँ, और उन पुरुषों को दंडित करना चाहती हूँ जो लड़ते हैं और दूसरों को चोट पहुँचाते हैं,'' पवित्रा, 11, कहती है, जो गाँव में अन्नान्धी की सबसे अच्छी दोस्तों में से एक है।

''यह मुझे गुस्सा दिलाता है और दुखी भी करता है जब मैं अपनी दो बहनों के बारे में सोचती हूँ जो मुझसे पहले पैदा हुई थीं। उन्हें सिर्फ इसलिए जीवित नहीं रहने दिया गया क्योंकि वे लड़कियाँ थीं। पर जब मेरे माता–पिता का ज्ञान अधिक हुआ, तब उन्हें लगा कि यह गलत था और मुझे जीने दिया गया। अब मैं अपनी माँ को आदर्श मानती हूँ। वह महिलाओं के समूह में हमारे अधिकारों के लिए लड़ती है और एक संध्या के स्कूल में शिक्षक है।''

पवित्रा को नृत्य करना प्रिय है।

''अन्नान्धी और मैं एवं अन्य लड़कियाँ जिनको बचा लिया गया है, कभी–कभी, खुशी लाने एवं लड़कियों के अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रस्तुति देती हैं। मुझे दोनों आधुनिक एवं पारंपरिक संगीत प्रिय है।''

# स्वागत एवं शुभ कामनाएं!

अन्नान्धी के गाँव में लड़कियाँ एक रंगोली बना रही हैं। यह स्वागत एवं अच्छी किस्मत का प्रतीक है जिसे रेत में अलग अलग रंग का उपयोग करते हुए रंगा गया है। इन कृतियों को अक्सर भारत के विशेष त्यौहारों में देखा जाता है।

रंगोली का अर्थ है 'रंगों की पंक्ति'। यह इस प्रकार करनी चाहिये:

1. अलग–अलग रंगों में रेत तैयार करो। (यदि बाहर हवा चल रही हो, तो रंग के बजाय चाक का उपयोग कर सकते हो।)
2. एक छड़ी द्वारा रेत में अपनी रगोली की रूपरेखा बनाने से शुरू करो, और फिर रूपरेखाओं को सफेद पाउडर से भरो।
3. रेत के अलग–अलग रंग से भरो। काम हो गया!

थांगा को क्रिकेट खेलना प्रिय है। उसे लड़कियों के समान अधिकारों के लिए बल्लेबाजी करना भी अच्छा लगता है!



वेंकेटेश अपनी बहन के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकता, जिसे मार डाला गया होता, लेकिन बचा लिया गया।

# लड़कियों के अधिकारों के लिए बल्लेबाज़ी

**"पहले ऐसा होता था कि हमारे गाँव में लड़कियों के साथ लगभग गुलामों जैसा व्यवहार किया जाता था, लेकिन अब सब बदल रहा है," गाँव की क्रिकेट टीम का कप्तान, थंगा, 14, कहता है।**

"हमने रात के स्कूल में लड़कियों के अधिकारों के बारे में सीखा। मेरी दो बहनों हैं जिनको घर पर सब कुछ करना पड़ता है। मेरे माता–पिता हमसे अलग तरह से व्यवहार करते हैं जो मुझे लगता है कि अनुचित है। वे मेरी बहनों पर चिल्लाते हैं, लेकिन मुझसे वे बस कहते है, 'जाओ आराम करो या खेलो'! यह मेरी बहनों को दुखी करता है, अतः मैं वैसे ही उनकी मदद कर देता हूँ। मैं आमतौर पर कपड़े धोता हूँ अथवा प्याज छीलता हूँ। इससे मेरी आँखों में बहुत जलन होती है और ऐसा लगता है कि मैं रो रहा हूँ!"

जब थंगा के स्वयं के बच्चे होंगे तब वह अपने बेटों और बेटियों के साथ समान व्यवहार करेगा।

"वे स्कूल जा सकेंगे और उन्हें कठिन परिश्रम करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। मैं किसी को अपनी कोई भी बेटी को जहर वाला दूध नहीं देने दूँगा। मैं अपनी बेटियों को केवल सामान्य दूध ही पीने दूँगा जिससे वे बड़ी होकर शक्तिशाली हों।"

थंगा एक इंजीनियर बनना चाहता है और गरीब लोगों के लिए बेहतर मकान बनाना चाहता है।

"जो घर हम आज बनाते हैं वो स्थिर नहीं हैं, और वे कभी कभी ढह जाते हैं। यह खतरनाक है, और यह मुझे गुस्सा दिलाता है।"

### बहन को बचाया

"मेरी बहन को जन्म के समय मार डाला गया होता, लेकिन उसे बचा लिया गया," थंगा का मित्र, वेंकटेश, 15, कहता है। "हमारे माता–पिता ने हमें बताया है कि पहले उन्हें इससे बेहतर कुछ नहीं पता था। अब वे जानते हैं। मैं अपनी बहन के बिना जीवन व्यतीत करने की कल्पना नहीं कर सकता। वह और मेरी माँ मेरा एक हिस्सा हैं!" ⊕

## पॉल चाहता है कि न्याय हो

"मैं एक पुलिस अधिकारी बनना चाहता हूँ और अपराध के लिए लड़ना चाहता हूँ। किसी को भी कोई भी जने को मारना या चोट नहीं पहुँचानी चाहिए। जब मैं उन पुरुषों के बारे में सोचता हूँ जिन्होंने अपनी पत्नियों को पीट–पीट कर मार डाला है, और उन परिवारों के बारे में जो अपनी बच्ची बेटियों को मार डालते थे तो मुझे बहुत दुःख होता है। इसे बन्द हो जाना चाहिए। रात्रि के स्कूल में, हम सीखते हैं कि हर किसी के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिए, और हमे लड़कियों को नीचा नहीं देखना चाहिए।"

पॉल के तीन भाई हैं, लेकिन कोई बहन नहीं है। "मैं अक्सर अपनी बहनों के बारे में सोचता हूँ जिनको मार डाला गया। मैं कल्पना करता हूँ कि वे अब कैसी लगती होतीं, और क्या खेल हमने मिलकर खेले होते।"

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: KIM NAYLOR

# स्वाति भाग गई

**स्वाति को अपनी दुगनी उम्र के एक आदमी से शादी करनी पड़ी जब वह साल केवल 15 वर्ष की थी। तीन साल बाद वह अपने पति को छोड़कर भाग गई। यहाँ वह अपनी माँ और दो बहनों के साथ चली जा रही है। गांव में महिलाओं का समूह, जिसे रोसी एवं अंधेरी–हिल्फे का समर्थन प्राप्त है, गांव में लड़कियों एवं महिलाओं के अधिकारों को सशक्त किया है।**

**सरिथा नौ वर्ष की है जब उसके माता–पिता ने उसकी बहन स्वाति की शादी कर दी। वह केवल 15 वर्ष की है, लेकिन वह अपने नए वस्त्रों एवं खनकते सोने के कंगनों में बड़ी लग रही है। जिस आदमी से वह शादी कर रही है वो लगभग उसकी दोगुनी उम्र का है।**

शादी कई दिनों तक चलती है, और स्वाति के परिवार को उसका सारा खर्च उठाना पड़ता है। पति दहेज के रूप में धन, घरेलू सामान और सोना मांगता है। एक बार शादी हो जाती है, तब स्वाति अपने पति के परिवार के साथ रहने के लिए दूसरे गाँव में चली जाती है।

अब सरिथा और उसकी दूसरी बहन नरथी, को अक्सर भूखा रहना पड़ता है। उनके माता–पिता को पैसे उधार लेने पड़े जिससे वे अपनी सबसे बड़ी बेटी का शादी करने का खर्च उठा सकें। अब लगभग सब कुछ जो वे कमाते हैं वो ऋण का भुगतान करने में चला जाता है। स्वाति कभी मिलने के लिए नहीं आती, और वह शादी के बाद एक बार भी स्कूल नहीं गई है, भले ही उसके पति के परिवार ने वचन दिया था कि वह उसे अपनी पढ़ाई जारी रखने देंगे।

### स्वाति घर आती है

अंत में, स्वाति घर आती है। वह रोती है, और थकी हुई और पतली लग रही है।

''वे मुझे हर समय पीटा करते हैं,'' वह कहती है। ''मुझे एक गुलाम की तरह काम करना पड़ता है, और वे मुझे स्कूल नहीं जाने देते हैं।''

''यह मेरी गलती है। मैने तुम्हारी शादी बहुत जल्दी कर दी,'' उसकी माँ, रोते हुए कहती है।

लेकिन पिता स्वाति को वापस उसके पति के पास भेज देते हैं।

''यदि तुम वापस नहीं जाओगी, तो यह एक घोटाला समझा जाएगा!'' वह चिन्तित होकर कहते हैं।

जब स्वाति का पहला बच्चा पैदा होता है, तो वह एक लड़की होती है। उसका पति क्रोधित हो उठता है, और अधिक पैसे माँगता हैं। ''तुमने मुझे पर्याप्त धन नहीं दिया था कि मैं इस बेकार सी पत्नी को रखूँ जो केवल लड़कियों को ही जन्म दे सकती है,'' वह कहता है। ''मुझे एक बेटा चाहिए!''

स्वाति के माता–पिता के पास कोई धन नहीं बचा है और शादी करने के लिए दो और बेटियाँ हैं। स्वाति की माँ ने स्वयं पाँच लड़कियों को जन्म दिया, लेकिन कोई बेटे नहीं। दो लड़कियों को जन्म के समय मार दिया गया था और वे परिवार के रहने वाले कमरे के गंदे फर्श के नीचे दफ़न हैं।

### स्वाति भाग जाती है

तीन साल बाद, स्वाति भाग जाती है और फिर से घर आ जाती है, और इस बार वह वापस जाने के लिए मना कर देती है।

''वे मुझे हर दिन सताते हैं। अगर मेरा अगला बच्चा लड़की हुआ, तो वे उसे मार देंगे।''

स्वाति की माँ, जो इस समय तक, गाँव की महिलाओं के समूह में शामिल हो चुकी है, कहती है:

''तुमको अब वापस जाने की जरूरत नहीं है। हमने पढ़ा है कि एक कानून है जो बाल विवाह और दहेज पर प्रतिबंध लगाता है। यदि तुम्हारा पति मुसीबत का कारण बनता है, तो हम पुलिस को बुला लेंगे।''

स्वाति की माँ और महिलाओं का समूह, स्वाति को नौकरी का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए मदद करता हैं जिससे वह एक महिला दर्ज़ी बन जाए।

''बहुत जल्दी शादी नहीं करना, पहले अपनी शिक्षा समाप्त कर लेना,'' स्वाति अपनी बहनों से हर दिन कहती है। ''मैं कभी शादी नहीं करूँगी,''नरथी, 15, कहती है। ''मैं, एक नर्स बनना चाहती हूँ, पैसा कमाना चाहती हूँ, और अपने परिवार की देखभाल करना चाहती हूँ।''

''यदि वे मेरे वयस्क बनने से पहले मेरी शादी करने की कोशिश करेंगे, तो मैं पुलिस के पास जाऊँगी,'' सरिथा कहती है।

### पिता के हृदय में बदलाव

उसके पिता और गाँव के अन्य लोगों को और बेहतर नौकरियाँ खोजने के लिए प्रशिक्षण एवं समर्थन मिल रहा है। वह स्वाति से उसे माफ कर देने के लिए कहता है।

''मुझे इससे बेहतर कुछ नहीं पता था, और तुमको उसकी वजह से नुकसान उठाना पड़ा। मैं अपनी अन्य बेटियों के साथ ऐसा नहीं करूँगा।''

उसकी माँ, एक गाय खरीदने के लिए, महिलाओं के समूह की बचत निधि से पैसा उधार लेती है। उसका दूध परिवार को एक सुरक्षित आय देता है।

''अतीत में, मेरी माँ मेरे पिता के विरुद्ध खड़ी नहीं होती थी,'' सरिथा कहती है। ''अब वह अन्य लड़कियों और महिलाओं को सिखाती है, कि वे अपने अधिकारों के लिए खड़ी हों, और मेरे पिता उसका समर्थन करते है! मैं बिलकुल उसकी तरह बनना चाहती हूँ!''

# सड़कों पर रहने की ज़िन्दगी

**संघीता, चेन्नई के बड़े शहर की सड़कों पर अपने परिवार के साथ रहती है। वह और उसका परिवार आसमान के नीचे जाग कर उठते हैं, खाते हैं, काम करते हैं, खेलते हैं और सो जाते हैं।**

संघीता अपनी सारी जिन्दगी एक ही सड़क के कोने पर रही है। उसकी माँ भी यहाँ पर लगभग 40 वर्ष पहले पैदा हुई थी।

''मैंने सोचा है कि मैं अपने परिवार की पहली जना होऊँगी जिसे एक उचित शिक्षा एवं अच्छी नौकरी मिले, जिससे हम एक वास्तव के घर में स्थानांतरित हो सके,'' संघीता कहते है।

''मेरे बड़े भाई–बहन ने काम करना शुरू कर दिया था जब मेरे पिता गायब हो गए थे, लेकिन वे कुल मिलाकर एक दिन में बस 3 डॉलर से कम ही कमा पाते हैं। जो भोजन के लिए भी पर्याप्त नहीं होता। सड़क पर जीवन गंदा और कठोर होता है। बच्चे कचरे के ढेर में सोते हैं जहाँ चूहों और कॉकरोच भोजन के लिए घूमा करते हैं। लेकिन सबसे बुरी बात यह है कि पड़ोस में पुरुष शराब पीते हैं।''

''वे चिल्लाते है, लड़ाई करते हैं एवं वस्तुएँ तोड़ देते हैं। यदि कोई एक बार कुछ खाना पकाने में कामयाब रहता है, तो वे पूरे बर्तन पर लात मार देते हैं। यह सब बच्चों को दुखी करता है जब उनके माता–पिता लड़ाई–झगड़े में शामिल होते हैं।''

संघीता और उसके परिवार को अंधेरी–हिल्फे और उनके भारतीय साझेदारों से शिक्षा और नौकरी के लिए प्रशिक्षण की मदद मिलती है। संघीता ने जीवन के कौशलों से लेकर फुटबॉल तक सब कुछ सीखा है।

''मैं फुटबॉल में मेस्सी के जैसा अच्छा खेलना चाहती हूँ, और भारत के लिए खेलना चाहती हूँ। लेकिन मेरी पढ़ाई अधिक महत्वपूर्ण हैं। मैं अच्छे अंकों की श्रेणी में हूँ, विशेषतः विज्ञान में। लेकिन स्कूल में कोई नहीं जानता कि मैं सड़क पर रहती हूँ। वे मुझसे बात करना बंद कर देंगे अगर उनको पता चले कि मैं सड़क पर रहती हूँ, क्योंकि वे गरीब लोगों को नीचा देखते हैं।''

## परिवार जो कई पीढ़ियों से सड़क पर रह रहे हैं

चेन्नई में, कम से कम 40,000 परिवार, अपने 75,000 बच्चों के साथ, सड़क पर रहते हैं। अनेकों बच्चे यातायात दुर्घटनाओं में घायल हो जाते हैं या मर जाते हैं। इसके अतिरिक्त, विशेषतः लड़कियों के साथ बलात्कार किया जाता है। कुछ का अपहरण कर लिया जाता है और सेक्स गुलाम के रूप में शोषण किया जाता है। खुजली, सन्निपात, पेचिश, हैजा और टी.बी. एवं एच.आई.वी./एड्स जैसे रोगों का होना साधारण बात है। रोसी गोलमैन और अंधेरी–हिल्फे सड़क परिवारों का समर्थन करते हैं, उन्हें स्वयं की मदद करने के लिए सहायता करते हैं। दिसंबर 2015 में, चेन्नई में, सौ वर्षों में सबसे खराब बाढ़ से हानि पहुँची थी, और सैकड़ों लोग मर गए। संघीता के पड़ोस में, जल स्तर में 1.5 मीटर की वृद्धि हुई, और परिवारों को अपनी जान बचाने के लिए भागना पड़ा।

### 06.00 वेक अप कॉल

''कभी कभी मैं सुबह को बहुत थक जाती हूँ,'' संघीता कहती है। सबसे बुरी बात यह होती है कि रात में बूढ़े पुरुष नशे में आते हैं और हमारे बगल में लेट जाते हैं। हमें अपने माता–पिता को मदद के लिए चिल्लाते हैं, लेकिन इसके बाद दोबारा सोना मुश्किल हो जाता है।''

### Sangheeta, 15

fi:; g% फुटबॉल और स्कूल
uQjr djrh g% सड़कों पर रहना
lofi:; QVc,y f[kykMh% लॉयनेल मेस्सी
pkgrh g% मेरा परिवार
cuuk pkgrh g% एक सामाजिक कार्यकर्ता

### 06.30 सुबह की दिनचर्या

सोनिया, 10, अपनी उंगली पर टूथपेस्ट लगाकर अपने दाँत माँझती है।

**पुरुष एवं लड़के स्थानीय पम्प पर नहा–धो लेते हैं, लेकिन लोगों के देखते हुए लड़कियों अपने वस्त्र नहीं उतार सकतीं अतः उनको पैसे दे कर शौचालयों का उपयोग करना पड़ता है जो एक पास के रेलवे स्टेशन पर बने हैं।**

**स्कूल जाने से पहले माँ अपनी बेटी के जुएँ देखती हुई।**

### 07.30 स्कूल के लिए समय

''मेरे पास दो स्कूल की यूनीफार्म हैं, इसलिए हम हर दिन उनमें से एक को धो कर सुखा सकते हैं,'' सोनिया कहती है। ''जब वर्षा होती है जब बहुत कठिनाई होती है, क्योंकि अगर दोनों यूनीफार्म गीले हो जाते हैं तो मैं स्कूल नहीं जा पाती। मैं अपने सहपाठियों को अपने घर पर कभी नहीं आमंत्रित करती हूँ, क्योंकि वे नहीं जानते कि मैं कहाँ रहती हूँ।''

### 08.00 काम करने के लिए जाओ

अनेकों बड़े लड़कों को स्कूल छोड़ना पड़ा है और उसके बजाय काम करना पड़ा है, जैसे स्थानीय कंपनियों एवं गृहस्थों को पानी पहुँचाना।

### 15.00 स्कूल का गृहकार्य

संजू, 12, अपने छोटे दोस्तों की उनका स्कूल का गृहकार्य करने में मदद करता है।

''मैं एक शिक्षक बनना चाहती हूँ और सभी सड़क के बच्चों को स्कूल में बेहतर करने के लिए मदद करना चाहती हूँ।''

### 14.30 सड़क मेरे खेल का मैदान है

हेपस्काच कई लोकप्रिय सड़क के खेलों में से एक है। लेकिन तुमको सड़क से जल्दी दूर हट जाना चाहिए जब तेजी से आती कारों और मोटरसाइकिलों दिखाई दें। हर साल, दुर्घटनाओं में, अनेकों बच्चे घायल हो जाते हैं और कुछ मर भी जाते हैं।

### 16.00 भूख लगना

लगभग सारा परिवार का पैसा खाना खरीदने में खर्च हो जाता है। ''हमारे पास चावल, आटा या तेल जैसी चीजों को सुरक्षित रखने के लिए कोई जगह नहीं है, क्योंकि चूहे सब कुछ खा जाते हैं। इसी लिए हम अपने स्वयं का भोजन नहीं पका पाते,'' संघीता बताती है।

### 16.15 अपने भोजन को सुरक्षित करो!

हर बार जब एक हवा का झोंका आता है, तो बच्चों अपनी प्लेटें हवा में ऊँचा उठा लेते हैं जिससे वे धूल और गंदगी से अपने भोजन की रक्षा कर सकें।

**16.30 प्रशिक्षण**
संघीता अपने खंड के छोटे बच्चों को फुटबॉल खेलना सिखाती है।

**संघीता और उसके दोस्त एक टीम फोटो खिंचवाने के लिए इकट्ठा होते हैं। संघीता की दादी टीम में नहीं है, वह सिर्फ आराम कर रही है!**

**17.30 बच्चों की बैठक**
बाल सांसद में, सड़क के बच्चे अपने अधिकारों के बारे में जानते हैं और उनकी रक्षा करने के लिए मिलकर लड़ते हैं, जिसके लिए उनको अंधेरी–हिल्फे एवं उनके स्थानीय भागीदारों से समर्थन मिलता है।

**कीमती सामान और स्कूल की किताबें ताले वाले बक्सों में सुरक्षित रख दिये जाते हैं।**

**19.00 संध्या की गप–शप**
सड़क के परिवारों की नेता, बच्चों को इकट्ठा करती है। वह उन्हें कुछ रात का खाना देती है और उनसे पूछती है कि वे स्कूल में कैसा कर रहे हैं, और यदि उन्हें कोई भी बात परेशान कर रही हैं। फिर सोने का समय हो जाता है।

**20.30 रात की दावत**
संघीता सोने से पहले अपनी छोटी बहन को एक बर्फ की पॉप खिलाती है।
"अभी तो ठीक है, लेकिन बरसात के मौसम में हमें छत के तिरपालों के नीचे बैठना पड़ता है। बैठे–बैठे सोना बड़ा मुश्किल होता है, लेकिन हमारी आदत पड़ जाती है!"

TEXT: CARMILLA FLOYD PHOTOS: KIM NAYLOR

शालिना जैसे बच्चे, जो सड़कों पर अपने परिवार के साथ नहीं रह सकते हैं, वो करुनालय बच्चों के केंद्र पर सुरक्षित रह सकते हैं, तिसको 15 वर्षों से रोसी और अंधेरी–हिल्फे द्वारा समर्थन मिल रहा है। बच्चों को शिक्षा, जीवन–कौशल प्रशिक्षण, समर्थन एवं प्रेम मिलता है। और उनको फुटबॉल खेलने के लिए मिलता है!

# सड़क पर बेचे जाने से बचाया

**शालिना की माँ ने उसको एक पड़ोसी को बेच देने की सोची थी। तब करुनालय केंद्र ने उसे एक सुरक्षित जगह रहने के लिए दे दी। अब वह स्कूल जाती है और उसे फुटबॉल खेलना प्रिय है!**

''मैं अपने परिवार के साथ सड़क पर बड़ी हुई। मेरे माता–पिता दिन भर कचरा बीनने वालों के रूप में काम करते थे। मेरे पिता मेरी माँ से वादा किया करते थे: ''मैं घर के लिए भोजन खरीदने जा रहा हूँ।'' फिर वह कई घंटों तक घर नहीं आते थे, और जब वह दिखाई देते तब वह शराब के नशे में होते थे। सारा पैसा शराब पीने में चला जाता था। बार–बार, मेरे छोटे भाई और मुझे बिना भोजन के, सिर्फ पानी पीकर रहना पड़ता था।

''एक बार जब मेरी माँ को बहुत पैसा मिल गया जब वह कचरा बटोर रही थी। वह नहीं चाहती थी कि मेरे पिता इसे लें, इसलिए उसने एक पड़ोसी युवक से कहा कि वह इसे सुरक्षित रख ले। इसके बजाय, उसने सारे पैसे खर्च कर दिए और मेरी माँ से कहा: 'मुझे अपनी बेटी दो तो मैं शायद भुगतान कर दूँ।' मेरी माँ इतनी उतावली थी कि वह सहमत हो गई। फिर मैं भाग गई और यहाँ बच्चों के केंद्र में सुरक्षा पाई। एक महीने के बाद, मेरी माँ को पता चला कि मैं कहाँ थी और वह मुझसे मिलने के लिए आई। उसने कहा: 'मुझे माफ कर दो। घर में रहो और स्कूल जाया करो।'''

एक निःशुल्क डॉक्टर बनना चाहती है

''मैं स्कूल कभी नहीं गई थी, अतः सबसे पहले मुझे पढ़ना और लिखना सीखना था। अब मैं कक्षा 9 में हूँ और पढ़ाई में अच्छा कर रही हूँ। मुझे अच्छा लगता है कि मैं अखबार पढ़ने में सक्षम हूँ और पता लगा सकूँ कि दुनियाँ में क्या हो रहा है। कभी–कभी मुझे गुस्सा आता है, खासकर जब मैं पढ़ती हूँ कि लड़कियों को पीटा जाता है और उनके साथ बलात्कार किया जाता है। एक लड़की पर पुलिस अधिकारियों द्वारा हमला तक किया गया, जिनको उसकी रक्षा करनी चाहिए थी! लड़कियों और लड़कों को मिल कर काम करना चाहिए और एक दूसरे की मदद करनी चाहिए।

''मेरा सपना है कि मैं एक डॉक्टर बनूँ और मुफ्त में गरीब लोगों की मदद करूँ। जब मैं सड़क पर रहती थी और बीमार हो गई, तब मुझे डॉक्टर के पास ले जाने का कोई ज़िक्र नहीं हुआ। मैं बस वहीं पड़ी रही। बहुत से लोग मर जाते हैं क्योंकि वे दवा का खर्च नहीं उठा पाते। मैं उसको बदलने की सोचती हूँ!'' 🌐

## सड़क के बच्चों की विश्व प्रतियोगिता

'2014 स्ट्रीट चाइल्ड विश्व कप' प्रतियोगिता ब्राजील में आयोजित की गई, और करुनालय की एक टीम से भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए गई! गोपीनाथ कहता है:

''मुझे पहली बार उड़ान भरने को मिला। पहले मैं वास्तव में घबराया हुआ था, लेकिन सबने हमारा स्वागत किया और हमें मनुष्य के रूप में देखा, किसी से कम नहीं जैसा कि कई लोग भारत में देखते है। मुझे जीवन भर के लिए दोस्त बना लिया गया और हमने 'फेयर प्ले' ट्राफी जीत ली क्योंकि हम नियमानुसार और सम्मानपूर्वक खेलते हैं।''

# मोज़िज़ कोई सज़ा नहीं है

**एक डॉक्टर ने कहा कि मोज़ेज़ स्वयं की देखभाल करने के लिए कभी सक्षम नहीं हो सकेगा। अब मोज़ेज एक भोजनालय में काम करने के लिए प्रशिक्षण ले रहा है और खुशी से जिन्दगी गुज़ार रहा है।**

**जब मोज़िज़ के परिवार को पता चला कि वह अन्य बच्चों से भिन्न है, तो उन्हें डर लगा कि उनके पड़ोसी उसको नीचा देखेंगे। कुछ लोगों का मानना है कि जो बच्चे कोई विकलांगता के साथ पैदा होते हैं उनको परमेश्वर की ओर से सजा मिली होती है क्योंकि उनके माता–पिता ने अतीत में कोई बहुत गलत बात की होती है।**

मोज़िज़ मस्तिष्क की क्षति के साथ पैदा हुआ था, जिसका मतलब था कि वह उतनी जल्दी विकसित नहीं हो पाया था जितना कि अन्य बच्चे। जब वह स्कूल में नहीं चल सका, तब शिक्षक ने उसे पीटा। अन्य लड़के उसे चिढ़ाते थे और मारा करते थे। मोज़िज डर गया और उसने बाहर जाना बन्द कर दिया। उसकी माँ उसे एक चिकित्सक के पास ले गई जिसने बस इतना कहा ''आपका बेटा एक बेवकूफ है, वह कभी स्वयं को देखने में सक्षम नहीं हो पाएगा।''

**मोज़िज़ को मदद मिलती है।**

एक दिन, जब मोज़िज़ बारह वर्ष का था, तब रोसी के भागीदारों में से कुछ गाँव में आये थे। उन्होंने पूछा कि क्या यहाँ कोई विकलांगता वाले बच्चे हैं।

''हमारे वहाँ कोई पागल बच्चे नहीं है!'' ग्रामीणों ने कहा, और उन्हें भगा देने की कोशिश की। लेकिन मोज़िज़ की माँ ने समर्थन माँगा। मोज़िज़ को फिर एक विशेष स्कूल में जाने का अवसर मिल गया। वहाँ शिक्षकों की मदद से, वह कई गुना विकसित हो गया। मोज़िज़ की माँ को भी पता चल गया कि वह कैसे अपने बेटे का सबसे अच्छे से समर्थन कर सकती है। गाँव के लोग धीरे–धीरे जागरूक हुए कि वहाँ कोई 'विकलांग' बच्चे नहीं थे – केवल अतिरिक्त क्षमताओं वाले बच्चे।

**और अधिक चिढ़ाना नहीं**

दो साल विशेष जरूरतों वाले स्कूल में पढ़ लेने के बाद, मोज़िज़ हर सुबह स्वयं बस लेने के लिए काफी आश्वस्त महसूस कर रहा है। उसने कक्षा 8 पूरी कर ली है और अब वो भोजनालय के क्षेत्र में काम करने के लिए प्रशिक्षण लेने जाता है। वह पहले से ही केंद्र में कैफे चलाता है, चाय बनाता है, भोजन परोसता है और पैसों का भुगतान लेता है। गाँव के लोगों को धीरे–धीरे एहसास हुआ कि उनके गाँव में कोई 'विकलांग' बच्चे नहीं हैं – केवल अतिरिक्त क्षमताओं वाले बच्चे।

''मैं हर चीज़ से डरता था और मुझे अपनी जिन्दगी से नफ़रत थी,'' मोज़िज़ कहता है। ''अब मैं शांत और खुश हूँ। अब कोई मेरा मजाक नहीं बनाता। बहुत से लोग अब मुझे सम्मानपूर्वक देखते हैं!''

## छिपाये गए बच्चे

कुछ माता–पिता पूर्व धारणाओं के कारण अपने–अपने अलग ढंग से विकलांग बच्चों को छिपा कर रखते हैं। यहाँ तक कि कुछ को बांध दिया जाता है या उनमें चेन लगा दी जाती है। भारत में सशक्त कानून है जिनके अनुसार विकलांग बच्चों के वही अधिकार है जो अन्य बच्चों के, और जो समर्थन की जरूरत है वो मिलना चाहिए। लेकिन गरीब परिवारों को शायद ही पता होता है कि उनको भी समर्थन देने का अधिकार है। यही कारण है कि रोसी और अंधेरी–हिल्फे भारतीय संगठनों के साथ काम करते है जिससे वो विभिन्न क्षमताओं वाले बच्चों को समर्थन दें और उनके अधिकारों के बारे में जागरूकता उत्पन्न करें।

## अलागुमानी की नई भाषा

''मैं बहरी पैदा हुई थी,'' अलागुमानी, 14, कहती है, जो रोसी और अंधेरी–हिल्फे द्वारा समर्थित एक विकलांग बच्चों के लिए बोर्डिंग स्कूल में रहती है और पढ़ाई करती है। ''मैं स्कूल नहीं जा सकी और मेरे पास कोई उचित वस्त्र नहीं थे। मेरे भाई–बहन ऐसे बनते थे कि जैसे मानो मैं मौजूद ही नहीं थी। मुझे एक जेल में रहने की तरह महसूस होता था। क्योंकि कोई भी मेरे बारे में परवाह नही करता था, इसलिए मैं इतनी क्रोधित हो जाया करती थी कि मैं अपनी माँ को मार देती थी। फिर वह मुझे वापस मारती थी। अंत में, मैं विशेष स्कूल में दाखिल हो गई जहाँ मुझे सांकेतिक भाषा सीखने को मिली। पहली बार, मैं स्वयं को दूसरों को समझा सकती थी एवं उनको समझ सकती थी। इसने मुझे इतना खुश कर दिया। मैं स्कूल जाती हूँ और अच्छे अंको की श्रेणी प्राप्त करती हूँ! और मेरी माँ ने सांकेतिक भाषा सीखना शुरू कर दिया है, जिससे हम अंत में एक दूसरे को समझ सकते है।''

बालाचंद्रन और गांव में अन्य बच्चे गांव के रात के स्कूल में जाते हैं जहाँ उनको अपने दिन के स्कूल का गृह कार्य करने के लिए मदद मिलती है तथा खेलने एवं जीवन कौशल सबकों के लिए समय भी मिल जाता है।

जब रोसी गोलमैन ने बालाचंद्रन से मुलाकात की तब उसने उसे प्रोत्साहित किया कि वह शिक्षा प्राप्त करे – भविष्य की कुंजी।

# बाल श्रमिकों के बच्चे स्कूल में

**जब एक पत्थर का टुकड़ा, बालाचंद्रन के पिता पर गिरा, जिससे उसके पैर कुचल गए, तब उसके परिवार को उसके ऑपरेशन के लिए पैसे उधार लेने पड़ गए। लेकिन जब उसके पिता के मालिक को पता चला कि वह पहले की तरह जल्दी काम नहीं कर सकता था, तब उसे खदान से निकाल दिया गया जहाँ वह बचपन से काम कर रहा था।**

''तब से शायद हम गाँव के सबसे गरीब परिवार रहे हैं,'' बालाचंद्रन कहता है। ''हमको ऋण का भुगतान करना है और हम एक सही घर तक नहीं खरीद सकते।''

बीस साल पहले, बालाचंद्रन के गाँव में हर कोई खदान में काम किया करता था, लेकिन अब उसे बंद कर दिया गया है।

''छेद बहुत गहरे और खतरनाक हो गए। खदान वाली कंपनी बस ऐसे ही चली गई, बिना कोई जंगला लगाए। कभी–कभी बच्चे वहाँ नीचे गिर जाते हैं और मर जाते हैं,'' बालाचंद्रन कहता है।

### पिता से पीड़ित

बालाचंद्रन के पिता को काम खोजने के लिए एक लंबी यात्रा पर जाना पड़ता है और वह अपने घर एक साल में कुछ ही बार आते हैं। उसकी माँ उनके लिए यही सबसे अच्छा समझती है।

''वह बहुत शराब पीते हैं, जिससे उनके पैर का दर्द सुन्न हो जाता है। फिर उनको नशा हो जाता है और वह मुझे पीटते हैं। यदि तुम बच्चों की वजह नहीं होती तो मैं जीवित नहीं रहना चाहती।''

पहले जब खदान उपयोग में था, तब स्थानीय नेताओं ने गांव में एक शराब की दुकान खोली और उसमें कार्यकर्ताओं की मजदूरी खर्च करवा कर धन कमाया। अब खदान बंद है, लेकिन शराब की दुकाने अभी भी वहीं हैं।''

''एक बार मैं अपने घुटनों पर बैठी और कहा 'कृपया पिताजी, शराब पीना बंद करें,''' बालाचंद्रन की बड़ी बहन कहती हैं। ''वह रोये और क्षमा मांगी, लेकिन वह बिल्कुल भी पीना बंद नहीं कर सके।''

### और अधिक बाल श्रम नहीं

गाँव में सभी माता–पिता बाल श्रमिक हुआ करते थे, और यहाँ तक कि कुछ बच्चे भी, लेकिन अब वह खत्म हो गया है।

कुछ समय के लिए बालाचंद्रन, स्कूल के बाद, एक बेकरी में काम किया करता था, लेकिन वो काम खतरनाक था, जलते हुए गर्म ओवन और ओवन ट्रे के साथ। तब रोसी और उसके भागीदारों ने स्कूल का शुल्क दे कर बच्चों की मदद की, और बालाचंद्रन की माँ के लिए नौकरी के प्रशिक्षण का आयोजन किया। अब वह और उसकी बहन अपनी शिक्षा पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, ताकि उन्हें अच्छी नौकरी मिल सके।

''मैं एक पुलिस अधिकारी बनना चाहता हूँ जिससे मैं गरीब लोगों की रक्षा कर सकूँ। मैं एक निष्पक्ष पुलिस अधिकारी बनूँगा, मैं रिश्वत स्वीकार नहीं करूँगा और मैं यह निश्चित करने के लिए योजना बनाऊँगा कि शराब की दुकानें बंद हो जाएं।'' 🌐

बालचंद्रन और उसकी माँ।

## बाल श्रम से शिक्षा की ओर

अतीत में, गाँव में बच्चे, छह साल की उम्र से ही एक दिन में 15 घंटों तक काम करते थे। कोई भी स्कूल नहीं जाता था। कई बुरी तरह से पत्थरों के गिरने से घायल हो गए। कुछ की आँखों में पत्थर के टुकड़े लग गए और वो अंधे हो गए। रोसी गोलमैन और उनके भारतीय साझेदार संगठन ने बाल श्रमिकों को मुक्त कर दिया, और स्कूल की फीस और अतिरिक्त पाठ उपलब्ध करा कर उन्हें समर्थन किया। आज, पूर्व बाल श्रमिकों में से कई इंजीनियरों, सामाजिक कार्यकर्ता और नर्स बनने के लिए अध्ययन कर रहे हैं।

# बच्चों के रहस्य

**कैलेश्वरी, 14, मदुरई की मलिन बस्तियों में अन्य बच्चों के साथ एक गुप्त बात बाँटती है। वे एक सप्ताह में एक बार मिलते हैं, इसके बारे में बात करने के लिए कि एच.आई.वी. एवं एड्स के साथ जीना कैसा होता है। जो बच्चे अपना रहस्य प्रकट कर देते हैं वे अक्सर अपने मित्रों एवं शिक्षकों द्वारा वंचित कर दिये जाते हैं।**

''मुझे अन्य बच्चों से मिलना प्रिय है जिनकी जिन्दगियाँ मेरे जैसी हैं,'' कैलेश्वरी, कहती है। ''मैं कभी किसी से नहीं कहती। वे सोचेंगे 'शायद मैं भी इससे पकड़ लूँगी'। फिर वो मुझे से बचेंगे। यह मुझे गुस्सा दिलाता है।''

कैलेश्वरी के दोस्तों में से एक, थरानी, 11, जब अपनी माँ के पेट में थी, तब उसे एच.आई.वी. के संक्रमण लग गए थे, लेकिन उसका छोटा भाई स्वस्थ पैदा हुआ था क्योंकि उनकी माँ ने दवा ली थी, जब वह गर्भवती थी।

''मैं बहुत सारी गोलियाँ लेती हूँ,'' थरानी बताती है।

''कभी–कभी मैं स्कूल में इतनी थक जाती हूँ कि मैं सो जाती हूँ। लेकिन मैं किसी को बताने की हिम्मत नहीं कर पाती।''

### अपनी नौकरी खो दी

कैलेश्वरी की माँ को अपने पति से एच.आई.वी. के संक्रमण लग गए। ''मेरी माँ एक शिक्षक थी। जब उसने अपनी बीमारी के बारे में स्कूल को बताया तो उन लोगों ने उसे निकाल दिया,'' कैलेश्वरी बताती है।

''हमारे पास भोजन या दवा के लिए पैसे नहीं थे। जब मेरे पिता की मृत्यु हो गई तब मुझे अपनी माँ की देखभाल करनी पड़ी। मैं इतना डरी हुई थी कि वह मर जाएगी और मुझे अकेला छोड़ कर चली जाएगी। फिर हमको रोसी गोलमैन और उसके सहयोगियों से मदद मिली, और हमें नए मित्र मिले जिन्होंने हमें पूरी तरह स्वीकार कर लिया।''

कैलेश्वरी की माँ अब स्वयंसेवक की तरह काम करती है, भारत में रोसी के साथी संगठन के साथ, जो एच.आई.वी. एवं एड्स से पीड़ित लोगों के अधिकारों के लिए संघर्ष करता है।

''मेरी माँ एच.आई.वी. एवं एड्स के बारे में ज्ञान बांटती है, उन लोगों की मदद करने और पूर्व धारणा को मिटाने के लिए जो बीमार हैं। काम करते समय उसकी मुलाकात एक और शिक्षक से हुई जिसे निकाल दिया गया था क्योंकि उसे एच.आई.वी. थी। उनको एक दूसरे से प्यार हो गया और उन्होंने शादी कर ली! मुझे उन पर गर्व है क्योंकि वे लोगों को यह समझने में सहायता करते हैं कि हर किसी को स्वीकार करना चाहिए और उनके साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिए।''

### बार–बार घर बदलना

कैलेश्वरी के परिवार को मजबूर होकर आठ साल में सात बार घर बदलना पड़ा है।

**कैलेश्वरी ने आठ वर्षों में सात बार अपना घर स्थानांतरित किया, क्योंकि उसके माता पिता को एच.आई.वी. संक्रमित हैं।**

''सबसे खराब बात स्कूल को बदलना रही है। एक बार जब मैंने स्थानांतरित करने के लिए मना करने की कोशिश की तब मेरी सबसे अच्छी दोस्त रोई और मुझे रहने के लिए विनती की। लेकिन यह असंभव था।''

कैलेश्वरी पूर्व धारणाओं से भी लड़ रही है।

''हम बच्चे स्कूलों और अस्पतालों में सड़क के नाटक प्रस्तुत करते हैं। बहुत सारे लोग हमसे डरते हैं। उन्हें लगता है कि वे एक गिलास या स्कूल की डेस्क बांटने से एच.आई.वी. पकड़ कर सकते हैं! हम समझाते हैं कि यह केवल रक्त के माध्यम से ही प्रेषित हो सकता है। एक बार लोगों को तथ्य पता चल जाते हैं, तो वे हमारे साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसा हर किसी के साथ, और हम बस इतना ही चाहते हैं।''

**एच.आई.वी. और एड्स क्या हैं? एच.आई.वी. एक वायरस है जो प्रतिरक्षा प्रणाली को तोड़ डालता है। एच.आई.वी. से पीड़ित व्यक्ति एक लंबा, स्वस्थ जीवन जी सकता है, लेकिन इलाज के बिना प्रतिरक्षा प्रणाली अंततः इतनी कमज़ोर हो जाती है कि शरीर अब आम बीमारियों से स्वयं की रक्षा नहीं कर पाता जिनका साधारण इलाज होता है। यह अंतिम चरण, जिसमे वो व्यक्ति अक्सर फेफड़े में संक्रमण जैसे कारण से मर जाता है, को एड्स कहा जाता है।**

## माँ के लिये एक गुलाबी महल

जब महालक्ष्मी अपनी माँ के गर्भ में थी, तब उसे एच.आई.वी. थी। रोसी और उसके भागीदारों ने उसे प्रोत्साहित किया कि वह सरकारी अस्पताल से मदद ले। एक विशेष चिकित्सा के लिए धन्यवाद, महालक्ष्मी स्वस्थ पैदा हुई थी। वह बताती है: ''कोई भी हमें एक घर किराए पर नहीं देगा क्योंकि मेरी माँ को एड्स है। मैं अपने स्वयं के एक घर होने का सपना देखती हूँ, एक दो मंजिला गुलाबी महल जिसमें एक फ्रिज, दो मुलायम पलंग, एक कपड़े धोने की मशीन, एक तरण ताल और कांच की खिड़कियाँ हों। मैं सब को आमंत्रित करूँगी, जिनको मना कर दिया गया है, और उनका ख्याल रखूँगी। और मेरी माँ सिर्फ आराम करेगी, एक रानी की तरह!''

बाल अधिकार हीरो प्रत्याशी – पृष्ठ 71–91

# Manuel Rodrigues

## मैनुएल को क्यों नामांकित किया गया है?

''मैनुएल रॉड्रिग्स को सन् 2016 के वर्ल्डस चिल्ड्रेन्स प्राइज़ के लिए नामित किया गया क्योंकि वो 20 वर्षों से ग्वीनिया–बिस्सायु में अन्धे एवं अन्य विकलांगताओं वाले बच्चों के लिये संघर्ष कर रहा है।

ग्वीनिया–बिस्सायु में विकलांगताओं वाले बच्चे विश्व के सबसे वंचित एवं कमज़ोर बच्चों में से हैं। मैनुएल और उसकी संस्था एग्रिस द्वारा उनको एक सम्मानजनक जीवन व्यतीत करने को मिलता है। उनको चिकित्सा देखभाल, भोजन, एक घर, स्कूल जाने का अवसर, सुरक्षा एवं स्नेह मिलता है। मैनुएल राजनेताओं एवं अन्य संस्थाओं और अधिकतर ग्रामीण समुदायों में विकलांग बच्चों के अधिकारों के बारे में बात करता है। मैनुएल के बिना, ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को यह जानकारी नहीं प्राप्त हो पाती। मैनुएल के कार्य का धन्यवाद कि बच्चों और वयस्कों को पता है कि दृष्टि से वंचित बच्चों एवं अन्य विकलांग बच्चों के वही अधिकार है जो सबके। मैनुएल की लड़ाई ने इन बच्चों के साथ बुरा व्यवहार होने, उनको लावारिस छोड़ दिये जाने, यहाँ तक कि उनके मार डाले जाने से, उनको बचाया है। 250 अन्धे बच्चे मैनुएल के केन्द्र में रह रहे हैं और उन्होंने उसके स्कूल में अपनी उपस्थिति दी है, जिसको उनकी वंचित दृष्टि के अनुकूल बदला गया है। यह उद्देश्य होता है कि जब मैनुएल द्वारा उनकी शिक्षा एवं प्रशिक्षण समाप्त हो जाए, तब इन बच्चों को वापस अपने परिवारों के पास भेज दिया जाए। इनमें से अधिकतर परिवार गरीब हैं, और बच्चों को घर वापस जाने के बाद एग्रिस से सहायता मिलती रहती है जिससे वो अपनी शिक्षा जारी रख सकें और गाँव में एक अच्छी जिन्दगी व्यतीत कर सकें।

**मैनुएल, जो तीन साल की उम्र से अन्धा है, अन्धे बच्चों के साथ, जिनका अब मैनुएल और उसका संगठन एग्रिस के कारण एक उज्जवल भविष्य है।**

**मैनुएल लड़की के सिर पर नम्रता से हाथ फेरता है। एडीलिया, 9 उसका सहारा लेकर झुकती है जब वो दोनों एक बेन्च पर बैठे होते हैं। जब वो एक नवजात शिशु थी, तब उसे जंगल में मरने के लिए छोड़ दिया गया था क्योंकि वो अन्धी थी।**
**''यह मुझको दुखी एवं क्रोधित करता है। दुर्भाग्यवश, एडीलिया अनोखी नहीं है। यहाँ ग्वीनिया–बिस्सायु में उन बच्चों की स्थिति बहुत खराब है जो अन्धे या विकलांग हैं। अनेकों लोग इन बच्चों को बेकार समझते हैं, अतः वो उन्हें प्यार नहीं देते और न ही उनको स्कूल जाने देते हैं। मेरी जिन्दगी इन बच्चों के लिए संघर्ष करने से ही सम्बन्धित है,'' मैनुएल कहता है।**

मैनुएल को पता है कि एक विकलांग बच्चे को अपने जीवन में वयस्कों द्वारा कितनी देखरेख और प्यार की आवश्यकता पड़ती है, और न कि उसे लावारिस की तरह छोड़ दिया जाए। उसे यह पता है क्योंकि उसकी स्वयं की दृष्टि खो गई जब वो तीन साल का था।

''मैं एक साधारण परिवार में बहुत सारे बच्चों के साथ बड़ा हुआ। हम कुल नौ थे, और मेरी माँ अन्ना–मारिया एवं मेरे पिता लुइस हम सबको प्यार करते थे। मेरे पिता और मैं बड़े अच्छे दोस्त थे। हम हर रोज हाथ में हाथ पकड़े प्राथमिक विद्यालय पैदल जाते थे, और एक–दूसरे के साथ बहुत खेलते थे। हम तैरने जाते थे और बॉल वाले खेल खेलते थे। यद्यपि मैं बहुत छोटा था, पर हम अधिकतर मिलान वाले वस्त्र पहनते थे। मुझे याद है कि मेरे पिता हमेशा खुश रहते थे।''

जब मैनुएल तीन वर्ष का था तब कुछ ऐसा हुआ जिसने सब कुछ बदल दिया।

''मेरी आंखें, जो भूरी थीं, नीले रंग की होने लगीं, और मुझे सब कुछ धुंधला दिखाई देने

**मैनुएल, एडीलिया के साथ, जिसको जंगल में मरने के लिए छोड़ दिया गया था जब वो एक बच्ची थी, पर उसको कुछ चरवाहों ने बचा लिया था। तब से, मैनुएल और उनकी पत्नी ने एडीलिया का ख्याल रखा है और उसे एक घर दिया है, तथा प्रेम और शिक्षा दी है।**

दोनों अन्धे एवं दृष्टिवाले बच्चे मैनुएल के व्हाइट केन स्कूल में भाग लेते हैं और वे अवकाश. समय में मिलकर खेलते हैं।

लगा। मुझे खेलना और इधर–उधर जाना मुश्किल होने लगा, और मुझे प्राथमिक विद्यालय जाना बन्द करना पड़ा क्योंकि मुझे ठीक से दिखाई नहीं देता था। इसने मुझे सचमुच दुखी कर दिया। लेकिन मेरे पिता और अधिक दुखी थे। वो लगभग हर समय रोते रहते थे।''

**वो लम्बी यात्रा**

मैनुएल के पिता ने यह मानने से इन्कार कर दिया कि उसका लड़का अन्धा हो गया है। उसने यह निश्चित किया कि मैनुएल को सबसे अच्छी चिकित्सीय देख–रेख मिले। लेकिन यह ग्वीनिया–बिस्सायु में नहीं हुआ, बल्कि पुर्तगाल में, जहाँ उसका भाई रहता था। उसने उन लोगों से संपर्क करना शुरू किया जो उसकी देखभाल कर सके। और उसने अपनी सेना के वतन वाले चेक से अधिक से अधिक धन एकत्रित करना शुरू कर दिया। परिवार को पूरा पड़ने के लिए मेज पर भोजन कम होता था। लेकिन उन्होंने सहन किया, और अन्त में उसने मैनुएल को हवाई जहाज का टिकट दिला दिया जिससे वो पुर्तगाल में अपने चाचा के पास जा सके। लेकिन वो उसके साथ उसके परिवार के किसी अन्य सदस्य के जाने का खर्चा नहीं उठ सका।

''मेरे लिए आसान नहीं था। मैं केवल चार वर्ष का था, और मैं दुखी एवं डरा हुआ था। किन्तु मैं भाग्यशाली था। उड़ान में एक नन थी जिसने मेरी सहायता की, और वहाँ अस्पताल में दो नर्सें थीं, जूडिट एवं लॉर्डिस, जिन्होंने मेरी देखभाल की। उन्होंने मुझे साँत्वना दी, पुस्तकें पढ़ीं और गाने गाये, ठीक उसी तरह जैसे मेरे माता–पिता ने किया होता।''

मैनुएल को बड़ी आशाएँ थीं कि यूरोप में डॉक्टर उसकी दृष्टि वापस लाने में सहायक होंगे।

''लेकिन अस्पताल में एक वर्ष रहने के बाद, उन्होंने मुझसे कहा कि वो मेरी दृष्टि को ठीक करने के लिए कुछ नहीं कर सकते, इसको ग्लौकोमा कहते हैं। चिकित्सीय सहायता बहुत देर में उपलब्ध हुई थी।''

**अन्धों के लिए स्कूल**

एक बार फिर, मैनुएल के पिता ही थे

# 15 वर्षीय ने ब्रेल बनाया

सन् 1824 में फ्रांस के एक लुई नामक 15 वर्षीय लड़के ने ब्रेल (अन्धों के पढ़ पाने के लिए उभरी लिपी) का निर्माण किया। ब्रेल कागज अथवा प्लास्टिक की शीटों पर लगे छोटे वर्गों (कोशिकाओं) की एक श्रंखला होती है, जिसे लोग दोनों तर्जनी वाली उंगलियों द्वारा छूते और पढ़ते हैं। हर चरित्र में 6 बिन्दु तक होते हैं। प्रत्येक वर्ग में विभिन्न बिन्दुओं के संयोजनों से भिन्न–भिन्न अक्षर बनते हैं। ब्रेल का उपयोग संख्याओं एवं संगीत की टिप्पणियों को निरूपित करने के लिए भी किया जा सकता है। सन् 1809 में लुई ब्रेल के जन्म की स्मृति में हर साल विश्व ब्रेल दिवस 4 जनवरी को मनाया जाता है।

मैनुएल के स्कूल में अन्धे बच्चे अपनी ज़िन्दगी में पहली बार ब्रेल की मदद से पढ़ना और लिखना सीखते हैं।

एक स्टाइलस से लिखने के लिए एक वर्गों वाला प्लास्टिक टेम्पलेट जिसमें कागज घुसाया जाता है।

एक स्टाइलस, जिसका प्रयोग ब्रेल लेखन में किया जाता है।

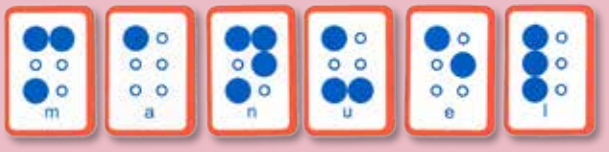


इस ब्रेल पर मैनुएल का नाम लिखा है।

**मैनुएल का पुराना स्कूल बांस से बना है।**

## नया बाल केन्द्र

अब हम बच्चों के लिए एक नया केंद्र का निर्माण कर रहे हैं। मेरे पुराने घर बहुत छोटा है और मैं बच्चों के लिए एक अधिक उपयुक्त वातावरण चाहता हूँ। नए केंद्र पर, साथ ही बेडरूमों में, एक खेलने का क्षेत्र, एक जिम हॉल, एक सब्जियों का भाग और मुर्गियों एवं बकरियों को रखने का क्षेत्र होगा। केंद्र में हम पत्रकारिता में युवा लोगों को पत्रकारिता, प्रशासन, सूचना प्रौद्योगिकी, सीवन और भोजन पकाने के पाठ्यक्रम उपलब्ध करायेंगे,'' मैनुएल कहता है।

**मैनुएल पत्रकारों से बात करता है जितना भी संभव हो पाता है, रेडियो पर और नेताओं से, इस विषय पर कि कैसे विकलांग बच्चों के वही अधिकार होने चाहिए जो अन्य सभी बच्चों के होते हैं।**

**इसाबेल, 14, ने अपनी दृष्टि खो दी जब वो एक छोटी लड़की थी। मैनुएल के केंद्र में समय बिताने के बाद, अब वो अपनी दादी फतुमता के साथ रहने के लिए घर वापस लौट आई है। मैनुएल का लक्ष्य है कि सभी बच्चे अपने परिवारों के पास लौट सकें।**

जो सबसे अधिक निराश थे। लेकिन वो अपने लड़के के लिए संघर्ष करते रहे। उन्होंने पता लगा लिया था कि पुर्तगाल में अन्धे बच्चों के लिए अच्छे विद्यालय हैं, लेकिन वो महंगे थे। ग्वीनिया–बिस्सायु में अन्धे बच्चों के लिए एक भी विद्यालय नहीं था, अतः मैनुएल के पिता ने एक बार फिर से उसकी सहायता करने के लिए धन एकत्रित करना शुरू कर दिया।

''परिवार ने मेरे लिये पर्याप्त धन एकत्रित कर लिया जिससे मैं पुर्तगाल के एक आवासीय विद्यालय में जा सकूँ। यद्यपि मुझे अपने परिवार की याद आती थी, फिर भी मैं वहाँ बहुत खुश था। मैने ब्रेल द्वारा गिनना, पढ़ना एवं लिखना सीखा। स्कूल में मैने प्रयोगात्मक शैलियाँ भी सीखीं, जैसे कपड़े पहनना, नहाना और दाँत मांझना। और मैने बहुत सारे नये मित्र बनाये। मेरे सबसे प्रिय मित्र का नाम एंटोनियो था और अपने अवकाश के समय हम फुटबॉल खेलते थे एवं तैराकी के लिए जाते थे।''

### बड़ी मुसीबत

वर्ष बीत गये, और मैनुएल ने एक अन्धे व्यक्ति की तरह जीना सीख लिया। शायद जिन्दगी अब अच्छी होने जा रही थी। लेकिन एक दिन, स्कूल में छह वर्ष बाद, मैनुएल को एक अन्य जिन्दगी बदलने वाला संदेश मिला। उसके पिता अचानक दिल के दौरे से मर गये।

''मैं दस साल का था जब मैंने दोनों अपने पिता को खोया, और अपनी शिक्षा को जारी रखने के अवसर को भी, क्योंकि कोई भी व्यक्ति मेरे स्कूल का शुल्क नहीं दे पा रहा था। मैंने अफ्रीका में घर वापस जाने के लिए नाव ली और मैं रास्ते भर बिखरा रहा।''

जब मैनुएल वहाँ पहुँचा तब उसके देश का युद्ध चल रहा था। ग्वीनिया–बिस्सायु पुर्तगाल की शासकीय शक्ति से मुक्त होने के लिए संघर्ष कर रहा था, जिसका राज अभी तक वहाँ पर था। उसका परिवार मैनुएल को पड़ोसी देश ग्वीनिया में रिश्तेदारों के साथ सुरक्षित रहने के लिए ले गया। वहाँ पर वो विकलांग बच्चों एवं युवा लोगों के स्कूल में जाने लगा। छह वर्षों बाद ग्वीनिया–बिस्सायु आजाद हो गया और मैनुएल घर वापस लौट आया।

### राश्ट्रपति को रोका

ग्वीनिया–बिस्सायु गरीब देश था और युद्ध द्वारा पीड़ित। मैनुएल के परिवार को उतने से ही अपना गुजारा करना पड़ा जो कुछ भी उसकी माँ बाजार में बेच कर कमाती थी। मैनुएल, जो उस समय सोलह वर्ष का था, को लगा कि उसे एक नौकरी की आवश्यकता है जिससे वो घर की मदद कर सके। किसी को विश्वास नहीं हुआ कि एक अन्धे आदमी को कोई काम मिल सकता था, लेकिन मैनुएल हर रोज राष्ट्रपति के महल को पैदल जाता था और उनसे मिलने के लिए आग्रह करता था। उसे विश्वास था कि राष्ट्रपति उसको एवं अन्य विकलांग लोगों को काम दिलाने में सहायता करेंगे। हर रोज़, उससे कह दिया जाता था कि राष्ट्रपति से मिलना संभव नहीं है। लेकिन वो फिर भी जाता रहा।

''एक दिन मैं राष्ट्रपति की कार के रास्ते में खड़ा होने में कामयाब हुआ जिससे उन्हें रुकना पड़ा! राष्ट्रपति के संरक्षक मुझे उनके पास ले गये। मैंने उन्हें समझाया कि मुझे एक नौकरी की जरूरत है, क्योंकि कोई भी अन्धे लोगों से काम नहीं लेता था। मैंने कहा कि मैंने ग्वीनिया के स्कूल में एक स्विचबोर्ड ऑपरेटर का काम सीखा है। राष्ट्रपति उत्सुक हुये और उन्होंने मुझे राष्ट्रपति कार्यालय में लगे स्विचबोर्ड को चलाने का एक

**''हमारा लक्ष्य है कि सभी बच्चों को, यहां तक कि वो बच्चे जो अन्धे हैं या जिनमें एक अन्य विकलांगता है, को अपने जीवन में अवसर मिलने चाहिए और अपने भविष्य में आशा दिखनी चाहिए। सभी बच्चों को लगना चाहिए कि उनसे फर्क पड़ता है और वे समाज में हैं,'' मैनुएल कहता है।**

TEXT: ANDREAS LÖNN PHOTOS: KIM NAYLOR

**मैनुएल बच्चों के बारे में एक कहानी सुनाता है। अब्दुलाई, जो मैनुएल के घुटने पर बैठा है, सिर्फ एक सप्ताह पहले ही मिला था, जब मैनुएल एक बचाव मिशन पर निकला था।**

अवसर दिया। जब मैं उस परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया तब वो मुझसे इतने प्रभावित हुये कि उन्होंने डाक सेवा के मुख्यालय में मेरे लिये एक नौकरी का प्रबन्ध किया!''

### एक व्यवसायी बन गया

एक वर्ष बाद, राष्ट्रपति को एक तख्तापलट में हटा दिया गया, एक नयी दूरभाष प्रणाली लगाई गयी और मैनुएल की नौकरी चली गई। लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी। उसने पर्याप्त धन बचा लिया था और उसने इसके बजाय एक व्यावसायी बनने का निर्णय लिया। मैनुएल स्कूल के संसाधन, शौचालय की सामग्री एवं पेय पदार्थ शहर से लाया, जिन्हें उसने ग्रामीण क्षेत्रों में बेचा। उसने इस धन से ताड़ी का तेल एवं लकड़ी खरीदी जिसे उसने शहर में बेच दिया।

''यह कठिन कार्य था, लेकिन मुझे पसन्द आया। कुछ समय बाद यह इतना अच्छा चल रहा था कि मैं एक पुरानी कार खरीद सका, एक चालक को नौकरी पर रखा और एक टैक्सी कंपनी भी शुरू कर दी। अन्त में मैंने इतना धन बचा लिया कि मैं अपने परिवार के लिए एक सुन्दर घर बना सका। मुझे इसे अपनी माँ को भेंट करना बड़ा मजेदार लगा जिसने मेरे लिए इतना सब कुछ किया था।''

## अनुकूलित कूड़ेदान

**स्कूल में बहुत सी चीजें दृष्टिविहीन लोगों के जीवन को आसान बनाने के अनुकूल की गयी हैं। उदाहरण के लिए, कूड़ेदान जमीन के बजाय, ऊपर लटक रहे हैं जिससे कोई उन पर चलते चलते गिर न जाए। और तुम रस्सी का उपयोग कर सकते हो जिससे तुम महसूस कर सको कि कूड़ा कहाँ फेंको।**

### एग्रिस

यद्यपि मैनुएल अच्छा कर रहा था, पर वो देश में उन अन्धे बच्चों को नहीं भूला था जिन्हें वो अवसर नहीं मिल पाये थे जो उसे मिले थे। किसके माता–पिता ऐसे नहीं थे जो उसे चाहते न हों। और कौन स्कूल नही जा पाया था क्योंकि उसके माता–पिता सोचते थे कि यह पैसे की बर्बादी है, क्योंकि अन्धे लोग वैसे भी काम नहीं कर सकते थे, यहाँ तक कि घर पर भी मदद नहीं कर सकते थे।

''अनेकों को छिपाकर रखा गया था, या फिर लावारिस छोड़ दिया गया था। कुछ लोग यह तक सोचते थे कि अन्धे बच्चों में बुरी आत्माएँ वास करती हैं, इसलिए उन्हें जंगल में मरने के लिए छोड़ दिया जाता था। और फिर भी, सरकार ने, पूरे देश में, एक भी स्कूल उपलब्ध नहीं कराया जो अन्धे बच्चों के अनुकूल हो,'' मैनुएल कहता है।

अतः सन् 1996 में मैनुएल ने एक संस्था शुरू की जिसका नाम था 'एग्रिस' (एसोसियाकाओ फॉर ग्विनीज़ डे रियेबिलिटाकाओ ए इन्टिग्राकाओ डे सिजॉस/दि ग्विनियन एसोसियेशन फॉर रिहेबिलिटेशन एण्ड इन्टीग्रेशन ऑफ दि ब्लाइंड), जिससे अन्धे लोग समाज में जागरूकता उत्पन्न कर सकते थे और मिल कर अपने अधिकारों के सम्मान के लिए संघर्ष कर सकते थे।

''मैं सबको यह दिखाना चाहता था कि हम यहाँ पर हैं, और यह कि हमारे वही अधिकार हैं जो सबके। स्कूल जाने का अधिकार, नौकरी मिलने का, और भाग लेने का। और एक साथ होने से हम यह निश्चित कर सकते थे कि हमको अब अकेलापन नहीं लगेगा।''

### सुरक्षा गृह

एग्रिस के माध्यम से, मैनुएल अनेक नेत्रहीन बच्चों के संपर्क में आया जिनके जीवन कठिन थे। जब उसकी मां की मृत्यु हो गयी, तब उसने अपने घर के आधे भाग को ग्वीनिया–बिस्सायु में अन्धे बच्चों के पहले सुरक्षा गृह में बदलने का निर्णय लिया। पहले बच्चे जो सन् 2000 में आये वो थे दो भाइ सुनकार, 11 एवं ममादी, 6।

''जब उनके पिता ने उनके परिवार को छोड़ दिया, तब उनकी मां पर

**फिर से घर में**

**मैनुएल के केंद्र में इसाबेल ने ब्रेल का प्रयोग करना सीखा, और यह जाना कि वो लोगों की आकांशाओं से कहीं अधिक काम कर सकती है। अब वो अपने परिवार के साथ रहती है और हर सुबह उसकी चचेरी बहन एना उसकी स्कूल जाने में सहायता करती है, जो स्कूल पहले केवल दृष्टिवाले बच्चों के लिए ही होता था। मैनुएल चाहता है कि सब कुछ इसी तरह हो।**

यह आरोप लगा कि वो अशुद्ध है क्योंकि उसने अन्धे बच्चों को जन्म दिया। उसे गांव से बाहर निकाल दिया गया,'' मैनुएल कहता है।

अपनी पत्नी डॉमिंगैस के साथ, मैनुएल ने उन दो छोटे लड़कों का ख्याल रखा। उन्हें भोजन, कपड़े, चिकित्सा देखभाल और सुरक्षा दी। कितनी अच्छी तरह भाइयों की मैनुएल के घर पर देखभाल की गयी, इसकी अफवाहें फैल गईं, और अधिक से अधिक अन्धे बच्चों ने आना शुरू कर दिया।''साथ ही साथ हमने अपने बचाव अभियान शुरू कर दिये जिनमें हमने ग्रामीण गांवों का दौरा किया, अन्धे तथा अन्य विकलांग बच्चों को ढूँढा, जो अक्सर घातक खतरे में रहते थे। हमने बच्चों के अधिकारों के बारे में लोगों को बताया और उन बच्चों की सहायता की पेशकश की जिनको उसकी ज़रूरत थी। जल्द ही हमारे साथ चालीस से अधिक नेत्रहीन बच्चे रहने लगे!''

मैनुएल ने अपनी जेब से बच्चों के लिए सारा भुगतान किया पर उनकी जरूरतों को पूरा करना कठिन था।

## व्हाइट केन स्कूल

मैनुएल की जगह पर बच्चों ने स्वयं की देखभाल करना सीखा और अपने परिवारों की मदद करना जब वो वापस अपने घर लौटें। क्योंकि मैनुएल का लक्ष्य था कि बच्चे वापस अपने घर लौटें और समाज में भाग लें। उन्होने कपड़े और बर्तन धोना, सफाई करना, तैयार होना, साधारण भोजन बनाना और बहुत कुछ सीखा। पर मैनुएल जानता था है कि अन्य सभी बच्चों की तरह, बच्चों को स्कूल जाने की भी जरूरत है। उसने बिना थके, एक अभियान चलाया कि सरकार अन्धे बच्चों की जरूरतों के अनुकूलित एक स्कूल चलाये, जिसके शिक्षकों को ब्रेल में प्रशिक्षिण मिले। उसने पत्र लिखे, टेलीफोन किये और कई वर्षों तक अधिकारियों से मिलता रहा। कुछ नहीं हुआ।

''अन्त में, वो मुझसे थक गए। सरकार ने एक स्कूल शुरू करने की योजना तो नहीं शुरू की लेकिन उन्होंने मुझे निर्माण करने के लिए थोड़ी सी ज़मीन दे दी, शायद मुझे चुप करने के लिए, जैसा कि मुझे लगता है।''

मैनुएल और एग्रिस के पास शायद ही कोई घन था, लेकिन उन्होने बांस और खजूर के पत्तों का स्कूल बनाया जहाँ बच्चे बिना किसी मेंज़ के, जमीन पर बैठते थे। साथ ही उसने शिक्षकों को ब्रेल में प्रशिक्षित किया। सन् 2003 में स्कूल का निर्माण समाप्त हो गया और उसे 'व्हाइट केन' (बैंगाला ब्रैंका) कहा जाने लगा क्योंकि नेत्रहीन लोग अक्सर सफेद बेंतो का प्रयोग करते थे जैसे स्कूल में लगे थे।

''एक दिन कनाडा के राजदूत स्कूल में यह देखने के लिए आये कि हम अपने छात्रों के साथ कैसे काम करते हैं। जैसे हम कक्षा में वहाँ खड़े थे, एक विशाल सांप घास में रेंगता हुआ बच्चों की ओर आया। राजदूत डर गए और वो बच्चों की सुरक्षा के लिए चिंतित हुए। सांप से पाला पड़ने के बाद, दूतावास ने बच्चों के लिए एक सुरक्षित स्कूल का निर्माण करने हेतु धन देने का निर्णय लिया!''

**व्हाइट केन स्कूल**

**मैनुएल के स्कूल को बेंगाला ब्रैंका कहते है जिसका अर्थ सफेद बेंत होता है। सन् 1950 से, कई नेत्रहीन लोग अपने आसपास मदद लेने के लिए सफेद बेंत का उपयोग करते हैं, वो नेत्रहीन लोगों का सबसे साधारण प्रतीक रहा है।**

## एक बचाव अभियान पर

**कभी कभी मैनुएल और उनकी टीम को अपनी जीप के बजाय एक गधा गाड़ी में चलकर उस गाँव में जाना पड़ता है जहाँ वे जानते हैं कि विकलांग बच्चे हैं जो अपना जीवन व्यतीत करने के लिए कठिन समय से गुज़ार रहे है। गांव में पहुंचने पर मैनुएल का स्वागत किया जाता है। गांव में लोग उसको सुनते हैं जब मैनुएल बताता है कि विकलांग बच्चों के वही अधिकार हैं जो अन्य सभी बच्चों के। वो अन्धेपन के कारणों के बारे में भी बात करता है और कैसे अपनी आंखों की क्षति पहुँचने से रक्षा की जाए।**

### मिश्रित स्कूल

इन दिनों, कोई छात्र मैनुएल के स्कूल में फर्श पर नहीं बैठता। पुर्तगाल एवं कनाडा के समर्थन से एग्रिस ने एक स्कूल बनाया है जिसमें छह कक्षाएँ, एक भोजनालय, एक पुस्तकालय, एक संगीत कक्ष एवं दो शिल्प कार्यशालाएँ हैं। ग्वीनिया–बिस्साऊ में शिक्षा विभाग मैनुएल के लिए शिक्षक प्रदान करता है। और अब स्कूल सब के लिए खुला है, न केवल नेत्रहीन छात्रों के लिए। अभी यहाँ स्कूल में 70 नेत्रहीन छात्र उपस्थिति दे रहे हैं, और 177 ऐसे हैं जो देख सकते हैं।

''मुझे यह स्पष्ट दिखता है कि हम सबको मिलकर पढ़ना चाहिए। यह विकलांग बच्चों के अलगाव को रोकने के लिए एक अच्छा तरीका है, और लोगों को यह समझाने के लिए कि हम सबको समाज में अपना योगदान देना है। हम सबका बराबर मूल्य है। शुरूआत करने के लिए, वहाँ बहुत से दृष्टिपूर्ण बच्चों वाले परिवार थे जिनको अपने बच्चों को स्कूल भेजना अजीब लगता था, लेकिन अब हम देश के सबसे प्रतिष्ठित स्कूलों में से एक हैं और बहुत सारे लोग यहाँ आना चाहते हैं,'' मैनुएल कहता है।मैनुएल के 250 बच्चे

16 साल बीत चुके हैं जब से मैनुएल ने 'सुनकार' एवं 'ममादी' नामक लावारिस भाइयों को अपने वहाँ दाखिल किया था। तब से, वो 250 से अधिक नेत्रहीन बच्चों की मदद इसी प्रकार कर चुका है। आज, 41 लोग 'एग्रिस' में काम करते हैं, और वो अंधे बच्चों को एक घर, भोजन, चिकित्सा देखभाल, स्कूल जाने का अवसर, सुरक्षा और प्रेम देते हैं। बच्चों के लिए कुछ भी भुगतान करने की जरूरत नहीं है। अधिकतर बच्चे अपने परिवारों से पुनः मिल जाते हैं जब मैनुएल उनके गाँव वालों को पूरी तरह समझा चुका होता है कि नेत्रहीन बच्चों की देखभाल कैसी की जाती है। बच्चे गरीब परिवारों के होते हैं और उनको अपने घर वापस जाने के बाद भी एग्रिस से सहायता मिलती रहती है जिससे वो अपनी शिक्षा जारी रख सकें और उनका एक अच्छा भविष्य हो। आज मैनुएल के सुरक्षा गृह में 37 बच्चे हैं, लेकिन जल्द ही वहाँ अधिक बच्चे हो जाएंगे क्योंकि वो और एग्रिस दूर गांवों तक अपना बचाव अभियान जारी रखेंगे।

''यद्यपि विकलांग बच्चों के लिए परिस्थिति पहले से बेहतर हुई है जब से हमने अपना काम शुरू किया था, फिर भी हमें अभी बहुत कुछ करना है। हम एक गरीब देश है, जहाँ कई लोग पढ़ नहीं पाते क्योंकि वो कभी स्कूल नहीं गये हैं। इसी लिए हमारे लिए यह जरूरी है कि हम गांवों में सब बच्चों के अधिकारों के बारे में बात फैलायें। कुछ ही वर्ष पहले, एडीलिया को मरने के लिए छोड़

## मैं अच्छा दिखना चाहता हूँ!

**''जब मेरी पत्नी डोमिंगैस यहाँ अच्छे कपड़े चुनने में सहायता करने के लिए नहीं होती है, तब मैं इस मशीन का उपयोग करता हूँ जो मुझे हर उस पोशाक का रंग बताती है जिसे मैं इसके सम्मुख रखता हूँ। अतः मेरा रंग संयोजन भी अजीब से नहीं होते! डोमिंगैस ने मुझे बताया कि कौन से रंग एक दूसरे के साथ अच्छी तरह मिलान खाते है,'' मैनुएल हँसते हुए कहता है।**

दिया गया था क्योंकि वो अन्धी थी, और इस तरह की बातें अब भी होती हैं। इसलिए यह अति महत्वपूर्ण है कि हम यहाँ पर मौजूद हों।''

**जैसा बाप वैसा बेटा**

कभी कभी मैनुएल को थकान लगती है और वो उन सब बुरी बातों को सोच कर दुखी हो जाता है जो ग्वीनिया–बिस्सायु के बच्चों के साथ होती हैं। लेकिन हार मानने के बजाय, वो अपना काम जारी रखने के लिए और अधिक कटिबद्ध हो जाता है।

''उस समय मैं अपने पिता को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होने मुझे अपनी जिन्दगी को संवारने के लिए अनेकों अवसर दिये। वो मेरे सबसे अच्छे मित्र थे, और उनका मेरे प्रति स्नेह उनसे मुझको सबसे अच्छी चिकित्सा देखभाल और शिक्षा दिलवाता चला गया जो भी संभव हो सकी। मेरे पिता मेरे आदर्श है। ठीक जिस प्रकार उन्होंने मुझसे बर्ताव किया उसी तरह मैं भी उन सब नेत्रहीन बच्चों के साथ बर्ताव करना चाहता हूँ जिनको मेरी जरूरत है। उदाहरण के लिए, एडीलिया की तरह। मैं उसके एवं अन्य अन्धे बच्चों के अधिकारों के लिए तब तक लड़ता रहूंगा जब तक मैं जीवित हूँ।''

# ग्वीनिया–बिस्सायु में अंधेपन के कारण

ग्वीनिया–बिस्सायु में अन्धापन के सबसे साधारण कारण निम्न हैं:

रिवर ब्लाइन्डनेस
रिवर ब्लाइन्डनेस (नदी अंधापन) एक परजीवी संक्रमण है जो एक काले रंग की मक्खी के काटने से फैलता है जो नदियों के पास रहती है। एक परजीवी तब शरीर के अंदर, आंखों में भी, हजारों ज़हरीले लार्वा पैदा करता है। यह आँखों को अत्यधिक खुजली एवं हानि पहुँचाता है, जिससे अक्सर अन्धापन हो जाता है।

ट्रैकोमा
ट्रेकोमा एक संक्रामक रोग है जिसमें जीवाणु, पलकों की भीतरी सतह को कठोर बना देते है और निशान ऊतक बढ़ जाता है। यह संक्रमण धीरे–धीरे, दर्द के साथ अन्धेपन की ओर ले जाता है। यह अकसर मक्खियों द्व ारा फैलता है जो किसी संक्रमित व्यिक्ति के सम्पर्क में रही होती हैं। यह रोग अकसर उन बच्चों में पाया जाता है जो गरीब तंग परिस्थितियों में रहते हैं जहाँ स्वच्छ पानी एवं ढके हुए शौचालयों की कमी होती है। इस रोग को रोका जा सकता है और इसका इलाज किया जा सकता है यदि बेहतर जल, बेहतर रूवच्छता, दवाएं एवं संचालन उप्लब्ध हों।

कैटरैक्ट
कैटरैक्ट (मोतियाबिंद) आंख के लेंस में एक झाई का होना होता है। इसका आपरेशन किया जा सकता है।

ग्लौकोमा
ग्लूकोमा एक रोग है जो प्रकाशिकी तंत्रिका को प्रभावित करता है और आंखों में दाब बढ़ा देता है। क्षति पहुँचने के पश्चात् उस पर आपरेशन करना संभव नहीं है, लेकिन चिकित्सा देखभाल द्वारा आगे और अधिक हानि पहुँचने से रोक जा सकता है और शेष दृष्टि को बचा सकती है।

# केवल एक नेत्र चिकित्सक

''लगभग सभी अन्धेपन का इलाज उपलब्ध है और उसको रोका जा सकता है•। लेकिन ग्वीनिया–बिस्सायु एक गरीब देश है जिसमें केवल एक ही चिकित्सक नेत्र विशेषज्ञ है। कई लोग नज़दीकी स्वास्थ्य केंद्र या अस्पताल से 100 किमी से अधिक दूरी पर रहते हैं। लोग ज्ञान की कमी, डॉक्टरों की कमी अथवा समय में उपचार नहीं मिलने के कारण अन्धे हो जाते हैं। जब हम बचाव मिशन पर बाहर निकले होते हैं, तब हम हमेशा लोगों को अन्धेपन के कारणों एवं आंख को क्षति को रोकने के बारे में सूचित करते हैं। उदाहरण के लिए, नदी में तैराकी या कपड़े धोते समय सतर्क रहना। हम लोगों को चिकित्सा सहायता प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, और हम सर्व–साधारण नेत्र रोगों के इलाज हेतु मुफ्त दवाएं भी देते हैं। हम रेडियो के माध्यम से भी जागरूकता उत्पन्न करते हैं,'' मैनुएल कहता है।

* इस दुनिया में 80 प्रतिशत अन्धेपन का इलाज किया जा सकता है या उसे रोका जा सकता है।

**सबके लिए स्कूल**
**मैनुएल का स्कूल अब देश के सर्वश्रेष्ठ स्कूलों में से माना जाता है। उसे एक आदर्श के रूप में माना जाता है कि कैसे साधारण एवं विकलांग बच्चे एक साथ स्कूल जाकर पढ़ सकते हैं।**



**एडीलिया एक छोटे लड़के के साथ जो अन्धा है। जब वो पैदा हुई थी, तब उसकी माँ उसे जंगल में छोड़ कर चली गई थी।**

## 20 करोड़ विकलांग बच्चे

बाल अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन के अनुसार, विकलांग बच्चों के वही अधिकार हैं जो अन्य बच्चों के। उन्हें अतिरिक्त सहायता एवं सहारे की आवश्यकता है जिससे वो एक अच्छा जीवन बिता सकें। इसके बावजूद, विकलांग बच्चे दुनिया में सबसे वंचित बच्चों में से हैं। अनेकों देशों में उनको स्कूल नहीं जाने दिया जाता और उनको बेकार समझा जाता है एवं छिपाकर रखा जाता है। विश्व में 20 करोड़ बच्चे विकलांग हैं।

**14 लाख अन्धे बच्चे**
विश्व में एक करोड़ नब्बे लाख बच्चे नेत्रहीन हैं। उनमें से 14 लाख वो अन्धे बच्चे हैं जिनका इलाज नहीं किया जा सकता, और प्रति वर्ष बाल अन्धेपन के 500,000 नए अतिरिक्त मामले आते हैं। इन नए मामलों में से, आधे बच्चे एक से दो साल के अन्दर मर जाते हैं।

# मैनुएल की संस्था के कार्य

एग्रिस क्या करती है:

- वो ग्रामीण बचाव अभियानों पर जाते हैं, अन्धे बच्चों एवं अन्य विकलांग बच्चों को ढूंढते हुए जिनकी अक्सर बहुत कठिन जिन्दगी बीत रही होती हैं। मैनुएल के केन्द्र पर बच्चों की सहायता की जाती है।

- जब वो ग्रामीण बचाव अभियानों पर जाते हैं, तब वो यह जागरूकता उत्पन्न करते हैं कि विकलांग बच्चों के वही अधिकार है जो अन्य सभी बच्चों के हैं, तथा मुफ्त दवाएं देते हैं और इस पर जानकारी उपलब्ध कराते हैं कि कैसे सर्व–सामान्य नेत्र रोगों को रोका जाए।

- वो नेत्रहीन बच्चों को केंद्र में आश्रय, एक घर, भोजन, वस्त्र, एवं सुरक्षा देते हैं। बच्चे यह भी सीखते हैं कि वो नहायें धोयें और कपड़े बदलें, सफाई करें, बर्तन मांझें, साधारण भोजन पकायें, तथा भविष्य में स्वतंत्रता से रहने के लिए अन्य जीवन कौशल सीखें और अपने परिवारों की सहायता कर सकें जब वो घर वापस लौटें।

- वो बच्चों को चिकित्सा देखभाल उपलब्ध करपाते हैं और जहां संभव होता है वहाँ उनकी आंख का आप. रेशन करवाते है।

- वो देश का पहला स्कूल चलाते हैं जिसको नेत्रहीन बच्चों के लिए अनुकूलित किया गया है, लेकिन वो सभी के लिए खुला है। एग्रिस पूरे देश में मुख्यधारा के स्कूलों को अनुकूलित करने में सहायता करता है, जिससे वे विभिन्न विकलांग. ताओं वाले बच्चों को स्वीकार कर सकें तथा ब्रेल में शिक्षकों को प्रशिक्षण भी देता है।

- वो बच्चों को घर वापस लौटने में सहायता करते हैं। वो बच्चों के परिवारों, पड़ोसियों एवं अध्यापकों को उनके गांवों में बच्चों के लौटने से पहले तैयार करते हैं जिससे उनका एक सकारात्मक तरीके से स्वागत किया जाए। यदि यह संभव नहीं हो पाता कि एक बच्चे को अपने परिवार के साथ फिर से मिलाया जाए, तो वो उस बच्चे के लिए एक पालक परिवार खोजने में मदद करते हैं। कोई बच्चा मैनुएल केंद्र को तब तक नहीं छोड़ सकता जब तक उसे एक सुरक्षित वातावरण नहीं मिल जाता।

- वो मैनुएल के केंद्र को छोड़ने के काफी समय बाद तक उनके स्कूल का शुल्क एवं यूनीफार्म का खर्चा उठाता है जिससे वो अपनी शिक्षा जारी रख सकें और एक उज्जवल भविष्य की ओर देख सकें।

- वो सारे समाज में इस बात की जागरूकता उत्पन्न करते हैं कि विकलांग बच्चों के वही अधिकार है जो अन्य बच्चों के। मैनुएल रेडियो पर बोलता है और एग्रिस एक पत्रिका प्रकाशित करती है। वो इस बात पर संघर्ष करते हैं कि सरकार सभी विकलांग लोगों के अधिकारों पर बने संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन की पुष्टि करे।

### अनेकों मित्र

**"मैं सैमुएल के स्कूल में कक्षा 4 में हूँ। मैं दोनों ब्रेल एवं साधारण लेख का प्रयोग करता हूँ। मेरे स्कूल में वो बच्चे हैं जो देख सकते हैं और ऐसे बच्चे भी हैं जो अंधे हैं। अक्सर जो बच्चे देख सकते हैं वो यह बता कर बाकी हम सब की मदद कर सकते हैं कि अध्यापक ने बोर्ड पर क्या लिखा है। मेरे बहुत सारे अच्छे मित्र हैं जो देख सकते हैं," सैमुएल कहता है, जो कोटिनेलो एवं आसानाटो के पास बैठा है।**

### एक दूसरे की सहायता करना

"मैं अक्सर मैनुएल की काम करने में सहायता करता हूँ। कभी–कभी वो मुझ से मदद लेने के लिए कहता है जब वो बाहर जाता है। वो मेरे कन्धे पर हाथ रखता है और हम साथ–साथ चलते हैं। उसकी सहायता करने में मुझे अच्छा लगता है," सैमुएल कहता है।

### चित्र बनाना प्रिय है

"मुझे चित्र बनाना प्रिय है और मैं यह हर रोज़ करता हूँ। मेरा सर्वप्रिय रंग सफेद है। चित्र बनाने के लिये यह आवश्यक है कि कागज मेरी आँख के बहुत पास हो,"
सैमुएल बताता है।

# सैमुएल की दृश्टि बहाल!

**"मुझे अपने माता–पिता द्वारा लावारिस पड़ा छोड़ दिया गया क्योंकि मैं अंधा था। लेकिन एक दिन मैनुएल मेरे गाँव में मुझे लेने के लिए आया। उसने मेरी देखभाल इस प्रकार की जैसे मेरे स्वयं के माता–पिता ने भी नहीं की होती। उसको बहुत धन्यवाद। अब तो मेरी एक आँख की दृष्टि तक लौट आई है! मैं मैनुएल को पिता के समान समझता हूँ और उससे प्यार करता हूँ," सैमुएल, 12, कहता है, जो मैनुएल के केन्द्र में रहता है और पुर्तगाल में एक व्यावसायिक फुटबॉलर बनने के सपने देखता है।**

TEXT: ANDREAS LÖNN PHOTOS: KIM NAYLOR

सैमुएल एक गरीब परिवार में पैदा हुआ जिसमें उसकी माता, पिता, तथा बड़ा भाई, सॉलोमन रहते थे जिसमें सॉलोमन की दृष्टि कमजोर थी। जब उसके पिता को लगा कि सैमुएल बिल्कुल अंधा है, तो वो अपने परिवार को छोड़ कर चले गये। बहुत सारे अन्य लोगों की तरह, उनका मानना था कि अंधे बच्चे बिल्कुल बेकार होते हैं क्योंकि वो न तो स्कूल जा सकते हैं और न ही खेतों में काम कर सकते हैं।

"मेरी माँ खेतों में काम करती थी, और जैसे ही उसको काम मिला वो मेरे भाई और मुझे पड़ोसियों के पास छोड़ कर चली गई। कभी–कभी वो एक बार में अनेकों सप्ताह तक बाहर रहती थी," सैमुएल कहता है।

पड़ोसी हम भाईयों की अच्छी देखभाल नहीं करते थे। सैमुएल और सॉलोमन भूखे, नंगे, गन्दे रहते थे, और उनकी अक्सर पिटाई की जाती थी। सैमुएल, जो एक बच्चा था, जमीन पर पड़ा छोड़ दिया जाता था और सॉलोमन सारे गाँव में, बिना किसी की देखरेख के, घूमता रहता था।

"मुझे पता नहीं मेरी माँ ने मुझे पीठ पर क्यों नहीं रखा जब वो काम करती थी। यदि किसी माँ का एक बच्चा हो जो देख सकता हो, तो वो उसे सदैव अपने साथ रखेगी और उसे अपना दूध पिलायेगी। मेरी माँ ने मेरे साथ ऐसा नहीं किया, और मुझे अकेला छोड़ कर चली गई, यह मेरे साथ बुरा हुआ। मैं लगातार रोता रहा।"

### मैनुएल का बचाव अभियान

मैनुएल को पता लगा कि वहाँ पर दो छोटे बच्चे थे जो अंधे थे और जिनकी देखभाल नहीं की जा रही थी, जब वो अपनी जीप में एक बचाव अभियान पर निकला हुआ था।

"वो सॉलोमन और मुझे लेने के लिए आया जिससे हम दोनों उसके साथ उसके केन्द्र में रह सकें। मैं केवल एक वर्ष का था इसलिए मुझे गाँव में रहने के बारे में कुछ याद नहीं, लेकिन मैनुएल ने हमें अपनी भूमिका के बारे में बताया जिससे हम यह समझ सकें कि हम उसके साथ क्यों रहें।"

शुरू के दिनों में सैमुएल बहुत रोता था। लेकिन मैनुएल और उसकी पत्नी डॉमिगग्विस ने उसकी देखभाल इस प्रकार की जैसे मानो वो उन्हीं का लड़का हो। वो उसे दिन में अनेकों

## मेरे भाई

**"जैमी, ड्जीब्रिल और मैं एक कमरा बाँट कर रहते हैं। हम भाईयों की तरह हैं। मुझे सुरक्षित लगता है क्योंकि हम एक–दूसरे को चाहते हैं। हर सुबह मैं जैमी की मदद करता हूँ, जो बिल्कुल अंधा है, एक बाल्टी पानी भर कर लाता हूँ जिससे वो स्वयं को धो सके और अपने दांत मांझ सके," सैमुएल कहता है।**

## Samuel, 12

**प्रिय है:** मोटर गाड़ियाँ
**नफरत करता है:** कीड़ों से
**सबसे अच्छी बात जो हुई:** यह कि मैनुएल ने मेरी देखभाल की और उसकी वजह से मुझे दृष्टि मिली।
**सबसे बुरी बात जो हुई:** जब मुझे लावारिस छोड़ दिया गया जब मैं छोटा था।
**अपना आदर्श मानता है:** मैनुएल को!
**बनना चाहता है:** पुर्तगाली क्लब पोर्टो के साथ एक व्यावसायिक फुटबॉलर।
**सपना:** एक अच्छी टोयोटा पिकप गाड़ी का मालिक बनना।

## मेरा भाई और मैं

**"मैनुएल ने दोनों मुझे और मेरे भाई सैमुएल को बचाया। जब मैं छोटा था तब मुझे लगता था कि सैमुएल को दिखाई देता है क्योंकि वो बिना किसी वस्तु से टकराए बहुत अच्छा चल लेता था। लेकिन अपने ऑपरेशन के बाद मैंने देखा कि वो अंधा है। इससे मुझे बहुत दुख हुआ," सैमुएल कहता है। जब सैमुएल छोटा था तो उसमें कुछ दृष्टि थी, लेकिन धीरे–धीरे वो अंधा हो गया।**

बार भोजन कराते थे, और प्यार से पुचकारते थे। एक दिन उसने रोना बन्द कर दिया और जैसे ही वो थोड़ा बड़ा हुआ उसने मैनुएल के स्कूल में जाना शुरू कर दिया। मैनुएल ने सैमुअल के ऑख के कई परीक्षणों का प्रबन्ध किया, ठीक उसी प्रकार जैसे केन्द्र के अन्य बच्चों का हुआ था। डॉक्टरों ने देखा कि उसकी एक ऑख में मोतियाबिन्द है, और वो उसका ऑपरेशन करना चाहते थे।

"मै आठ वर्ष का था और सारी जिन्दगी अंधा रहा था, इसलिए मुझे यह नहीं पता था कि सब कुछ कैसा दिखता था। अचानक मैं एक ऑख से देखने लगा, और सबसे पहली चीज जो मैंने देखी वो अपने अस्पताल के पलंग के ऊपर छत से लटका पंखा था। मैं बहुत डर गया! लेकिन डॉमिंगग्विस वहॉ पर थी, उसने मुझे शान्त किया।"

### वो देख सकता था

जब सैमुएल पलंग के बाहर निकला और अस्पताल की सीढ़ियों से नीचे चल कर गया, तो वो इतना खुश था कि वो अस्पताल के बगीचे में चक्कर लगाकर दौड़ने लगा। नर्सों ने उसको पकड़ने का प्रयास किया लेकिन वो उसे नहीं पकड़ पाईं!

"सब कुछ उससे इतना भिन्न लग रहा था जो मैंने सोचा था। उदाहरण के लिए, मैनुएल मेरी कल्पना से कहीं अधिक बड़ा था! ऑपरेशन के उपरान्त मेरी जिन्दगी इतनी आसान हो गई है। मुझे हर समय अपना रास्ता ढूँढने के लिये कुछ महसूस नहीं करना पड़ता, और न ही मुझे गिरने और स्वयं को चोट पहुँचने या किसी गाड़ी से टकराने का भय रहता है। मैं दुकानों में जा सकता हूँ!"

अब घर वापस लौटने का समय?

सैमुएल एवं सॉलोमन के केन्द्र पर रहते समय, मैनुएल ने उन लड़कों के माता–पिता के संपर्क रहने का बहुत प्रयास किया है। अब जब उनको पता चल चुका है कि सैमुएल देख सकता है, और उनको मालूम है कि सैमुएल ने क्या सीखा है, तो उसके माता–पिता चाहते हैं कि दोनों भाई घर वापस लौट आयें। मैनुएल का लक्ष्य हमेशा से रहा है कि बच्चे अपने परिवारों के पास वापस लौट जायें जहाँ तक सम्भव हो सके। लेकिन सैमुएल को उन पर भरोसा नहीं है।

"ऑपरेशन के बाद मेरी माँ मुझसे मिलने आई थी। उसने मुझे नहीं पहचाना, और मैंने भी उसे नहीं पहचाना। मुझे बहुत अजीब सा लगा। मैनुएल ही ने मेरी देखभाल की जब मुझे मदद चाहिए थी। उसने मेरे लिए कपड़े एवं जूते, साबुन, शैम्पू, भोजन खरीदा... कभी–कभी बिस्कुट और मिठाईयाँ भी! उसने मुझे ढांढस बँधाया। जब मैं दुखी था तब उसने मुझे प्यार दिया। बिना उसके मैं कभी स्कूल नहीं जा पाता और न ही मेरा ऑपरेशन हो पाता जिसके बाद मैं देख पाया। मैं मैनुएल को अपने पिता की तरह मानता हूँ, और केन्द्र को अपने घर की तरह। और अन्य बच्चों को अपने भाई–बहनों की तरह।"

व्यावसायिक फुटबॉलर

सैमुएल मैनुएल के साथ दो वर्ष और रहना चाहता है। फिर वो दूर, बहुत दूर चले जाने के सपने देखता है।

"मैं फुटबॉल खेलता हूँ और मेरा सबसे बड़ा सपना है कि मैं पुर्तगाली टीम पोर्टो में शामिल होकर एक व्यवसयी फुटबॉलर की तरह खेलूँ। इस टीम में खिलाड़ियों में से एक गिनी–बिसाऊ का है, लेकिन मेरी सर्वप्रिय खिलाड़ी रोनाल्डो है। अगर मैं यूरोप में एक प्रसिद्ध फुटबॉलर बन गया, तो मैं फुटबॉल खेल सकूँगा, जो मुझे प्रिय है, और बहुत सारा धन भी कमा सकूँगा। मैं एक अच्छा सा घर बनाऊँगा और एक शांत टोयोटा पिकअप रखूँगा। यही मेरा सपना है।"

## सब बच्चों के लिए स्कूल!

"सैमुएल और मैं मित्र हैं। हम अक्सर अवकाश के समय में फुटबॉल खेलते हैं तथा स्कूल से मिले गणित एवं विज्ञान के कठिन गृह–कार्यों में एक–दूसरे की सहायता करते हैं। दोनों अंधे और दृष्टिपूर्ण बच्चे हमारे स्कूल में पढ़ते हैं। मुझे बिल्कुल भी नहीं लगता कि हम लोगों के बीच में कोई भिन्नता है। हम सब समान हैं। मेरे लिए यह बात स्पष्ट है कि अंधे बच्चे भी स्कूल जा सकते हैं। यहाँ ग्विनिया–बिस्सायु में, विकलांग बच्चों के लिये स्कूल जाना कठिन होता है, क्योंकि स्कूलों ने इन बच्चों की आवश्यकताओं के अनुसार प्रबन्ध नहीं किये हैं। यह गलत है! सब स्कूलों को सभी तरह के बच्चों को पढ़ने के लिये आने देना चाहिए, ठीक मेरे स्कूल की तरह। यदि तुम स्कूल नहीं जाते तो तुम्हें एक नौकरी मिलने और अपने परिवार की देखभाल करने में कठिनाई होगी। बड़ा होकर मैं एक अध्यापक बनना चाहता हूँ।"

डर्मिन्डो, 15

# चलो सैमुएल!

यहाँ पर एक उत्तेजनापूर्ण फुटबॉल का मैच स्कूल के मैदान में लड़को एवं लड़कियों के बीच चल रहा है। मैनुएल लड़कों की टीम का कोच है, 'ग्रिलो', और सैमुएल को चिल्लाकर निर्देश देता है, जो टीम का कप्तान है। सैमुएल के पास अगस्तो सिल्वा है जो अंग्रेजी की अध्यापिका है, और जो लड़कियों की टीम 'एन गौरिंगॉर' को प्रशिक्षण दे रही है। हर बार की तरह, यह एक जीने या मरने का मैच है!

''लगभग सभी खिलाड़ी अंधे हैं। इसलिए एक पुरानी सोडा की बोतल को अपनी 'बॉल' बना लेते हैं, क्योंकि हमारे लिये यह आवश्यक होता है कि बॉल से खेलते समय हमें उसकी आवाज सुनाई दे। यदि हम एक साधारण बॉल को इस्तेमाल करेंगे तो हमें उसको एक प्लास्टिक के बैग में रखना पड़ेगा जिससे हम उसकी सरसराहट सुन सकें। मैं बोतल की अपेक्षा बॉल को पसन्द करता हूँ! हमारे लिए जरूरी है कि हम यहाँ पर स्कूल के मैदान में खेलें, जिसके चारों ओर दीवारें हैं, जिससे सबको यह पता रहे कि बॉल कहाँ पर है,'' सैमुएल कहता है।

यहाँ तक कि दोनों अंधे कोच भी बॉल की आवाज सुनते हैं, और तभी वो अपने खिलाड़ियों को निर्देश दे पाते हैं।

''आज लड़के 7–4 से जीत गये, लेकिन अगली बार हम उनको पकड़ लेंगे!'' डॉमिंगग्विस कहती है।

**सबसे बढ़िया आकार वाली फुटबॉल!**

**मेरी सर्वपिय फुटबॉल, एक प्लास्टिक के बैग में!**

## फुटबॉल को सुनना

**''हम सभी इयूरोपियन लीग्स को बड़े ध्यान से रेडियो पर सुन कर उसकी पकड़ बनाए रखते हैं। साधारणतः हम सब मिल कर उसे सुनते हैं। मैनुएल ही वो व्यक्ति है जो सबसे ध्यान से इसे सुनता है!'' जूलियो कहता है।**

**वो फुटबॉल जिसे हम सुन सकते हैं!**

जूलियो, 14
टीम: ग्रिलो
स्थिति: विंगर
सर्वप्रिय खिलाड़ी: मेस्सी
सर्वप्रिय टीम: बारसीलोना

सैमुएल, 12
टीम: ग्रिलो
स्थिति: बीच का मैदान और कप्तान
सर्वप्रिय खिलाड़ी: मेस्सी
सर्वप्रिय टीम: पोर्टो

उस्साई, 12
टीम: एन गोरिंगॉर
स्थिति: बीच का मैदान
सर्वप्रिय खिलाड़ी: मेस्सी
सर्वप्रिय टीम: बारसीलोना

सोलोमन, 16
टीम: ग्रिलो
स्थिति: गोलकीपर
सर्वप्रिय खिलाड़ी: रोनाल्डो
सर्वप्रिय टीम: रियल मैड्रिड एवं बेनफिका

अन्ना मारिया, 18
टीम: एन गोरिंगर
स्थिति: पिछवाड़ा
सर्वप्रिय खिलाड़ी: रोनाल्डो
सर्वप्रिय टीम: पोर्टो

डॉमिंगग्विस, 14
टीम: एन गोरिंगर
स्थिति: गोलकीपर
सर्वप्रिय खिलाड़ी: रोनाल्डो
सर्वप्रिय टीम: रियल मैड्रिड

ड्जीब्रिल, 12
टीम: ग्रिलो
स्थिति: आगे
सर्वप्रिय खिलाड़ी: रोनाल्डो
सर्वप्रिय टीम: बेनफिका

TEXT: ANDREAS LÖNN PHOTOS: KIM NAYLOR

# मैनुएल का बचाव अभियान

**मैनुएल की जीप के पीछे धूल के बादल उठते हैं जैसे वो गाँवों के बीच होता हुआ उसे उबड़–खाबड़ सड़कों पर चलाता हुआ जाता है। वो एक बचाव अभियान पर है, विकलांग बच्चों के अधिकारों की रक्षा कर रहा है। और उनकी जानें बचा रहा है।**

## केवल नेत्रहीन बच्चे ही नहीं

''हम केवल नेत्रहीन बच्चों की ही मदद नहीं करते। लोग हमें अनेक प्रकार की विकलांग बच्चों के बारे में बताते हैं, जो भौतिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धित विषयों से पीड़ित होते हैं, वो ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं और कठिन जिन्दगियाँ बिताते हैं। हर बच्चे को एक अच्छी ज़िन्दगी बिताने का अधिकार है, और हम यह प्रयत्न करते हैं कि प्रत्येक बच्चे का सही उपचार हो। ब्रायमा का अस्पताल में पूरा परीक्षण होगा, और फिर हमारे केन्द्र में उसकी भौतिक चिकित्सा की जाएगी एवं प्रशिक्षण दिया जाएगा। हम उसकी माँ को भी प्रशिक्षण देंगे जिससे वो ब्रायमा की अच्छी प्रकार से देखभाल कर सके, और उसको कुछ बकरियाँ देंगे जिससे वो उनके बच्चों को बेंच कर अपने परिवार का खर्चा चला सके। यह वास्तव में उस कार्य का भाग नहीं है जो हम करते हैं, लेकिन इस परिस्थिति में हमें उसकी सहायता करनी है,'' मैनुएल कहता है।

''हम एक बचाव अभियान पर हर दूसरे महीने जाते हैं। यदि हमारे वश में होता तो हम ऐसा और अधिक बार कर देते, क्योंकि यहाँ पर इसकी बहुत आवश्यकता है। हमारे देश के अनेकों भागों में, विकलांग बच्चों की जिन्दगियाँ सदैव खतरे में रहती हैं। अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रों में, यह बच्चे उन अस्पतालों से बहुत दूर रहते हैं जिनको विकलांग बच्चों को देखना आता है। अनेकों लोग गरीब होते हैं और वो कभी स्कूल नहीं गये होते। अतः उनके माता–पिता अक्सर अपने बच्चों की परिस्थितियों के बारे में जानकारी नहीं प्राप्त कर पाते। छोटे विकलांग बच्चों को अक्सर बुरी आत्माओं अथवा साँपों की तरह समझा जाता है जिन्हें जंगल में छोड़ देना चाहिए। इसी लिए हमारे बचाव अभियान इतने महत्वपूर्ण हैं। हम गाँवों एवं परिवारों को विकलांग बच्चों के अधिकारों के बारे में पढ़ाते हैं, और फिर अपने साथ बच्चों की चिकित्सा, आवास एवं स्कूल में शिक्षा उपलब्ध कराते हैं,'' मैनुएल बताता है।

**16 क्षेत्रीय कार्यकर्ता**
मैनुएल और उसकी संस्था 'एग्रिस'

# ब्रायमा – साँप वाला

**मैनुएल को एक दूर के गाँव में एक छोटे लड़के के बारे में सूचना मिली है जिसको सहायता की आवश्यकता है। जब वो पहुँचता है, तो उसको डृजेनाबो मिलती है, जो एक दुखी एवं चिंतित माँ है जो अपने लड़के ब्रायमा, 8, को जमीन पर घिसटते हुए देख रही है। वो अपने हाथों की कोहनी से अपने शरीर को बरामदे में खींच रहा है। यद्यपि पड़ोसी बच्चे कुछ ही मीटर दूरी पर फुटबॉल खेल रहे हैं, पर ब्रायमा के लिए उनमें शामिल होना असम्भव है। उसकी माँ ड्जेनाबो बताती है:**

''ब्रायमा को अपने गले में दिक्कत है, अतः वो स्वयं खड़ा नहीं हो सकता। मुझे सचमुच नहीं पता कि उसमें क्या कमी है। मेरे पति मुझे छोड़कर चले गये जब मेरा लड़का गोद का था। उन्होंने कहा, 'यह हमारा लड़का नहीं है। यह एक साँप है जो इधर–उधर रेंग रहा है।' मुझे एक जना चाहिए जो मेरे पति को यह समझाये कि वो गलत हैं। हमारा लड़का एक इंसान नहीं है, बल्कि वो एक साँप है। मेरे लिए स्वयं ब्रायमा की देखभाल करना और उसके साथ स्वयं के खाने का खर्चा निकालना कठिन है। मैं सचमुच अपने भविष्य को लेकर

TEXT: ANDREAS LÖNN PHOTOS: KIM NAYLOR

के पास 16 क्षेत्रीय कार्यकर्ता हैं जो विश्व भर में फैले हुए हैं। वो शहरों और गाँवों में जाते हैं और अंधे एवं विकलांग बच्चों को ढूँढते हैं। मैनुएल गिरजाघरों, मस्जिदों, पारम्परिक नेताओं एवं स्थानीय अधिकारियों के साथ काम करता है। यदि उसको उन बच्चों का पता लगता है जिनको मदद की जरूरत है तो वो वो 'एग्रिस' से सम्पर्क करता हैं, और तब मैनुएल उनके बचाव अभियान पर जाता है। प्रत्येक बार जाने से पहले, वो स्थानीय अधिकारियों से सम्पर्क करता है और उनको बताता है कि वो क्या करने जा रहा है। 'एग्रिस' को अधिकारियों से अनुमति लेनी पड़ती है जब वो मैनुएल के केन्द्र में लेकर जाते हैं।

**कभी–कभी मैनुएल का अपनी यात्रा एक गधा गाड़ी पर पूरी करनी पड़ती है। जब वह गांव में पहुँचेगा तब वहाँ पर विकलांग बच्चों के बारे में एक बैठक होगी कि कैसे उनको एक अच्छी जिन्दगी मिले।**

# लड़का

**ब्रायमा सपना देखता है कि वो भी अन्य जब वो भी अन्य बच्चों के साथ खेलन सकेगा जब वे चारों ओर कोलाहल करते हुए दौड़ेंगे।**

चिंतित हूँ, लेकिन मैनुएल ने मुझे मदद करने का वचन दिया है। मैनुएल कहता है कि यदि मेरे लड़के को सही उपचार मिलेगा, तो वो धीरे–धीरे स्वयं की और अधिक देखभाल कर सकेगा। यह कि वो एक अच्छी जिन्दगी गुजार सकेगा, और उसको अपनी जिन्दगी में अधिक संघर्ष नहीं करना पड़ेगा। मैं उसके लिए यह बात बहुत चाह रही हूँ। मैनुएल को यह तक लगता है कि ब्रायमा स्कूल जा सकेगा। उसने मेरे लड़के को एक परीक्षा में जाने के लिए वचन दिया है और यह भी कि वो उसकी आवश्यक सहायता करेगा। ब्रायमा मैनुएल के केन्द्र में रह सकेगा। यह मुझे अत्यधिक प्रसन्न करता है!''

## अब्दुलाई को एक अवसर मिलता है

**पिछले सप्ताह, मैनुएल एक बचाव अभियान पर गया था। वो 4 वर्षीय अब्दुल्लाई के गाँव में गया था और अब अब्दुल्लाई और उसके पिता को मैनुएल के केन्द्र में 24 घन्टे हो चुके हैं।**

''मैं मैनुएल का बहुत आभारी हूँ कि उसने मेरे लड़के को यह अवसर दिया! अब्दुल्लाई वो बातें सीख सकेगा जो उसके लिए हमारे गाँव वाले घर में सीखना असम्भव था। आवश्यक जीवन के कौशल। जैसे जिन्दगी के रोज के कार्यों को करना हांलाकि तुम अंधे हो। और फिर वो स्कूल जा सकेगा! जब अब्दुल्लाई मैनुएल के स्कूल में जाना समाप्त कर लेगा, तब उसके लिये यह सोचा गया है कि उसे वापस अपने घर भेज दिया जायेगा। मेरा परिवार और मैं उससे केन्द्र में अक्सर मिलने जाया करेंगे जब भी सम्भव हो सकेगा,''

अब्दुल्लाई के पिता सेने, कहते हैं, अपने लड़के को गले लगाते हुए जिसके बाद वो अपने गाँव वापस जाने के लिये एक लम्बे सफर पर निकल पड़ेंगे।

# एडीलिया को मरने के लिए छोड़ दिया गया

**"मैं वो क्षण कभी नहीं भूलूंगी जब मैंने नन्ही नवजात एडीलिया को पहली बार पकड़ा था। वो बहुत कमजोर थी, और कीचड़ में लिपटी थी एवं उसके शरीर पर पिस्सुओं और कीड़ों के काटने के निशान थे। हममें से किसी ने भी नहीं सोचा था कि वो बचेगी। उसे जंगल में मरने के लिए इसलिए छोड़ दिया गया था क्योंकि वो अंधी थी। मैं बहुत नाराज़ थी। मैं अनेकों रातें सो नहीं पाई। अब एडीलिया नौ वर्ष की है और मैं उसे प्यार करता हूँ," मैनुएल कहता है, और एडीलिया की जिन्दगी की कहानी सुनाता है।**

TEXT: ANDREAS LÖNN PHOTOS: KIM NAYLOR

जब एडीलिया पैदा हुई और उसके पिता को पता चला कि वो अंधी है तो उसने सीधे बोला कि वो उसकी लड़की नहीं है, और परिवार को छोड़कर चला गये। एडीलिया की कम आयु की माँ को नहीं पता था कि वो क्या करे। वो एडीलिया को जंगल में अकेला छोड़कर चली आई, बिना पानी या भोजन के। एडीलिया नंगी थी और उसके पास स्वयं को साँप, कुत्तों, वर्षा और तेज जलती धूप से बचाने के लिए कुछ भी नहीं था।

कुछ मवेशी उस जगह से गुजरे जहाँ एडीलिया को छोड़ा गया था। उन्होंने उसके छोटे से, बिना किसी हरकत वाले शरीर को रास्ते में किनारे पड़ा देखा। एडीलिया तब तक चिल्ला चुकी थी जब तक उसमें शक्ति बची थी, लेकिन अब वो कोई आवाज़ नहीं निकाल रही थी। उसमें कुछ बोलने की ताकत ही बचा नहीं थी। मवेशियों को लगा कि लड़की निश्चित मर चुकी है, तब अचानक उसने एक हल्की सी हरकत की। उन्होंने सावधानी से एडीलिया को उठाया और एक पास के इसाईयों के गिरजाघर में भाग कर ले आये।

### बच्चों के लिए बोलना

गिरजाघर की ननों ने मुझसे सम्पर्क किया और हमने एडीलिया को अपने यहाँ रख लिया। वो मिट्टी में सनी हुई थी और बहुत कमजोर थी। हमने उसे भोजन और पानी दिया, और उसको अस्पताल ले गये जिससे उसको सही दवा मिल सके। जब वो फिर से जीवित हो गई तो हमें लगा कि कोई अजूबा हो गया है।

हम सदैव बच्चों के लिये बोलते हैं और यह देखते हैं कि कोई भी व्यक्ति जिसने बच्चों के विरुद्ध अपराध किया हो उसको दण्ड मिले। अतः मैं पुलिस के पास गया और जो एडीलिया के साथ हुआ था, उसकी रिपोर्ट दी और उनसे कहा कि वो एडीलिया के माता–पिता को गिरफ्तार करे। पर कुछ भी नहीं हुआ। कुछ समय से, तख्तापलटों एवं सार्वजनिक युद्ध ों के कारण, देश की न्याय प्रणाली ठीक से काम नहीं कर रही थी। इसके अतिरिक्त, कभी–कभी पुलिस विकलांग बच्चों के विरुद्ध अपराधों को गम्भीरता से नहीं लेती थी।

### सब जगह ढूँढा

मैंने स्वयं उसके माता–पिता को ढूँढने की कोशिश की। मैं छोटे गाँवों को जोड़ने वाले पैदल रास्तों पर दर्जनों मील चला। मैं भूखा होता था, और कहीं पर भी सो जाता था। कुछ समय बाद, सबने मुझसे कहा कि मैं उनको ढूँढना बन्द कर दूँ, लेकिन मैं चलता रहना चाहता था।

अन्त में मुझे एडीलिया की माँ मिल गई, जो बहुत कम आयु की निकली। लेकिन इससे पहले कि हमको किसी प्रकार का समाधान निकालने का मौका मिलता, वो शर्मिन्दा होकर गायब हो गई। तब से उसको कहीं नहीं देखा गया। मैंने उसको क्षमा कर दिया है, और मुझे पता है कि हम सब गलतियाँ कर सकते हैं। किन्तु यह हमारे कार्य के महत्व को दर्शाता है जिसमें हम अंधे एवं अन्य विकलांग बच्चों के लिये यह जागरूकता उत्पन्न करते हैं कि उनके भी वही अधिकार हैं जो अन्य बच्चों के।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि एडीलिया ज़िन्दा है, और यह कि हम उसको एक अच्छी जिन्दगी बिताने में सहायता कर सकते हैं। जब मैं उनके साथ होता हूँ तब मैं बहुत प्रसन्न हो जाता हूँ। वो मज़ाकिया है और बड़े मजेदार चुटकुले बनाती है। मैं उससे प्यार करता हूँ!"

### मैनुएल किसी को निराश नहीं करता

**"हम किसी भी बच्चे को घर नहीं भेजते जब तक कि हमें इसका पता नहीं लग जाता कि उसकी देखभाल की जाएगी," मैनुएल कहता है।**

### मनपसन्द वस्तुएँ

**"मेरी मनपसन्द वस्तुएँ वो छोटे बर्तन हैं, कटोरे और खिलौने वाली चम्मच प्लेटें जो मुझे पिछले वर्ष क्रिसमस पर मैनुएल से मिली थीं," एडीलिया कहती है।**

# एन ग्वेन्डे – अध्यापक और विद्यार्थी दोनों

एडीलिया का सबसे महान सपना है कि वो मैनुएल के स्कूल में एक अध्यापिका बने, ठीक एन ग्वेन्डे की तरह, जो मैनुएल के केन्द्र में तब से रहती आई है जब वो दस वर्ष की थी...

''मेरी माँ मर गई जब मैं छोटी थी, अतः मेरी दादी ने मेरी देखभाल की। मैं 3 वर्ष की आयु में अंधी हो गई। हमारे क्षेत्र में अंधे बच्चों के लिये कोई स्कूल नहीं था, लेकिन एक दिन जब मैं दस साल की थी, तब मैनुएल आया और मेरी दादी से बात की। उसने कहा कि वो मेरी सहायता कर सकता है। अन्त में, मैंने स्कूल जाना शुरू किया! अब मैं इस केन्द्र पर दस वर्षों से रह रही हूँ, और मैं छोटे बच्चों की देखभाल करने में सहायता करती हूँ। मुझे याद है कि कैसे मैनुएल और उसकी पत्नी डॉमिंगुइस ने मेरी सहायता की थी जब मैं छोटी थी। अब मैं उन बच्चों को वैसा ही महसूस कराना चाहती हूँ जो यहाँ पर आते हैं। मैं चाहती हूँ कि उनको सुरक्षा और प्यार मिले। उनको लगे कि हम एक परिवार जैसे हैं, और यह कि मैं उनकी बड़ी बहन जैसी हूँ। सुबह के समय मैं एडीलिया एवं अन्य बच्चों की संरक्षक हूँ। मैं उनको पढ़ना, लिखना और गिनना सिखाती हूँ, एक उभरे हुए बिन्दुओं की प्रणाली द्वारा जिसे ब्रेल कहते हैं। दोपहर में मैं स्वयं स्कूल जाती हूँ। अन्त में मैं एक सचमुच की अध्यापिका बनने के लिए प्रशिक्षण लेना चाहती हूँ। मेरा भविष्य का सपना है कि मैं मैनुएल के स्कूल में एक अध्यापिका बनूँ। बाद में जिन्दगी में मैं चाहूँगी कि मेरा स्वयं का एक परिवार हो, जबकि मैं यहाँ केन्द्र पर अपने परिवार को कभी नहीं भूलूंगी। मैनुएल एवं डॉमिंगुइस मेरे माता–पिता हैं। मैं अपने हृदय में ऐसा ही महसूस करती हूँ।

*एन ग्वेन्डे, 20*

**दो खेल जो एडीलिया, कैडी एवं अन्य बच्चे अक्सर मिलकर खेलते हैं:**

कोर्रेरर! = भागो!

हर कोई एक घेरे में चक्कर काटता रहता है, जबकि लीडर चिल्लाता है 'दौड़ो! दौड़ो!' अचानक लीडर एक निर्देश देता है, जैसेः 'बैठ जाओ!' या 'एक साथी ढूँढो!' या 'चार–चार जनों के समूह बनाओ!' हर बार, जो बच्चे सबसे आखिर में आते हैं उन्हें निकाल दिया जाता है।

टेर्रा ई मार = जमीन और समुद्र
बच्चे अपने जूतों को एक लम्बी रेखा में रख देते हैं जो जमीन और समुद्र के बीच की सीमा है। लीडर चिल्लाता है 'जमीन' या 'समुद्र', और विद्यार्थियों को यह देखना होता है कि वो सीमा के सही तरफ हों जिसके लिये उन्हें जूतों के ऊपर से कूदना पड़ सकता है या फिर अपनी जगह पर ही खड़े रहना होता है। जो सबसे आखिर में सही तरफ पहुँचता है, या फिर कोई जो गलत तरफ चला जाता है, वो बाहर हो जाता है। जो सबसे आखिर में बचता है वो विजेता होता है।

## एडीलिया के कपड़ों की अलमारी

''मुझे वस्त्र सचमुच प्रिय हैं। मैनुएल मुझे मेरे सारे वस्त्र लाकर देता है। लेकिन मेरी बड़ी बहन एन ग्वेन्डे ही मेरे वस्त्रों और मेरे कमरे की देखभाल रखती है। यह मेरी सर्वप्रिय पो"ाक है,'' एडीलिया हंसते हुए कहती है।

**''जब मैं स्कूल जाती हूँ तब मैं ऐसी दिखती हूँ...**

**...और यह मेरे सर्वप्रिय जूते हैं क्योंकि ये बहुत आरामदायक हैं!''**

# एडीलिया का मैनुएल के साथ

इस समय मैनुएल के केन्द्र पर 37 बच्चे रह रहे हैं। उनमें से कुछ जल्द ही अपनी शिक्षा एवं प्रशिक्षण समाप्त कर लेंगे, और अपने परिवारिक घरों में वापस लौट जाएंगे। लेकिन यहाँ पर एडीलिया जैसे बच्चे भी हैं, जिनके लिये यह केन्द्र ही घर है।

"मैं यहाँ सुरक्षित महसूस करती हूँ और सारी जिन्दगी यहीं पर रहूँगी, क्योंकि यह मेरा घर है," एडीलिया, हंसते हुए कहती है।

### प्रातः 05:00 बजे – गुड मॉर्निंग!

"हर सुबह एन ग्वेन्डे मुझे उठा देती है। हम सब एक कमरे में सोते हैं, चार बच्चे और एन ग्वेन्डे। वो एक बड़ी बहन की तरह है। हम सब अंध े हैं। पहले मैं अपना बिस्तर बिछाती हूँ, फिर हम स्नानघर में स्वयं को धोने और दाँत माँझने के लिए चले जाते हैं। फिर मैं अपने स्कूल की यूनीफार्म पहन लेती हूँ। एन ग्वेन्डे हमारे बाल बनाने में हमारी मदद करती है," एडीलिया कहती है।

### प्रातः 06:30 बजे – गिरी–गिरी से मैनुएल के स्कूल

"एन ग्वेन्डे यह देखती है कि हमारे पास वो सब चीजें हैं जिनकी हमें स्कूल के बस्तों में रखने की आवश्यकता है और हमको एक स्कूल बस तक पहुँचाती है, जिसे यहाँ 'गिरी–गिरी' कहा जाता है। फिर हम सब मिलकर गाते हैं," एडीलिया कहती है।

### प्रातः 08:00 बजे – स्कूल शुरू होता है

एडीलिया की कक्षा में, अंधे बच्चे हैं और वो बच्चे भी हैं जो देख सकते हैं।

"मुझे स्कूल जाना प्रिय है, और मैं मैनुएल के स्कूल में एक अध्यापिका बनना चाहती हूँ," एडीलिया कहती है।

### प्रातः 10:00 बजे – नाश्ता

"मैं अपना नाश्ता, डबलरोटी एवं और जूस, स्कूल में करती हूँ। डबलरोटी की महक मेरी मनपसन्द महक है! अवकाश के समय हम खेलते हैं। यह स्कूल जाने के लिए सबसे अच्छी बात है।"

एडीलिया की सहपाठी, कैडी, 7, कहती है:

"हम मिलकर नाचते हैं, गाते हैं और खेलते हैं, वो अंधे बच्चे और हम में से जिनको दिखाई देता है। यह बहुत अच्छी बात है कि हम एक साथ स्कूल जाते हैं क्योंकि हम मित्र हैं!"

सायं 12:00 बजे – स्कूल की छुट्टी

"जब स्कूल की छुट्टी होती है तब हम 'गिरी–गिरी' से वापस घर चले जाते हैं," एडीलिया कहती है।

TEXT: ANDREAS LÖNN PHOTOS: KIM NAYLOR

# एक दिन

## सायं 1:00 बजे – दोपहर का खाना और बर्तन धोना

"घर पहुँच कर हम कपड़े बदलते हैं और दोपहर का भोजन करते हैं। जब बारी की सूची में मेरा नाम आता है तब मैं बर्तन मांझती हूँ।" मैनुएल के केन्द्र पर बच्चे घरेलु कौशल सीखते हैं जैसे बर्तन मांझना, खाना पकाना, पोछा लगाना और बिस्तर बिछाना, जो स्वतंत्र रहने के लिए उनके प्रशिक्षण का एक भाग होता है, और इस प्रकार वो अपने परिवारों की सहायता कर सकते हैं जब वो वापस घर जाते हैं। मैनुएल का लक्ष्य है कि अंधे बच्चे भी अन्य बच्चों की तरह रह सकें। यहाँ पर एडीलिया, नफी, डॉमिनीगैस, ड्जूमा बर्तन धो रहे हैं।

## सायं 1:30 बजे – खेलना और सोना

"दोपहर के भोजन के बाद मैं अपने मित्रों के साथ खेलती हूँ। हम भाई–बहनों की तरह हैं, क्योंकि हम एक साथ रहते हैं। मेरे सारे मित्र सुन्दर और अच्छे हैं। मुझे मालूम है कि वो दिखने में कैसे लगते हैं क्योंकि मैंने उनके चेहरों को छुआ है। हम फुटबॉल खेलते हैं और नाचते एवं गाते हैं। जब हम खेल चुकते हैं तब हम सब एक नींद ले लेते हैं," एडीलिया बताती है, नफी के चेहरे को छूते हुए, जिससे उसे यह पता चले कि वो कैसी दिखती है।

## सायं 5:15 बजे – नहाने का समय

## सायं 6:00 बजे – रात्रि का भोजन

"हमें सदैव स्वादिष्ट भोजन मिलता है! मेरा सर्वप्रिय भोजन नारियल के तेल में बनी मछलियाँ है," एडीलिया कहती है।

## सायं 8:00 बजे से सायं 9:00 बजे तक – ड्जुम्बाई – संध्या का जमावड़ा

"हर संध्या हम ड्जुम्बाई मनाते हैं जिसमें हम मिलकर गाते और नाचते हैं। फिर एन ग्वेन्डे हमेशा एक कहानी सुनाती है, जो अक्सर बाइबिल में से होती है," एडीलिया कहती है।

## सायं 9:00 बजे – गुड नाइट एडीलिया!

"एन ग्वेन्डे हमको बिस्तर में डाल देती है और हमसे गुड नाइट कहती है जिसके बाद हम सो जाते हैं। इस प्रकार हम सुरक्षित महसूस करते हैं," एडीलिया कहती है।

## आम प्रिय है!

"कल जब पिता मैनुएल एक यात्रा करके घर लौटे, तो वो आम लेकर आये। मुझे आम का स्वाद बहुत अच्छा लगता है।"

## पिलोटो एक बुरा कुत्ता है!

"मेरे सभी मित्र अच्छे हैं, लेकिन यहाँ पर हमारे पास एक कुत्ता भी है, जिसे पिलोटो कहते हैं। वो एक बुरा कुत्ता है! उसने मुझे एक बार काटा था। वो मेरे बिस्कुट चाहता था! इसीलिए मुझे लगता है कि वो एक बुरा कुत्ता है। फिर भी मैं उसको पुचकारना पसन्द करती हूँ," एडीलिया कहती है।

# "इसाबेल की एक जिन्दगी"

**"पहले मैंने अपने माता–पिता को खो दिया फिर मैंने अपनी दोनों आँखों की रोशनी खो दी। मेरे सारे सपने चूर–चूर हो गये। लेकिन मैनुएल ने मुझे एक बेहतर जिन्दगी बिताने का अवसर दिया। अब मुझे लगता है कि मैं अपनी जिन्दगी में जो भी चाहूँ कर सकती हूँ!" इसाबेल, 14 कहती है।**

वो मैनुएल के केन्द्र से हटकर अपनी बुआ के परिवार के साथ गाबू नामक छोटे शहर में चली गई है। वो पहली विकलांग बच्ची थी जो वहाँ के मुख्य स्कूल में, शहर के अन्य बच्चों के साथ पढ़ने के लिए गई। यह मैनुएल का सपना उन सभी बच्चों के लिए है जिनकी वो देखभाल रखता है।

"मैं एक छोटे से गाँव मे अपनी माँ के साथ बड़ी हुई। मेरे पिता की मृत्य हो गई जब मैं बच्ची थी। मेरी माँ बाजार में नारियल का तेल एवं सब्जियाँ बेचती थी। हमारे पास कभी पर्याप्त भोजन नहीं होता था, लेकिन मेरी माँ मुझे बहुत प्यार करती थी।

मेरी माँ बीमार थी, और उसकी हालत अधिक बिगड़ती गई। अक्सर मैं सफाई करती थी और बर्तन साफ करती थी और अपनी फसल बेचने के लिए बाजार जाती थी क्योंकि मेरी माँ की तबियत ठीक नहीं रहती थी। कभी–कभी मुझे इतना डर लगता था कि मैं रो पड़ती थी। मेरी माँ ही मेरे लिए सब कुछ थी।

एक दिन मैं अपने मित्रों के साथ बाहर खेल रही थी, जब मेरा सबसे बुरा सपना सच हो गया। एक पड़ोसी दौडता हुआ आया और उसने बताया कि मेरी माँ की मृत्यु हो गई। मैं घर की ओर तेजी से भागी और देखा कि मेरे घर में बहुत सारे लोग रो रहे थे। मैं अपनी माँ के पलंग में घुस गई और उसे कस कर पकड़ लिया।

### अन्धी हो गई

मेरे चाचा लोग अपने–अपने परिवारों के साथ पास में रहते थे, अतः मैं बिल्कुल अकेली नहीं थी। लेकिन वो बहुत गरीब थे और वहाँ पर कभी भी सबके लिए पर्याप्त भोजन नहीं होता था। मैं भी बीमार हो गई थी, लेकिन उन्होंने मेरी देखभाल नहीं की। मैं बस एक कोने में पड़ी रहती थी, और मुझे लगता था कि मुझे कोई पूछता नहीं है। मुझे लगता था कि वो मुझे नहीं चाहते। मेरी चाची ड्जेनाबो को पता चला कि वहाँ की परिस्थिति कैसी है, अतः वो मुझे और मेरी दादी को यहाँ गाबू में अपने साथ रहने के लिए ले आयीं। मैंने स्कूल जाना शुरू कर दिया, और मुझे खाने के लिए पर्याप्त भोजन भी मिलता था। फिर भी मुझे गरीबी का आभास होता था और मेरे सारे सिर में दर्द होता था। वो इतना खराब हो गया कि मैं चल तक नहीं पाती थी। मुझे उलझन सी होने लगी, अतः मेरी चाची मुझे अस्पताल ले गई। एक दिन जब मैं वहाँ लेटी हुई थी, तब अचानक मुझे दिखाई देना बन्द हो गया। मैं घबरा गई और चिल्लाई, लेकिन वहाँ के डॉक्टर कुछ नहीं कर सके। मैं अंधी हो गई थी। दोनों आँखों से।

### सपने टूट गये

मुझे सबसे पहले यह विचार आया कि मेरा सब कुछ समाप्त हो गया है। मेरे लिए स्कूल जाने का कोई अवसर नहीं था। मैंने सोचा था कि मैं स्कूल में अधिक से अधिक अच्छा काम करूंगी, जिससे मैं एक डॉक्टर, अध्यापक या कोई अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति बन सकूँ। जिससे मैं धन कमा सकूँ और स्वयं को तथा अपने परिवार को सहारा दे सकूँ। अब मेरे सारे सपने टूट चुके हैं। अब मैं कैसे अपना गुजारा करूंगी? मैं बस रोई और रोई। मेरे लिए सब कुछ अधिक से अधिक बुरा हो गया था जिसका मुझे भय था। मैं स्कूल नहीं जा सकती थी। मैं बस घर पर लेटी रह सकती थी। यहाँ तक कि मेरे परिवार को भी लगा कि मैं एक अंधी बच्ची हूँ जो किसी काम की नहीं। कई महीनों तक मैं बस वहाँ पर

## Isabel, 14

**चाहती है:** स्कूल जाना।
**नफरत करती है:** घर पर जबरदस्ती रहना, जब उसको स्वयं में बेकारी लगती है।
**सबसे अच्छी बात जो हुई:** यह कि मैनुएल ने मेरी सहायता की।
**सबसे बुरी बात जो हुई:** यह कि मैंने अपनी जिन्दगी में इतना सब खोया है।
**अपना आदर्श मानती है:** मैनुएल को!
**बनना चाहती है:** एक महत्वपूर्ण व्यक्ति।
**सपना:** कोई महत्वपूर्ण जना बनना।

TEXT: ANDREAS LÖNN PHOTOS: KIM NAYLOR

### सामान खरीदने जाना

**"औवा और मैं अक्सर बाज़ार एक साथ जाते हैं। वो मुझे बताती हैं कि क्या बिक रहा है, और मुझे जाती हुई कारों एवं मोटरसाइकिलों से सचेत करती है। बिना औवा की सहायता के मैं खो जाऊँगी," इसाबेल कहती है।**

पड़ी रही। बेकार, अकेली और बिना मित्रों के साथ। मेरी चाची और मेरी चचेरी बहन ने मुझे नहलाया और मेरे कपड़े बदले। यहाँ तक कि उन्होंने मुझे खाना भी खिलाया। मुझे लगा कि मैं बिल्कुल बेकार हूँ।

### मैनुएल से मिली

जब मैं उसी तरह तीन महीने तक पड़ी रही, तब एक आदमी हमारे घर आया और स्वयं को मैनुएल बताया। उसने कहा, "तुम्हारी तरह मैं भी अंधा हूँ। मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ। यदि तुम मेरे साथ बिस्सायु चलो तो तुम फिर से स्कूल जाना शुरू कर सकती हो और जब तुम्हारी पढ़ाई समाप्त हो जाएगी तब तुम एक अच्छी नौकरी के लिये आवेदन भी कर सकती हो और हर कोई की तरह काम करना भी शुरू कर सकती हो। मुझे देखो। मैं अंधा हूँ फिर भी मैं यह कर सकता हूँ। लेकिन तुमको कठिन संघर्ष करना पड़ेगा।"

मैंने उसकी बात को पूर्णतयाः नहीं स्वीकार किया लेकिन मुझे लगा कि मुझे इस अवसर का लाभ उठा लेना है।

मैनुएल ने मेरे परिवार से भी बात की। उन्होंने कभी नहीं सुना था कि अंधे लोग भी स्कूल जा सकते हैं, पढ़ते हैं, लिखते हैं, गिनती करते हैं और घर में सहायता करते हैं, और उन्हें इस बात पर विश्वास करना कठिन लगा। लेकिन मैनुएल से मिलने के बाद उन्हें लगा कि यह सत्य हो सकता है। पहले, मैनुएल मुझे राजधानी वाले शहर के अस्पताल में लाया जिससे मुझे सही चिकित्सा मिल सके, इसलिए नहीं कि मैं देख सकूँ बल्कि जिससे मेरा शरीर स्वस्थ हो जाए। फिर मैं मैनुएल के केन्द्र में रहने के लिए चली गई।

### अकेली नहीं

मैं केन्द्र में अनेकों अंधे बच्चों से मिली। उससे पहले मुझे लगता था कि मैं अकेली हूँ जिसकी जिन्दगी कठिन है। अब मैं बहुत से लोगों से मिलती थी जिनकी समस्यायें मिलती–जुलती थी, और इससे मुझे लगा कि मैं अकेली नहीं थी। हम साथ खेलते, नाचते और गाते थे। केन्द्र में मैंने कपड़े धोना और बर्तन मांझना, सफाई करना, स्वयं को स्वच्छ रखना और अपने छोटे भाई–बहनों की देखभाल करना सीखा। मैंने कुछ प्रारम्भिक भोजन पकाने के कौशल सीखे, और कैसे उसे दूसरों को परोसते हैं। अचानक ही, मैं वो बेकार व्यक्ति नहीं रह गई थी जो कुछ नहीं

### एक नई जिन्दगी

**जब पहली बार मैं इसाबेल से मिला था तब वो बहुत निराश थी और उसको लग रहा था कि उसकी कोई जिन्दगी नहीं है। लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ काफी सुधर गया।**

### बोलने वाली घड़ी

**"मेरी सर्वप्रिय वस्तु यह घड़ी है जो मुझे मैनुएल से मिली थी। यदि तुम इसका एक बटन दबाओ, तो तुम्हें एक आवाज़ समय बताती है। वो घन्टे और आधे घन्टे दोनों का समय बताती है। मुझे समय जानने की ज़रूरत पड़ती है जिससे मुझे पता रहे कि मुझे क्या करते होना चाहिए, जैसे जब प्रार्थना करने या स्कूल जाने का समय होता है," इसाबेल कहती है। मैनुएल ने इसाबेल को धूप के चश्मे और एक सफेद छड़ी भी दी थी।**

इसाबेल का नाम ब्रेल लिपि में

इसाबेल ब्रेल लिपि में पाठ पढतें हुए

कर सकती थी क्योंकि वो अंधी थी। मैं फिर से एक सामान्य व्यक्ति की तरह हो गई। साथ ही मैंने मैनुएल के स्कूल में भी जाना शुरू कर दिया। मैंने ब्रेल द्वारा पढ़ना, लिखना एवं गिनना सीखा। यह बहुत मजेदार था, और मैं बहुत खुश थी!

## घर वापस

दो महीने बाद, मैनुएल ने बताया कि उसकी संस्था 'एग्रिस' ने मेरे गृहनगर के एक स्कूल में परिवर्तन लाने में सहायता की थी, जिससे अंधे बच्चे अन्य साधारण बच्चों के साथ स्कूल में पढ़ सकें। उनके कार्य में अध्यापकों को ब्रेल का प्रयोग करने का प्रशिक्षण शामिल था। उसने मुझे यह भी बताया कि वो मेरे परिवार से मिला था और उसको तैयार किया जिससे वो वापस मुझे घर बुला लें। यद्यपि मैं मैनुएल के केन्द्र में खुश थी, फिर भी मैं अपने परिवार के पास जाना चाहती थी। मुझे सबकी याद आती थी।

अब मुझे घर वापस आये लगभग एक वर्ष हो चुका है। मेरे परिवार में बहुत सारा प्यार है और मैं लगभग सभी गृह. कार्यों में सहायता करती हूँ। मुझे एक सचमुच के परिवार के सदस्य जैसा लगता है, जो हर कार्य में भाग लेता है और सभी काम करता है। और मैं स्कूल में भी ठीक चल रही हूँ। मैं अपनी कक्षा में स्थिर हूँ और मेरे बहुत सारे मित्र हैं। मुझे स्कूल में दोनों अंधे बच्चों एवं सामान्य बच्चों के साथ जाना महान लगता है। मुझे लगता है कि जो बच्चे विकलांग होते हैं वो सामान्य स्कूल में जा सकते हैं और उन्हें हमारे परिवारों के साथ रहने देना चाहिए। आखिर हम समाज का एक भाग हैं और हम सबके साथ रहना चाहते हैं! भविष्य में मैं कोई महत्वपूर्ण कार्य करना चाहती हूँ, जैसे एक अध्यापिका बनना या मैनुएल के साथ काम करना। मुझे लगता है कि मैं कोई भी काम कर सकूंगी!" ⊕



## परिवार की एक सच्ची सदस्य

"जब मैं अंधी हो गई तो मैं किसी भी गृहकार्य में सहायता नहीं कर सकी। मुझे लगा कि मैं बेकार हूँ, और परिवार के एक वास्तविक सदस्य की तरह बिल्कुल भी नहीं। लेकिन मैनुएल के केन्द्र पर बिताये समय ने मेरा सब कुछ बदल दिया। अब मैं अपने परिवार के हर काम में भाग लेती हूँ और सहायता करती हूँ!" इसाबेल हंसते हुए कहती है।

इसाबेल के काम



**साथ में रहना**

**"दोपहर एवं संध्या के समय हम अक्सर खेलते हैं, या फिर मिल–जुल कर बातें करते हैं," इसाबेल कहती है, जो इस चित्र में अपने चचेरे भाई–बहनों के साथ एक चीन देश की कूदने वाली रस्सी से खेल रहे हैं।**

## मैनुएल के केन्द्र पर इसाबेल की मित्र

"इसाबेल यहाँ केन्द्र में मेरी सबसे अच्छी दोस्त थी। हम बहनों की तरह थे। मैनुएल ने उसकी मदद की जिससे वो वापस घर अपने परिवार के पास चली जाय और वो वहाँ पर स्कूल जाती है। मैं दुख हुआ था जब वो यहाँ से गई थी, और मुझे अब भी उसकी याद आती है। लेकिन वो जल्द ही मुझसे मिलने आ रही है। मैं यहाँ आई थी जब मैं पाँच वर्ष की थी, क्योंकि जहाँ मैं रहती थी वो स्कूल अंधे बच्चों को स्वीकार नहीं करता था। तब मैं अपने घर को छोड़ कर नहीं जाना चाहती थी, लेकिन अब मैं यहाँ पर सचमुच खुश हूँ। मेरे बहुत सारे मित्र हैं और मुझे स्कूल जाने का अवसर मिला है। मेरा सपना है कि मैं एक वकील बनूँ और बाल अधिकारों के लिये लड़ूँ। आज मुझे पता है कि अभी वापस घर लौटना सबसे सही बात है जो इसाबेल ने की। मुझे विश्वास है कि मुझे यहाँ मैनुएल के केन्द्र पर सबसे अच्छी शिक्षा मिल रही है, लेकिन मुझे मालूम है कि जब मैं अपनी पढ़ाई समाप्त कर लूँगी तब वो मेरे घर वापस जाने में भी मेरी सहायता करेगा।"

*डामिनीगैस, 14*

...मेरे प्रिय धूप के चश्मे...



यह मेरे कपड़े की अलमारी है!

स्कूल जाने के लिए तैयार...

...घर के काम के लिये...

...अपने सर्वप्रिय वस्त्रों में...

**फैशन करना प्रिय है**

"मुझे कुछ–कुछ याद है कि सब चीजें कैसी दिखती हैं। मुझे याद है कि आम के पत्तों का रंग हरा होता है। हरा मेरा सर्वप्रिय रंग है, लेकिन मुझे गुलाबी, पीला और नारंगी भी पसन्द है। मेरे लिए आवश्यक है कि मैं स्वच्छ रहूँ और देखने में अच्छी लगूँ। यह कि मैं अच्छे कपड़े पहनूँ और अपने बाल ठीक से बनाऊँ। ठीक और लोगों की तरह। मैं केवल इसलिए प्रयास करना बन्द नहीं करूंगी क्योंकि मैं अंधी हूँ। मुझे वस्त्र प्रिय हैं और मुझे वेश–भूषा भी प्रिय है। मुझे बहुत अच्छा लगता है जब लोग मेरी तारीफ करते हैं। फतुन्जा मुझे मिलान वाले कपड़े ढूँढने में मेरी मदद करती है, लेकिन मुझे भी मालूम है कि मैं क्या कर रही हूँ। उदाहरण के लिये, मैं कह सकती हूँ कि मैं अपनी काली कट–ऑफ जीन्स और अपने काल एवं लाल टॉप को अपने लाल फिलप–फ्लॉप्स के साथ पहनना चाहती हूँ। फिर मैं बस यही आशा करती हूँ कि जिन कपड़ों को मैं पहनना चाहती हूँ वो स्वच्छ और तैयार मिलें।"

## पलंगों को बिछाना

"मैं प्रातः 5 बजे की अजान पर उठती हूँ। फिर मैं बिस्तर बिछाती हूँ।"

## दादी के साथ प्रार्थना

"मैं अपने नमाज के वस्त्र पहनती हूँ, स्वयं को धोती हूँ, और अपनी दादी, फातूमाता के साथ नमाज पढ़ती हूँ। मैं खुदा से जिन्दगी में सहायता एवं सहारा मांगती हूँ। उसके बाद मुझे स्कूल जाना पड़ता है।"

## भोजन तैयार करना एवं परोसना

मैं लगभग हर दिन स्कूल को संतुष्ट जाती हूँ और इसके लिये मैं अपने परिवार की आभारी हूँ। मैं अक्सर अपने परिवार को भोजन परोसने में सहायता करती हूँ। मैं भोजन पकाने में भी सहायता करती हूँ, उदाहरण के लिये, मसालों को कूटने में। लेकिन मैं आग अथवा बर्तनों के पास नहीं जाती, क्योंकि मैं किसी भी वस्तु को लुढ़का सकती हूँ और स्वयं को जला सकती हूँ," इसाबेल कहती है।

मैं अपने छोटे चचेरे भाई–बहनों को नहलाती हूँ...

## घर में पोछा लगाना

"सप्ताह के अन्त में हम घर को भी धोते हैं। मैं फर्श को पोंछती और साफ करती हूँ। फतुन्जा बरामदे को साफ करती है क्योंकि मैं सरलता से दिशाहीन हो जाती हूँ और मुझे सहीं से अपनी स्थिति का पता नहीं रहता।"

## पानी भरना

"स्कूल के बाद मैं कुँए से पानी भर कर लाती हूँ और बाल्टी को सिर पर रख कर ले जाती हूँ।"

# Molly Melching

## मौली को क्यों नामांकित किया गया है?

मौली मैल्चिंग को वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ के लिए नामित किया गया है क्योंकि वो 40 वर्षों से जनाना यौनांग काटने (खतना), बाल विवाह एवं जबरन विवाह के विरुद्ध संघर्ष कर रही है।

मौली और उसकी संस्था तोस्तान, स्थानीय भाषा में, मानवाधिकारों पर आधारित एक प्रोग्राम में लोगों को प्रशिक्षण देती है। इसमें सम्पूर्ण गाँव, वयस्क एवं बच्चे सभी शामिल होते हैं, यह तीन–वर्षीय प्रोग्राम स्वास्थ्य, शिक्षा तथा पर्यावरण के मुद्दों पर प्रशिक्षण देता है। अन्य महत्वपूर्ण विषयों में महिलाओं एवं बच्चों को सशक्त करना, तथा जनाना यौनांग काटने एवं बाल अधिकारों के बारे में जागरूक करना शामिल है। तोस्तान के इस अनोखे शिक्षा सम्बन्धी मॉडल को 'सामुदायिक सशक्तिकरण कार्यक्रम' कहा जाता है। इस कार्यक्रम द्वारा दक्षिण अफ्रीका के छः देशों में 7,200 गाँवों को जनाना यौनांगकाटने, बाल विवाह एवं जबरन विवाह को रोकने का निर्णय लिया है। मौली एवं तोस्तान को धन्यवाद कि अब इन गाँवों में सैंकड़ों हजारों लड़कियाँ ज़िन्दगी भर की हानि पहुंचने की आशंका से बच कर बड़ी हो सकती हैं। और इन गाँवों में उनको एवं लड़कों को तब शादी नहीं करनी पड़ेगी जब वो सिर्फ बच्चे हों। अब दोंनो लड़कियाँ एवं लड़के एक ज्ञानपूर्ण भविष्य का सपना देख सकते हैं, जहां वो अपनी ज़िन्दगी के निर्णय स्वयं लें।

**मौली मैल्चिंग सन् 1996 के एक ऐतिहासिक दिन पर सेनेगल के मालिकाउण्डा बमबारा नामक गाँव में पहुंचती है। आज तक, गाँव की लड़कियों को सदैव से जनाना यौनांग काटने एवं बाल विवाह को भोगना पड़ता था। मौली को गाँव की महिलाओं से मिले इस संदेश पर जरा भी विश्वास नहीं होता: 'हमने अपनी लड़कियों के यौनांग को काटना बन्द करने का निर्णय ले लिया है।'**

जब मौली अपनी जीप को गाँव में चलाकर जाती है, तब उसका स्वागत बहुत सारे लोगों द्वारा किया जाता है। गाते और नाचते, वे एक बड़े वृक्ष की छांव में होने वाली बैठक के स्थान की ओर जाते हैं।

''हम आपके पहले नाम और बाद के नाम से आपका अभिनन्दन करते हैं,'' गाँव की महिलाओं की नेता कहती है। पहले जनाना यौनांग काटने पर बात करना भी वर्जित था, इस लिए मौली अचम्भित हो जाती है। क्या महिलाओं ने सचमुच इस परम्परा के बारे में खुल कर बात करने का निर्णय लिया है, और इस पर रोक लगाने का? क्या उसकी संस्था तोस्तान द्व ारा दिये गये स्वास्थ्य एवं मानवाधि ाकारों पर प्रशिक्षण ने इस एक हजार–वर्षीय–पुरानी परम्परा को समाप्त करने में योगदान दिया है, जिसने इस एवं अन्य गाँवों में लाखों लड़कियों को गम्भीर हानि पहुंचाई है।

### ऐतिहासिक निर्णय

पेड़ के नीचे महिलाएं इस पर बात करना शुरू करती हैं कि उन्होंने अपना निर्णय कैसे लिया।

''हमें वो जानकारी प्राप्त हुई जो हमें पहले नहीं थी,'' कर्थियो कहती है, जो महिलाओं में से एक है। ''हमें अब मालूम है कि विश्व में अधिकतर लड़कियों के यौन जननांगों को नही काटा जाता। हम इससे अचम्भित हुए। हमें यह भी पता लगा कि बचपन में इन जननांगों को काट देने से बड़े होकर हम महिलाओं को

**अदामा, 15, सारे गाँव के सामने तोस्तान कार्यक्रम के बारे में बात कर रही है। जब उसकी माँ युवा थी, तब लड़कियों को इस तरह बात करने का अधिकार नहीं था, लेकिन अब गाँव की बैठकों में सबको शामिल किया जाता है।**

बहुत दर्द एवं कष्टों से गुजरना पड़ता है।''

जनाना यौनांग काटना एक खतरनाक क्रिया होती है, जो सारी ज़िन्दगी स्वास्थ्य सम्बन्धित समस्याएं उत्पन्न करती है। लेकिन यह एक परम्परा है जिसका मतलब होता है कि एक लड़की की शादी की जा सकती है और गाँव का समुदाय उसको स्वीकार करता है।

बहुत समय से, गाँव की महिलाओं ने इस पर बात की है कि कैसे लड़कियों के यौन जननांगों को काटा जाता है और जबरन उनका बाल विवाह कर दिया जाता है। दो वर्षों से, तोस्तान के प्रशिक्षकों ने उनको मानवाधिकारों, शरीर एवं स्वास्थ्य जैसे विषयों पर सहारा एवं जानकारी दी है।

''सबसे महत्वपूर्ण बात जो हमने सीखी है,'' कर्थियो कहती है, ''वो यह है कि मानवाधिकार होते हैं। और हम वयस्क, बाल अधिकारों की रक्षा करने के उत्तरदायी हैं। यह हमको अपने अधिकारों के लिए खड़ा होने को सशक्त करता है।''

''हमने धार्मिक नेताओं से बात की और पता लगाया कि यह परम्परा इस्लाम से नहीं शुरू हुई। इस परम्परा को बन्द करना हमको बुरा मुसलमान नहीं बना देता।''

महिलायें निर्णय लेती हैं कि वो एक समारोह आयोजित करेंगी, जिसमें दोनों महिला एवं पुरुष इस बात को समझायेंगे कि जनाना यौनांग काटने का निर्णय क्यों महत्वपूर्ण है। और किस प्रकार तोस्तान कार्यक्रम में हुई चर्चाओं ने उनको यह निर्णय लेने में मदद की।

मौली समारोह में है। वो नाच में शामिल हो जाती है और गाँव में सबकी खुशियों को बांटती है।

### पहला बाल केन्द्र

सन् 1974 में जब 24 वर्षीय मौली पहली बार सेनेगल आई थी तब वो अपने देश संयुक्त राज्य अमरीका में विश्वविद्यालय की पढ़ाई के सम्बन्ध में फ्रांसीसी भाषा में लिखी बच्चों की कहानियों का अध्ययन करने आई थी। लेकिन जब डकार पहुंची तब उसे

**मौली 24 साल की उम्र में सेनेगल आयी थी और वहीं रुक गई थी। उसने राजधानी शहर डकार में एक बाल केंद्र शुरू किया।**

**सभी बच्चों के पास काम है, जैसे पानी भर कर लाना, लेकिन यह भी आवश्यक है कि बच्चों को खेलने का समय मिले।**

ऐसा लगा: ''विश्व में यही मेरी जगह है।''

जिन कहानियों का वो अध्ययन कर रही थी वो फ्रांसीसी भाषा में थी, लेकिन वहाँ के बच्चों की भाषा वोलोफ थी।

''कैसे बच्चे सीखें जब वो अपनी भाषा में पुस्तकें पढ़ नहीं सकते और बोल नहीं सकते? मौली ने स्वयं से पूछा।

उसने वोलोफ भाषा सीखी और एक केन्द्र शुरू किया जहाँ बच्चे अपनी भाषा में पुस्तकें पढ़ कर अनुभव प्राप्त कर सकते थे और अपना विकास कर सकते थे। उस समय वोलोफ भाषा में बच्चों की कोई पुस्तकें नहीं थीं।

अतः एक रात मौली ने अपनी पहली कहानी की पुस्तक वोलोफ भाषा में लिखी, जो अन्निको नामक एक लड़की के बारे में थी। उसने बाल केन्द्र को छः वर्षों तक चलाया।

### गाँव की ज़िन्दगी

राजधानी में बाल केन्द्र में छः वर्ष बिताने के बाद, मौली एक गाँव में चली गई जिससे वो वहाँ पर बच्चों की परिस्थिति को समझ सके।

वहाँ गाँव में कोई स्कूल नहीं था। मौली वहाँ तीन वर्षों तक रही और उसने वहाँ की स्थानीय भाषा में एक शैक्षिक कार्यक्रम का निर्माण किया, जो पारम्परिक गीतों, नृत्यों एवं कविताओं

### तोस्तान की एक सभा में जाते हुए

**तोस्तान के कार्य को धन्यवाद कि 7,200 से अधिक गाँवों ने जनाना यौनांग काटने एवं बाल विवाह पर रोक लगा दी है, इनमें से एक गाँव की तोस्तान सभा में लोग जा रहे हैं।**

पर आधारित था। वो कार्यक्रम स्वास्थ्य एवं सफाई के बारे में उपलब्ध जानकारी, एवं चर्चाओं और गाँव के लोगों के साथ मिल कर समस्याओं को सुलझाने पर आधारित था। सन् 1991 में, स्थानीय लोगों के साथ काम करते समय, मौली ने एक चीज विकसित की जो बाद में तोस्तान नामक संस्था का रूप लेती। तोस्तान एक वोलोफ भाषा का शब्द है जो उस क्षण के लिए होता है जब मुर्गी का बच्चा अण्डे के छिक्कल में से बाहर निकलता है। तोस्तान का उद्देश्य अन्य गाँवों से उनकी विभिन्न स्थानीय भाषाओं में अपने ज्ञान को बांटना था।

एक बार मौली और तोस्तान ने मानवाधिकारों पर जागरूकता उत्पन्न करना शुरू किया, तो बाल विवाह एवं जनाना यौनांग काटने पर चर्चाएं शुरू हो गयीं।

लेकिन सन् 1996 में जब मालिकाउण्डा बमबारा गाँव जनाना यौनांगकाटना बन्द करने वाला पहला गाँव हुआ, तब अनेकों लोग नाराज थे। दोनों महिलाओं और पुरुषों ने इसका विरोध किया। उन्होंने गाँव की महिलाओं को खराब बहुत खराब नामों से पुकारा, और कहा कि वो कभी लड़कियों के यौनांगको काटना नहीं बन्द करेंगे।

### जनाना यौनांग काटने वाल ने काटना छोड़ दिया

एक अन्य गाँव में एक महिला रहती थी जिसका नाम औरी सॉल था। वो एक पारम्परिक जनाना यौनांग काटने वाली थी, जो जना गाँव में लड़कियों के यौनांगों को काटा करती थी।

औरी केवल चौदह वर्ष की थी जब उसकी शादी एक बड़ी उम्र के आदमी से कर दी गई। लेकिन उससे पहले, उसकी मां ने उसको जनाना यौनांग काटने की विधि सिखा दी थी। इस ज्ञान ने उसको अपने नए गाँव में एक बेहतर ओहदा दिया, और साथ ही परिवार में धन आया।

जब औरी तोस्तान के शैक्षिक कार्यक्रम के सम्पर्क में आई, तब उसके स्वयं के बच्चे और पोते पैदा हो चुके थे। उनके यौनांगों को, गाँव की अन्य लड़कियों की तरह, काटा जा चुका था।

''हम कक्षा में बैठे हुए थे जब मैंने घूमकर अपनी बेटी से कहाः 'नहीं। वो अब समाप्त हो चुका है। मैं अब और लड़कियों के यौनांगों को नहीं काटना चाहती।' तब मुझे इस बात का आभास हुआ कि धन की अपेक्षा शान्ति एवं हिंसा से आज़ादी अधिक महत्वपूर्ण है,'' औरी कहती है।

औरी अपने इस नए ज्ञान को सबसे बांटना चाहती थी अतः वो अनेकों गाँवों में गई। वयस्क उसको सुनते थे क्योंकि वो एक जनाना यौनांग काटने वाली थी, और उसे उस जाली परम्परा से लाभ होता था।

### भटकता इमाम

मौली का एक अच्छा मित्र, डेम्बा दियावरा नामक इमाम, पहले तो नाराज हुआ कि तोस्तान इस परम्परा पर चर्चा कर रही थी। लेकिन डॉक्टरों, धार्मिक नेताओं एवं गाँव की महिलाओं से इस विषय पर बात करने के बाद, वो मौली के पास आया और कहाः

''मैं गलत था। मुझे पता नही था कि यह इतना हानिकारक है। अब क्योंकि मुझे पता हो गया है, तो मुझे इसके बारे में कुछ कहना होगा। लेकिन इस परम्परा को समाप्त करने के लिए हमें अपने मित्रों एवं सम्बन्धियों से आग्रह करना पड़ेगा। हमें सारे गाँव से बात करनी होगी, और मैं स्वयं दस गाँवों में जाऊँगा जहाँ मेरे निकटतम सम्बन्धी रहते हैं। डेम्बा एक गाँव से दूसरे गाँव गया। उसका संदेश को क्रोध एवं भय की दृष्टि से देखा गया, लेकिन वो सदैव सतर्क रहता था कि वो अपनी बात साफ कहे और सबको सम्मान दे। धीरे–धीरे, बहुत महीनों बाद और अनेकों

**''मैं जानती हूँ कि मुझे कष्ट होगा जब मैं बड़ी हो जाऊँगी और मेरे बच्चे होंगे,'' नुईमा, 14, सेनेगल की कहती है, जिसके यौनांग को काट दिया गया था जब वो बच्ची थी। ''तोस्तान को धन्यवाद, अब यहाँ कोई ऐसा नहीं करता और कोई हमको कम आयु में विवाह करने के लिए मजबूर नहीं करता, जब तक हम अट्ठारह वर्ष के नहीं हो जाते।''**

**औरी सॉल जनाना यौनांग काटने वाली पहली महिला थी जिसने इस प्रथा को बन्द किया। उसकी पोती रोखाया, 17, को अपनी दादी पर गर्व है कि उसने यह महत्वपूर्ण कदम उठाया।**

## तोस्तान को धन्यवाद!

**ईसाताउ, 11, बचपन में जनाना यौनांग काटने को भोगा, लेकिन वो अब उसके गाँव में नहीं होता और हर कोई ने वचन दिया है कि इस प्रथा को रोक देंगे। ''यदि तोस्तान नहीं होता, तो हम अब भी अपनी लड़कियों की शादियाँ जल्दी से अपने गाँव में कर रहे होते,'' ईसाताउ कहती है।**

TEXT: JOHANNA HALLIN & EVELINA FREDRIKSSON PHOTOS: KIM NAYLOR

**इमाम डेम्बा दियाबारा, मौली एवं तोस्तान के लिए एक महत्वपूर्ण जना हैं। एक बार वो समझ गया कि जनाना यौनांग काटने की प्रथा कितनी गलत है, तब उसे लगा कि उसे सब गाँवों में अपने रिश्तेदारों से उस पर रोक लगाने के लिए बात करनी चाहिए।**
**"मैं स्वयं दस गाँवों में पैदल चल कर जाऊँगा जहां मेरे सम्बन्धी रहते हैं," वो कहता है।**

चर्चाओं के उपरान्त, निर्णय लिया गया। मिल कर।

सैंकड़ों लोग क्योर सिमबारा गाँव में इस जनाना यौनांग काटने वाले निर्णय का स्वागत करने के लिए एकत्रित हुए। अब मौली, तोस्तान और गाँव में लोगों को पता चल गया कि यदि भविष्य में लड़कियों को जनाना यौनांग काटने से मुक्त कराना था, तो इस निर्णय में सबका शामिल होना जरूरी था। जब कोई निर्णय मिल कर लिया जाता है, तब वो शक्तिशाली होता है!

### अब 7]200 गाँव!

जब मौली क्योर सिमबारा गाँव में अब आती है, तब 20 साल गुजर चुके हैं जब से इस गाँव ने तोस्तान के साथ काम करना शुरू किया था। और अट्ठारह सालों से यहाँ पर किसी लड़की के यौनांगों को नहीं काटा गया है। अनेकों अन्य गाँवों ने भी यही निर्णय लिया है। तोस्तान कार्यक्रम द्वारा, दक्षिण अफ्रीका के छः देशों में 7,200 से अधिक गाँवों ने जनाना यौनांग काटना, बाल विवाह एवं जबरन विवाह बन्द कर दिया है। सैंकड़ों हजारों लड़कियों के शरीर हानि पहुंचने से बच गये हैं, और वो दर्द एवं बेचैनी से मुक्त हैं। और अधिक लड़कियाँ स्कूल जा पाती हैं इसके बजाय कि वो जल्दी शादी कर लें और मां बन जायें जब वो स्वयं बच्चियां हों। लड़के भी बाल विवाह से मुक्त हो गये हैं और वो इसके बजाय अपनी पढ़ाई समाप्त कर सकते हैं।

एक परम्परा को बदलना कठिन होता है। तोस्तान के साथ मिल कर इन गाँवों ने सचमुच एक चीज अनोखी की है।

''मानवाधिकार के पास कुंजी है। जब हम अधिकारों एवं उत्तरदायित्वों के बारे में बात करते हैं, तो हर कोई सुनता है। हर किसी को हिंसा से मुक्त होने का अधिकार है, और साथ ही, यह सबका उत्तरदायित्व बनता है कि वो एक समाज को अपना योगदान दें जो हिंसा से मुक्त हो। तोस्तान कार्यक्रम यह दर्शाता है कि यद्यपि हर कोई स्कूल नहीं जा पाया है, फिर भी हर कोई बुद्धिमानी से निर्णय ले सकता है जिससे सबकी ज़िन्दगियों में सुधार आये – स्कूलों, शौचालयों एवं चिकित्सीय देखरेख उपलब्ध होने के बारे में, मलेरिया के बारे में जागरूकता, या फिर एक कुआं अथवा

**बच्चे एवं वयस्क मिल कर गाँव के विकास के लिए अपने लक्ष्य तय करते हैं, जिसका आधार यह होता है कि हर किसी को सुरक्षित, स्वच्छ वातावरण में रहने का अधिकार है, और हर किसी का उत्तरदायित्व है कि वो अपने चारों ओर के क्षेत्र को साफ रखे। जुड़वा भाईयों, डियोमा एवं बिलाल ने क्योर सिमबारा गाँव का सारा कचड़ा बटोर लिया है और वो इसे कहीं दूर ले जा रहे हैं।**

## ज्ञान फैलता है?

तोस्तान दक्षिण अफ्रीका के छः देशों में कार्यरत है – ग्वीनिया–बिस्सायु, माली, मॉरिटानिया, सेनेगल तथा गाम्बिया। सन् 1991 से 2,00,000 से अधिक लोग तोस्तान कार्यक्रम में भाग ले चुके हैं और तोस्तान की सामग्री का उपयोग कर चुके हैं, जो 22 स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध है। तोस्तान मॉडल का अर्थ हुआ कि इन 2,00,000 बच्चों एवं वयस्कों ने अपनी–अपनी बारी आने पर ज्ञान को फैलाया है तथा बीस लाख से अधिक लोगों को प्रभावित किया है। कार्यक्रम में भाग लेने वाले अपने रिश्तेदारों एवं मित्रों से अन्य गाँवों में बात करते हैं। ज्ञान एवं बदलाव देश भर में फैलता है, और साथ ही अन्य देशों में भी।

### जश्न मनाने वाला निर्णय

**जो गाँव विस्तृत परिवारों एवं अन्य सम्बन्धों द्वारा एक दूसरे से जुड़े हैं, एक संयुक्त निर्णय लेते हैं कि वे जनाना यौनांग काटना रोक देंगे, तब वो एक समारोह आयोजित करते हैं जिसमें वो अपने इस निर्णय के बारे में कहते हैं। और नाच के साथ एक दावत में इसका जश्न मनाते हैं!**

**समय बदल गया है!**
**गाम्बिया के सारे नगाई गाँव के शान्त युवा लोगों के लिए अब समय बदल गया है। वो अपने बच्चों को जनाना यौनांग काटने अथवा बाल विवाह से नहीं गुजरने देंगे।**

**मौली क्योर सिमबारा गाँव में वहां के बच्चों के साथ पैदल जा रही है। हर कोई मौली एवं तोस्तान के बारे में जानता है, और यह कि उन्होंने गाँव के बच्चों की जिन्दगी को बेहतर बनाने में सहायता की है।**

## मानवाधिकारों का उल्लंघन

लगभग चौदह करोड़ लड़कियाँ एवं महिलाएं विश्व भर में जनाना यौनांग काटने से पीड़ित रह चुकी हैं, जो प्रथा प्रति वर्ष अफ्रीका में लगभग 30 लाख लड़कियों को प्रभावित करती है। यह मानवाधिकारों का एक उल्लंघन है और अपने साथ स्वास्थ्य सम्बन्धी विपत्तियों को लेकर आता है, उसकी क्रिया के सीधे परिणाम द्वारा और हर लड़की की ज़िन्दगी भर तक।

पुस्तकालय बनाने के बारे में। और वयस्कों का पंजीकरण करने के बारे में जिससे वे मतदान दे सकें।

मौली ग्राम सभा को सुनती है जो गाँव के लक्ष्यों को बताते हैं – विद्युत, टीकाकरण, सड़क में सुधार एवं महिलाओं का निर्णय लेने में भाग लेना। वो युवा लोगों को अपनी पसंद का पति या पत्नी ढूंढने पर बने एक नाटक को देखकर बड़ी प्रसन्न होती है, यह तोस्तान कार्यक्रम का एक अंश है। फिर नाच जारी रहता है।

## तोस्तान कार्यक्रम द्वारा बेहतर ज़िन्दगियाँ

तोस्तान कार्यक्रम में मानवाधिकारों पर केन्द्रित होने का मतलब होता है कि गाँवों में ज़िन्दगी बच्चों एवं वयस्कों के लिए अनेकों मायनों में बेहतर हो जाती है:

- 7,200 से अधिक गाँवों ने जनाना यौनांग काटने, बाल विवाह एवं जबरन विवाह को बन्द कर दिया है
- बाल अधिकारों के लिए सम्मान बढ़ गया है
- अधिक लड़कियाँ स्कूल जाती हैं
- अधिक बच्चों का टीकाकरण हुआ है
- साक्षरता बढ़ गई है
- जच्चाओं एवं बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आया है
- निर्णय प्रजातंत्रिक विधि से लिये जाते हैं
- महिलाएं भी नेता बन सकती हैं
- सकारात्मक पर्यावरण का प्रभाव
- मलेरिया, एच.आई.वी. एवं एड्स तथा अन्य बीमारियों के कम मरीज़
- सौर ऊर्जा गाँवों में विद्युत लाती है

## सामाजिक प्रथा क्या होती है?

जनाना यौनांग काटना एक प्रकार की सामाजिक प्रथा है जिसका विवाह करने के लिए पालन करना आवश्यक है। सामाजिक प्रथा एक ऐसी बात होती है जिस पर समाज में अनेकों लोग सहमत हो जाते है। यदि कोई जना उस प्रथा के बजाय कोई अन्य तरीका अपनाता है तो लोग उसके विरुद्व कुछ न कुछ बोलते हैं। उदाहरण के लिए, तुमको कहीं पर भी कूड़ा नहीं फेंक देना चाहिए।

दक्षिण अफ्रीका के अनेकों समाजों में, एक सामाजिक प्रथा होती है कि किसी भी लड़की के विवाह होने के लिए यह अनिवार्य होता है कि उसके यौनांग काट दिये जाएँ। यह एक हज़ार वर्ष पुरानी प्रथा है और किसी को नहीं पता कि यह कहाँ से शुरू हुई थी। वो ऐसे ही है।

तोस्तान कार्यक्रम उसमें भाग लेने वालों को मानवाधिकारों पर सूचना देता है और इस पर कि लड़कियों एवं महिलाओं का खतना करना उनके लिए कितना खतरनाक होता है। तोस्तान संस्था इस विषय पर इमामों से बात करती है जो बताते हैं कि जनाना यौनांग काटना केवल एक परम्परा है और इसका ज़िक्र कुरआन में कहीं नहीं है। इस प्रथा को रोकने के लिए, बहुत सारे लोगों को मिल कर एक नई सामाजिक प्रथा का निर्णय लेना होगा। नई प्रथा यह होगी कि किसी भी लड़की को विवाह करने के लिए अपने यौनांग कटवाने नहीं पड़ेंगे।

यहाँ पर तोस्तान के गाँवों में इस सामाजिक प्रथा को इस प्रकार बदला जा सकेगा:

1. पुरानी सामाजिक प्रथा: लड़कियों के यौनांगों को काट दिया जाता था और उनका जल्दी विवाह कर दिया जाता था।
2. तोस्तान का प्रशिक्षण: बच्चे और वयस्क आपस में चर्चा करते हैं और मिल कर नई बातें सीखते हैं।
3. जागरूकता उत्पन्न करना: अनेकों गाँवों के वयस्क एवं बच्चे इस विषय पर जागरूकता उत्पन्न करते हैं और मिल कर चर्चा करते हैं।
4. साझा निर्णय: जनाना यौनांग काटना एवं बाल विवाह को हमारे गाँव में रोकना!
5. नई सामाजिक प्रथा: लड़कियाँ स्कूल जाएँ, गाँव में कोई जनाना यौनांग नहीं काटना न ही बाल विवाह!

# ''कल तुम्हारी शादी हो रही है''

**कई महीने सूखा रहने के बाद, अंत में बारिश की टपटपाहट छत पर सुनाई दे रही है। मरियामा बाह, चार वर्षीय, अन्य बच्चों के पास बाहर जाती है। मरियामा को पता नहीं है कि यह पहले से ही तय हो गया है कि उसका विवाह उन लड़कों में से एक होगा जो उसके साथ पानी के गड्ढों में कूद रहा है।**

''जब मैं पैदा हुई, तब मेरे माता पिता का एक मित्र घर पर आया और कहा: ''यह लड़की मेरे बेटे की पत्नी बनेगी।'' मेरे माता–पिता को लगा कि यह एक अच्छा विचार है, अतः उन्होंने इस शादी पर चर्चा की, और इस बात पर सहमत हुये कि मैं लड़के के परिवार के साथ रहने चली जाऊँ जैसे ही मेरा स्तनपान करना रुक जाए और वहाँ तब तक रहती रहूं जब तक मैं सात वर्ष की न हो जाऊँ। अतः मैं उस लड़के के साथ बड़ी हुई जिसको मेरा पति बनना था। हम भाई–बहन की तरह रहते थे।''

### शादी का दिन

''जब मैं सात वर्ष की हुई तब मैं माँ और पिता के साथ रहने वापस चली गई। एक दिन, जब मैं ग्यारह वर्ष की थी, तब मेरे मित्रों ने मुझसे कहा: 'कल तुम्हारी शादी हो रही है।' मैं उदास हो गई।''

''मुझे उस लड़के के पास ले जाया गया जिसको मेरा पति बनना था। मैंने एक सफेद चादर अपनी कमर के चारों ओर लपेटी हुई थी और मेरे सिर पर एक घूंघट था। मेरे शरीर का ऊपरी भाग निर्वस्त्र था।''

''शादी के बाद मेरे पति और मैं एक घर में चले गए। दो बड़ी उम्र की महिलाएँ बाहर बैठ गयीं। बाद में, हमें वो सफेद चादर उन महिलाओं को देनी थी। यदि उस चादर पर खून पाया जाता तो गांव नाच गाने के साथ जश्न मनाता। यदि नहीं, तो इसे एक धोखा समझा जाता।''

''जब हम बिस्तर पर लेट गये तब मेरे पति ने मुझसे पूछा: 'तुम इतनी चुप क्यों हो?' मैंने छत की ओर देखा और पता नहीं था कि मैं क्या कहूं। मेरे पति ने बहुत सारी बातें करनी शुरू कर दीं और कुछ देर बाद, मैंने भी उससे बोलना शुरू कर दिया। हमने कहा कि यह अजीब सा लग रहा था कि हम पति–पत्नी की तरह यहाँ पर लेटे हुए थे। हमने अन्य विषयों पर भी बातें कीं, अपने मित्रों और गांव के बारे में। और अपने नए घर के बारे में, जहां हम एक साथ रहने वाले थे।''

''बाहर महिलाएं हमारी प्रतीक्षा कर रही थीं कि हम पति–पत्नी की तरह एक साथ लेटें। सूर्योदय के समय हमने उन्हें मेरी सफेद चादर दे दी, जिस पर अब खून था। महिलाओं ने नाचना गाना शुरू कर दिया।''

### मेरे बच्चों के लिए स्कूल

''एक वर्ष बाद मैंने अपने पहले बच्चे को जन्म दिया। वो वास्तव में मुश्किल था। मुझे अस्पताल जाना पड़ा और बाद में मैं कई सप्ताह तक पलंग पर लेटी रही। उसके एक वर्ष बाद फिर मैंने अपने दूसरे बच्चे को जन्म दिया।''

''हमें पर्याप्त भोजन प्राप्त करने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा, अतः मेरे पति ने काम खोजने के लिए यूरोप की यात्रा करने का निर्णय लिया। मुझे कई सप्ताह तक उनकी कोई खबर नहीं मिली। वो अभी भी इटली में हैं, उनके पास एक नौकरी है और वो घर को पैसा भेजते हैं। वो अक्सर हमको टेलीफोन करते हैं, और मुझसे अच्छी बातें करते हैं और बच्चों के बारे में पूछते हैं। अब क्योंकि हम पति–पत्नी की तरह रह चुके हैं, तो मैंने उनको चाहना शुरू कर दिया है।''

''मैंने तोस्तान से बहुत कुछ सीखा है। वहाँ पर एक महिला मुझे सब कुछ बताती है जो भी उसे पता चलता है। मेरा सपना है कि मेरे परिवार का स्वास्थ्य अच्छा हो। मैं अपने बच्चों के शादी तब तक नहीं करूंगी जब तक वो अठारह साल नहीं हो जाते, और मैं यह निश्चित करूंगी कि वे स्कूल जाएँ।'' ⊕

TEXT: JOHANNA HALLIN & EVELINA FREDRIKSSON PHOTOS: KIM NAYLOR

# ग्यारह वर्ष की आयु में शादी

**मरियामा दौड़ रही है। उसके पैर रेतीली जमीन पर मुश्किल से पड़ रहे हैं, और वो प्रयास कर रही है कि वो अंधेरे में न गिर पड़े। वो हर चीज से बचना चाहती है। उसके सौतेले पिता ने निर्णय लिया है कि उसकी शादी कर देनी चाहिए, यद्यपि वो केवल ग्यारह वर्ष की है।**

TEXT: JOHANNA HALLIN & EVELINA FREDRIKSSON PHOTOS: KIM NAYLOR

अंधेरे में दो किलोमीटर दौड़ने के बाद, मरियामा अपनी दादी के घर पहुँचती है, जो उसे सांत्वना देने की कोशिश करती है, लेकिन मरियामा रोना बंद नहीं कर पाती। यदि उसके पिता अभी भी जीवित होते तो यह बिल्कुल भी नहीं हो रहा होता, वो अपने मन में सोचती है।

''मेरे पिता मुझे और मेरे भाई बहनों को सबसे अधिक प्यार करते थे। उनकी मृत्यु से एक नए जीवन की शुरुआत हुई थी। हमको अपने पिता का ही समर्थन मिला था, और जब उनका निधन हो गया तब सब कुछ कठिन हो गया।''

### सपने धुआं धुआं हो गए

मरियामा के गांव में, परंपरा के अनुसार, जो महिलाएं विधवा हैं उन्हें शोक में चार महीने बिताने चाहिए। उस समय वो किसी भी आदमी के हाथ से कोई वस्तु नहीं ले सकतीं। यदि किसी आदमी को कुछ देना होता है, तो वो उसे फर्श पर रख देता है जहां से वो उसे उठा लेती है।

जब शोक की अवधि खत्म हो जाती है, तब वो महिला फिर से शादी कर सकती हैं। मरियामा की मां इस परंपरा का पालन करती है और बाद में मरियामां के पिता के भाइयों में से एक से शादी कर लेती है। इसके बाद ही मरियामा की समस्याएं शुरू हो जाती हैं।

मरियामा के नए सौतेले पिता नहीं चाहते कि वो स्कूल जाए और इसके बजाय यहं निर्णय लेते हैं कि उसकी शादी कर देनी चाहिए। क्योंकि वो एक पुरुष हैं, अतः उनको यह निर्णय लेने का अधिकार है।

मरियामा अपने सौतेले पिता की योजना को मानने से मना कर देती है। उसका यह सोचकर दिल टूट जाता है कि बिना स्कूल जाए उसकी जिन्दगी कैसे गुजरेगी। उसके भविष्य के सारे सपने धुएं में उड़ जाएंगे।

''मेरे पिता मुझे स्कूल भेजना चाहते थे। यदि वो अभी जीवित होते तो यह कुछ भी नहीं हो रहा होता।,'' मरियामा अपने सौतेले पिता से कहती है।

### अधिक अत्याचार

वहाँ एक अन्य बात मरियामा को और अधिक डराती है। जब वह बच्ची थी, तब उसके मादा जननांग काट दिये गए। मरियामा के गांव में, लड़की की योनि को 'सिल' देते हैं। जब उसकी शादी होने वाली होती है, तब 'कटर' को उसके पास आकर फिर से एक चाकू से उसे खोलना होता है।

''अधिकतर लड़कियां बेहोश हो जाती हैं। अनेकों बाद में बीमार हो जाती हैं, और लंबे समय के लिए पलंग में पड़ी रहती हैं। इसका ठीक होना कठिन होता है,'' मरियामा कहती हैं।

मरियामा जानती है कि उसको बच्चे को जन्म देने में कठिनाई होगी क्योंकि यह उसके साथ भी हुआ है। खास तौर से क्योंकि वो अभी युवा है। लेकिन उसके सौतेले पिता अपनी बात पर अड़े है। ''तुम अपने चचेरे भाई से शादी करने जा रही हो। यह परिवार

के लिए सबसे अच्छा है।''

मरियामा अपनी दादी के घर पर लगभग रात भर रोती है। लेकिन अगली सुबह जब वो उठती है, तब उसने अपना निर्णय ले लिया है कि वो क्या करेगी। वो एक तोस्तान नामक व्यक्ति के संगठन के पास मदद के लिये जाएगी। वो घबराती नहीं है, क्योंकि उसे विश्वास है कि वे लोग उसकी बात सुनेंगे।

जब मरियामा उन महिलाओं से मिलती है जो तोस्तान के साथ काम करती हैं और गांव समिति का भाग हैं, तो वो उसकी बात ध्यानपूर्वक सुनती हैं। वो कहती हैं कि वो इस बात से प्रभावित हैं कि मरियामा जानती है कि शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। उन्हें लगता है कि मरियामा महत्वाकांक्षी है, और उसे किसी का डर नहीं है।

### तोस्तान की योजना

तोस्तान समूह जल्दी से एक योजना बनाता है। उनको मरियामा के सौतेले

# मरियामा की अल्मारी

मरियामा कपड़ों में रुचि रखती है और उसके पास एक बड़ी कपड़े रखने वाली अलमारी है। उसके सर्वप्रिय वस्त्र वो हैं जो उसकी बहनों एवं चचेरे भाई–बहनों ने उसे शादियों और नामकरण समारोहों में पहनने के लिए दिये थे।

## काम करने वाले वस्त्र

जब मरियामा अपने घर का काम करती है, जैसे पोछा लगाना या पानी भरना, तब वो सदैव पुराने वस्त्र पहनती है। अपने विशेष वस्त्रों को ठीक से रखना जरूरी है!

## समारोह के वस्त्र

शादियों एवं नामकरण समारोहों के लिए मरियामा पारंपरिक वस्त्र पहनती है। जब उसकी बड़ी बहन की शादी हुई थी तब उसने मरियामां को यह पोशाक दी थी। समारोह में सभी महिलाओं ने एक जैसे वस्त्र पहने थे।

## शादी की पायल

मरियामा की मां इन सुन्दर पायलों को बनाती है, जो पारंपरिक शादी की पोशाक का एक भाग है। उसने परिवार की सभी लड़कियों के लिए मिलान वाली पायलें बनायी हैं।

## मेंहदी का टैटू

मरियामा को अपने हाथों एवं पैरों पर एक पारंपरिक मेंहदी की सजावट लैगाने में मदद मिलती है। वो तीन सप्ताह तक रह सकती है।

## सर्वप्रिय रोज की पोशाक

**मरियामा को तैयार होना अच्छा लगता है जब उसके गांव में बाहर से लोग आते हैं, या जब वो अपनी दोस्तों के साथ समय बिता रही होती है।**

## गुप्त दावत के वस्त्र

**गांव के पुराने लोगों को लड़कियों का पैन्ट अथवा छोटी ट्यूनिक पहनना पसंद अधिकतर नीचे पैन्ट के साथ पारंपरिक वस्त्र पहनती हैं। एक बार जब बड़े लोग बिस्तर में सोने चले जाते हैं, तब वो अपनी स्कर्ट उतार देती है और अपनी दोस्तों के साथ नाच जारी रखती है।**

## दावत की पोशाक

**मरियामा ने अपनी स्कर्ट पर 'राजकुमारी एके जैलो' की कढ़ाई करवाई है।**

## चेक वाली डिजाइनें

**मरियामा के गांव में अनेकों वस्त्रों में चेक वाली डिजाइनें होती हैं, जैसे इस स्कर्ट में।**

पिता से तेज़ी से बात करनी है। वे 17 लोगों का एक समूह इकट्ठा करते हैं, और सब मिल कर उसके माता–पिता के घर जाते हैं। वो क्रोधित हैं। एक 11 साल की उम्र वाली की शादी नहीं होनी चाहिए! उसे तो स्कूल जाना चाहिए और शिक्षा मिलनी चाहिए।

मरियामा दृष्टि से बाहर रहती है, जिसे उसे अपने सौतेले पिता के साथ हो रही बातचीत सुनाई न दे, लेकिन कुछ दूरी से भी वो सुन सकती हैं कि वो गुस्से में हैं। ''मरियामा ने मदद के लिए दूसरों को कहा है क्योंकि उसे अपने खुद के परिवार के लिए कोई सम्मान नहीं है,'' वो कहते हैं। फिर वह चीखते हैं ''वो वही करेगी जो मै उससे कहूँगा!'' ओर उसके घर पर एकत्र हुए समूह को सुनने से मना कर देते हैं।

### हर कोई गुस्से में है

मरियामा जानती है कि वो सही है। तोस्तान से संदेश साफ है: लड़कियों को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है! मरियामा को स्कूल छोड़ कर शादी नहीं करनी चाहिए थी। इससे उसके स्वास्थ्य के लिए गंभीर परिणाम हो सकते हैं और उसका भविष्य नष्ट हो सकता है। लेकिन अगर उसके सौतेले पिता उसको मजबूर करते हैं तो क्या होगा?

उस रात, मरियामा सो नहीं पाती। उसके सौतेले पिता अभी भी गुस्से में है और उसे दुख होता है कि यह बड़ी बहस उसके गांव में चल रही है। वो बिस्तर से निकल कर बाहर रात में चली जाती है। बिना सोचे वो दौड़ना शुरू कर देती है। ऐसा लगता है जैसे उसके पैर खुद से आगे बढ़ रहे हैं, उसे सड़क पर उसकी दादी के घर की ओर अग्रणी हैं।

जब वो वहाँ पहुँचती है तब उसकी दादी उसे घर में बुला लेती हैं, लेकिन

**समारोह के वस्त्र**
**एक अन्य पारंपरिक पोशाक जो मरियामा ने एक परिवार की शादी में पहनी है।**

**स्कूल की यूनीफार्म**
**मरियामा अपने स्कूल की यूनीफार्म के लिए बड़ी सजग रहती है, और उसको पहनने से पहले सदैव नहाती है।**

उससे कहती हैं कि उसे सुबह वापस अपने घर जाना होगा। मरियामा जानती है कि वो क्या चाहती है और तोस्तान द्वारा समर्थित महसूस करती है। उसी समय उसे डर लगता है, क्योंकि गांव में इतने सारे लोग अब उससे नाराज है। उसके सौतेले पिता उससे नाराज हैं और तोस्तान महिलाएँ भी उससे नाराज हैं, क्योंकि वो नहीं सुनेगी। उसके रिश्तेदारं भी इस बात से निराश हैं कि वो अपने सौतेले पिता की आज्ञा का पालन नहीं कर रही है। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा कि एक लड़की स्वयं के लिए निर्णय लेने में सक्षम हो सकती है।

**पुलिस से सहायता**

वो अपनी दादी के घर से वापस अपने घर आती है, तब मरियामा को पता चलता है कि उसके सौतेले पिता ने तोस्तान की बात नहीं मानी है। उन्होंने कहा कि वो सुनिश्चित करेंगे कि शादी आगे चले, जब तक कोई अनदेखी नहीं हो जाती। उसे कुछ करना होगा!

मरियामा, राज्यपाल को एक पत्र लिखती है जिसमें वो अपनी स्थिति को समझाती है। फिर वो पुलिस के पास चली जाती है। पुलिस ने इस तरह के मामलों को देखा है और वो स्थिति को समझते हैं। वो एक बैठक के लिए मरियामा एवं उसके सौतेले पिता को आमंत्रित करते हैं।

मरियामा, उसके माता–पिता एवं दो पुलिस अधिकारी उस बैठक में भाग लेते हैं। तोस्तान की महिलाएं भी वहाँ पर हैं। पुलिस स्पष्ट करती है

**मरियामा तोस्तान की महिलाओं के साथ जिन्होंने उसकी मदद की है**

**उसके सौतेले पिता उसकी शादी कर देना चाहते थे। "अनेकों लड़कियों को स्कूल छोड़ना पड़ जाता है, लेकिन मरियामा निडर थी और उसने हमसे बात करने की हिम्मत की और उस प्रथा पर रोक लगाई। अब वो जो भी बनना चाहे बन सकती है," कुम्बा बाह कहती है।**

कि मरियामा स्कूल में अच्छा कर रही है और वो अपनी शिक्षा जारी रखने की इच्छुक है। इसका मतलब है कि आपको उसे स्कूल से बाहर निकालने का अधिकार नहीं है। यदि आप उसे स्कूल जाने के लिए अनुमति नहीं देते हैं, तो हमें आपको गिरफ्तार करना पड़ेगा," वो उसके सौतेले पिता से कहते हैं।

उसका सौतेला पिता अब डर जाता है, और वो पुलिस अधिकारियों की मांगों को स्वीकार कर लेता है। अपनी आंखों को मरियामा पर साधे, पुलिस अधिकारियों में से एक कहता है: "इस पल को याद रखना। तुम स्कूल जाने के लिए यह सब कर रही हो। अब मुझसे वादा करो कि तुम अच्छी तरह पढ़ोगी।"

मरियामा पुलिस स्टेशन से राहत महसूस करते हुए जाती है, वो घबराई हुई और अन्दर से हिली हुई है। बार में सभी को हिलाकर रख छोड़ता है। वो स्कूल जारी रखने से खुश है, और अब उसे बाल–विवाह के आघात से नहीं गुजरना पड़ेगा। साथ ही उसे असहज महसूस होता है। उसने अपने माता–पिता को गिरफ्तार होने के खतरे में डाल दिया है।

### अपना वादा रखते हुए

गांव में वापस लौटना आसान नहीं है। लोग मरियामा से दूर हो जाते हैं। उसके अपने रिश्तेदार उससे निर्दयता से बातें करते हैं, और गांव के बड़े उससे नाराज़ हैं। वो कहते है कि उन्हें मरियामा ने अपमानित किया है, और पुलिस के पास जाना गलत बात थी।

जब मरियामा स्कूल जाती है तब भी स्थिति बिल्कुल बेहतर नहीं होती। स्कूल के बाद, वो घर चली जाती है और बिस्तर पर लेट जाती है। वो भोजन नहीं कर पाती और हर समय उसे लगता है कि हर कोई उसके विरुद्व है। कई दिनो तक वो सिर्फ वहाँ निहित रहती है और बाहर नहीं जाती। जो उसके लिए एक जीत होनी चाहिए थी, वो उसका वज़न नीचे किये हुए है, और मरियामा स्वयं को अकेला महसूस करती है।

तब मरियामा की सबसे अच्छी दोस्त दरवाज़े से चली आती है। वो मरियामा के बिस्तर के किनारे बैठती है और कस कर उसे गले लगा लेती है।

## साप्ताहिक बाज़ार

**मरियामा के गांव के पास एक साप्ताहिक बाजार लगती है। हर कोई यहाँ इकट्ठा होता है, और तुम यहाँ पर कुछ भी खरीद सकते हो जो तुम्हें चाहिए। इस सप्ताह मरियामा ने नई 'आईशैडो' खरीदने के लिए पैसे बचाये हैं।**

**"पहले मैं तोस्तान समूह को नहीं सुनना चाहता था, लेकिन अब मैं उनका आभारी हूँ जो उन्होंने मुझे यह समझने में मदद की कि शिक्षा प्राप्त करना कितना महत्वपूर्ण है," मरियामा के सौतेले पिता कहते हैं।**



## Mariama AK, 16

**सपना है:** एक नर्स बनने का।
**नीति वाक्य:** अपने शत्रुओं को माँफ करना ओर अपने सपने को साकार करना।
**दुखी होती है:** जब वो अपने पिता के बारे में सोचती है जो मर चुके हैं।
**गर्व है:** अपने स्कूल जाने के लिए संघर्ष करने पर।
**रोकना चाहती हूँ:** बाल विवाह।

"तुमने काफी मुश्किल लड़ाई लड़ी है, अब इसे एकदम छोड़ देना ठीक नहीं होगा," वो कहती हैं।

मरियामा की दोस्त स्कूल के बारे में उसे बताती है, और वो सभी बातें हैं जो मरियामा स्वयं पिछले कुछ सप्ताह से कह रही है। यह कि स्कूली शिक्षा एक अधिकार है, और शिक्षा ही बेहतर भविष्य की कुँजी है। उसी पल, मरियामा अपनी पढ़ाई पर अपना ध्यान केंद्रित रखने का निर्णय लेती है। कोई अन्य बात उसका ध्यान भंग नहीं कर सकती। वो उस सख़्त पुलिस अधिकारी को दिये गये वचन को निभायेगी।

गांव जो लड़कियों के अधिकारों का समर्थन करता है

समय गुजरता है, और मरियामा का लगता है कि लोग अब उसके विरुद्ध नहीं रहे। उसके सौतेले पिता उससे माफी माफी मांगते हैं और उससे एवं पूरे गाँव को बताते हैं कि वो गलत थे।

"सभी लड़कियों को स्कूल जाने का अधिकार है। मैं अब यह बात समझती हूँ। मैं तोस्तान को सुनना नहीं चाहती थी, लेकिन अब मैं खुश हूँ कि उन लोगों ने मेरी सहायता की। मैं हर किसी को यह सलाह है कि हमको उन लोगों को कभी नहीं भूलना चाहिए, जो हमे सही फैसले करने में मदद करते हैं," उसके सौतेले पिता गाँव में सबके सामने कहते हैं।

जब तोस्तान तीन साल से मरियामा के गांव में काम कर रहा है, तब पूरा गांव एक घोषणा करता है:

हम फिर कभी किसी लड़की की योनि को नहीं काटेंगे! हम फिर कभी नहीं मांगेंगे कि किसी की भी 18 वर्ष से कम आयु में शादी करनी चाहिए!

मरियामा ही वो जना हैं, जिसने एकत्रित हुए लोगों को यह घोषणा पढ़ कर सुनाई। उसने एक भाषण के साथ अपनी बात को समाप्त किया जिसे उसने स्वयं लिखा था, जो इन शब्दों के साथ अन्त होता है:

"हम पीड़ित हैं। लेकिन हमारे बच्चे नहीं पीड़ित होंगे!"

# ज़िम्मेदारी एवं शैलियाँ!

"तोस्तान ने हमको अपने दोस्तों से महत्वपूर्ण बातें करना सिखाया। दोनों हमारे अधिकारों, और कैसे हम अपने स्वयं के जीवन को प्रभावित कर सकते हैं, यद्यपि हम अभी छोटे हैं। हम बस चारों ओर बैठ जाते थे और प्रतीक्षा करते थे, लेकिन अब हमने सीख लिया है कि हम स्वयं की जिम्मेदारी कैसे लें। अतः अब हम छोटे–छोटे अतिरिक्त कार्य करते हैं। मैं मूंगफलियाँ छीलता हूँ और उनको छोटी थैलियों में बेचता हूँ। मेरा दोस्त लाभ होता है तब हम दर्जी के पास जाते हैं और विभिन्न शैलियों के वस्त्रों को पहन कर देखते हैं।

**कोरा एवं कनकू, 13, को ग्वीनिया के पॉप गीत सुनना प्रिय है।**

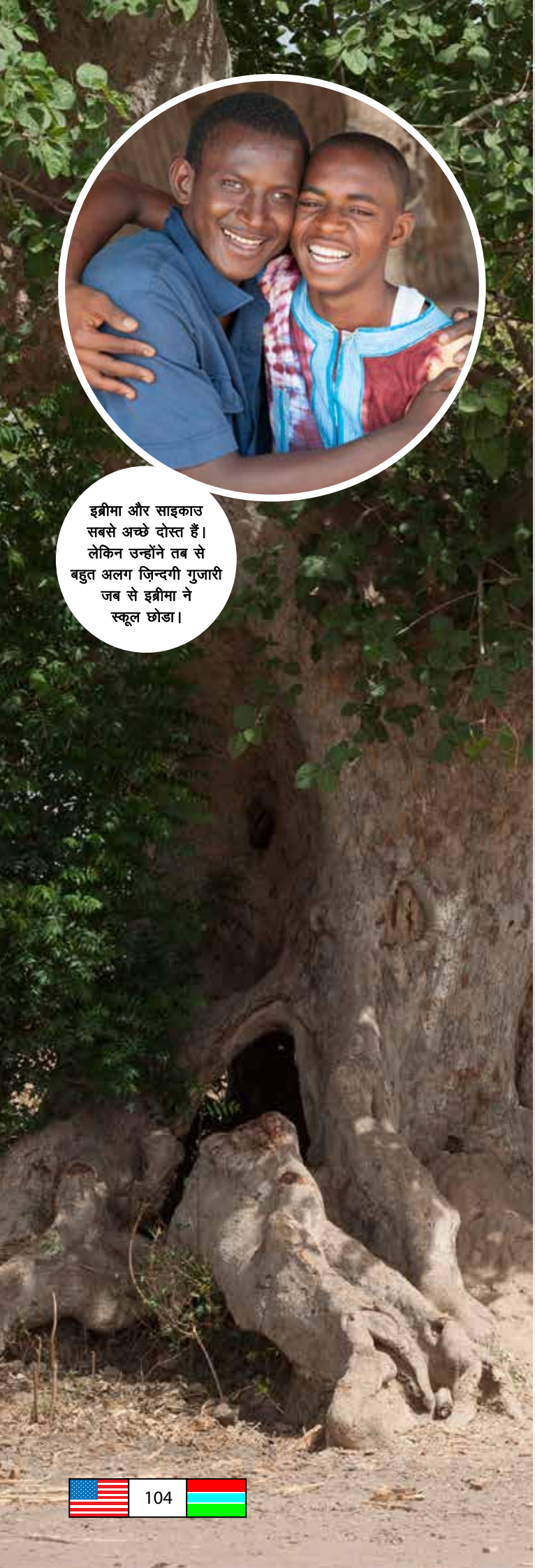

इब्रीमा और साइकाउ सबसे अच्छे दोस्त हैं। लेकिन उन्होंने तब से बहुत अलग ज़िन्दगी गुजारी जब से इब्रीमा ने स्कूल छोडा।

# सबसे अच्छे दोस्त लेकिन अलग ज़िन्दगियाँ

**गाँव के वीडियो क्लब में, दो दोस्त साइकाउ एवं इब्रीमा फुटबॉल देख रहे हैं। उनमें कई समानताएं है, और वो दोनों रियल मैड्रिड का समर्थन करते हैं। लेकिन उनकी ज़िन्दगियाँ बहुत भिन्न हैं। साइकाउ स्कूल जाता है और हर दिन, गांव में तोस्तान महिलाओं को धन्यवाद, वो अपने डॉक्टर बनने के सपने को साकार करने के लिए एक छोटा सा कदम उठाता है। इब्रीमा खेतों में काम करता है, और वो अपनी पत्नी और तीन बच्चों को कुछ नहीं दे सकता जो उन्हें चाहिए।**

स्कूल से पहले, साइकाउ परिवार की गायों की देखभाल करता है। एक बार वो उन्हें वो दे देता है जो उनको चाहिए, तब वो गांव के स्कूल को तेजी से जाता है। बहुत कम उम्र से साइकाउ एक डॉक्टर बनना चाहता था। वो बहुत अच्छी तरह जानता है कि चिकित्सा देखभाल न मिल पाने का क्या अर्थ होता है। जब उसके पिता बीमार हुए और मर गये, तब सारे परिवार के लिए जिन्दगी कठिन हो गई।

''हमारे पिता मुझे और मेरे भाई बहनों को प्यार करते थे। उनको खोना मेरे लिए सबसे बुरी बात हुई। जब वो मर गये, तब हमारे लिए अपना खर्चा उठाना बहुत कठिन हो गया।''

कुछ समय बाद, साइकाउ की मां ने फिर से शादी कर ली। साइकाउ के सौतेले पिता के पहले से ही अपने स्वयं के बच्चे थे, और उसे परिवार को चलाने के लिए बड़ी मुश्किल होती थी। परिवार बुनियादी आवश्यकताओं जैसे भोजन और स्कूल संसाधनों की पूर्ति करने के लिए संघर्ष करता रहा।

तुम्हें स्कूल छोड़ना पड़ेगा!

जब साइकाउ तेरह साल का हुआ, तब उसकी माँ ने उससे कहाः

साइकाउ, तुम स्कूल छोड़ दो और काम करना शुरू कर दो। और हम तुमको एक पत्नी देंगे।''

लेकिन साइकाउ मना कर देता है।

''मेरी ज़िन्दगी में स्कूल जाना सबसे महत्वपूर्ण बात है। और मैं शादी करने के लिए बहुत छोटा हूँ,'' उसने अपनी मां और सौतेले पिता से कहा।

उसके सौतेले पिता नहीं मानते, उन्होंने पहले से ही सारी योजना बना ली है और उनको साइकाउ के पढ़ाई करने के बजाय काम पर जाने में कोई समस्या नहीं दिखती।

साइकाउ अपनी बात अड़ा रहता है। वो कहता है कि यदि वो उसकी पढ़ाई जारी रखेंगें, तो वो अपने परिवार की अधिक सहायता कर सकेगा इसके बजाय कि उसकी जबरदस्ती शादी कर दी जाये और वो इतनी कम उम्र में एक वयस्क की जिन्दगी बिताये। जब वो फिर भी नहीं मानते, तो साइकाउ दरवाजे से बाहर चला जाता है। उसे पता है कि उसे यह समस्या अकेले नहीं हल करनी। सहायता उपलब्ध है।

### तोस्तान से सहायता

केवल एक पत्थर फेंकने की दूरी पर, साइकाउ गांव में तोस्तान के प्रतिनिधियों से मिलता है।

''वो तोस्तान था जिसने हमको शिक्षा के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने यह भी हमें बताया कि हम बच्चों को अपनी आवाजें सुनवाने का अधिकार है। हमें महत्वपूर्ण निर्णयों में अपनी राय व्यक्त करने देना चाहिए। तोस्तान ने तुरन्त कहा कि वो मेरी सहायता करेगा।''

अगले ही दिन, तोस्तान महिलाएँ साइकाउ के माता–पिता के साथ बैठ जाती हैं। वो उनसे इस समस्या पर बात करती हैं। तोस्तान के पास उन गांवों में होने वाली समस्याओं एवं संघर्षों का समाधान निकालने के लिए एक विशेष तरीका है। महिलाएँ अनुभवी हैं और उन्हें पता है कि हर किसी को अपनी बात सुनवाने एवं समझवाने का अधिकार है। इसी लिए साइकाउ के सौतेले पिता तोस्तान को सुनने के लिए तैयार लगते हैं। जब वो वार्ता समाप्त हो जाती है, तब सब लोग इस बात पर सहमत हो जाते हैं कि सबके हित में यही बेहतर होगा कि साइकाउ अपनी स्कूली शिक्षा जारी रखे।

''मैं बहुत खुश था। अब मेरा सपना सच हो सकता है!''

शादी करने की बात

उसी समय, गांव में थोड़ी दूर पर, एक दूसरे लड़के के भविष्य पर चर्चा चल रही है। उसको इब्रीमा कहते हैं, और वो उसीं कक्षा में है जिसमें साइकाउ।

''यदि मुझे पानी चाहिए होता है, तो मैं सीधे अपनी पत्नी से कह देता हूँ,'' एक लड़का शान से कहता है, वो इब्रीमां से दो साल बड़ा है।

''सोचो कि तुम्हारा खुद का एक घर हो,'' दूसरा कहता है।

इब्रीमा सुन रहा है। उसकी माँ उसकी शादी कराना चाहती है और उसके चारों ओर सभी सहमत है। शायद स्कूल जाना इतना अधिक महत्वपूर्ण नहीं है, इब्रीमा सोचता है।

इब्रीमा अपने सहपाठियों से कुछ साल बड़ा है। शादी करने के लिए काफी बड़ा, उसके माता–पिता को लगता है, जब कि वो सिर्फ 16 साल का है।

इब्रीमा को पता नहीं है कि उसके माता–पिता ने एक लड़कों के समूह को इकट्ठा कर लिया है जिन्होंने स्कूल छोड़ दिया है और शादी कर ली है, और उनसे कहा है कि वो इब्रीमा से कहें कि विवाहित जीवन स्कूल जाने से बेहतर होता है। इब्रीमा को मनाया जाता है और वो अपनी चचेरी बहन से शादी करने के लिए राज़ी हो जाता है जिसे उसके माता–पिता ने चुना है। वो केवल तेरह साल की है और इब्रीमा ने पहले कभी उससे बात नहीं की है।

**कभी पर्याप्त धन नहीं**

उसकी शादी के दिन, इब्रीमा को लगता है कि उसने अपने बारे में सबको बात करने की अनुमति देने की गलती कर दी है। किसी ने उससे यह नहीं पूछा कि वो क्या सोचता है, और उसे लगता है कि वो सिर्फ इसलिए सबके विचार के साथ चला गया क्योंकि वो अपने माता–पिता को निराश नहीं करना चाहता था ।

''अब मैं बहुत पछताता हूँ। मुझे अपनी राय व्यक्त करने के लिए अपने अधिकारों का इस्तेमाल करना चाहिए

## Saikou, 16

**सपना देखता है:** डॉक्टर बनने का।
**अन्य बच्चों के लिए टिप:** वयस्कों की हर बात स्वीकार न करें। निर्णय लेने में शिक्षित लोगों को शामिल करने के लिए सुनिश्चित करें।
**आदर्श:** रोनाल्डो – शुरू में उसके पास कुछ नहीं था और अब वो दुनिया में सबसे अच्छा फुटबॉलर है।
**विश्वास करता है:** लोकतंत्र में।
**खुश होता है:** तोस्तान हमें हमारी समस्याओं का समाधान और परियोजनाओं पर मिलकर काम करने में मदद करता है।

**तकनीक एवं डिजाइन के पाठों में, साइकाउ ने एक न्यायाधीश की तस्वीर बनाई है। ''मुझे न्यायिक प्रणाली में रुचि है लेकिन मैंने यह चित्र पूरी तरह अपनी कल्पना से बनाया है। मैंने कभी किसी अदालत में कोई मामला नहीं देखा है।''**

**अलागी, साइकाउ और गिब्बी अधिक से अधिक वीडियो क्लब में फुटबॉल देखने के लिए जाते हैं। साइकाउ रियल मैड्रिड का समर्थन करता है। "मैं रोनाल्डो की प्रशंसा करता हूँ क्योंकि वो एक गरीब भूमिका से आता है और उसने अपने प्रयास से कामयाबी पायी है। मैं उसकी तरह खेलना चाहता हूँ।**

था, और मुझे इतनी कम उम्र में शादी करने के लिए सहमत नहीं होना चाहिए था। जब मेरी पत्नी और मैं पहली रात को एक साथ सोये थे तब मुझे डर लगा था। मेरी पत्नी को भी वैसा ही लगा था, वो भी बहुत डर गई थी।"

"मेरे तीन बच्चे पैदा हुए हैं और मैं अपनी पत्नी से प्यार करता हूँ, लेकिन यह दर्द देता है कि मैं कभी उनकी जरूरतें पूरी नहीं कर सकता," इब्रीमा कहता है।

उसने स्कूल छोड़ने के बाद से हर दिन कड़ी मेहनत से काम किया है, लेकिन तब भी अपने परिवार की जरूरतें पूरी नहीं कर पाता।

"मैं शिक्षित नहीं हूँ, और यह दिखाई देता है। जब साइकाउ और मैं वीडियो क्लब में फुटबॉल देखने जाते हैं, तब वो अंग्रेजी में सभी संकेतों को पढ़ लेता है जिनको मैं नहीं समझ पाता, और वो उन सब विषयों पर बात कर लेता है जिनके बारे में मैं बात नहीं कर सकता।"

### बच्चों को शिक्षा मिलनी चाहिए

साइकाउ और इब्रीमा अक्सर स्कूल जाने एवं शिक्षा प्राप्त करने का हमारे भविष्य के लिए जो महत्व है, उसके बारे में बात करते हैं।

"मैंने साइकाउ से बहुत कुछ सीखा है। जब हम बात करते हैं, तब मुझे पता चलता है कि क्या फर्क एक व्यक्ति के शिक्षित नहीं होने से पड़ता है," इब्रीमा कहता है।

इब्रीमा और उनकी पत्नी कद्दीजातो सहमत हैं कि वो अपने बच्चों की शादी 18 वर्ष की उम्र से पहले नहीं करेंगे।

"मैं स्कूल नहीं गया था और मैं खुश था जब मेरी माँ ने मुझसे कहा कि मैं शादी करने जा रहा हूँ, भले ही मैं बहुत छोटा था। मुझे नहीं पता था कि मैं अन्यथा क्या करूँगा। लेकिन अपने बच्चों के लिए मेरा सपना है कि उन्हें पता चले कि एक अन्य प्रकार की ज़िन्दगी भी है। मैं चाहती हूँ कि वो स्कूल जायें और बहुत जल्दी शादी न करें," कद्दीजातो कहती हैं।

दोनो दोस्त साइकाउ और इब्रीमा अपने अपने कार्यों में कड़ी मेहनत से काम करते हैं जो उनके लिए महत्वपूर्ण हैं। साइकाउ स्कूल में अपना काम सबसे अच्छे से करता है और इब्रीमा अपने परिवार को वो सब देने के लिए संघर्ष करता है जिसकी उसको ज़रूरत है। वो अक्सर अपने भविष्य के बारे बात करते हैं, और इस पर कि तोस्तान ने जो शिक्षा के महत्व के बारे में जागरूकता उत्पन्न की है उससे कितना फर्क आया है। यदि तोस्तान नहीं होता तो इब्रीमा और साइकाउ को इस बात का एहसास नहीं हुआ होता कि वो अपने बच्चों को एक अलग तरह की जिन्दगी दे सकते हैं।

**इब्रीमा ने सोलह साल में शादी की है और अब उसके तीन बच्चे हैं। वो और उसकी पत्नी कद्दीजातो अक्सर अपने बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा मिलने के बारे में बात करते हैं।**

## Ebrima, 19

**इच्छाएं:** यह कि मैं हाँ कह सकूं जब अगली बार मेरे बच्चे मुझसे कुछ मांगें।
**भविष्य की योजना:** मेरे बच्चों के जाने के लिए स्कूल।
**चाहता है:** मेरी पत्नी कद्दीजातो और हमारे बच्चे जुलडे, जैनाबा और इस्माइला।
**पछताता है:** बहुत जल्दी स्कूल जाना छोड़ना।
**कभी नहीं करूंगा:** अपने बड़े भाई के बिस्तर पर बैठना। यह हमारी परंपरा के विरुद्ध है!

# गांव के लिए

तोस्तान प्रोग्राम इस बात पर आधारित है कि कैसे लोग गांवों में संयुक्त निर्णय लें कि गांव में किस प्रकार सब की जिन्दगी बेहतर बनायी जा सकती है। इसके काम करने के लिए आदेश में, हर कोई चर्चा कर रहा है जो महत्वपूर्ण है में भाग लेने की जरूरत है। वे इस बात से सहमत है कि स्वास्थ्य, समुदाय, शांति और सम्मान के सभी गांव में जीवन के रूप में संभव के रूप में अच्छा बनाने के लिए आवश्यक हैं। हर कोई भी समस्याओं को हल करने के लिए एक साथ काम करने के लिए सीखने के लिए हो जाता है। बच्चों को कैसे एक तरीका है कि समुदाय बनाता है में एक दूसरे से बात करने के लिए सीख है – और वे यह सब समय वे खेलने के रूप में अभ्यास!

## सिलाई और सोच

**"मेरी माँ ने मुझे सिखाया कि कैसे छाप है। मैं आमतौर पर बैठते हैं और जीवन गाम्बिया में यहाँ के बारे में सोचते हैं। यह अच्छा है कि हम शांति में हैं। युद्ध, बच्चों के लिए सबसे खतरनाक है क्योंकि यह परिवार विभाजन," इसातउ, 10 कहती हैं।**

TEXT: JOHANNA HALLIN & EVELINA FREDRIKSSON PHOTOS: KIM NAYLOR

# मिल कर काम करना, और मनोरंजन के लिए!

### लंघन
लय जा रहा रखते हुए महत्वपूर्ण है जब आप एक साथ लंघन कर रहे है।

### टिक–टॉक व्यवहार कुशल प्रशिक्षण
"यह एक फुटबॉल का खेल है। हम टीमों और अभ्यास रणनीति में मिलता है। हम अन्य कौशल वह भी असली फुटबॉल में उपयोगी होते हैं जानने के लिए। हम इसे अकेले कभी नहीं – वहाँ हमेशा देख लोग हैं। हम फुटबॉल के रूप में एक संगमरमर का उपयोग करें। अभी मैं रियल मैड्रिड बार्सिलोना के खिलाफ खेल रहा हूँ,"ममादू, 10 कहती हैं।

### संगीत प्रदर्शन
जब आई.एल.ओ., 15, उसकी रित्ती निभाता है, गांव में हर किसी को सुनने के लिए इकट्ठा। रित्ती तार होते हैं, लेकिन यह भी उसकी आवाज एम्प्लीफायर जब वह गाती है। उन्होंने कहा कि के बारे में कैसे एक औरत जो भूख लगी है कभी नहीं मुक्त हो सकता है गा रहा है।

### मित्र से मिलने के लिए साइकल चलाना
ममादू भी साइकिल पसंद करती है। जब वह कामों के चलाने के लिए, या अपने दोस्तों के साथ बातें करने के लिए की जरूरत है यह आसान है।

### क्रॉक्हेड हेयरबैण्ड
"मेरी माँ ने मुझे बतवबीमज को पढ़ाया जाता है, और मैं अपने दोस्तों के साथ है। तोस्तान हमें सिखाया गया है कि हम एक अच्छे जीवन के लिए कड़ी मेहनत करनी है। हम तो बस इंतजार कर चारों ओर बैठ नहीं सकते हैं," फैंटा, 7 कहती हैं।

### 25–बक्से
"यह एक सामाजिक खेल है। आप एक दूसरे को छूने की अनुमति नहीं कर रहे हैं, और यदि आप तो क्या आप बाहर हैं। बहुत से लोग खेल सकते हैं, लेकिन केवल चार लोगों को एक समय में चलाने के लिए," हावह, 13 बताती हैं।

### बैटरी वाला खेल
"खेल का उद्देश्य अपने प्रतिद्वंद्वी की बैटरी को मारा है। अक्सर बहुत से लोग तो हम तय करने के लिए शुरू कर देंगे, जो बहुत सारी आकर्षित खेलना चाहते हैं। तो फिर हम एक टूर्नामेंट की स्थापना की। यह महत्वपूर्ण है हमें बच्चों के खेलने के लिए सक्षम होना करने के लिए है। यह हमें खुश कर देता है और हमें स्वतंत्र रूप से सोचने के लिए सक्षम होना करने के लिए मदद करता है," गिब्बी, 12 कहती हैं।

# कई मायनों में एक बेहतर जीवन

## सभी के लिए सौर ऊर्जा

"तोस्तान ने हमारे लिए सौर ऊर्जा की व्यवस्था की है। हम तेल के दीपक प्रयोग करते थे जो खतरनाक होते थे। यदि तुम गृहकार्य के लिए देर रात में उसका इस्तेमाल करते हो तो तुमसे आग लग सकती है।
इससे पहले, न तो बच्चों और न ही महिलाओं को अपनी राय व्यक्त करने और बात कहने का अधिकार था लेकिन अब सब कुछ बदल चुका है। गांव में हर कोई अपने मन की बात कह सकता है।"

*आवा, 16, सेनेगल*

## कम मलेरिया

"मलेरिया हमारे लिए एक बड़ी समस्या होती थी। कई लोग मर गए। हमने चार साल तक दूध पीना बंद रखा जब मेरे सौतेले पिता की मृत्यु हुई, क्योंकि हमने सोचा कि खराब दूध पीने से ही वो बीमार पड़े। अब हम जानते हैं कि मच्छर ही मलेरिया का कारण है। यही कारण है कि हम सप्ताह में एक बार गांव की सफाई करते हैं और मच्छरदानियों में सोते हैं। अब कोई मलेरिया से नहीं मरता क्योंकि हमे स्वयं की रक्षा करना आता है।"

*मूसा, 15, गाम्बिया*

## माता–पिता की माफी

"मैं आज़ाद और खुश महसूस करती हूँ। अब हम एक दूसरे से बात कर सकते हैं, यहाँ तक कि कठिन विषयों पर भी। इससे मेरा जीवन में बदलाव आया है।
मेरे माता पिता ने मेरा खतना करा दिया जब मैं बच्ची था। वो नहीं जानते कि यह गलत था। जब उन्हें एहसास हुआ कि यह समस्याओं का कारण बन सकता है तब उनको अफसोस हुआ। उन्होंने मुझे माफ करने के लिए कहा और वादा किया है कि वो फिर किसी और के साथ ऐसा कभी नहीं करेंगे। एक दिन जब मुझे पता चला कि महिला का खतना क्या होता है, और कहा कि यह मेरे लिए किया गया था, तब मैं उजड़ गई। अब मुझे उसके बारे में पता है और मैं उस पर बात कर सकती हूँ। यह आवश्यक है कि हम यह निश्चित करें कि कोई बेटी को फिर इससे न गुजरना पड़े! मैं इसके लिए लड़ना चाहती हूँ।"

*टॉमबॉन्ग, 13, गाम्बिया*

## बाल विवाह करने के बजाय सफाई करने में मदद करना

"तोस्तान के कार्य शुरू करने से पहले, लड़कों को जल्दी शादी करनी पड़ जाती थी, जैसे की मेरी। लेकिन अब हम अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों को जानते हैं। कोई भी शादी नहीं करता जब तक वो 18 का नहीं हो जाता। लड़के अपनी माताओं की गृहकार्यों में सहायता करते हैं, जैसे सफाई करना।"

*अलासाना, 14, गाम्बिया*

**तोस्तान समाज को बच्चों और उनके परिवारों के लिए बेहतर बनाने हेतु अनेकों भिन्न विधियों से काम करता है। सब कुछ जुड़ा है, और सब कुछ बच्चों के जीवन को बेहतर बनाता है। तोस्तान के गांवों में सभी बच्चों को अपनी राय देने का अवसर मिला है और वो सब जानने का कि तोस्तान कैसे काम करता है।**

# मानवाधिकारों के लिए

**सेनेगल के केरे सिम्ब्रा में बच्चों के पास कि चित्र में बच्चों के पास उनके अधिकारों के बारे में एक कविता होती है जिसे वा इसे चित्र में मिलकर पढ़ रहे है। वे मानव अधिकारों के लिए खड़े हैं जिससे वो कभी न भूलें जो सब कुछ उनके गांव ने सीखा है। तोस्तान के प्रोग्राम का एक महत्वपूर्ण भाग है कि वो सपना देखें कि कैसे उसका भविष्य बेहतर हो सकता है। बच्चों के माता–पिता और दादा–दादी ने हिंसा मुक्त भविष्य का सपना देखा। उन्होंने बालिकाओं के खतने की प्रथा को बंद कर दिया क्योंकि वो उनके सपनों के रास्ते में पड़ रही थी।**

**"मुझे इतिहास प्रिय है और मैं एक शिक्षक बनना चाहती हूँ। मेरा सपना है के यहाँ हर कोई स्कूल जा सके। हम अच्छे शिक्षकों की आवश्यकता है। मैं एक स्कूल का निर्माण करना चाहती हैं जो कि नीले और नारंगी रंग का हो।"**
**नदाया, 10**

**"मुझे शिक्षा से प्यार है और मैं एक फ्रेन्च की शिक्षक बनना चाहते हैं। मेरे सपनों हैं कि मैं एक स्कूल बनाऊँ और अपने माता पिता को हज के लिए मक्का ले जाऊँ।"**
**एमी, 10**

## बच्चे जिम्मेदारी ले सकते हैं

''मेरा सपना तोस्तान के साथ काम करने है और यहाँ की स्थिति में सुधार लाने के लिए अधिक से अधिक गांवों में जाने का है। एक नए गांव में सबसे पहला काम मैं सफाई करने का दिन निश्चित करना होगा। फिर मैं एक स्कूल का निर्माण करूंगा और हर किसी का उसमें पंजीकृत कर दूँगा। तोस्तान लोगों को स्वच्छता और बातचीत के बारे में पढ़ाता है। यही कारण है कि हम शांति से एक अच्छा जीवन जीना चाहते हैं। बाल अधिकार विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। एक बार बच्चों को पता चल जाता है कि उनके अधिकार हैं, फिर वो भी जिम्मेदारी ले सकते हैं और गांव में सभी लोगों के लिए जीवन बेहतर बनाने में सहायता कर सकते हैं।''

*काजाताई, 13, गाम्बिया*



## स्कूल में वापस जाने के लिए एक गाय को धन्यवाद

''पिछले साल मेरे माता पिता ने मुझे स्कूल से निकाल दिया क्योंकि वो बहुत महंगा था। तब तोस्तान आया और उसने मेरे पिता से शिक्षा के महत्व के बारे में बात की। वो समझ गए और उन्होंने अपनी एक गाय बेच दी जिससे मैं स्कूल में रह सकूँ। मैं इतनी खुश थी कि मैं सो नहीं सकी। मेरा सपना है कि मैं एक डॉक्टर बनूँ और महिलाओं की मदद करूँ। मैं इस बारे में भी सोचती हूँ कि इबोला को रोकने कितना महत्वपूर्ण है और अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखना।''

*मारियामा, 15, गाम्बिया*



## स्वच्छ गांव

''मेरे गांव गंदा हुआ करता था। यह अब वैसा नहीं है, क्योंकि हमने सीखा लिया है कि कैसे उसे साफ सुथरा रखा जाए। सभी बच्चों के स्कूल जाने के अधिकार का सम्मान किया जाना चाहिए क्योंकि यही एक रास्ता है एक अच्छे भविष्य और अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए। यह भी महत्वपूर्ण है कि हर कोई जाने कि वो कैसे गभ. ´वती होने से स्वयं को बचाये।''

*फतऊ, 14, गाम्बिया*




बड़े!

हम मानव अधिकारों
की पीढ़ी के हैं
हमें मानव अधिकारों के सिवाए कुछ भी
नहीं स्वीकार
चलो उन्हें पहचाने और चलो उनके लिए
पूछें पुरुषों के लिए
महिलाओं के लिए
बच्चों के लिए
और जो लोग उन पर
मानव अधिकारों को लागू करने
का दावा करते है

''मैं एक व्यवसायी महिला बनना चाहती हूँ और एक बैंक में काम करना चाहती हूँ। अतः मुझे फ्रेन्च, अंग्रेजी एवं गणित सीखने की आवश्यकता है। मैं गांव में बिजली के होने का सपना देखती हूँ, न कि केवल सौर सैल जैसी की अब हमारे वहाँ हैं। चौबीसों घंटे बिजली आने से सभी के लिए जीवन बेहतर हो जाएगा।''
नदेये फतऊ, 12

''मेरे सपनों में हमारा गांव टीवी में दिखने वाले गांवों की तरह दिखता है। स्वच्छ, बहुत सारे पेड़ों एवं सुंदर फूलों के साथ। हर घर में एक नल, और दिन और रात बिजली।''
ड्योउमा, 12

''मुझे फुटबॉल खेलना प्रिय है। मेरा सपना है कि मेरी एक फुटबॉल पिच हो और एक टीम भी जो 'लीग' में खेले। यदि हमे खेलने एवं प्रशिक्षण लेने का अवसर मिले, तो हम शक्तिशाली हो जाएंगे।''
बिलाल, 11

''मैं कक्षा 5 में हूँ। बड़ा हो कर मैं शिक्षा मंत्री बनना चाहता हूँ। अपने गांव के लिए मेरा सपना है कि वहाँ पर एक अच्छा स्कूल हो और एक बड़ा कुरान पढ़ने का स्कूल भी।''
नदेये, 13



## महिलाओं और बच्चों का फैसलों में शामिल होना

''इससे पहले, एक आदमी और एक औरत को एक दूसरे से बात करने के लिए बगल में बैठ तक नहीं सकते थे। पुरुष ही सारे निर्णय लेते थे। महिलाओं और बच्चों को विचार विमर्श करने या निर्णय लेने में शामिल नहीं किया जाता था। पर सब अब बदल गया है। हम मानव अधिकारों एवं अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर बात कर चुके हैं, यह निश्चित करने के लिए कि हमारे गांव में हर किसी का जीवन अच्छा बीते। उदाहरण के लिए, हमने तय किया है कि कोई भी 18 वर्ष का होने से पहले शादी करने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए, और अब हम लड़कियों के गुप्तांगों को काटने की प्रथा जारी नहीं करेंगे।''

*फतऊमता, 15, गाम्बिया*



## मेरी बहन की शादी कर दी गई

''तोस्तान के बारे में सोच रही थी, और यह कि मेरी शादी जल्दी नहीं की जाएगी, मुझे खुश करता है। मेरी सौतेली मां ने मेरी बड़ी बहन को शादी करने के लिए मजबूर कर दिया। वह दुखी है और उसके अभी से तीन बच्चे हैं। उन लड़कियों के लिए जीवन बहुत कठिन हो जाता है जिनकी जल्दी शादी कर दी जाती है। वे माता पिता बन जाते हैं जब वे स्वयं बच्चे होते हैं। लेकिन मैं शादी तब तक नहीं करूंगी जब तक मैं 18 की नहीं हो जाती। इसके बजाय मैं स्कूल जाऊंगी, खूब पढ़ूंगी, और एक अच्छी नौकरी करूंगी। मेरा सपना है कि मैं तोस्तान के साथ काम करूं, लोगों से बातें करूं और उनकी कठिन समस्याओं को हल करूं।''

*एनस्टाउ, 13, गाम्बिया*

TEXT: JOHANNA HALLIN & EVELINA FREDRIKSSON PHOTOS: KIM NAYLOR

# स्कूल जाये बिना एक दिन

**"तोस्तान गाँव में बहुत परिवर्तन लाया है, और अब वयस्कों को मालूम है कि दोनो लड़कियों एवं लड़कों के लिए स्कूल जाना कितना महत्वपूर्ण है। लेकिन अब भी ऐसे परिवार हैं जो अपने बच्चों को स्कूल भेजने का व्यय नहीं कर सकते। काफी प्रगति हुई है, पर अभी भी लम्बा सफर तय करना है।"**

"मैं अपनी बुआ के साथ रहती हूँ क्योंकि मेरी माँ मर चुकी है और मेरी सौतेली माँ बनजुल में रहती है। मेरी बुआ मुझे अब स्कूल नहीं जाने देती। मुझे घर पर रह कर गृहकार्य करना पड़ता है। मैं स्कूल के बारे में रोज सोचती हूँ, लेकिन यहाँ पर बहुत काम करना होता है," नुइमा, 14 कहती है।
"फिर भी, यहाँ गाँव में तोस्तान के बिना मेरी ज़िन्दगी बिल्कुल बेकार रही होती। उन्होंने हमको स्वास्थ्य के बारे में बहुत बताया, और अब कोई हम लड़कियों से विवाह करने के लिए ज़बरदस्ती नहीं करता जब तक हम अट्ठारह वर्ष के नहीं हो जाते। अतः मुझे विवाह नहीं करना है जब तक मैं वयस्क नहीं हो जाती और मेरा शरीर बच्चे पैदा करने के लिए तैयार नहीं हो जाता। जब नुइमा बच्ची थी तब उसके गुप्तांगों को काटा गया था जिस कारण हर महीने जब उसको मासिक घर्म होता है तब उसे पाँच दिनों तक लेटे रहना पड़ता है। "इसमें अत्यधिक पीड़ा होती है और मुझे पता है कि बड़ें हो कर भी मुझे परेशानी होगी जब मेरे बच्चे पैदा होंगे।" तोस्तान को धन्यवाद कि अब यहाँ पर कोई लड़कियों को नहीं काटता।"

**नमाज़ से पहले नुइमा बुरखा पहन लेती है। नमाज़ की चटाई को बाहर निकालने का समय हो गया। नुइमा मक्का की ओर मुड़ती है और अपने घुटनों को टेक देती है।**



## Nuima, 14

**प्रिय है:** प्रार्थना करना।
**दिन में सर्वप्रिय कार्य:** भोजन तैयार करना।
**आभारी हूँ:** तोस्तान को धन्यवाद कि उसे तब तक विवाह करना जरुरी नहीं जब तक वो वयस्क नहीं हो जाती।
**चाहती है:** यह कि वो स्कूल जा सके।
**अन्तिम बार जब वो सचमुच खुश थी:** जब उसे नये वस्त्र मिले थे।

07:00
नुइमा उस कमरे में सो कर उठती है जिसमें वो अपनी बहनों के साथ रहती है।

07:15
सुबह की नमाज़ पढ़ने से पहले स्वयं को धोना बहुत ज़रूरी है।

07:40
"मा अन मुजामदी," नुइमा, नमाज़ पढ़ने के बाद कहती है। इसका मतलब होता है 'शंन्ति में उठो'।

08:00 कुएँ से पानी भरना।

09:00
नुइमा, अपने स्नानकक्ष में, एक पर्दे के पीछे स्नान करती है।

09:15
नाश्ता करने से पहले, नुइमा एक गारे में अनाज को कूटती है, उसके बाद वो उसे छान कर उसमें से भूसी अलग कर देती है, तब उस गेहूँ का दलिया बनाती है।

10:00
अन्त में, नाश्ता करने का समय!

11:00
परिवार के कपड़े धोना।

TEXT: JOHANNA HALLIN & EVELINA FREDRIKSSON PHOTOS: KIM NAYLOR

12:00
मूंगफलियाँ छीलना। मूंगफलियाँ हमारे भोजन का एक महत्वपूर्ण अंग हैं, और वो बाज़ार में बेची जाती हैं।

13:00
नुइमा एक धुएँ से भरे हुए चौके में दोपहर का भोजन बनाती है, लेकिन उसे भोजन बनाना अच्छा लगता है।

15:00
फर्श साफ करने का समय।

15:30
नुइमा एक कपड़े पर कढ़ाई कर रही है जो उसकी शादी के बाद उसके दरवाजे के बाहर लटका रहेगा।

16:00
नुइमा को अपनी प्लेटें धोने में सहायता मिलती है।

19:00
परिवार रात का भोजन करता है।

20:00
नुइमा अपने चचेरे भाई–बहनों के साथ टीवी देखती है। जो बच्चे दिन में गांव के स्कूल में जाते हैं, उनमें से कुछ बच्चे साथ ही साथ, पड़ोसी गांव में, एक बड़ी आग की रोशनी में, कुरान के स्कूल में भी पढ़ रहे हैं।

22:00
दिन भर काम करने के बाद, नुइमा सोने के लिए लेट जाती है। रोज़ की तरह, सोने से पहले वो सोचती है कि उसका दिन कैसा बीता होता यदि वो इसके बजाय स्कूल गई होती।

दादी दाउस्साउ गांव की पहली सौर इंजीनियर है।

नेने बैटरी सौर पैनल की ऊर्जा से बैटरी चार्ज करता है।



सौर ऊर्जा का मतलब है कि अब नेने अपने स्कूल का गृहकार्य शाम को कर सकती है।

# दादी एक सौर इंजीनियर है

**जब नेने छोटी थी तब उसको रात को मोमबत्ती की रोशनी में अपना स्कूल का गृहकार्य करना पड़ता था। क्योंकि अब उसकी दादी एक सौर ऊर्जा इंजीनियर बन गयी है, तब उसको स्कूल का गृहकार्य करने और खेलने के लिए काफी प्रकाश मिल जाता है!**

जब नेने की दादी दाउस्साउ 50 साल की थीं जब वो पहली बार एक हवाई जहाज में बैठी। सन् 2001 में बेयरफुट कॉलेज में विश्व बाल अधिकार पुरस्कार, के प्राप्तकर्ता से मिलने के लिए वो भारत को यात्रा पर जा रही थी। वहाँ पर अनेकों भिन्न देशों के ग्रामीण क्षेत्रों से महिलाओं को नंगे पैर सौर इंजीनियर बनने का प्रशिक्षण दिया जाता है। एक सामान्य साझा भाषा के बिना! चित्रों, रंग, और पुनरावृत्ति का प्रयोग करके दाउस्साउ ने सीखा कि कैसे सौर पैनल काम करते हैं।

जब दाउस्साउ वापस सेनेगल लौटीं, तो वो सारे गाँव की मदद कर सकीं – सभी घरों, स्कूल एवं मस्जिद – जो सौर ऊर्जा और प्रकाश का उपयोग कर सके। और यहां तक कि पड़ोसी गांव में चर्च भी।

''हम धर्म की परवाह किये बिना समानता और निष्पक्षता में विश्वास करते हैं। अतः यदि हमको मस्जिद में विद्युत प्रकाश मिलता हो, तो यह उचित है कि हमारे पड़ोसी चर्च को भी वो प्रकाश मिले,'' वो कहती है।

### सूर्य रेडियो और टी.वी. लाता है

गाँव के तोस्तान प्रोग्राम का एक भाग बनने से पहले, किसी महिला ने पहले कभी पूरे गांव के सामने नहीं बोला था। लेकिन जब नेने की दादी 50 अन्य सौर पैनलों के साथ घर आई, तब वो समारोह का केंद्र थी।

''मैने सबके सामने बोलने का सपना कभी नहीं देखा था, लेकिन यह मुश्किल नहीं था। तोस्तान को इसके लिए धन्यवाद कि मैने महत्वपूर्ण विषयों पर सबसे बात करना और बांटने में उसने हमें प्रशिक्षण ज्वेजंद हमें दिया है के लिए, मैं सहज बात कर रहे और मैं सीखा था साझा करने लगा,'' वो बताता है।

दादी दाउस्साउ अब तीन युवा महिलाओं सिखा रही है सौर इंजीनियरों होने के लिए। और वह भी नेने सिखाया है।

''जब भी स्कूल बंद कर दिया है मैं दादी के साथ हूँ। मैं देखना पड़ता है कि क्या वह और इसे समझने की कोशिश करते हैं। मैं वह सब कुछ सीखा है पर गर्व कर रहा हूँ!''

नेने के घर में, सौर पैनल बैटरी से जुड़ा है, सूरज की किरणों के शक्तिशाली दोहन।

''सौर ऊर्जा के बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि हम रेडियो सुन सकते है। यह बढ़िया है। मैं जानकारी हो रही है और लोकप्रिय गीत, ज्यादातर जेम्बे संगीत सुनने के पसंद हैं,'' नेने, अब एक मोमबत्ती की रोशनी द्वारा उसे होमवर्क करना है जो कहते हैं।

''यह अब मेरे होमवर्क करने के लिए आसान है, और हम अधिक समय खेलने के लिए है! और हम टीवी देखने और हर किसी का टेलीफोन चार्ज कर सकते हैं,'' नेने कहती हैं।

सौर ऊर्जा लाइटों ने गांव को संध्या के समय बदल दिया है। अब यहां गुप अंधेरा बिल्कुल नहीं रहता। पैनल से सौर ऊर्जा के लिए सर्किट बोर्ड।

**सौर ऊर्जा का मतलब है कि अब नेने अपने स्कूल का गृहकार्य शाम को कर सकती है और अधिक समय दिन के दौरान खेलने के लिए मिल सकता है।**

TEXT: JOHANNA HALLIN & EVELINA FREDRIKSSON PHOTOS: KIM NAYLOR

# अपनी आवाजें सुनवाओ!

— वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ बाल पत्रकार सम्मेलन में स्वागत, जो एक ही समय पर, बच्चों द्वारा, अनेकों देशों में आयोजित किया जा रहा है!

**प्रति वर्ष, विश्व भर में, एक ही दिन, बच्चे बताते हैं कि तीन प्रत्या. शियों में से किसको 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ फॉर दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड' के लिए लाखों मतदानकर्ता बच्चों द्वारा चुना गया है और किन दो को 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स ऑनररी अवार्ड' मिलेगा।**

अपने सारे स्कूल को परिणाम घोषित करने के लिय एकत्रित करो, अथवा मीडिया को एक विश्व बाल पत्रकार सम्मेलन में आमन्त्रित करो। और जो युधार तुम बाल अधिकारों में देखना चाहोगे उनके बारे में बात करो। केवल बच्चे ही बोलें, और पत्रकार सम्मेलनों के समय पत्रकारों द्वारा केवल उनका ही साक्षात्कार लिया जाए, जो विश्व भर में, एक ही समय पर आयोजित किया जाते हैं। उनको डब्लू.सी.पी. कार्यक्रम के अन्त में आयोजित किया जाता है, जब विश्व के सारे बच्चों ने अपना मतदान देकर यह निर्णय ले लिया होता है कि किनको बाल अधिकारों के पुरस्कार मिलने चाहिए।
उसको कैसे करें:

### 1. समय और स्थान

यदि सम्भव हो सके, तो अपने पत्रकार सम्मेलन के लिए अपने क्षेत्र की सबसे महत्वपूर्ण इमारत चुनो, जिससे यह पता लगे कि बाल अधिकार महत्वपूर्ण होते हैं! उसको अपने स्कूल में आयोजित करना भी एक अच्छा विचार होगा। तुम 2017 की तिथि को डब्लू.सी.पी. की वेबसाइट पर देख सकते हो।

### 2. मीडिया को आमंत्रित करो

सभी अखबारों, पत्रिकाओं एवं टी. वी. तथा रेडियो स्टेशनों को अग्रिम में आमंत्रित करो। उसका समय और स्थान साफ साफ लिखो। ई–मेल का प्रयोग करना अच्छा होता है, लेकिन यह निश्चित रखो कि तुम उन पत्रकारों को भी बुलाओ जो तुम्हें लगता है कि उसमें आना चाहेंगे! उनको टेलीफोन द्वारा या उनके घर जाकर उसकी याद दिलायो।

**ब्रुन्डी में, बाल पत्रकार सम्मेलन में डब्लू.सी.पी. बाल अधिकार राजदूतों ने बाल अधिकारों के उल्लंघनों को दर्ज कराया, जिसकी उन्होंने पहले कभी चर्चा अथवा रिपोर्ट नहीं की थी।**

### 3. तैयारी करो

जो तुमने बोलने की सोची है उसको लिख लो। अपने देश में बाल अधिकारों के बारे में तुमको जो कुछ भी कहना है, उसकी तैयारी करने के लिए पर्याप्त समय दो। पत्रकार सम्मेलन से कुछ ही समय पूर्व तुमको वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ की गोपनीय सूचना प्राप्त होगी, जिसको तुम्हें पत्रकार सम्मेलन में घोषित कर देना चाहिए।

### 4. पत्रकार सम्मेलन आयोजित करो

यदि सम्भव हो सके, तो संगीत और नृत्य से शुरूआत करो, और यह समझाओ कि विश्व भर में अन्य बच्चे भी इसी समय पत्रकार सम्मेलन आयोजित कर रहे हैं। फिर पत्रकार सम्मेलन में कुछ इस प्रकार चलो:

- वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ के बारें में तथ्यों की जानकारी दो और यदि सम्भव हो तो एक छोटी डब्लू.सी.पी. की फिल्म दिखाओ।
- यह बताओ कि तुम्हारे देश में किस प्रकार बाल अधिकारों का उल्लंघन होता है।
- तुम्हारे देश में, राजनीतिज्ञों एवं अन्य वयस्कों द्वारा बाल अधिकारों का सम्मान किये जाने के सम्बन्ध में, अपनी माँगें बताओ।
- विश्व बाल अधिकार हीरो के बारे में, उस दिन का 'बड़ा समाचार' घोषित करो।
- पत्रकारों को एक प्रेस विज्ञप्ति तथा अपने देश का डब्लू.सी.पी. तथ्य पत्र देकर समाप्ति करो, यह दोनों दस्तावेज तुमको वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ की वेबसाइट से मिलेंगे।

**सन् 2015 में, अनेकों बाल प्रकार सम्मेलन डीआर काँगो मे आयोजित किये गए, एक ऐसा देश जहाँ कई बच्चों को उनके अधिकारों का गंभीर उल्लंघन का सामना करना पड़ता है। जो बच्चे इस पत्रकार सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे थे, उन्होंने इस पर चर्चा की, और उन्होंने यह भी बताया कि विश्व भर में मतदान देने वाले बच्चों ने किसको अपना पुरस्कृत विजेता चुना। कई रेडियो स्टेशनों, टीवी चौनलों और कांगो के समाचार पत्रों ने बच्चों की खबर प्रकाशित की।**

worldschildrensprize.org पर तुमको मिलेंगे:
अपने देश के बाल अधिकारों के तथ्य पत्र, पत्रकारों को कैसे आमंत्रित करें पर सलाह, राजनीतिज्ञों से पूछने के लिए प्रश्न एवं अन्य सुझाव। वेबसाइट में प्रेस की तस्वीरें भी हैं जिनको पत्रकार डाउनलोड कर सकते हैं। यदि अनेकों स्कूल एक ही मीडिया से सम्पर्क कर रहे हैं, तो क्यों न एक सम्मिलित पत्रकार सम्मेलन आयोजित करो? प्रत्येक स्कूल का एक प्रतिनिधि मंच पर उपस्थित हो सकता है।

**हडिन्जे, स्वीडन के स्नैटरिंगे स्कूल में एड्रियल, फ्रेड्रिक, लिन्निया, फैलिक्स एवं सागा ने स्वीडन के प्रधान मंत्री स्टीफेन लॉफवेन को एक डब्लू.सी.पी. स्फटिक ग्लोब भेंट किया जो इस बात का प्रतीक है कि वह वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ का एक संरक्षक है।**
**"इसे तुम बच्चों से प्राप्त करना मुझे अत्यधिक गर्व एवं प्रसन्नता देता है, प्रधान मंत्री ने बच्चों को बताया।**

# हम संरक्षक हैं

## वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ के

स्वीडन की महारानी सिल्विया

''यह एक महान गर्व की बात है कि मैं, स्वीडन का प्रधानमंत्री होते हुए, वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ के ऑनरेरी एडल्ट फ्रेन्ड्स एवं संरक्षकों के साथ जुड़ा हूँ। मैं तुमको वचन देता हूँ कि मैं अपने इस अभियान में पूरी लगन के साथ काम करूँगा और मैं सदैव तुम्हारे साथ एक ऐसे विश्व के लिए लड़ूँगा जहाँ बाल अधिकारों का सब जगह सम्मान किया जाए,'' स्वीडन का प्रधानमंत्री वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम में लाखों बच्चों से कहते हैं, और आगे कहते हैं:

''वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ कार्यक्रम स्वीडन की परम्पराओं पर आधारित है जिसमें सबको समानता, बाल अधिकार, प्रजातंत्र एवं शान्ति बनाये रखना शामिल है, उन मूल्यों की जिनकी आजकल विश्व को इतनी जरूरत है।''

डब्लू.सी.पी. संरक्षकों में पाँच नोबेल पुरस्कार विजेता तथा तीन वैश्विक महान नायक शामिल हैं: नेल्सन मन्डेला, ऑन्ग सैंन सुई काई, बर्मा से एवं ज़नाना गुस्माओ, ईस्ट टिमोर से। स्वीडन की महारानी सिल्विया इसकी सबसे पहली संरक्षक थी। इसमें वैश्विक नेताओं का समूह 'टी एल्डर्स', ग्रेसा मैचेल तथा डेसमंड टूटू भी शामिल हैं।

डेसमंड टूटू

ऑन्ग सैंन सुई काई

नेल्सन मन्डेला

ग्रेसा मैचेल

**चित्र में, सन् 2014 के वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ की विजेता मलाला, जो वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ की एक संरक्षक भी है, के साथ गायक लॉरीन एवं वूसी महालसेला हैं।**

PHOTOS: ABRAM VIKLUND/WCPF

**कम्बोडिया की फायमीन नाउन को उन बच्चों के लिए, जो कचड़े के ढेरों पर रहते हैं और उनके शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार के लिए, संघर्ष करने हेतु सन् 2015 का वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ ऑफ दि चाइल्ड दिया गया।**

**संयुक्त राज्य अमेरिका के ज़ेवियर स्टॉरिंग को उन बच्चों के लिए संघर्ष करने हेतु वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स ऑनरेरी पुरस्कार दिया गया जिनको बन्दी बना लिया जाता है और कभी–कभी उम्र कैद की सजा भी दे दी जाती है। महारानी सिल्विया ने एब्रेहेम ट्रेजो को भी एक फूलों का गुलदस्ता दिया, जो बन्दी बच्चों में से एक था।**
**"यह पहली बार है जब किसी ने मुझे फूल दिये हैं," एक खुश एब्रेहेम कहता है।**

### हम बहुत सारे हैं!

एक ऐनीमेशन चलचित्र ने दिखाया कि 38 मिलियन से अधिक बच्चे डब्लू.सी.पी. कार्यक्रम में भाग ले चुके हैं जब से सन् 2000 में उसकी शुरूआत हुई थी।

समापन गीत, 'ए वर्ल्ड ऑफ फ्रेन्ड्स' के समय बाल न्यायमूर्ति दल के बच्चों के साथ मंच पर लिल्ला अकादमीन, स्टॉकहोल्स एस्टेटिस्का जिमनेज़ियम, तथा दक्षिण अफ्रीका से उथाण्डो के बच्चे एवं युवा लोग भी शामिल हो जाते हैं।

# हम बाल अधिकारों को मनाते हैं!

वार्षिक वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स प्राइज़ समारोह का नेतृत्व स्वीडन के ग्रिपशॉम कॉसेल में बाल न्यायमूर्ति दल के बच्चों द्वारा किया जाता है। सभी तीन बाल अधिकार हीरो को सम्मानित किया जाता है और वे बच्चों के प्रति अपने द्वारा किये गये कार्य के लिए धन प्राप्त करते हैं। स्वीडन की महारानी सिल्विया इस बाल न्यायमूर्ति दल के बच्चों का पुरस्कार वितरण में सहायता करती हैं। तुम एक बाद की तिथि पर अपनी स्वयं का समापन समारोह आयोजित कर सकते हो, जहाँ तुम डब्लू.सी.पी. समारोह की फिल्म दिखा सकते हो और बाल अधिकारों को मना सकते हो।

भारत के कैलाश सत्यार्थी को बाल मजदूरी एवं दासता के विरुद्ध लम्बे समय तक संघर्ष करने के लिए 'वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन्स ऑनरेरी' पुरस्कार दिया गया। डब्लू.सी.पी. बाल न्यायमूर्ति दल की पायल उन बच्चों में से एक है जिसकी कैलाश ने सहायता की है, कैलाश की जगह महारानी सिल्विया से पुरस्कार लेती है।

महारानी सिल्विया नेपाल के बाल अधिकार राजदूतों के लिए ताली बजाती है, जिनको समारोह के समय सम्मानित किया गया। बाल न्यायमूर्ति दल की मनचला उनमें से एक है।

PHOTOS: SOFIA MARCETIC

दक्षिण अफ्रीका के उथाण्डो समूह ने समारोह में प्रस्तुति दी। अधिकतर बैण्ड के सदस्य खायेलिटशा के क्रिस हैनी माध्यमिक विद्यालय से आये हैं, जो केप टाउन के पास एक कस्बा है जिसे उसकी गरीबी, हिंसा एवं दुराचार के लिए जाना जाता है। डब्लू.सी.पी. कार्यक्रम हर साल उनके स्कूल में मनाया जाता है, और बैण्ड के सदस्य स्वयं बाल अधिकार राजदूत हैं।

THE GLOBAL GOALS
For Sustainable Development

लक्ष्य 1: कोई गरीबी नहीं

लक्ष्य 2: कोई भूखा नहीं

लक्ष्य 3: अच्छा स्वास्थ्य एवं देखरेख

लक्ष्य 4: अच्छी शिक्षा

लक्ष्य 5: लैंगिक समानता

लक्ष्य 6: स्वच्छ जल एवं सफाई

लक्ष्य 7: सस्ती एवं प्रदूषण रहित ऊर्जा

लक्ष्य 8: सभ्य कार्य एवं आर्थिक विकास

लक्ष्य 9: उद्योग, नवीनता एवं बुनियादी ढांचा

लक्ष्य 10: असमानताएं कम हों

लक्ष्य 11: सतत शहर एवं समुदाय

लक्ष्य 12: जिम्मेदार खपत एवं उत्पादन

लक्ष्य 13: जलवायु कार्रवाई

लक्ष्य 14: पानी के नीचे जीवन

लक्ष्य 15: भूमि पर जीवन

लक्ष्य 16: शान्ति, न्याय एवं शक्तिशाली संस्थाएँ

लक्ष्य 17: लक्ष्यों के लिए भागीदारी

## एक बेहतर संसार के लिए वैश्विक लक्ष्य

दुनियाँ के देश अगले 15 वर्षों में बच्चों और वयस्कों के लिए तीन असाधारण चीजें हासिल करने के लिए सहमत हो गये हैं। अत्यधिक गरीबी समाप्त, दुनियाँ में न्याय एवं असामनता के विरुद्ध लड़ना। जलवायु परिवर्तन से मुकाबला। सभी देशों में, सभी लोगों के लिए। इन्हें यू.एन. ग्लोबल गोल्स फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेन्ट कहा जाता है। सभी लक्ष्य बराबर महत्वपूर्ण हैं, और यदि हमें उनको प्राप्त करने का अवसर मिलता है, तो हम सबको उनके बारे में पता होना चाहिए। सबको बताओ कि तुम्हें वैश्विक लक्ष्यों के बारे में मालूम है, और परिवर्तन की लड़ाई में शामिल हो!

www.worldschildrensprize.org

PHOTO: GOAL 4: GLOBALGOALS.ORG. GOAL 6: UNICEF JORDAN/BADRAN. GOAL 7: MR. YUAN TAO & MS. YAN LU. GOAL 14: ENRIC SALA.


**Thanks! Tack! Merci! ¡Gracias! Danke! Obrigado! CẢM ƠN**
**!:مهرباني धन्यवाद நன்றி سپاس !شُكراً ขอบคุณ တၢ်ဘျုး ကျေးဇူး !:شکریہ**

HRM Queen Silvia • The Swedish Postcode Lottery
Queen Silvia's Care About the Children Foundation
The Survé Family Foundation • Giving Wings
eWork • Sparbanksstiftelsen Rekarne
Kronprinsessan Margaretas Minnesfond
Sida • Forum Syd

PVBLIC • Grupo Positivo • Art of Running • Futura Foundations
Helge Ax:son Johnsons Stiftelse • Altor • Good Motion • Microsoft
Google • Lumen Behavior • Twitch Health Capital • ForeSight Group
Företagarföreningen imariefred.nu • Dahlströmska Stiftelsen
PunaMusta • Semantix • Centas

Dick Kjellberg Montage • Gothenburg Film Studios • Elsas Skafferi • Gripsholms Slottsförvaltning • Gripsholms Värdshus • POM Gallery • ICA Torghallen • Skomakargården
Eric Ericsonhallen • Lilla Akademien • All Child Rights Donors

SVENSKA POSTKOD LOTTERIET
The Lottery for a better world